मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

मनाक़िबे अहले बैत

और

ताज़ियादारी

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

नाम किताब– मनाक़िबे अहले बैत
और ताज़ियादारी

मुअ़ल्लिफ़– डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

नज़रे सानी– मौलाना सिराजुद्दीन वारसी

सने इशाअ़त– जुलाई–2016 रमज़ानुल मुबारक
(1437 हिजरी)

सने इशाअ़त जदीद– नवम्बर–2024
(1446) हिजरी

कम्पोज़िंग– अमन & ज़ैनुल आ़बदीन

नाशिर– सय्यद ज़हीरउद्दीन (मदार बुक सेलर)

क़ीमत–250 रुपये

–: मिलने के पता :–

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

० बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं है जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला और हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे व जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे व हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाब और तमाम औलिया –ए–किराम व सूफ़िया–ए–इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

–: तम्हीद :–

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन अल्लाह तआला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से मुझ ह़क़ीर सरापा तक़सीर को ये किताब लिखने की सआदत हासिल हुई हालाँकि मैं इसके क़ाबिल न था मगर मेरे रब ने अपने महबूब सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नालैने पाक के सदक़े व ज़ेरे इनायत और अहले बैत अत्हार की मुहब्बत के सदक़े व ज़ेरे इनायत हमें इस शरफ़ से बहरेयाब फ़रमाया व अताये मौला अली अलैहिस्सलाम व करम हज़रत ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़िअल्लाहु तआला अन्हु व फ़ैज़े रुहानी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ व तमाम आले रसूल व नज़रे करम पीरो मुर्शिद हज़रत सय्यद फैज़ हसन सफ़वी साहब सफ़ीपुर शरीफ़ व बरकात जुमला औलिया–ए–किराम, सूफ़िया–ए–इज़ाम व बुजुर्गाने दीन की इनायते करम से मुझे इस किताब की तालीफ़ करने की सआदत हासिल हुई।

इस किताब की तालीफ़ का मक़सद व सबब ये है कि अह्ले बैत अत्हार की क़दरो मन्ज़िलत व मक़ामो मरतबत को बाअज़ लोग तख़फ़ीफ़ करते हुये कम दर्जे के ज़िमन में लेते हैं और दिलों में उनकी मुहब्बत व शानो अज़मत को वो मक़ाम नहीं देते जिस शायाने शान के वो सज़ावार हैं अहले बैत अतहार की पाक व ताहिर ज़ात अज़ीम शानो अज़मत व क़दरो मन्ज़िलत व आअला सिफ़ात की हामिल है ये शराफ़त

व अ़ज़मत के बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं इनकी सीरते तय्यबा ऐ़न सीरते मुस्तफ़ा थी इनके तमाम आअ़माल हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सीरत व सुन्नत के बेहतरीन नमूना थे इनके अक़्वालो अफ़आ़ल हिदायते मुस्तफ़ा की मानिन्द हिदायत आफ़रीन थे।

अहले बैत अत्हार के मनाक़िब व फ़ज़ाइल से वाबस्ता वाक़्आ़त व अहादीसे मुबारका के पढ़ने व सुनने से ईमान में ताज़गी और निखार और दिलों में नूरानी रौशनी व ईमान में पुख़्तगी आती है और इन्सान को नसीहत व हिदायत हासिल होती है और रुह मुतास्सिर होती है और आ़ज़िज़ी व इन्किसारी व तवक्कुल और इ़बादत व इस्लाहे नफ़्स जैसे बेशुमार सबक़ हमें मिलते हैं जो दुनिया व आख़िरत में हम सब के लिये बाइसे ख़ैर होते हैं कुरान मजीद में जितनी आयात अह्ले बैत की शान में नाज़िल हुईं उतनी किसी सहाबी के लिये नाज़िल नहीं हुईं और जितनी अहादीसे मुबारका अह्ले बैत की शान में कुतुबे अहादीस में हैं उतनी किसी भी सहाबी के लिये नहीं हैं पस जिनकी शानो अ़ज़मत को अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ने सबसे बुलन्द व बाला और अरफ़ाअ़ व आअ़ला किया हो तो किसी के तख़फ़ीफ़ करने से वो कम नहीं होती।

अहले बैत अत्हार की मुहब्बत ईमान की बुनियाद व ज़रिया-ए-निजात है और इनकी मुहब्बत का सिला अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की कुर्बत और जन्नत है और इनकी मुहब्बत दुनिया व आख़िरत में हर जगह नफ़ाअ़ बख़्श

है और क़ब्र व क़यामत में अ़ज़ाब से बचाने वाली व दरजात बुलन्द करने वाली है अहले बैत से बुग्ज़ रखने वाला ख़्वाह वो कितना ही बड़ा आ़बिद व ज़ाहिद ही क्यों न हो उसका ठिकाना दोज़ख़ है और उसे दोज़ख़ में सख़्त तरीन अ़ज़ाब दिया जायेगा

हमेशा से ही अहले बैत अत्हार से इन्तिहाई मुहब्बत करने वाले और उन पर अपनी जान निसार करने वालों की एक कसीर ताअ़दाद रही है और इसके बरअ़क्स इनसे बुग्ज़ व अ़दावत रखने वालों व इनकी शानो अ़ज़मत में तख़फ़ीफ़ करने वालों की एक क़लील ताअ़दाद रही है जो आज भी हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाने और ताज़ियादारी करने से मुहिब्बाने अह्ले बैत को रोकती है ऐसे तमाम लोग अव्वल दर्जे के मुनाफ़िक़ हैं और मुनाफ़िक़ीन नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़माना मुबारक में भी थे और आज भी हैं और जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने कुरान में फ़रमाया कि तमाम मुनाफ़िक़ीन दोज़खी हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुझ हक़ीर की इस तालीफ़ को नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के सदक़े व तुफ़ैल शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये। आमीन

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
(09897626182)
(09045442223)

मनाक़िबे अहले बैत
कुरान की रोशनी में

अह्ले बैत अत्हार (हज़रत मौला अ़ली सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत हसन व हज़रत हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम) की मुहब्बत हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है क्योंकि मुहब्बते अहले बैत ईमान की जान और शर्ते ईमान है इनकी मुहब्बत के बग़ैर किसी शख़्स के दिल में ईमान दाख़िल नहीं हो सकता हदीस पाक में वारिद है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया इस्लाम की बुनियाद मेरी और मेरे अह्ले बैत की मुहब्बत है और हम तमाम मुसलमानों के लिये हुक्मे खुदावन्दी है कि अहले बैत से मुहब्बत करो अहले बैत अत्हार की मुहब्बत मुहब्बते रसूल है और मुहब्बते रसूल मुहब्बते खुदा है।

अह्ले बैत अत्हार की शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत व कमालातो किरदार इन्तिहाई बुलन्द व बाला है अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इन्हें मख़सूस सिफ़ात और पाकीज़गी का आअ़ला तरीन नमूना बनाया और अ़ज़ीम मरातिब से नवाज़ा है अह्ले बैत अत्हार की फ़ज़ीलत में बेशुमार अहादीस मन्कूल हैं व इनकी शानो अ़ज़मत में आयाते कुरानी नाज़िल हुई हैं जिनमें बाअ़ज़ का तज़किरा हस्बे ज़ैल है।

इरशादे बारी तआ़ला है:-

ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप मुसलमानों से फ़रमां दीजिये कि मैं तबलीग़ पर तुमसे कोई बदला या सिला नहीं मांगता अलबत्ता मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे क़राबतदारों से मुहब्बत करो। (सूरह-शूरा-42/23)

वज़ाहतः– मज़कूरा आयत में हुक्मे खुदावन्दी है कि ऐ महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) आप मुसलमानों से फ़रमां दीजिये कि ऐ लोगो मैंने जो अल्लाह तआ़ाला का पैग़ाम तुम तक पहुँचाया व कुरानो सुन्नत व उसके अहकामात तुम तक पहुँचाये व तबलीग़ पर मशक़्क़त उठाई और तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रौशन मक़ाम अ़ता किया व तुम्हें गुमराहियों के अंधेरों से निजात देकर सिराते मुस्तक़ीम की राह दिखाई और तुम्हें जहन्नम की आग से बचाकर राहे जन्नत पर डाल दिया और तुम्हें जहालत व ज़िल्लत से बचाकर इ़ज़्ज़तो इन्सानियत से हम किनार किया तुम्हें दावते हक़ देकर तुम्हारी रहनुमाई की और तुम्हें ईमान से बहरेयाब किया

इन तमाम एहसानात व तबलीग़े दीन का मैं तुमसे कोई बदला या सिला नहीं माँगता मेरा अज्र तो मेरे रब के पास है और मुझे मेरा अज्र मेरा रब अ़ता करेगा मैं तुमसे किसी अज्र का तालिब नहीं हूँ बल्कि मुझे तो तुम्हारे अज्र की फ़िक्र है जो तुम्हें मेरे क़राबत दारों से मुहब्बत के बाइस मिलेगा मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो इसी में तुम्हारी भलाई और बेहतरी है और इसका फ़ायदा खुद तुम्हारी तरफ़ लौटता है कि दुनिया व आख़िरत में अज्रे अ़ज़ीम का बाइस है अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल की कुर्बत व माअ़रिफ़त और ईमान में पुख़्तगी मेरे अहले बैत की मुहब्बत से हासिल होगी इसलिये मैं चाहता हूँ तुम मेरे अहृले बैत से मुहब्बत करो और अहृले बैत से मुहब्बत करने का हुक्म रसूलुल्लाह ने अज़ खुद नहीं फ़रमाया बल्कि ये तो अल्लाह तआ़ाला का हुक्म और हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का शरफ़ और आपकी फ़ज़ीलत है कि अल्लाह तआ़ाला ने आपके अहृले बैत को ये इ़ज़्ज़त व खुसूसियत दी कि

कोई शख़्स कितना ही बड़ा आ़बिद व ज़ाहिद हो वो अह्ले बैत के मर्तबे को नहीं पा सकता और इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने आपके अह्ले बैत को ये इ़ज़्ज़त व खुसूसियत अ़ता की कि इनकी मुहब्बत को उम्मत पर फ़र्ज़ कर दिया और हर नमाज़ में अह्ले बैत अत्हार पर सलात भेजने व इनके लिये दुआ़ करने को वाजिब कर दिया।

➡ तफ़ासीर व अहादीस में है कि जब ये आयत नाज़िल हुई तो सहाबा-ए-किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप के क़राबत दार कौन लोग हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत मौला अ़ली और सय्यदा फ़ातिमा व हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) ये मेरे क़राबत दार हैं इनसे मुहब्बत करो। (तफ़सीर मज़हरी-8/420)
(दुर्रे मन्सूर-5/701)
(तफ़सीर कुरतबी-8/415)
(तफ़सीर कबीर-27/166)
(मजमउ़ज़्ज़वाइद-7/164-ह०-11326)
(सवाइकुल मुहर्रिका-570)

➡ इमाम तबरानी ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत नक़्ल की है कि जब ये आयते मुबारका ''ऐ महबूब आप फ़रमां दें कि मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक़्) का कुछ सिला नहीं चाहता सिवाय अहले क़राबत की मुहब्बत के'' नाज़िल हुई तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आपके क़राबत दार कौन हैं कि जिनकी मुहब्बत हम पर फ़र्ज़ है तो आप सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत मौला अ़ली ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) ये मेरे क़राबत दार हैं पस इनसे मुहब्बत करो।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/39-ह०-2641)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/311-ह०-2775)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/190-ह०-14982)
(मजमउज़्ज़वाइद–7/164-ह०-11326)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/403-ह०-1141)

अहले बैत की शान बा जुबाने कुरान

एक मर्तबा हसनैन करीमैन बीमार हो गये और अ़लालत (बीमारी) के बाइस (हसनैन करीमैन) कमज़ोर हो गये और उनके चेहरे मुरझा गये हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि मेरे दोनो बेटे सेहतमंद हो जायें तो मैं बतौर शुक्राना तीन रोज़े रखूँगा और ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) व हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम व आपकी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने भी यही कहा इस तरह तीन रोज़ों की मन्नत मान ली फिर जब हसनैन करीमैन सेहतमंद हो गये तो मन्नत (नज़र) पूरी करने के लिये पाँच अफ़राद हज़रत मौला अ़ली सय्यदा फ़ातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और आपकी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा ने तीन दिन के रोज़ों का क़सद किया ताकि मन्नत (नज़र) पूरी हो जाये।

जब इन पाँच अफ़राद ने पहले दिन रोज़ा रखा तो घर में खाने को कुछ भी न था हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने एक यहूदी से तीन साअ़ जौ

उधार ले ली फिर घर पर लाये ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) ने उसमें से एक साअ़ जौ को पीसा और इफ़्तार के लिये रोटियाँ पकाईं और शाम को इफ़्तार के वक़्त पाँचों अफ़राद ने रोटियाँ व नमक अपने सामने रखा कि ऐ़न इफ़्तार के वक़्त एक मिस्कीन दरवाज़े पर आया और आवाज़ दी या अहलल बैति अल्लाह की क़सम मैं भूका हूँ मुझे खाना खिलाओ अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें जन्नत के दस्तर ख़्वान से खिलायेगा हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और फ़िज़्ज़ा जो कि अबरार (नेकोकार, परहेज़गार लोग) थे उन्होंने वो सारी रोटियाँ मिस्कीन को दे दी और खुद पानी से इफ़्तार किया और दिन रात भूके रहे उस दिन उन्होंने ख़ालिस पानी के सिवा कुछ भी न खाया

और दूसरे दिन फिर रोज़ा रख लिया और फिर एक साअ़ जौ की रोटियाँ पकाई गईं लेकिन दूसरे दिन भी यही कैफ़ियत रही कि ऐ़न इफ़्तार के वक़्त दर'वाज़े पर एक यतीम ने दस्तक दी और उसने कहा मैं यतीम हूँ और भूका हूँ मुझे खाना खिलाओ अबरार ने सारी रोटियाँ यतीम को दे दीं और पाँचों अफ़राद ने पानी से इफ़्तार किया और फिर तीसरे दिन का रोज़ा रख लिया तीसरे दिन भी यही कैफ़ियत रही कि ऐ़न वक़्ते इफ़्तार एक क़ैदी ने दर'वाज़े पर आवाज़ लगाई ऐ अहले बैत मैं असीर (क़ैदी) हूँ और भूका हूँ मुझे खाना खिलाओ और अबरार ने सारी रोटियाँ उस क़ैदी को दे दीं और खुद पानी से इफ़्तार किया।

इन पाँच अफ़राद हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम)

और फ़िज़्ज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को अल्लाह तआ़ला ने अबरार के लक़ब से याद फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला को इन पाँच अफ़राद का तीन दिन का ये अम्र इतना पसन्द आया कि अल्लाह तआ़ला ने जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) को भेजा और फ़रमाया कि तीन दिन की रोटियों का सद्क़ा मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को दे देना और खुद पानी से इफ़्तार करने का बदला और इनाम ये है कि मैने उन्हें जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतों का मालिक व वारिस बना दिया और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सूरह दहर की आयात इन पाँच अफ़राद के हक़ में नाज़िल फ़रमाई–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक नेक लोग मुख़लिस इताअ़त गुज़ार (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पियेगें जिसमें (खुश्बू, रंगत और लज़्ज़त बढ़ाने के लिये) काफूर की मिलावट होगी काफूर जन्नत का एक चश्मा है जिससे (ख़ास) बन्दे पिया करेंगे और जहाँ चाहेंगे उसे छोटी–छोटी नहरों की शक्ल में दूसरों को पिलाने के लिये बहा कर ले जाया करेंगे ये अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे है जो उस दिन से डरते है कि जिसकी सख़्ती खूब फैल जाने वाली है और (अपना) खाना अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में मुहताज व यतीम और क़ैदी को खिला देते हैं और कहते हैं कि हम तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये खिला रहे हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रहता है जो (चेहरों को) निहायत सियाह (और) बदनुमा कर देने वाला है पस अल्लाह तआ़ला उन्हें (ख़ौफ़े इलाही के सबब) उस दिन की सख़्ती से बचा लेगा व उन्हें रौनक़ व ताज़गी और (दिलों में) मसर्रत (खुशी) बख़्शेगा इस बात के–

बदले कि उन्होंने सब्र किया तो उन्हें (रहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता फ़रमायेगा ये लोग उसमें तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे न वहाँ धूप की तपिश पायेंगे न सर्दी की शिद्दत और (जन्नत के दरख़्तों के) साये उन पर झुक रहे होंगे और उन मेवों के गुच्छे झुक कर उन पर लटक रहें होंगे और (खुद्दाम) उनके गिर्द चाँदी के बर्तन और (साफ़ सुथरे) शीशे के गिलास लिये फिरते होंगे शीशे भी चाँदी के बने हुये होंगे जिन्हें उन्होंने (हर एक की तलब के मुताबिक) ठीक ठीक अंदाज़े से भरा होगा और उन्हें वहाँ (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पिलाये जायेंगे जिसमें ज़न्जबील की आमेज़िश होगी ज़न्जबील उस (जन्नत) में एक चश्मा है जिसका नाम सलसबील है और उनके इर्द गिर्द ख़िदमत गुज़ार लड़के हमेशा घूमते रहेंगे जो हमेशा उसी हाल में रहेंगे और जब वो उन्हें देखेंगे तो वो बिखरे हुये मोती गुमान करेंगे और जब वो (बहिश्त पर) नज़र डालेंगे तो वहाँ (कसरत से) नेअ़मतें और (हर तरफ़) बड़ी सल्तनत देखेंगे और उन (के जिस्मों) पर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंघन पहनाये जायेंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलायेगा बेशक ये तुम्हारा सिला होगा व तुम्हारी मेहनत मक़बूल हो चुकी। (सूरह–दहर–76/5 ता 22)

इमाम जलालुद्दीन सयूती दुर्रे मन्सूर में रक़म तराज़ हैं कि मज़कूरा आयात पंज अफ़राद हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और फ़िज़्ज़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के हक़ में नाज़िल हुई।
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–6/823)
(तफ़्सीर कुरतबी–10/139)

अल्लाह तआ़ाला ने तीन दिन की रोटियों की कुर्बानी की जज़ा जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतों का मालिक व वारिस बना दिया जो हर एक को मयस्सर न होगी तो अब ज़रा सोचो और अंदाज़ा करो कि करबला में दस दिन की कुर्बानियों की जज़ा और ख़ानबादा-ए-रसूल के सब्र व तहम्मुल और मक़ामे रिज़ा पर इस्तिक़ामत की जज़ा क्या होगी बेटे अ़ली अक्बर और अ़ली असग़र की कुर्बानी की जज़ा क्या होगी तीन दिन की शिदद्ते भूक प्यास और जिस्मे अक़दस पर नेज़ों और तलवारों की बेशुमार ज़रबें और तीरों से खाये ज़ख़्मों की जज़ा क्या होगी

भाई अ़ब्बास और भतीजे क़ासिम और भाँजे औन व मुहम्मद की कुर्बानी की जज़ा क्या होगी और कसीर मसाइबो आलाम व इन्तिहाई तकलीफ़ों की जज़ा क्या होगी अल्लाह तआ़ाला ने ज़िक्रे हुसैन और ज़िक्रे कर्बला को बुलन्द और क़ायम व दायम कर दिया ज़िक्रे हुसैन सिर्फ़ ज़मीन पर ही नहीं बल्कि आसमानों पर भी मुनअ़क़िद होता है और क़यामत तक ज़मीनो आसमान पर ज़िक्रे हुसैन और ज़िक्रे करबला होता रहेगा करबला से पहले हुसैन ज़ाकिर थे और करबला के बाद हज़रत हुसैन मज़कूर हो गये और अर्श ता फर्श मजलिसे ज़िक्रे शहादतैन मुनअ़क़िद होती रहेगी।

-: आयते मुबाहला :-

एक बार नजरान से साठ ईसाई पादरियों का वफ़द हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुआ तो उनमें से दो लोगों ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से

गुफ़्तगू की तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उनसे फ़रमाया कि तुम इस्लाम कुबूल कर लो तो उन्होंने जवाब दिया कि हम आपसे पहले इस्लाम कुबूल कर चुके तो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन चीज़े तुम्हें इस्लाम लाने से रोकती हैं- 1-तुम्हारा सलीब की इ़बादत करना 2- खिंजीर खाना व शराब पीना 3- तुम्हारा ये एतक़ाद (अ़क़ीदा) रखना कि ईसा (अ़लैहिस्सलाम) खुदा के बेटे हैं उन ईसाई जमाअ़त के एक सरदार ने कहा क्या तुम ये गुमान रखते हो कि ईसा (अ़लैहिस्सलाम) अल्लाह के बन्दे हैं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ वो रुहुल्लाह हैं और अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं

तो उनका एक सरदार बोला तो हमें कोई ऐसा बन्दा दिखाओ जो मुर्दों को ज़िन्दा करता हो मादरज़ाद अन्धों को बीनाई देता हो मिट्टी से परिन्दे की शक्ल बनाकर उसमें फूँक मारता तो वो उड़ने लगता हो क्या आप हमारे साथ मुबाहला (वाकयुद्ध, बद्दुआ़) करते हैं कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ऐसे न थे और जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लाअ़नत हो और वो तबाह व बर्बाद हो जाये फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम यही चाहते हो उन्होंने कहा हाँ तो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जैसी तुम्हारी मर्ज़ी फिर अल्लाह तआ़ाला ने आयते मुबाहला नाज़िल फ़रमाई और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन ईसाई पादरियों को मुबाहला की दाअ़वत दी।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

पस आपके पास इ़ल्म आ जाने के बाद जो शख़्स ईसा

अ़लैहिस्सलाम के मुआ़मले में आपसे झगड़ा करते हैं तो आप फ़रमाँ दें कि आ जाओ हम (मिलकर) अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपने आपको और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं फिर हम मुबाहला करते हैं और झूठों पर अल्लाह की लाअ़नत भेजते हैं।
(सूरह–आले इमरान–3/61)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/488-ह०-1374)

फिर दूसरे दिन सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली, ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपने साथ लिया और नसरानियों से मुबाहला करने के लिये तशरीफ़ ले गये और अपने अहले बैत (हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) से फ़रमाया कि जब मैं दुआ़ करूँ तो तुम सब आमीन कहना उस वक़्त हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन आप के साथ थे और हज़रत मौला अ़ली व सय्यदा फ़ातिमा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पीछे थे।

➡ हज़रत शअ़बी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अह्ले नजरान के साथ मुबाहला करने का इरादा फ़रमाया तो हसनैन करीमैन का हाथ पकड़ कर अपने साथ ले लिया और सय्यदा फ़ातिमा आपके पीछे चल रहीं थीं। (इब्ने अबी शैबा–7/426-ह०-37014)
(इब्ने अबी शैबा–11/466-ह०-38169)

उन ईसाइयों में से एक शख़्स जिसका नाम अ़ब्दुल

मसीह था वो बोला कि ऐ ईसाइयो तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) सच्चे रसूल हैं अगर तुमने इनसे मुबाहला किया तो तुम सब हलाक हो जाओगे इसलिये मुबाहला से इन्कार कर दो और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुलह कर लो और ये तो वो ही रसूल हैं जिनकी ख़बर व जिनका ज़िक्र तौरात में है अल्लाह की क़सम अगर तुम उन्हें लाअ़नत व मलामत करोगे तो हम सब हलाक हो जायेंगे और न हम कामयाब होंगे और न हमारे बाद वाले और रुये ज़मीन पर कोई भी नसरानी बाक़ी न रहेगा और न ही हमारा बाल बाक़ी रहेगा और न हमारा नाखून बाक़ी रहेगा और फिर उन ईसाई पादिरियों के सरदारों में से कुछ लोगों ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि हमारे बेवकूफ़ों ने आपसे मुबाहला करने की बात की थी हमारी आपसे ये गुज़ारिश है कि आप हमें मुआ़फ़ फ़रमां दें फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया।

इमाम जलालुद्दीन सयूती ने मज़कूरा आयात की तफ़सीर में एक रिवायत नक़ल की है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ज़ाबे इलाही अह्ले नजरान पर क़रीब आ चुका था अगर वो मुबाहला करते तो उनका ख़ात्मा हो जाता। (दुर्रे मन्सूर–2/111)

एक दूसरी रिवायत में है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे पास एक फ़रिश्ता आया था व जिसने मुझे ये ख़बर दी

कि अगर वो मुबाहला करते तो अहले नजरान हलाक हो जाते।

➡ एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है बेशक अ़ज़ाबे इलाही अह्ले नजरान के क़रीब आ चुका था अगर वो मुबाहला करते तो उन्हें बन्दरों व खिंजीरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया जाता और वादी आग से भर जाती और अल्लाह तआ़ाला नजरान और उसके बाशिंदों की जड़ें उखेड़ लेता यहाँ तक कि दरख़्तों पर परिन्दा भी न बचता। (तफ़्सीर मज़हरी–2/78)
(तफ़्सीर नईमी–3/477)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात जिसने मुझे हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया अगर वो मुबाहला करते तो उन पर वादी आग से भर जाती हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि आयते मुबाहला पंजतन पाक रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम के बारे में नाज़िल हुई और इस आयत में अन्फुसाना से मुराद हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम व हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम हैं और अब्नाअना से मुराद इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) हैं और निसाअना से मुराद सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) हैं।
(दुर्रे मन्सूर–2/109)

इमाम मुस्लिम, तिर्मिज़ी, हाकिम और बैहक़ी ने हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत नक़ल की है जब ये आयते मुबाहला (कुल तआ़लौ नदऊ़ अब्नाअना व अब्नाअकुम व निसाअना व निसाअकुम व अन्फुसाना व अन्फुसाकुम) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली व सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया और फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह ये मेरे अहले बैत हैं।

(मुस्लिम–सहीह–4/559-ह०-6220)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/609-ह०-2999)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1077-ह०-3724)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/296-ह०-4719)
(मुस्नद अहमद–1/641-ह०-1608)
(मुस्नद अहमद–2/277-ह०-1608)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा–1/61)
(तफ़्सीर नईमी–2/77)
(दुर्रे मन्सूर–2/111)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नजरान से एक वफ़्द हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुआ और पूछा कि हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में आपकी क्या राय है तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो रुहुल्लाह और अल्लाह के बन्दे व रसूल हैं उस वफ़्द ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से कहा कि क्या आप हमारे साथ मुबाहला करते हैं कि हज़रत ईसा–

(अ़लैहिस्सलाम) ऐसे न थे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जैसे तुम्हारी मर्ज़ी (तब आयते मुबाहला नाज़िल हुई) और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) घर तशरीफ़ लाये और अपने बेटों हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) व हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा अ़लैहिमस्सलाम को साथ ले जाने के लिये जमाअ़ किया उन ईसाइयों के एक सरदार ने उन नसरानियों से कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुबाहला मत करो अल्लाह की क़सम कि अगर तुमने ऐसा किया तो फिर तुम्हारा कोई भी आदमी नहीं बचेगा फिर वो ईसाई हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के पास आये और फिर कहा कि हमारे कुछ बेवक़ूफ़ लोगों ने आपसे मुबाहला का इरादा किया था हम आपसे गुज़ारिश करते हैं आप हमें मुआ़फ़ फ़रमां दें फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/746-ह०-4157)

–: अक़सामे अहले बैत :–

अहले बैत की तीन क़िस्में हैं–
1- सकनी–यानी घर में क़याम करने वाले यानी हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की तमाम अज़वाजे मुताह्रात।

2- निस्बती व नस्ली– यानी जिन से हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का निस्बती व नस्ली तआ़ल्लुक़ है यानी हज़रत मौला अ़ली

ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) वग़ैराह।

3–एअ़ज़ाज़ी– यानी वो हस्तियाँ जिनको हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने बतौर एअ़ज़ाज़ अपने अहले बैत में शामिल किया–जैसे–हज़रत सलमान फारसी (रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) वग़ैराह।

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तमाम अज़वाजे मुतहरात तो आपके निकाह में आने के बाद आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की अहले बैत में शामिल हुईं उन तमाम को अल्लाह तआ़ाला ने अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के अहले बैत में शामिल किया और हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने अहले बैत में शामिल किया और उनसे जो सिलसिला–ए–नसब चला वो सब आले रसूल आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के अहले बैत में शामिल हैं और आले रसूल की मुहब्बत राहे ख़ुदा है और इस राह पर चलने वाला कभी गुमराह नहीं होता हत्ता कि वो रज़ाए इलाही के बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाता है और अल्लाह तबारक तआ़ाला की ख़ुशनूदी उसका हासिल मुक़ाम होता है और वो अज्रे अ़ज़ीम का मुस्तहिक़ हो जाता है।

अल्लाहुम्मा हा उलाई आहलुल बैति (ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

अल्लाह तआ़ला तो यही चाहता है कि ऐ नबी के घर वालो तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत (पाकीज़गी) से नवाज़ कर बिल्कुल पाको साफ़ व खूब सुथरा कर दे (सू०–अहज़ाब–33/33)

(यानी हर वो काम जो ख़िलाफ़ शरअ़ और बारगाहे खुदावन्दी में ना पसंदीदा हैं और हर तरह की बुराई व शर और गुनाह से अल्लाह तआ़ला ने अहले बैत को पाक व महफूज़ रखा)

➡ हज़रत इमाम जलालुद्दीन सयूती ने इस आयते करीमा की तफ़्सीर में हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत नक़ल की है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत उम्मे सलमा के घर में थे और आप पर ख़ैबर की बनी हुई चादर थी और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई कि अल्लाह तो यही चाहता है कि ''ऐ नबी के घर वालो तुम से हर तरह की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत (पाकीज़गी) से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ़ व खूब सुथरा कर दे'' तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया और अपनी चादर मुबारक से ढाँप लिया और बारगाहे खुदावन्दी में अ़र्ज़ किया ऐ

अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत (घर वाले) हैं इनसे हर तरह की रिज्स (नापाकी, पलीदी) को दूर फ़रमां दे और इन्हें पाकीज़ा बना दे ये कलिमात आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने तीन दफ़ा दोहराए फिर हज़रत उम्मे सलमा ने कहा कि मैंने अपना सर उस चादर के अन्दर किया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं भी इनके साथ हूँ तो हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं लेकिन तुम ख़ैर की जानिब हो ये बात आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दो बार इरशाद फ़रमाई।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/291-ह०-4708)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/49-ह०-2668,2669)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/683-ह०-7614)
(मिश्कात–3/547-ह०-6135)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/157-ह०-6976)
(दुर्रे मन्सूर–5/562)
(तफ़्सीर इब्ने कसीर–22/672)

➡ एक दूसरी रिवायत में इमाम तबरानी ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत नक़ल की है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा से फ़रमाया कि अपने दोंनो बेटों व ख़ाबिन्द को ले आओ तो आप उन सब को ले आयीं फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन को अपनी गोद मुबारक में बिठाया और हज़रत मौला अ़ली को दाँयी जानिब और सय्यदा फ़ातिमा को वाँयी जानिब बिठाया और फिर हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने इन सब पर अपनी चादर

मुबारक डाल दी फिर आपने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं इन पर अपनी रहमतें व बरकतें उसी तरह नाज़िल फ़रमां जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर रहमतें व बरकतें नाज़िल फ़रमाईं और इनसे पलीदी दूर फ़रमां दे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने कहा कि मैंने चादर ऊपर उठाई ताकि मैं भी उसमें दाख़िल हो जाऊँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने चादर को मेरे हाथों से खींच लिया और फ़रमाया कि तुम मेरी बीवी हो और तुम ख़ैर व भलाई पर हो।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1106-ह०-3787)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/321-ह०-2598,2600,2602)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/460-ह०-1332)
(कंजुल उ़म्माल–7/295-ह०-37629)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/610)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/56)
(दुर्रे मन्सूर–5/563)

➡ हज़रत अबू सई़द खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि ये आयत पाँच अफ़राद (पंजतन पाक) के बारे में नाज़िल हुई यानी मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) व हज़रत मौला अ़ली सय्यदा फ़ातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/326-ह०-2607)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/711-ह०-3456)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/505-ह०-866)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/328-ह०-994)
(तफ़्सीर तबरी–22/10)
(दुर्रे मन्सूर–5/563)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) के घर में जब ये आयते करीमा ‘‘अल्लाह तो यही चाहता है कि ऐ नबी (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के घर वालो तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे... नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन को बुलाकर चादर उड़ाई फिर दुआ़ा की ऐ अल्लाह ये मेरे अहले बैत हैं इनसे हर तरह की नापाकी को दूर फ़रमां दे और इन्हें खूब पाक साफ़ व सुथरा कर दे हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि-अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं भी इनके साथ हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी जगह पर हो और ख़ैर की जानिब हो।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1142-ह०-3871)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/289-ह०-4705)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/49-ह०-2668)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/320-ह०-2596,2597)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/492-ह०-846)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/534)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है आप फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) एक चादर ओढ़े हुये थे जिस पर सियाह ऊन से कजाबों की सूरतें बनी हुई थीं इतने में हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) आये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने उनको चादर के अन्दर कर लिया फिर हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम आये उनको भी चादर के अन्दर कर लिया और फिर ख़ातूने

जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) आयीं तो उनको भी चादर के अन्दर कर लिया फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) आये उनको भी चादर के अन्दर कर लिया फिर ये आयते करीमा पढ़ी 'अल्लाह तो यही चाहता है ऐ अहले बैत तुम से हर तरह की आलूदगी दूर कर दे और तुमको तहारत से नवाज़ दे' और फिर फ़रमाया कि ये लोग मेरे अह्ले बैत हैं और मेरे अह्ले बैत ही ज़्यादा हक़दार हैं।

(मुस्लिम–सहीह–4/578-ह०-6261)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/290-ह०-4707,4708)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/323-ह०-978)
(इब्ने अबी शैबा–9/513-ह०-32765)
(मिश्कात–3/547-ह०-6136)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/139-ह०-2260)

➡ हज़रत इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जाअ़फ़र अपने वालिद का बयान नक़ल करते हैं कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जब रहमते इलाही के नुज़ूल को महसूस किया तो आपने फ़रमाया मेरे अह्ले बैत को बुलाओ पस हज़रत मौला अ़ली ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया गया फिर आपने उन पर अपनी चादर मुबारक डाल दी और फिर अपने मुबारक हाथों को बुलन्द किया और फ़रमाया ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं तो ऐ अल्लाह तू मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमतें नाज़िल फ़रमां तो अल्लाह तआ़ला ने ये आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई ''अल्लाह तआ़ला तो यही चाहता है कि ऐ नबी के घर वालो तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत (पाकीज़गी) से नवाज़ कर बिल्कुल पाक

साफ़ व खूब सुथरा कर दे। (सूरह–अहज़ाब–33/33)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/291-ह०-4709)

➡ हज़रत उ़मर जो रबीब हैं हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के आप फ़रमाते हैं जब उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के घर हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर ये आयत उतरी अल्लाह तआ़ला तो यही चाहता है कि ऐ नबी के घर वालो तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत (पाकीज़गी) से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ़ व खूब सुथरा कर दे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपनी कमली में ढांप लिया और फिर आपने फ़रमाया ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं इनसे हर तरह की नापाकी दूर फ़रमां दे और इन्हें खूब पाक साफ़ व सुथरा कर दे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं भी इनके साथ हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम अपनी जगह पर रहो और तुम बेहतर मक़ाम पर फ़ाइज़ हो। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/768-ह०-3205)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/400-ह०-3558)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/296-ह०-4719)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/46-ह०-2662,2663)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–23/308-ह०-696)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/117-ह०-3799)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/348-ह०-994)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/55)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/669)

मनाक़िबे अहले बैत
-: अहादीस की रोशनी में :-

मुहिब्बाने अहले बैत कभी गुमराह न होंगे

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म और हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं तुममें दो ऐसी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम लोग इनको मज़बूती से थामे रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और अगर एक को भी छोड़ दिया तो यक़ीनन गुमराह हो जाओगे इनमें से एक दूसरे से बड़ी अ़ज़मत वाली हैं एक अल्लाह तआ़ला की किताब कुरान जो आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है इसमें हिदायत व नूर है तो अल्लाह तआ़ला की किताब कुरान को मज़बूती से थामे रहो और दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत हैं मैं तुमको अहले बैत के बाब में खुदा की याद दिलाता हूँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अह्ले बैत की निस्बत ये जुमला तीन बार इरशाद फ़रमाया और कुरान व अहले बैत कभी आपस में जुदा न होंगे हत्ता कि ये दोनों हौज़े कौसर पर मेरे पास इकट्ठे आयेंगे और जो भी इनकी पैर'वी करेगा तो वो हिदायत पर होगा और जो इनको छोड़ देगा वो यक़ीनन गुमराह हो जायेगा।

(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1105-ह०-3785,3788)
(मुस्लिम-सहीह-6/93-ह०-6225,6227)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/226-ह०-4576)
(मिश्कात-3/549-ह०-6140)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/343-ह०-2612)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/63-ह०-2680)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/505-ह०-867)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/704-ह०-3439)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/327-ह०-990)
(मुस्नद अहमद–8/399-ह०-19479)
(मुस्नद अहमद–1/1370-ह०-19265)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/182-ह०-14957)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/284-ह०-123)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144ह०-79)
(कंज़ुल उ़म्माल–1/259-ह०-1657)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/58-ह०-36340)

वज़ाहतः– मज़कूरा हदीस में ये बात क़ाबिले तवज्जो है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने कुरान मजीद का ज़िक्र एक बार फ़रमाया लेकिन अह्ले बैत का ज़िक्र तीन बार फ़रमाया इसमें हिकमते मुस्तफ़ा ये थी कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब में ये बात थी कि मेरे बाद कुछ लोग मेरी उम्मत के दिलों से अहले बैत की मुहब्बत व अ़क़ीदत को मिटाने का काम करेंगे और अहले बैत से एतक़ादी व मुहब्बती तअ़ाल्लुक़ को मुनक़ताअ़ करने के काम को बखूबी अंजाम देंगे आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की निगाहे नबूवत ये देख रही थी कि मेरी उम्मत के बाअ़ज़ लोग मेरे अहले बैत से बुग्ज़ व अ़दावत और दिलों में निफ़ाक़ व कीना रखेंगे इसलिये एक ही मुक़ाम पर दोनो चीज़ों (कुरान व अह्ले बैत) का ज़िक्र किया मगर कुरान का ज़िक्र एक बार और अह्ले बैत अत्हार का ज़िक्र तीन बार फ़रमाया।

और आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इ़ल्म में ये बात थी कि कुरान अल्लाह का कलाम है जो नूर व राहे हिदायत है और लोग इसे अल्लाह का कलाम ही जानेंगे और इस पर इख़्तिलाफ़ व इन्कार का फ़ित्ना न होगा मगर मेरे अहले बैत अत्हार के मुताअ़ल्लिक़ मेरी उम्मत के लोग इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार और बुग्ज़ व अ़दावत का फ़ित्ना खड़ा करेंगे ताकि लोग गुमराह हो जायें और इस फ़ित्ने की इब्तिदा जंगे सिफ़्फ़ीन में हुई फिर कूफ़ा में फिर मारका-ए-करबला बपा हुआ व दीगर मक़ामात पर भी फ़ित्ने उठे।

और आज यही काम ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोग भी बखूबी अंजाम दे रहे हैं कि किसी तरह से ताज़ियादारी ख़त्म हो जाये और आने वाले वक़्त में लोग भूल जायें कि मारका-ए-करबला क्या था और इमाम हुसैन कौन थे और लोगों के दिलों से अहले बैत अत्हार की मुहब्बत मिट जाये और लोग गुमराह हो जायें लेकिन इन लोगों की ये कोशिश व ख़्वाहिश इंशा अल्लाह कभी कामयाब न होगी और न कभी तकमील को पहुँचेगी क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता इसलिये हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपनी उम्मत को गुमराही से बचाने के लिये अहले बैत अत्हार की मुहब्बत को अपनी उम्मत पर वाजिब करते हुये ये ताकीद फ़रमाई कि मेरे अहले बैत की मुहब्बत का दामन पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और अगर अहले बैत की मुहब्बत का दामन छोड़ दिया तो यक़ीनन गुमराह हो जाओगे।

सिवाय पंजतन पाक के हालते जनाबत मस्जिद में दाख़िल होना जाइज़ नहीं

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ख़बरदार ये मस्जिदे नबवी किसी जुनबी और हाइज़ा औ़रत के लिये हलाल नहीं सिवाये मेरे (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली व सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) के इनके अलावा किसी के लिये मस्जिद नबवी में जनाबत नापाकी व हालते हैज़ में आना जाना जाइज़ नहीं है।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/166)
(कंजुल उ़म्माल–6/403-ह०-34181,34182)

रसूलुल्लाह के सिवा हर रिश्ता व नसब मुनक़ताअ़ हो जायेगा

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे रिश्ते और नसब के सिवा क़यामत के दिन हर रिश्ता और नसब मुनक़ताअ़ हो जायेगा। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/281-ह०-4684)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/309-ह०-2568,2569)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/36-ह०-2633,2634)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/345-ह०-5606,6602,6609)
(मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/239-ह०-15203)
(मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/197-ह०-15019)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/376-ह०-1069)

(अहमद बिन हम्बल– फ़ज़ाइले सहाबा–1/480-ह०-1347)
(मुस्नद बज़्ज़ार–1/397-ह०-274)
(अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़–अल मुस्नद–6/163-ह०-10354)
(देलमी–अल फ़िरदौस–2/170-ह०-4755)

अहले बैत जन्नतुल फ़िरदौस में सफ़ेद गुम्बद में मुक़ीम होंगे

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक हज़रत अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) जन्नतुल फ़िरदौस में सफेद गुम्बद में मुक़ीम होंगे जिसकी छत अ़र्शे इलाही होगी।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/401-ह०-34167,34177)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/197-ह०-15022)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/61)

रसूलुल्लाह की दुआ़ ऐ अल्लाह मेरे अहले बैत से राज़ी हो जा

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि वो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाह में हाज़िर हुये उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने चादर बिछाई हुई थी पस उस पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हज़रत अ़ली व सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) बैठ गये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उस चादर को उन पर डाल दिया और उस चादर–

के किनारे को पकड़कर कर उसमें गिरह लगा दी और फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह तू भी इनसे राज़ी होजा जिस तरह मैं इनसे राज़ी हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/303-ह०-5514)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/191-ह०-14988)

रसूलुल्लाह की अहले बैत से इंतिहाई मुहब्बत

➡ हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा बयान करती हैं कि एक दिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरे घर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि ख़ादिम ने अ़र्ज़ किया कि दर'वाज़े पर हज़रत अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आये हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हुक्म फ़रमाया कि एक तरफ़ हो जाओ और मुझे अपने अहले बैत से मिलने दो हज़रत उम्मे सलमा फ़रमातीं हैं कि मैं पास ही घर मैं एक तरफ़ हटकर खड़ी हो गयी पस हज़रत मौला अ़ली, ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) दाख़िल हुये उस वक़्त हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) कमसिन उम्र थे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने दोनो बच्चों यानी हसन व हुसैन को पकड़कर गोद में बिठा लिया और दोनों को चूमने लगे।
(मुस्नद अहमद–6/296-ह०–26582)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/187-ह०-14969)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा–1/56)

-: तमाम मुहिब्बाने अहले बैत जन्नती हैं :-

अल्लाह तअ़ाला और उसके महबूब हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हम तमाम मुसलमानों को अह्ले बैत अत्हार की मुहब्बत व इताअ़त पर मुतइयन फ़रमां दिया रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सुन्नतों और सूरतो सीरत का मुकम्मल व आअ़ला और बेहतरीन नमूना अह्ले बैत अत्हार हैं हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की सुन्नतों व सीरत का चमकता हुआ रौशन नूरानी माहताब अह्ले बैत अत्हार हैं पस हमें चाहिये कि इस माहताब की नूरानी किरन से अपने दिलों को अहले बैत की इन्तिहाई मुहब्बत व अ़क़ीदत से मुनव्वर करें ताकि हमें अल्लाह व रसूल की कुर्बत नसीब हो और अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन हमें अपने मुक़र्रब व मख़सूस बन्दों की जमाअ़त में जगह अ़ता फ़रमाये।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हसनैन करीमैन का हाथ पकड़कर फ़रमाया जो कोई मुझसे और इन दोनों इमाम हसन व इमाम हुसैन से और इनके माँ बाप सय्यदा फ़ातिमा व हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिमुस्सलाम) से मुहब्बत करेगा वो रोज़े क़यामत मेरे साथ मेरे दर्जे में होगा (यानी मेरे ही ठिकाने पर होगा)

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1082-ह०-3733)

(मुस्नद अहमद–1/412-ह०-576)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/316-ह०-2588)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/43-ह०-2654)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/525-ह०-900)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/395-ह०-1185)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/467)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/214)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/196)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/178)
(कंजुल उ़म्माल–6/401-ह०-34161)
(कंजुल उ़म्माल–7/293-ह०-37613)

हर इ़बादत मेहनत व मशक़्क़त पर मुश्तमिल होती है लेकिन अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और अहले बैत की दिलों में मुहब्बत बिला मेहनत व मशक़्क़त के हासिल होती है सिर्फ़ हुस्ने अ़क़ीदा होना लाज़िमी है और इस मुहब्बत की जज़ा व इनआ़म जैसा कि मज़कूरा हदीस पाक में है यानी क़यामत के दिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की नज़दीकी और उनका साथ बाइसे निजात और कुर्बते इलाही का हासिल होना है अ़मल थोड़ा है और अज्र बेशुमार है।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मरवी है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं दरख़्त हूँ फ़ातिमा उसकी टहनी है और अ़ली उसका शगूफ़ा है और हसन व हुसैन उसके फल हैं और अहले बैत से मुहब्बत करने वाले उसके पत्ते हैं और ये सब जन्नत में होंगे ये हक़ है ये हक़ है (हाकिम––4/313-ह०-4755)(अल फ़िरदौस–1/18-ह०-135)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/168)

अहले बैत अत्हार से मुहब्बत दरअस्ल महबूबे खुदा सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से निसबती तआ़ल्लुक़ की बुनियाद है और मुहिब्बाने अहले बैत के लिये ये बड़े फ़ख़्र का मक़ाम है कि अहले बैत की मुहब्बत के सबब मुहिब्बाने अहले बैत की हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से बातिनी वाबस्तगी उनका मुक़द्दर बन जाती है जो उन्हें जन्नत के आअ़ला दरजात से सरफ़राज़ करती है और अ़ज़ाबे नार से तहफ़्फ़ुज़ देती है और बाद मौत तमाम पुर ख़ौफ़ मक़ामात पर मुहब्बते अहले बैत उनके लिये फ़ायदेमंद और मददगार होगी जैसा कि फ़रमाने रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) है–

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे अहले बैत की मुहब्बत सात पुर ख़ौफ़ मक़ामात पर नफ़ा (फ़ायदा) पहुँचायेगी 1–मौत के वक़्त 2–क़ब्र में 3–क़ब्र से उठने के वक़्त 4–नामा–ए –आअ़माल हाथ में दिये जाने के वक़्त 5–और हिसाब के वक़्त 6–मीज़ान पर 7–पुलसिरात के वक़्त।
(हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी–सफ़ा–12)

वज़ाहतः–

1–मौत के वक़्तः– जिस वक़्त गुनाहगार बन्दे की रुह क़ब्ज़ की जाती है तो फ़रिश्ते उसे हथोड़े से मारते हैं और उसकी रुह निहायत सख़्त तकलीफ़ के साथ जिस्म से खींची जाती है और रुह क़ब्ज़ होते वक़्त उसे इतनी सख़्त और दर्दनाक तकलीफ़ होती है जितनी तलवार के वार और कैंची के काटने पर भी नहीं होती तो मौत के वक़्त जब रुह खींची जायेगी उस वक़्त अहले बैत की–

मुहब्बत हमारे काम आयेगी और हमें फ़ायदा पहुँचायेगी और मौत के वक़्त वाक़ैअ़ होने वाली तमाम तकालीफ़ से निजात देगी और हमारी रुह बिला तकलीफ़ आसानी से क़ब्ज़ की जायेगी।

2–क़ब्र में:–मय्यत को क़ब्र में दफ़न करने के बाद जब उस पर उसके गुनाहों के सबब अ़ज़ाब मुसल्लत किया जाता है और उसके जिस्म को कीड़े मकोड़े, साँप और बिच्छू काटते नौचते और खाते हैं और उसको आग का अ़ज़ाब और दीगर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब उस पर मुसल्लत किये जाते हैं उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत तमाम मुहिब्बाने अहले बैत के काम आयेगी और उसे फ़ायदा देगी और अ़ज़ाब से निजात व राहत देगी।

3–क़ब्र से उठने के वक़्त:– रोज़े क़यामत जब सूर फूँका जायेगा तो लोग अपनी अपनी क़ब्रों से नंगे पाँव नंगे जिस्म उठेंगे और उनके दिल इतने ख़ौफ़ ज़दा होंगे कि शर्मगााहें खुली होने के बावजूद लोग क़यामत की हौलनाकियों और सख़्त मसाइबो आलाम के सबब एक दूसरे को देखने से बेनियाज़ रहेंगे उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत मददगार व नफ़ा बख़्श होगी।

4–नामा–ए–आअ़माल मिलने के वक़्त:– क़यामत के दिन जिसको उसका नामा–ए–आअ़माल दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वो खुशी–खुशी पलटेगा और जिसको उसका नामा–ए–आअ़माल बाँये हाथ में दिया जायेगा तो उसके लिये हलाकत होगी वो वक़्त बड़ा ही हौलनाक होगा उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत हमारी मददगार और फ़ायदे मंद साबित होगी।

5–हिसाब के वक़्त:– यानी अल्लाह तबारक व तआ़ला

क़यामत के दिन बन्दे से जब हर चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ हिसाब लेगा और इन्सान अपने रब के सामने ख़ौफ़ ज़दा खड़ा होगा और उसके तमाम आज़ा (अंग) ख़ौफ़ और डर के बाइस काँप रहे होंगे उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत काम आयेगी और रब तअ़ाला की रहमत उसकी निजात का बाइस बनेगी।

6–मीज़ान के वक़्तः– क़यामत के दिन जब इन्सान के आअ़माल तौले जायेंगे व मीज़ान (तराज़ू) क़ायम किया जायेगा और इन्सान के गुनाहों व नेकियों को एक–एक पलड़े में रख दिया जायेगा वो वक़्त निहायत ही ख़ौफ़ व दिल दहलाने वाला होगा और उसकी निगाहें टकटकी बाँधे हुये तराज़ू पर लगी होंगी कि कहीं हमारी नेकियाँ गुनाहों के मुक़ाबिले कम न पड़ जायें उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत फ़ायदेमंद और मददगार होगी।

7–पुलसिरात के वक़्तः– पुलसिरात जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगी जो जहन्नम के ऊपर बिछी होगी और इसके नीचे जहन्नम जो शोले मारती हुई दहक रही होगी और इस पर से हर एक को गुज़रना होगा और कुछ लोग फिसल फिसल कर जहन्नम में गिर रहे होंगे तो उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत मुहिब्बाने अहले बैत की मददगार होगी और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत पुल सिरात से बा आसानी और बिला तकलीफ़ो परेशानी तेज़ी से गुज़र जायेंगे।

मज़कूरा जुमला हौलनाक व ख़ौफ़नाक और दिल दहलाने वाले मक़ामात पर अहले बैत की मुहब्बत हम मुहिब्बाने अहले बैत के काम आयेगी और मददगार व नफ़ा बख़्श होगी अहले बैत की मुहब्बत अ़ज़ाबे इलाही

से महफ़ूज़ रहने और अल्लाह तआ़ाला की रहमत और रिज़ा और खुशनूदी हासिल करने व दोज़ख़ से आज़ादी का आसान व बेहतरीन ज़रिया है।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं इ़ल्म का तराजू हूँ अ़ली उसका पलड़ा है और हसन व हुसैन उसकी रस्सियाँ हैं फ़ातिमा उसका दस्ता है जिसके ज़रिये हमारे साथ मुहब्बत करने वालों और बुग्ज़ रखने वालों के आअ़माल तौले जायेंगे।
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/44-ह०-107)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया आले रसूल की माअ़रिफ़त दोज़ख़ से निजात है और आले रसूल की मुहब्बत पुलसिरात से गुज़रने में आसानी है और आले रसूल की विलायत का इक़रार अ़ज़ाबे इलाही से हिफ़ाज़त है।
(क़ाज़ी अ़याज़–अशशिफ़ा–2/54)

योमे क़यामत मैदाने महशर में चीख़ो पुकार का आ़लम होगा और लोग निहायत ही ख़ौफ़ व सख़्त परेशानियों व तकलीफ़ों से घिरे होंगे कुछ लोग अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे और कुछ हिसाबो किताब से गुज़र रहे होंगे और कुछ की जुबाने भूक व प्यास की शिद्दत के बाइस बाहर को खिंच रहीं होंगी और निहायत सख़्त गर्मी की शिद्दत के बाइस लोगों के दिमाग़ खौलते होंगे और पसीने ने उनके जिस्मों को लगाम डाल रखी होगी लोग क़यामत की हौलनाकियों व मुसीबतो तकालीफ़ में गिरफ़्तार काँप रहे होंगे व लोगों की योमे क़यामत होगी

और मुहिब्बाने अहले बैत के लिये योमे ज़ियाफ़त होगी अल्लाह तआ़ला जन्नत के दस्तर ख़्वान पर मुहिब्बाने अहले बैत को दाअ़वत खिलायेगा जैसा कि फ़रमाने रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) है-

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुझसे और अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) से मुहब्बत करते हैं वो क़यामत के दिन एक ही मुक़ाम पर जमाअ़ होंगे और हमारा खाना पीना भी इकट्ठा होगा हत्ता कि लोग हिसाबो किताब के बाअ़द जुदा जुदा कर दिये जायेंगे।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-3/32-ह०-2623)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/305-ह०-2557)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/198-ह०-15023)
(इब्ने असाकर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-13/227)
(कंजुल उ़म्माल-6/401-ह०-34156)

कोई भी शख़्स सिर्फ़ अपने नेक आअ़माल के बाइस जन्नत को नहीं पा सकता ख़्वाह उसके पास समुन्दर और पहाड़ों के बराबर नेक आअ़माल हों जब तक कि अल्लाह तआ़ला की रहमत उसे ढाँप न ले हदीस पाक में वारिद है कि रोज़े क़यामत इन्सान के आअ़माल के तीन दफ़्तर (रजिस्टर) होंगे एक उसकी नेकियों का दफ़्तर होगा दूसरा उसके गुनाह और बुराइयों का और तीसरा अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का दफ़्तर होगा और जब कोई नेकी लायी जायेगी तो उसके मुक़ाबले में नेअ़मत रख दी जायेगी यहाँ तक कि नेकियाँ नेअ़मतों में ख़त्म हो जायेंगी सिर्फ़ गुनाह और बुराइयाँ बाक़ी रह जायेंगी फिर अल्लाह तआ़ला को उन पर इख़्तियार है

चाहे तो अपनी रहमत से बख़्श दे या फिर अ़ज़ाब दे।
(मुस्लिम–सहीह–6/372-ह०-7113)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/130-ह०-4625)
(इब्ने अबी शैबा–10/518-ह०-35688)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/129-ह०-4621)

और अल्लाह तआ़ला की रहमत उसकी मुहब्बत के बग़ैर हासिल नहीं होगी और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की मुहब्बत के बग़ैर हासिल नहीं होगी और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की मुहब्बत अहले बैत अतहार की मुहब्बत के बग़ैर हासिल नहीं होगी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त व अहले बैत अत्हार के सदक़े व वसीले से ही हर शख़्स को जन्नत मिलेगी तो जो शख़्स जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों का तालिब व ख़्वाहिश मन्द हो तो उसे चाहिये कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल और अहले बैत अतहार की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ ले क्योंकि अल्लाह तआ़ला जन्नत का हक़ीक़ी मालिक है लेकिन अल्लाह तआ़ला ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) व अहले बैत अतहार को जन्नत का मालिको मुख़्तार बना दिया बग़ैर इनकी इनायत व नज़रे करम के कोई भी शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता।

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे अह्ले बैत की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ लो क्योंकि बेशक जो शख़्स इस हाल में अल्लाह तआ़ला से मिला कि वो मेरे अहले बैत को महबूब रखता था और मेरे अह्ले बैत से सच्ची मुहब्बत

करता था तो वो हमारी शफ़ाअ़त के वसीले से जन्नत में दाख़िल होगा उस ज़ात की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है किसी शख़्स को उसका अ़मल हमारे हक़ की माअ़रिफ़त हासिल किये बग़ैर फ़ायदा नहीं देगा। (तबरानी–मुअ़जम औसत–2/121-ह०-2230) (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/194-ह०-15007)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया चार शख़्स ऐसे हैं कि क़यामत के रोज़ जिनके लिये मैं शफ़ाअत करने वाला होऊँगा और वो ये हैं मेरी औलाद की इज़्ज़त व तकरीम करने वाला उनकी हाजात को पूरा करने वाला, उनके मुआ़मलात के लिये तग व दू (दौड़ धूप) करने वाला और दिल व जान से उनसे मुहब्बत करने वाला।
(कंजुल उ़म्माल–12/100-ह०-34180)

➡ नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के उन लोगों के लिये है जो मेरे अह्ले बैत से मुहब्बत करे।
(कंजुल उ़म्माल–6/403-ह०-34179)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझे बताया कि मेरे साथ सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले मैं (हज़रत मौला अ़ली) सय्यदा फ़ातिमा और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) हैं पस मैने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह हमसे मुहब्बत करने वाले कहाँ होंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारे पीछे होंगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/298-4723)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/475-ह०-943)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/169)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/214)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/401-ह०-34166,7/293-37614)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/518)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा से फ़रमाया ऐ फ़ातिमा मैं और तू और ये दोंनों हसनैन करीमैन और अ़ली रोज़े क़यामत एक ही जगह पर होंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/272-ह०-4664)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/405-ह०-1016)
(मुस्नद अहमद–1/510-ह०-792)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/197-ह०-15022)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/29-ह०-779)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/227)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/420-ह०-1183)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/292-ह०-37612)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आपको कौन ज़्यादा महबूब है आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़ातिमा मुझे ज़्यादा महबूब है और तुम मुझे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो और तुम मेरे साथ मेरे हौज़ पर होगे क़यामत के दिन मेरे हौज़ से लोग सैराब होंगे मेरे हौज़ पर सितारों की ताअ़दाद के बराबर बर्तन होंगे और मैं और तुम और

हसन व हुसैन और फ़ातिमा और अ़क़ील व जाअ़फ़र जन्नत में एक दूसरे के सामने होंगे और ऐ अ़ली तेरे चाहने वाले सब जन्नती हैं और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयत पढ़ी ''और हम वो सारी कदूरत बाहर खींच लेंगे जो दुनिया में उनके सीनों में थी वो (जन्नत में) भाई भाई बनकर आमने सामने बैठे होंगे'' (सू०-हिज्र-15/47)
(तबरानी-मुअ़जम औसत-5/717-ह०-7675)

➡ नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे अहले बैत हौज़े कौसर पर आयेंगे और मेरी उम्मत में जो इनसे मुहब्बत करेगा वो दो उंगलियों की तरह इनके साथ होगा। (सवाइकुल मुहर्रिका-1/516)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत मौला अ़ली और ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) जन्नत में एक ही जगह पर होंगे। (अबू यअ़ाला-अल मुस्नद-1/338-ह०-506)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अ़स्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे जब आप चौथी रकअ़त में थे तो हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) तशरीफ़ लाये और ये दोंनों शहज़ादे हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की पुश्त पर सवार हो गये जब हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने सलाम फेरा तो दोनों को अपने आगे बिठाया इमाम हसन को दांयी जानिब व इमाम हुसैन को बांयी जानिब बिठाया फिर फ़रमाया

ऐ लोगों क्या तुम्हें लोगों में सबसे बेहतर नाना और नानी के लिहाज़ से उनके मुताअ़ल्लिक़ न बताऊँ क्या मैं तुम्हें लोगों में बेहतर खाला के लिहाज़ से न बताऊँ क्या तुम्हें लोगों में से बेहतर वालिदा और वालिद के लिहाज़ से न बताऊँ क्या मैं तुम्हें लोगों में से बेहतर चचा के लिहाज़ से न बताऊँ क्या मैं तुम्हें लोगों में से बेहतर फूफी के लिहाज़ से न बताऊँ और फिर आपने फ़रमाया कि वो दोंनों हसन व हुसैन हैं इन दोंनों के नाना रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) इन दोंनों की नानी हज़रत खदीजातुल कुबरा हैं इनकी वालिदा ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा हैं इन दोंनों के वालिद हज़रत मौला अ़ली है इन दोंनों की खाला ज़ैनब व रुकय्या और कुलसुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की शहज़ादियाँ हैं इन दोनों के नाना नानी जन्नती इन दोंनों के वालिदैन जन्नती इन दोंनों के चचा जन्नती इन दोंनों की फूफी जन्नती इन दोंनों की खाला जन्नती और ये दोंनों जन्नती हैं इन दोंनों से जो मुहब्बत करेगा वो जन्नती है और इनसे जो बुग्ज़ रखेगा वो जहन्नमी है (मुअ़जम कबीर–2/345-ह०-2616)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/64-ह०-2682)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/92-ह०-6462)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213-ह०-15097)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/173,13/229)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/226,230)
(कंजुल उ़म्माल–6/411-ह०-34278)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने अपने रब से ये मांगा है कि मैं किसी से भी शादी करूँ

या मैं अपनी किसी शहज़ादी की शादी किसी से करूँ तो वो मेरे साथ जन्नत में हो तो मेरे रब ने मुझे ये अ़ता किया। (तबरानी–मुअ़जम औसत–4/420-ह०-5762)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया बेशक जो पहले चार शख़्स जन्नत में दाख़िल होंगे वो मैं यानी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) और तुम (हज़रत मौला अ़ली) और हज़रत हसन व हज़रत हुसैन होंगे और हमारी औलाद हमारे पीछे होगी और हमारी बीवियाँ हमारी औलाद के पीछे होंगी और हमारे चाहने वाले हमारे दायीं और बायीं जानिब होंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/305-ह०-2558)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-950)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/32-ह०-2624)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-1475)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/353-ह०-1068)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/541)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया ऐ अ़ली तू और तेरे मददगार रोज़े क़यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब होकर आयेंगे और उनके चेहरे (नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन रोज़े क़यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा चेहरों के साथ सख़्त प्यास की हालत में आयेंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/474-ह०-941)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-998)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14749)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से शिकायत की कि लोग मुझसे हसद करते हैं तो आप ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि जन्नत में सबसे पहले दाखिल होने वाले चार मर्दों में एक तुम हो और वो चार हैं एक मैं यानी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और तुम यानी हज़रत अ़ली और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम)।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-950)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/32-ह०-2624)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14751)

अहले बैत की मुहब्बत के सबब पुलसिरात पर आसानी

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से पुलसिरात पर सबसे ज़्यादा साबित क़दम वो होगा जो मेरे अहले बैत से ज़्यादा मुहब्ब्त रखता होगा। (सवाइकुल मुहर्रिका–1/624)

अहले बैत की एक दिन मुहब्बत एक साल की इ़बादत से बेहतर

➡ हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे अहले बैत की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इ़बादत से बेहतर है और जो इसी मुहब्बत पर फ़ौत हुआ वो जन्नत में दाख़िल हो गया (देलमी–अल फ़िरदौस–1/279-ह०-2721)

अहले बैत से बुग़्ज़ रखने वाले दोज़ख़ी हैं

गुज़िस्ता सफ़ा पर मज़कूरा अहादीस में मुहिब्बाने अहले बैत के लिये जो इनाअ़मात व अज्रे अ़ज़ीम से बहरेयाब होने का जो ज़िक्र हुआ है उसकी सआ़दत जिसको हासिल हो जाये तो उसके एअ़ज़ाज़ो इकराम व मसर्रतो कामरानी का आ़लम क्या होगा और क़यामत के दिन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अहले बैत अत्हार की कुर्बत से जो मुशर्रफ़ हो जाये वो अल्लाह तआ़ला की रहमतो अमान में रहेगा और ये मुहिब्बाने अहले बैत के लिये बड़े ही फख़्र और मसर्रत का मक़ाम होगा और अहले बैत से मुहब्बत की जज़ा अल्लाह की रहमत व जन्नत है और इनसे बुग़्ज़ व अ़दावत रखने की सज़ा दोज़ख़ है।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम ने (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा तो वो शहीद मरा जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा तो वो मग़फ़ूर मरा (यानी उसकी मग़फिरत हो गई) और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो ईमान पर मरा और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो जन्नत में इस तरह संवार कर ले जायेगा जिस तरह दुल्हन अपने दूल्हा के घर संवर कर जाती है और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा उसकी क़ब्र पर अल्लाह तआ़ला रहमत के फ़रिश्तों को मुक़र्रर फ़रमायेगा और उसके लिये जन्नत की दो खिड़कियाँ खोल दी जायेंगी और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा उसे

मल्कुल मौत फिर मुन्कर नकीर जन्नत की खुश ख़बरी सुनायेंगे जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो सुन्नत वल जमाअ़त पर मरा और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो रोज़े महशर इस तरह आयेगा कि उसकी पेशानी पर आयते रहमत लिखी हुई होगी और जो शख़्स आले मुहम्मद के बुग्ज़ पर मरा जब वो क़यामत के दिन आयेगा तो उसकी आँखों के दरमियान ये लिखा होगा कि वो अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरुम है और वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूँघेगा और जो शख़्स आले मुहम्मद के बुग्ज़ पर मरा वो कुफ़्र पर मरा।

(तफ़्सीर–रुहुल बयान–7/81)
(हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी–14,15)
(तफ़्सीर–कबीर–9/595)
(तफ़्सीर–तिबयानुल कुरान–10/585)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस शख़्स पर अल्लाह तआ़ला का सख़्त अ़ज़ाब होगा जो मेरे अहले बैत के बारे में मुझे तकलीफ़ पहुँचायेगा।

(कंजुल उ़म्माल–6/399-ह०-34143)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर कोई शख़्स काबातुल्लाह के पास रुक्ने यमानी व मक़ामे इब्राहीम के दरमियान खड़ा होकर नमाज़ पढ़े व रोज़ा भी रखे फिर वो इस हाल पर मरे कि मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता था तो बेशक वो जहन्नम में जायेगा।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/293-ह०-4712,4717)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/176-ह०-11412)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/194-ह०-15006)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/536)

अहले बैत अत्हार से बुग्ज़ रखने के सबब इन्सान के तमाम नेक आअ़माल अकारत (बर्बाद) हो जाते हैं और दुनिया व आख़िरत में उसके आअ़माल उसे कोई नफ़ा न देंगे और जिसने अहले बैत से बुग्ज़ रखा तो गोया उसने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से बुग्ज़ रखा और जिसने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से बुग्ज़ रखा तो गोया उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा तो ऐसा शख़्स दोज़ख़ में निहायत सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला होगा और न उसकी नमाज़ें उसके काम आयेंगी और न रोज़ा और न दीगर नेक आअ़माल बल्कि वो दाख़िले जहन्नम होगा और जहन्नम की दहकती हुई आग उसका दायमी ठिकाना होगी।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया खुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है हम अहले बैत से बुग्ज़ रखने वाला कोई एक शख़्स भी ऐसा नहीं है कि जिसे अल्लाह तआ़ला जहन्नम में न डाले।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/295-ह०-4717)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/159-ह०-6978)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/536)
(कंजुल उ़म्माल–6/405-ह०-34204)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता है तो अल्लाह तआ़ला उसे क़यामत के दिन यहूदियों के साथ जमाअ़ करेगा चाहे वो रोज़े नमाज़ का पाबन्द क्यों न हो और खुद को मुसलमान गुमान करता हो।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/233-ह०-4002)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/195-ह०-15009)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) तुम जिससे लड़ोगे मैं भी उससे लड़ूँगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं भी उससे सुलह करूँगा। (मिश्कात–3/553-ह०-6154)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1142-ह०-3870)
(इब्ने माजा–सुनन–1/82-ह०-145)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/294-ह०-4714)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/30-ह०-2619,20)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/60-ह०-5015)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/516-ह०-886)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/191-ह०-14990)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/449-ह०-1350)
(इब्ने अबी शैबा–9/534-ह०-32845)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/158-ह०-6977)
(कंजुल उ़म्माल–7/293-ह०-37618)
(कंजुल उ़म्माल–6/401-ह०-34159)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/486)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/62)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/103)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपनी कमली में ले लिया और दुआ़ की ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत (दुश्मनी) रखे तू उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू उसे दोस्त रख।
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/272-ह०-6915)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/187-ह०-14971)

जैसा कि अहले ईमान का अ़क़ीदा है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की दुआ़ कभी भी रद्द नहीं होती बल्कि शरफ़े मक़बूलियत पाती है यानी जो अहले बैत अत्हार का दोस्त है वो अल्लाह तआ़ला का दोस्त है और जो अहले बैत का दुश्मन है तो वो अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और अल्लाह तबारक व तआ़ला का दुश्मन दोज़ख़ी व अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ व सज़ावार है और अल्लाह तआ़ला जिसे अपना दोस्त बना ले वो रहमते इलाही और जन्नत का मुस्तहिक़ व सज़ावार है।

अहले बैत के दुश्मन को माल औलाद में कसरत

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अल्लाह जो मुझसे और मेरे अहले बैत से बुग्ज़ व अ़दावत रखता हो उसे कसरते माल और कसरते औलाद से नवाज़ ये उनकी गुमराही के लिये काफ़ी है कि उनका माल कसीर हो जाये पस उस कसीर माल के बाइस उनका हिसाब तवील (लम्बा)

हो जाये और उनके पास दुनियावी चीज़ें कसीर हो जाये ताकि उनके शयातीन कसरत से हो जायें।
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/210-ह०-2007)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/569)

बुग्ज़े अहले बैत मुनाफ़िकत की अ़लामत

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अहले बैत से बुग्ज़ रखा वो मुनाफ़िक़ है।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/373-ह०-1126)

अहले बैत से बुग्ज़ रखने वाला हौज़े कौसर से धुतकारा जायेगा

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हम (अहले बैत) से बुग्ज़ व हसद रखने वाला क़यामत के दिन आग के चाबुकों से हौज़े कौसर से धुतकारा जायेगा।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/209-ह०-2405)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/195-ह०-15008)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/405-ह०-34203)

अहले बैत पर सलात कैसे पढ़ें

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला बयान करते हैं कि काअ़ब बिन उ़ज्राह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की मुझसे मुलाक़ात हुई तो उन्होंने मुझसे कहा कि क्या मैं आपको ऐसी चीज़ तोहफ़े में न दूँ जो मैंने खुद हुजूर–

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से सुनी है मैंने कहा क्यों नहीं फिर आपने फ़रमाया मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम अहले बैत पर सलात कैसे पढ़ें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यूँ पढ़ा करो ''अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदियों व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मदियों व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम् मजीद'' ऐ अल्लाह तू मुहम्मद सल्ल० पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमां और मुहम्मद सल्ल० की आल पर भी जिस तरह तूने इब्राहीम अ़लै० और उनकी आल पर रहमतें नाज़िल की हैं बेशक तू क़ाबिले ताअ़रीफ़ बड़ी शान वाला है ऐ अल्लाह तू मुहम्मद सल्ल० पर बरकतें नाज़िल फ़रमां और मुहम्मद सल्ल० की आल पर भी जिस तरह तूने इब्राहीम अ़लै० और उनकी आल पर बरकतें नाज़िल की हैं बेशक तू क़ाबिले ताअ़रीफ़ बड़ी शान वाला है। (बुख़ारी–सहीह–4/737-ह०-4797,3369)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/292-ह०-4710)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–3/276-ह०-3965,3966)
(दार कुतनी–सुनन–1/455-ह०-1339)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो ये खुशी हासिल करना चाहे कि उसे उसके आअ़माल का पूरा पूरा बदला दिया जाये तो वो हम अहले बैत पर दुरुद भेजें सहाबा किराम ने अ़र्ज़ या रसूलल्लाह हम आप के अहले बैत पर दुरुद किस तरह भेजें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यूँ पढ़ा करो 'अल्ला हुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदियों व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मदियों व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद'।
(अबू दाऊद–सुनन–1/708-ह०-982)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/292-ह०-4710)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/193-ह०-2368)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/201-ह०-1504)

➡ हज़रत अबू हुमैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सहाबाकिराम ने अ़र्ज़ या रसूलल्लाह हम आप पर दुरुद कैसे भेजें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यूँ कहो ऐ अल्लाह दुरुद भेज मुहम्मद सल्ल० और आपकी अज़वाज पर और आपकी औलाद पर जैसा कि तूने इब्राहीम अ़लै० और उनकी आल पर भेजा ऐ अल्लाह बरकत अ़ता फ़रमां मुहम्मद सल्ल० और उनकी आल पर जिस तरह तूने इब्राहीम अ़लै० और उनकी आल को बरकत अ़ता फ़रमाई है बेशक तू सज़वारे हम्द है बरकतों वाला है।
(मुस्लिम–सहीह–1/492-ह०-911)

➡ हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने नमाज़ पढ़ी और मुझ पर और मेरी आल पर दुरुद न पढ़ा तो उसकी नमाज़ कुबूल न होगी।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–3/278-ह०-3968,3969)
(दार कुतनी–सुनन–1/456-ह०-1343)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरुद भेजते रहते हैं नबी (मुकर्रम सल्ल०) पर ऐ ईमान वालों तुम भी उन पर दुरुद भेजा करो और खूब सलाम भेजा करो।
(सूरह-अहज़ाब-33/56)

जब ये आयत नाज़िल हुई तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हमें ये तो माअ़लूम है कि आपको सलाम कैसे करना चाहिये मगर हम आप पर दुरुद कैसे भेजा करें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम कहा करो ''अल्ला हुम्मा सल्लि..........पस नुजूले आयत के बाद सहाबा किराम का सुवाल करना और हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का जवाब देना इस बात की वाज़ेह दलील है कि इस आयत में सलात का हुक्म आप व आपके अहले बैत और बक़िया आल के लिये है।

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का फ़रमान मुझे मेरे अहले बैत में तलाश करो

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने आख़िरी चीज़ जो इरशाद फ़रमाई वो ये कि मुझे मेरे अहले बैत में तलाश करो। (अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/321-ह०-971)

बेहतर वो है जो अहले बैत के लिये बेहतर है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम में से बेहतरीन वो है जो मेरे बाद मेरे अहले बैत के लिये बेहतरीन है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/591-ह०-5359)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/198-ह०-15027)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/1624-ह०-5924)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/291-ह०-2851)
(कंजुल उ़म्माल–6/399-ह०-34146)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/622)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/497-ह०-4105)

अहले बैत से नेकी की वसीअ़त

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अपने अहले बैत के साथ नेकी और भलाई करने की वसीअ़त करता हूँ और मेरी तुमसे मुलाक़ात हौज़े कौसर पर होगी।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/614-ह०-2559)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/183-ह०-14960)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/258-ह०-1050)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने आख़री गुफ़्तगू जो फ़रमाई वो ये थी कि मेरे अह्ले बैत का ख़्याल रखना।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/150-ह०-3860)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर‘वी है कि

सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो कोई मेरे अहले बैत की तरफ़ अच्छाई का हाथ बढ़ाये तो मैं उसको इस पर क़यामत के दिन बदला दूँगा एक रिवायत में है जो कोई मेरे अहले बैत के साथ एहसान करे तो रोज़े क़यामत मैं उसे बदला दूँगा। (इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/623) (कंज़ुल उ़म्माल–6/400-ह०-34152)

ज़मीन वालों के लिये अहले बैत अमान हैं

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया सितारे आसमान वालों के लिये अमान हैं जब सितारे मिट जायेंगे तो आसमान वाले ख़त्म हो जायेंगे और मेरे अहले बैत ज़मीन वालों के लिये अमान हैं जब ये ख़त्म हो जायेंगे तो ज़मीन वाले भी ख़त्म हो जायेंगे। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/549-ह०-6137)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/379-ह०-1145)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/513)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/53-ह०-6913)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/537)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/400-ह०-34155)

अहले बैत के मुख़ालिफ़ीन की जमाअ़त शैतान की जमाअ़त है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि–

सितारे ज़मीन वालों के लिये ग़र्क़ होने से बचाने वाले हैं और मेरे अहले बैत मेरी उम्मत को इख़्तिलाफ़ से बचाने वाले हैं जब कोई अ़रब का क़बीला अगर इनकी मुख़ालिफ़त करेगा वो शैतान की जमाअ़त क़रार पायेगा (हाकिम–अल मुस्तदरक–2/294-ह०-4715)
(कंजुल उ़म्माल–6/403-ह०-34189)

तीन हुरुमात की हिफ़ाज़त

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन हुरुमात हैं जो इनकी हिफ़ाज़त करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये दीन व दुनिया के मुआ़मलात की हिफ़ाज़त फ़रमाता है और जो इनको ज़ाया कर देता है तो रब तआ़ला उसकी हिफ़ाज़त नहीं करता आपसे अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह वो कौन सी तीन हुरुमात हैं पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया इस्लाम की हुरमत, मेरी हुरमत और मेरे नसब की हुरमत। (मुअ़जम कबीर–3/135-ह०-2881)

अह्ले बैत सबसे बेहतर

➡ हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे मर्दों में सबसे बेहतर अ़ली हैं और तुम्हारे जवानों में सबसे बेहतर हसन व हुसैन और तुम्हारी औ़रतों सबसे बेहतर फ़ातिमा हैं।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/167)
(कंजुल उ़म्माल–6/404-ह०-34191)

अहले बैत की मुहब्बत वाजिब है

अल्लाह तबारक व तआ़ाला हमारा ख़ालिक़ व मालिक है जिसने हमें अशरफुल मख़लूक़ात बनाया और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की उम्मत में पैदा फ़रमाया और हमें दीन इस्लाम अ़ता किया जो कायनात की तमाम नेअ़मतों में सबसे अफ़ज़ल नेअ़मत है जिसने हमें बेशुमार नेअ़मतों व बरकतों से नवाज़ा जिसने हम मुसलमानों के लिये जन्नत को आरास्ता किया जिसने हमारी दुन्यावी ज़रुरियात की तकमील की और दुनिया में इन्सान की इब्दिता से इख़्तिताम तक और क़ब्र से क़यामत तक और क़यामत से दाख़िले जन्नत तक हमें अल्लाह तआ़ाला की रहमत निहायत ही ज़रुरी है और अल्लाह तबारक व तआ़ाला की रहमत के लिये उसकी इंतिहाई मुहब्बत ज़रुरी है।

और अल्लाह तआ़ाला की मुहब्बत हासिल करने के लिये उसके महबूब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की मुहब्बत ज़रुरी है कि जिनके ज़रिये हमें कुरान व सुन्नत और अहकामे शरीअ़त व राहे हिदायत मिली और जिनके तुफ़ैल हमें दुनिया में बे शुमार नेअ़मतें मिलीं और इन्हीं के वसीले व शफ़ाअ़त से अल्लाह तआ़ाला हमें जन्नत अ़ता करेगा और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत करना गोया अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत करना है और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की मुहब्बत के लिये अहले बैत से मुहब्बत ज़रुरी है और अहले बैत अत्हार हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सुन्नतों व कमालात का ज़ाहिरी–

व बातिनी आइनादार बेहतरीन नमूना हैं और इस्लाम की बक़ा के ज़ाहिरी मुहाफिज़ अहले बैत अतहार हैं कि जिनसे आज इस्लाम ज़िन्दा व ताबिन्दा है।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करो क्योंकि वो तुम्हें नेअ़मतों से नवाज़ता है और अल्लाह तआ़ला के लिये मुझसे मुहब्बत करो और मेरे सबब से मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1107-ह०-3789)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/295-ह०-4716)
(मिश्कात–3/562-ह०-6182)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/38-ह०-2639)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/311-ह०-2573)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/652-ह०-1952)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–3/211)
(कंजुल उ़म्माल–6/400-ह०-34150)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/356-ह०-408)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/623)

➡ हज़रत अबू बरज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत आदमी क़ब्र से उठकर इधर उधर हरकत न कर सकेगा जब तक कि उससे चार बातों का जवाब न ले लिया जाये उ़म्र के बारे में किस काम में गुज़ारी और जिस्म की ताक़त के बारे में कि कहाँ ख़र्च की और माल के बारे में कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया और मेरे अहले बैत से मुहब्बत के बारे में। (तबरानी–मुअ़जम औसत–2/101-ह०-2191)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया ऐ अ़ली बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुझे व तेरी औलाद को और तेरे घर वालों को और तेरे मददगारों को और तेरे चाहने वालों को बख़्श दिया है तुझे ये खुश ख़बरी मुबारक हो। (देलमी–अल फ़िरदौस–3/212-ह०-8337)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने काअ़बे का दर'वाज़ा पकड़े हुये फ़रमाया कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि तुममें मेरे अहले बैत की मिसाल नूह (अ़लैहिस्सलाम) की कश्ती के मानिन्द है जो इसमें सवार हो गया वो निजात पा गया और जो पीछे रहा (यानी जो चढ़ न पाया) वो हलाक हो गया और एक रिवायत में है जो इसमें सवार हो गया वो सलामती पा गया जो इससे पीछे रह गया वा ग़र्क़ हो गया।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/297-ह०-4720)
(मिश्कात–3/562-ह०-6183) (बज़्ज़ार–9/343-ह०-3900)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/310-ह०-2571)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/38-ह०-2636,37,38)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/34-ह०-2388)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/722-ह०-3478)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/506-ह०-868)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/463-ह०-1402)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/189-ह०-14978,14979)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/99-ह०-916)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/537)
(इब्ने अबी शैबा–9/517-ह०-32778)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/399-ह०-34144)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/505)

अहले बैत को कश्ती-ए-नूह (अ़लैहिस्सलाम) कहने से मुराद ये है कि जो लोग नूह (अ़लैहिस्सलाम) के मुन्किर थे और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की नाफ़रमानी करते और कुफ़्र व सरकशी में मुब्तिला रहते थे और उनमें से बाअ़ज़ नूह (अ़लैहिस्सलाम) को बुग्ज़ व कीना के सबब मुख़्तलिफ़ क़िस्म की अज़ि़यतें पहुँचाते थे वो तमाम सरकश लोग हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती में सवार न हो सके और वो तूफाने नूह में ग़र्क़ होकर हलाक हो गये और जो लोग कश्ती में सवार हो गये थे वो निजात पा गये थे।

इसी तरह जिनके दिल अहले बैत अत्हार की सच्ची व ख़ालिस मुहब्बत से लबरेज़ हैं वो निजात पा जायेंगे और आख़िरत में वो अज्रे अ़ज़ीम के मुस्तहिक़ और अल्लाह तआ़ला की रहमत से बहरेयाब होंगे और जन्नत में दाख़िल होंगे और जिनके दिल अहले बैत की मुहब्बत से ख़ाली हैं उनके लिये हलाकत है और वो लोग अहले बैत से बुग्ज़ व कीना से बाइस नारे दोज़ख़ में तूफ़ाने नूह की तरह ग़र्क़ हो जायेंगे और दोज़ख़ के मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब में मुब्तिला किये जायेंगे।

हर मुआ़मलात में एअ़तिदाल बेहतर शैः है लेकिन मुहब्बत के मुआ़मले एअ़तिदाल नहीं क्योंकि मुहब्बत की कोई हद नहीं होती अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और अहले बैत से हमें जिस क़दर मुहब्बत होती है तो उस मिक़्दार से कई सौ गुना ज़्यादा हमें उनकी क़ुरबत हासिल होती है मज़ीद हमारी बख़्शिश और अच्छे हश्र और अल्लाह तआ़ला की रहमत व ख़ुशनूदी का सबब बनती है और मुहब्बत व अक़ीदत पर ही ईमान की-

बुनियाद और बख़्शिश का इन्हिसार है यानी सही उल अक़ीदा और अहले बैत से सच्ची व ख़ालिस मुहब्बत से ही हमारी मग़फ़िरत और अच्छे हश्र उम्मीद बनती है।

अहले बैत की मुहब्बत के बग़ैर दिलों में ईमान दाख़िल नहीं हो सकता

➡ हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से शिकायत की कि कुरैश जब आपस में गुफ़्तगू कर रहे होते हैं और हम उस दरमियान जब उनसे मिलते तो वो गुफ़्तगू बन्द कर देते और ख़ामोश हो जाते तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं हो सकता जब तक कि वो अल्लाह तआ़ला के लिये और मेरी क़राबत की वजह से मेरे अहले बैत से मुहब्बत न करे।
(इब्ने माजा–सुनन–1/80-ह०-140)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1096-ह०-3758)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/643-ह०-6960)
(मिश्कात–3/553-ह०-6153)
(देलमी–अल फ़िरदौस–2/343-ह०-6350)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/401-ह०-34160)
(कंजुल ऊ़म्माल–7/294-ह०-37623,24)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/624)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसकी–

जान से ज़्यादा महबूब तर न हो जाऊँ और मेरे अहले बैत उसे उसके अहले ख़ाना से ज़्यादा महबूब तर न हो जायें और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से ज़्यादा महबूब न हो जाये और मेरी ज़ात उसे अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब तर हो जाये।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–7/86-ह०-6416)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/432-ह०-5790)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/149-ह०-7796)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–1/114-ह०-296)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/201-ह०-1505)

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि कोई भी बन्दा मुझसे मुहब्बत किये बग़ैर मुझ पर ईमान नहीं ला सकता और वो उस वक़्त तक मुहब्बत नहीं कर सकता जब तक मेरे क़राबत दारों से मुहब्बत न करे और उनको अपनी जान का मक़ाम न दे।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/492)

➡ हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह कुरैश जब आपस में मिलते हैं तो मुस्कुराते हुये चेहरों से मिलते हैं और जब हमसे मिलते हैं तो मुरझाये हुये चेहरों के साथ मिलते हैं ये सुनकर हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) शदीद जलाल में आ गये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल

नहीं हो सकता जब तक कि वो अल्लाह तआ़ला और मेरी रिज़ा व क़राबत की वजह से तुमसे मुहब्बत न करे (मुस्नद अहमद–2/379-ह०-1772,1777)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/629-ह०-5433)
(मुस्नद बज़्ज़ार–6/131-ह०-2175)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/200-ह०-1501)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/68-ह०-7037)

अहले बैत का दुश्मन रसूलुल्लाह का दुश्मन अहले बैत का दोस्त रसूलुल्लाह का दोस्त

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) की जानिब देखकर फ़रमाया कि मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/293-ह०-4713)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि मैं उनसे दोस्ती रखूँगा जो तुमसे दोस्ती रखेगा और मैं उनसे नाराज़ होऊँगा जो तुमसे बुग्ज़ रखेगा। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/628-ह०-4890)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने अ़ली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन की तरफ़ देखकर फ़रमाया मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ और मैं उसके साथ जंग का ऐअ़लान करता हूँ जो तुम्हारे साथ जंग करेगा और मैं उसके लिये सलामती का पैग़ाम हूँ जो तुम्हारे साथ सलामती से रहेगा। (हाकिम–मुस्तदरक–4/294-ह०-4713)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/31-ह०-2621)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/191-ह०-14989)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/48-ह०-1350)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाह में आयीं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अबुल हसन कहाँ हैं अ़र्ज़ की वो घर में है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली को बुलाया फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) खाने के लिये बैठे और खाना तनावुल फ़रमाने लगे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फरमाती हैं कि मुझे हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से नहीं बुलाया इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ फिर जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खाने से फ़ारिग़ हुये तो उन सबको अपनी कमली में ले लिया और फ़रमाया ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत रखे तू भी तू भी उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू उसे दोस्त रख। (मजमउज़्ज़वाइद–9/187-ह०-14971)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/272-ह०-6915)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/404-ह०-34194)

पंजतन पाक एक ही मिट्टी से तख़लीक़ किये गये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स को ये बात पसन्द हो कि वो उस दायमी जन्नत में ठहरे जिसमें मेरे रब ने खुद दरख़्त लगाये हैं तो वो अ़ली से मुहब्बत करे और मेरे अहले बैत की इक़्तिदा करे इसलिये कि वो मेरी औलाद हैं वो मेरी मिटटी से पैदा किये गये हैं और उन्हें मेरी समझ और मेरा इ़ल्म दिया गया पस उन लोगों के लिये हलाकत है जो इनकी फ़ज़ीलत को झुठलाये तो ऐ अल्लाह ऐसे लोगों का मेरी शफ़ाअ़त में हिस्सा न हो कि जो मेरे अह्ले बैत की फ़ज़ीलत को झुठलाये (कंज़ुल उ़म्माल–6/404-ह०-34198)

अहले बैत के लिये हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूले अकरम

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरे घर में तशरीफ़ फ़रमां थे कि हज़रत अ़ली और सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम आये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने दोंनों साहबज़ादों को अपनी गाद मुबारक में बिठा लिया और उन्हें खूब प्यार किया एक हाथ मुबारक से सय्यदा फ़ातिमा और एक हाथ मुबारक से हज़रत मौला अ़ली को पकड़ा फिर उन सब पर एक काली चादर डाल दी फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह मुझे और मेरे अहले बैत को अपनी अमान में रख।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/326-ह०-986)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम को अपनी चादर उड़ाई फिर अपने हाथों को फैलाकर दुआ़ की ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं तू इन पर अपनी रहमतें व बरकतें नाज़िल फ़रमां बेशक तू क़ाबिले ता़रीफ़ है और बुजुर्गी वला है। (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/187-ह०-14970)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/337-ह०-1029)

➡ नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अल्लाह अपनी खुसूसी रहमतें और अपनी आ़म रहमतें और अपनी बख़्शिश और अपनी रज़ामन्दी मुझ पर व मेरे अहले बैत पर हज़रत अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) पर फ़रमां।
(कंजुल उ़म्माल–6/403-ह०-34186)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अपनी चादर मुबारक बिछाये हुये तशरीफ़ फ़रमां थे उस चादर मुबारक पर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझे यानी हज़रत मौला अ़ली और सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को को बिठाया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उस चादर के किनारे पकड़े और हम सब पर वो चादर डाल दी फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अल्लाह तू इनसे राज़ी होजा जिस तरह मैं इनसे राज़ी हूँ।

(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/303-ह०-5514)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/191-ह०-14988)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/-295ह०-37633)

अहले बैत की मुहब्बत इस्लाम की बुनियाद है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक इस्लाम पाकीज़ा दीन है इसका लिबास तक़्वा है इसका रंग हिदायत है इसकी ज़ीनत हया है इसका सुतून परहेज़गारी है और इसका सरमाया नेक आअ़माल हैं और इस्लाम की बुनियाद मेरी मुहब्बत और मेरे अहले बैत की मुहब्बत है।

(कंज़ुल उ़म्माल–4/405-ह०-34206)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/295-ह०-37631)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से सिराते मुस्तक़ीम पर सबसे ज़्यादा साबित क़दम वो शख़्स है जो मेरे अहले बैत के साथ ज़्यादा मुहब्बत करने वाला है।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/400-ह०-34157)

अहले बैत के हक़ को न पहचानने वाला हरामी है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मेरे अहले बैत के हक़ को न पहचाने तो उस में तीन चीज़ों में से एक पायी जाती है या तो वो हरामी है यानी वो ज़िना से पैदा हुआ है या तो वो मुनाफ़िक़ है या फिर वो ऐसा है कि जिसकी माँ हालते नापाकी में उससे हामिला हुई।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/237-ह०-1614)
(देलमी–अल फ़िरदौस–2/299-ह०-5955)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/404-ह०-34199)

अहले बैत से मुहब्बत करने वाले फ़क़्र के लिये तैयार रहें

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हम अहले बैत से मुहब्बत करता है वो फ़क़्र (फ़क़ीरी, दरवेशी, मुफ़लिसी) के लिये चादर तैयार करे।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/293-ह०-37615)

–: हज़रत मौला अ़ली के मनाकि़ब :–

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़ाते अक़दस से ख़िलाफ़ते बातिनी और विलायत का सरचश्मा फूटा जो कि अह्ले बैत अत्हार को अ़ता हुआ जो बाद में विलायत व इमामत के नाम से मौसूम हुआ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपना नायबे विलायत हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को मुक़र्रर किया और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) विलायते अ़ली की नूरानी शमां के दो मुख़्तलिफ़ चेहरे और हज़रत मौला अ़ली के नायबे बिलायत हैं हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से ही कुतबियत मुजद्दियत ग़ौसियत, अ़ब्दालियत के चश्मे फूटे जिससे उम्मत के मोमिनीन व औलिया व सालिहीन फ़ैज़याब हुये हैं और विलायत का ये सिलसिला हज़रत इमाम मेंहदी (अ़लैहस्सलाम) पर ख़त्म होगा।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़ज़ीलत में जितनी अहादीसे मुबारका वारिद हैं किसी भी दीगर सहाबा की फ़ज़ीलत में इतनी अहादीस वारिद नहीं हैं आपके फ़ज़ाइले जमीला बेशुमार हैं आप शराफ़ते नसब में बहुत आ़ली हैं आपकी ज़ाते पाक को वो मक़ाम व मन्ज़िलत और एअ़ज़ाज़ हासिल हुआ जो दीगर सहाबा को हासिल न था आप आअ़ला मरतबत और पाकीज़ा सीरतो किरदार के हामिल थे आपके अ़ज़ीमुश्शान और रौशन फ़ज़ाइल कुरान व अहादीस में मज़कूर हैं आपकी फ़ज़ीलत व शानो अ़ज़मत में बेशुमार अहादीस मन्कूल हैं जिनमें से बाअ़ज़ का तज़किरा इस किताब में किया जा रहा है।

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का फ़रमान जिसका मैं मौला उसका अ़ली मौला

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ग़दीरे खुम पर क़याम किया और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है। (ग़दीरे खुम मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा के दरमियान एक जगह का नाम है)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1073-ह०-3713)
(मिश्कात–3/535-ह०-609)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/264-ह०-4652)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/226-ह०-4577)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/296-ह०-6272)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/204-ह०-5097,5068)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/267-ह०-2472)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/600-ह०-4836)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/337-ह०-959)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/91-ह०-14619)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144-ह०-79,84)
(इब्ने अबी शैबा–9/503-ह०-32735)
(कंजुल उ़म्माल–6/285-ह०-32901)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ग़दीरे खुम का दिन था जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है नीज़ फ़रमाया

ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और उससे दुश्मनी रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/587-ह०-1111,2254)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–6/61-ह०-6392)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/88-ह०-14610,14618)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/158)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225-ह०-20388)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि ग़दीरे खुम का दिन था जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया क्या मैं मोमिनों का वाली नहीं हूँ तो लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है इस पर हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से कहा ऐ अ़ली आपको मुबारक हो कि आप मेरे और तमाम मुसलमानों के मौला हैं इस पुर मुबारक मौक़ेअ़ पर अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने ये आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई कि 'आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दीं और तुम्हारे लिये (बतौर) दीन इस्लाम को पसन्द कर लिया'। (सू०–मायदा–5/3)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–दुर्रे मन्सूर–2/708)
(इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी–तफ़्सीर कबीर–11/139)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क–42/233,237)
(इब्ने कसीर–अल विदाया वन निहाया–5/297)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु)

से रिवायत है कि ये आयते मुबारका ‘‘ऐ (बरगज़ीदा) रसूल जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब की जानिब से नाज़िल किया गया (वो सारा लोगों को) पहुँचा दीजिये (सू०–मायदा–5/67) हज़रत मौला अ़ली की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई इस आयत का शाने नुजूल बयान करते हुये फ़रमाते हैं कि ये आयते मुबारका जब नाज़िल हुई तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ा और फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और तू उससे अ़दावत रख जो अ़ली से अ़दावत रखे फिर इसके बाद हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात की और कहा कि ऐ मौला अ़ली आपको मुबारक हो कि अब आप मेरे और मोमिन और मोमिना के मौला क़रार पाये हैं।

(इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी–तफ़्सीर कबीर–12/51)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–दुर्रे मन्सूर–2/817)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/237)
(आलूसी–रुहुल मआ़ानी–7/318)
(शौकानी–फ़त्हुल क़दीर–2/86)
(इब्ने अबी हातिम–कुरानुल अ़ज़ीम–4/1172-6609)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ग़दीरे खुम के मक़ाम पर ख़िताब किया और फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि मैं हर मोमिन के लिये उसकी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ हूँ और क्या तुम जानते हो कि मैं मोमिनीन पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आपने फ़रमाया कि बेशक

अल्लाह तआ़ाला मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का मौला हूँ फिर आपने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह जो अ़ली से मुहब्बत करे तू भी उससे मुहब्बत कर और जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उसे दोस्त रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू उससे दुश्मनी रख और जो अ़ली की नुसरत (मदद) करे तू भी उसकी नुसरत फ़रमां और जो अ़ली की इआ़नत करे तू उसकी इआ़नत फ़रमां फिर इसके बाअ़द हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात की और कहा कि ऐ मौला अ़ली आपको मुबारक हो कि अब आप हर मोमिन मर्द औ़रत के मौला होने की हालत में सुबह शाम करते हो
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/511-ह०-2982)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/166-ह०-4969)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/641-ह०-4919)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/226-ह०-4576)
(मिश्कात–3/538-ह०-6103)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/327-ह०-991,1017)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/61-ह०-6392)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/88-ह०-14611,14614,14616)
(इब्ने अबी शैबा–9/509-ह०-32754)
(कंजुल ऊ़म्माल–7/70-ह०-36420,36485)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल ऊ़क़बा–1/125)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–6/217)

➡ हज़रत बुरैदा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैं हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ यमन की जानिब एक गज़वा में शरीक हुआ तो मैंने हज़रत अ़ली में कुछ सख़्ती देखी और कुछ बद सुलूकी महसूस

की फिर जब मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने हज़रत अ़ली की शिकायत की और हज़रत अ़ली का तज़किरा करते हुये ये ख़ामी बयान कर दी तो मैंने देखा कि ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक मुताग़य्यर हो गया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं मोमिनों पर उनकी जानों से ज़्यादा हक़ नहीं रखता तो मैंने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/228-ह०-4578)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/254-ह०-346)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/347-ह०-989)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/146-ह०-81,82)
(इब्ने अबी शैबा–9/523-ह०-32795)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–7/325-ह०-20388)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/23-ह०-)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/70-ह०-36422)

➡ रिफ़आ़ बिन इयास अपने वालिद से वो उनके दादा से रिवायत करते हैं कि हम जंगे जमल के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थे हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को पैग़ाम भेजा कि वो मुझसे मिलें हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) उनके पास आये तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुमने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जुबाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ सुने हैं कि

जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख तो हज़रत तल्हा रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने कहा जी हाँ फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तो फिर आप मेरे साथ जंग क्यों कर रहे हैं हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने कहा कि मुझे याद नहीं रहा था फिर हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) वापस चले गये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/696-ह०-5594)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/92-ह०-14625)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/166-ह०-31662)

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) के पास दो बद्दू (अ़रब के खाना बदोश) झगड़ा करते हुये आये तो आपने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि ऐ अबुल हसन इन दोनों के दरमियान फ़ैसला फ़रमां दें तो आपने उन दोनों के दरमियान फ़ैसला कर दिया तो उनमें से एक ने कहा क्या ये हमारे दरमियान क़ाज़ी हैं इसके बाद हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने उसका गिरेबां पकड़कर फ़रमाया कि तू हलाक हो तुझ पर अफ़सोस है क्या तू नहीं जानता कि ये मेरे और हर मोमिन के मौला हैं और जो इनको मौला न माने वो मोमिन ही नहीं।
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/126)

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल आमिर बिन वासिला (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत अ़ली मिम्बर पर खड़े होकर सहाबा किराम से क़सम देकर पूछ रहे थे कि कौन है जिसने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ग़दीरे खुम में जो कुछ कहा है वो आपने सुना है वो गवाही दे तो दो बारह आदमी उठे एक रिवायत में है कि सोलह (16) आदमी उठे जिनमें हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अबू सईद और हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) थे उन्होंने ये गवाही दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना ऐ अल्लाह जिसका मैं मौला हूँ अ़ली भी उसका मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/956-ह०-1966)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/348-ह०-991)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/34-ह०-786)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/362-ह०-563)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/90-ह०-14615,14629,1430,1433)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/117-ह०-6931)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/151-ह०-85,88,93)
(कंजुल उ़म्माल–7/69-ह०-34417)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/610)

➡ हज़रत रियाह बिन हारिस फ़रमाते हैं कि हम हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बैठे थे कि अन्सार से एक ऊँट सवार काफ़िला आया उन्होंने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे मौला आप पर सलामती हो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारा मौला हूँ और क्या तुम अ़रब की क़ौम हो उन्होंने कहा जी हाँ और हमने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे

तू भी उससे दुश्मनी रख हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) मौजूद थे उन्होंने भी कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख। (सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/173)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/160-ह०-3947)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/173-ह०-4053)

अ़ली का दोस्त अल्लाह का दोस्त
अ़ली का दुश्मन अल्लाह का दुश्मन

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि तेरा दोस्त मेरा दोस्त है और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन और मेरा दुश्मन अल्लाह का दुश्मन है और मेरे बाद जिस शख़्स ने तुमसे बुग्ज़ रखा उसके लिये हलाकत है। (तबरी–रियाजुन्नजरा–1/49)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हम उस हज में थे जो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने किया हम उनके साथ आये आप ग़दीरे खुम नामी जगह पर रुके और नमाज़ का हुक्म दिया नमाज़ से फ़राग़त के बाद आपने खुत्बा दिया और फिर हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया क्या मैं ईमान वालों के नज़दीक उनकी जानों से भी ज़्यादा महबूब नहीं हूँ और क्या मैं मोमिनीन पर

उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ नहीं रखता हूँ तो लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये अ़ली हर उस शख़्स का दोस्त है जो मुझे दोस्त रखता है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह तू उसको दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे है और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।

(इब्ने माजा–सुनन–1/72-ह०-116)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/192-ह०-4059)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/202-ह०-5052)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144-ह०-79,80,94,95,98)
(कंजुल उ़म्माल–7/69-ह०-36418,36420)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाह में आयीं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अबुल हसन कहाँ हैं अ़र्ज़ की वो घर में हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली को बुलाया फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) खाने के लिये बैठे और खाना तनावुल फ़रमाने लगे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फर्माती हैं कि मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से नहीं बुलाया इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ फिर जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खाने से फ़ारिग़ हुये तो उन सबको अपनी कमली में ले लिया और फ़रमाया ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत रखे तू भी

उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू भी उसे दोस्त रख। (मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/187-ह०-14971) (अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/272-ह०-6915)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अ़ली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन की तरफ़ देखकर फ़रमाया मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ और एक रिवायत में है मैं उसके साथ जंग का ऐअ़लान करता हूँ जो तुम्हारे साथ जंग करेगा और मैं उसके लिये सलामती का पैग़ाम हूँ जो तुम्हारे साथ सलामती से रहेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/294-ह०-4713)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/31-ह०-2621)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/191-ह०-14989)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/48-ह०-1350)

➡ हज़रत जरीर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मरवी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम का हाथ पकड़कर फ़रमाया अल्लाह व रसूल जिसका दोस्त हो तो अ़ली भी उसका दोस्त है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखता हो तू भी उसे दोस्त रख और जो अ़ली से दुश्मनी रखता हो तू भी उससे दुश्मनी रख ऐ अल्लाह लोगों में से जो शख़्स अ़ली से मुहब्बत करता हो तू उसे अपना महबूब बनाले और जो अ़ली से बुग्ज़ रखता हो तू भी उससे बुग्ज़ रख।
(कंजुल उ़म्माल–7/72-ह०-36439)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया ये मेरा दोस्त है और मैं इसका दोस्त हूँ और मैं उससे दोस्ती रखूँगा जो अ़ली से दोस्ती रखेगा और मैं उससे दुश्मनी रखूँगा जो अ़ली से दुश्मनी रखेगा।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/96-ह०-2186)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ लोगो क्या मैं हर मोमिन का उसकी जान से ज़्यादा हक़दार नहीं हूँ तो लोगों ने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह हम गवाही देते हैं कि आप हर मोमिन की उसकी जान से ज़्यादा हक़दार हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जिसका मैं दोस्त हूँ अ़ली भी उसका दोस्त है और उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़े हुये थे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जो अ़ली का दोस्त हो तू भी उसका दोस्त हो जा और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।
(कंजुल उ़म्माल–7/58-ह०-36342)

अ़ली हर मोमिन के वली हैं

➡ इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन का वली हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/264-ह०-4652)
(मिश्कात–3/535-ह०-6090)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/94-ह०-14636,14637)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/366-ह०-1104)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/126,157)
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32937,32942,32877)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–6/218)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/30-ह०-68)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/423)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की बुराई न करो अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली हैं।
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32939)

➡ हज़रत बुरैदा व हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने दो लश्कर यमन की तरफ़ भेजे तो एक पर हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) व दूसरे पर हज़रत ख़ालिद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

अमीर थे आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम दोंनों एक साथ मिल जाओ तो सब पर हज़रत अ़ली अमीर होंगे और अलग अलग हो जाओ तो दोंनों अपने अपने लश्कर पर अमीर होंगे फिर हज़रत अ़ली ने एक क़िला फ़तह किया और माले ग़नीमत में से एक लोंडी ले ली तो हज़रत ख़ालिद रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शिकायत में एक ख़त हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के हाथों रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास भेजा फिर जब वो ख़त हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के सामने पढ़ा गया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक गुस्से से मुतग़य्यर हो गया फिर आपने फ़रमाया कि उस क़ौम का क्या हाल होगा जो हज़रत अ़ली का नुक्स बयान करते हैं पस जिसने अ़ली का नुक्स बयान उसने मेरा नुक्स बयान किया और जो अ़ली से जुदा हुआ वो मुझसे जुदा हुआ और हज़रत अ़ली को मेरी मिट्टी से पैदा किया गया और मैं इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की मिट्टी से पैदा किया गया हूँ और मैं इब्राहीम से अफ़ज़ल हूँ और अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली है और हज़रत अ़ली ने अपने हक़ से ज़्यादा छोड़ा है आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ये तीन बार फ़रमाया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम अ़ली से क्या चाहते हो हज़रत बुरैदा बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं अल्लाह तआ़ाला की पनाह चाहता हूँ आपने मुझे ऐसे शख़्स के साथ भेजा था कि जिसकी बात को मानना मुझ पर लाज़िम था ये ख़त उसने मुझे आपकी ख़िदमत में पेश करने के लिये

दिया था मैंने वो आप तक पहुँचा दिया है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ बुरैदा कभी भी अ़ली की तनक़ीस न करना और किसी बद गुमानी का शिकार न होना क्योंकि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली है और तुम ऐसे शख़्स के बारे में शिकायत करते हो जो अल्लाह व उसके रसूल को महबूब रखता है और अल्लाह तआ़ाला और उसका रसूल भी उसको महबूब रखते हैं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712,3725)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/676-ह०-4842)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/574-ह०-6085)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225-ह०-20388)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14638,14732)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/391-ह०-1175)
(इब्ने अबी शैबा–9/519-ह०-32782)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/155-ह०-90)
(कंजुल उ़म्माल–7/70-ह०-36421,36454)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/631-ह०-2589)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/314-ह०-947)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14638)
(इब्ने अबी शैबा–3/61-ह०-12114)
(इब्ने अबी शैबा–9/501-ह०-32728)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/116-ह०-6930)
(कंजुल उ़म्माल–6/285-ह०-32902)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह तआ़ला मेरा वली है और मैं हर मोमिन का वली हूँ और जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/165-ह०-4968)
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32942)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जिसका मैं वली हूँ अ़ली भी उसका वली हो ऐ अल्लाह जिसका अ़ली वली हो तू भी उसका वली बनजा और जो अ़ली से मुहब्बत करे तो तू भी उससे मुहब्बत कर और जो अ़ली का दुश्मन हो तू भी उसका दुश्मन बन जा और जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली की मदद छोड़ दे तू भी उसकी मदद छोड़ दे।
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32943,32945,32948)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली रोज़े क़यामत सबसे पहले मेरी और तेरी क़ब्र शक़ होगी और तुम हम्द का झन्डा उठाकर अव्वलीन व आख़िरीन के सामने चलोगे और तुम मेरे बाअ़द तमाम मोमिनीन के वली हो।
(कंजुल उ़म्माल–6/295-ह०-33047)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि क्या मैं मोमिनों के लिये उनकी जानों से ज़्यादा हक़दार नहीं हूँ फिर आपने फ़रमाया कि जिसका जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/92-ह०-14626,14637)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/163-ह०-96)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह तआ़ला मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का वली हूँ फिर आपने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है ऐ अल्लाह जो अ़ली से दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तो तू भी उससे दुश्मनी रख और एक रिवायत में है आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं मोमिनीन का उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ तो लोगों ने कहा जी हाँ या रसूलल्लाह फिर आपने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।
(कंजुल उ़म्माल–7/58-ह०-36340,36342,36343,)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ये अ़ली मेरे बाअ़द तुम्हारे वली हैं क्योंकि अ़ली वही काम करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता।
(कंजुल उ़म्माल–6/289-ह०-32960)

मज़कूरा अहादीस इस बात पर दलालत करती है कि कोई हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से जुदा गुमान न करे हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम का अदबो इहतराम व ताज़ीमो तकरीम गोया ताअ़ज़ीमे मुस्तफ़ा है और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की तनक़ीस गोया तनक़ीसे मुस्तफ़ा है और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र ज़िक्रे मुस्तफ़ा है और ज़िक्रे मुस्तफ़ा दरअस्ल ज़िक्रे खुदा है और हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुहब्बत गोया रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत की अ़लामत है और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत की अ़लामत है और अ़ली का मुहिब मेहबूबे मुस्तफ़ा है और मेहबूबे मुस्तफ़ा मेहबूबे खुदा है और हज़रत अ़ली का दुश्मन दरअस्ल दुश्मने रसूल है और दुश्मने रसूल दरअस्ल दुश्मने खुदा है और तमाम दुश्मने रसूल क़ाबिले लाअ़नत व दोज़ख़ के अह्ल और अ़ज़ाबे नार के मुस्तहिक़ हैं।

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुझ पर ईमान लाया और मेरी तसदीक़ की तो मैं उसे विलायते अ़ली की वसीअ़त करता हूँ कि जिसने अ़ली को वली जाना तो उसने मुझे वली जाना और जिसने मुझे वली जाना तो उसने अल्लाह तआ़ाला को वली जाना और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने

अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा।
(कंज़ुल उ़म्माल–11/611-ह०-32958)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14640)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/429-ह०-1751)

विलायते अ़ली के फ़ैज़ के बग़ैर न कोई ग़ौस हो सका न कोई कुतुब और न कोई अ़ब्दाल हो सका विलायत, ग़ौसियत, इमामत, कुतबियत, अ़ब्दालियत सब विलायते अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के फ़ैज़ से हैं और आपकी सीरते पाक तमाम मुसलमानों के लिये बेहतरीन राहे हिदायत का नमूना हैं।

रसूलुल्लाह का फ़रमान अ़ली मुझसे है मैं अली से हूँ

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक मर्तबा चार असहाब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुये उनमें से एक ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की शिकायत करते हुये अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या आपने नहीं देखा कि हज़रत अ़ली ने ऐसा किया आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उससे मुँह फेर लिया फिर दूसरा उठा उसने भी हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में यही कहा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उससे भी मुँह फेर लिया फिर इसी तरह तीसरे व चौथे शख़्स ने भी उठकर हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में वो ही बात दोहराई तो फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनकी तरफ़ मुतवज्जै हुये उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि

वसल्लम) के चेहरे मुबारक से गुस्सा ज़ाहिर हो रहा था आपने फ़रमाया कि तुम अली से क्या चाहते हो आप ने ये जुमला तीन मर्तबा फ़रमाया फिर इरशाद फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और अ़ली मेरे बाअ़द हर मोमिन के वली हैं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/228-ह०-4579)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–18/128-ह०-265)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/259-ह०-350)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/340-ह०-1035)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/114-ह०-6929)
(इब्ने अबी शैबा–9/519-ह०-32784)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/284-ह०-32880)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/73-ह०-36444)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/153-ह०-89)

मज़कूरा हदीस पाक में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शिकायत पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक मुताग़य्यर हो जाना और आपके गुस्से का ज़ाहिर होना और आपका उन शिकायत करने वाले असहाब से मुँह फेरना और आपका ये इरशाद फ़रमाना कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि तुम जो हज़रत अ़ली की शिकायत करते हो तो गोया तुम मेरी यानी हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की शिकायत करते हो क्योंकि जब रसूलुल्लाह ने ये फ़रमां दिया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ तो हज़रत मौला अ़ली की शिकायत करना गोया हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) शिकायत करना है

और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का मज़कूरा हदीस में दूसरा फ़रमान कि मेरे बाअ़्द अ़ली हर मोमिन के वली हैं यानी जो हज़रत मौला अ़ली की विलायत का मुन्किर है वो मोमिन नहीं हैं बल्कि मुनाफ़िक़ है हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के बेशुमार फ़ज़ाइल व मरातिब हैं जिनका शुमार और मुवाज़िना करना ना मुम्किन है।

➡ हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम मेरे दामाद हो और मेरी औलाद के बाप हो और तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ।
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/208-ह०-138)

➡ हज़रत जुबशी बिन जुनादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरा पैग़ाम अ़ली ही पहुँचायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-119)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3719)
(इब्ने अबी शैबा–9/502-ह०-32734)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/332-ह०-1010)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/246-ह०-382)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/704-ह०-3431)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/16-ह०-3511)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/137-ह०-74)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने जब उहद के

दिन अलविया वालों को क़त्ल किया तो हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह बेशक यही अस्ल ग़मगुसारी है पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ये अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ तो हज़रत जिबरईल अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं आप दोनों से हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/72-ह०-934)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/371-ह०-1119)
(कंजुल उ़म्माल–7/74-ह०-36449)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/127)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/64)

➡ हज़रत बुरैदा और हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाद अ़ली हर मोमिन के वली हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712,3725)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/676-ह०-4842)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/574-ह०-6085)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225-ह०-20388)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14638,14732)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/391-ह०-1175)
(इब्ने अबी शैबा–9/519-ह०-32782)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/155-ह०-90)
(कंजुल उ़म्माल–7/70-ह०-36421,36454)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि–

अ़ली की बुराई न करो अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली हैं। (कंज़ुल उ़म्माल–6/288-ह०-32939)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया कि तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-119)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3716)

अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ है

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया करते थे कि किसी मुनाफ़िक़ की हज़रत अ़ली से मुहब्बत नहीं हो सकती और कोई मोमिन हज़रत अ़ली से बुग्ज़ नहीं रख सकता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3717)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/283-ह०-32875)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली से मुहब्बत सिर्फ़ मोमिन ही करेगा और अ़ली से बुग्ज़ मुनाफ़िक़ ही रखेगा और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त और मुझसे बुग्ज़ रखने वाला अल्लाह तआ़ला

से बुग्ज़ रखने वाला है और उसके लिये हलाकत है जो अ़ली से बुग्ज़ रखे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/626-ह०-4751)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे अ़हद फ़रमाया कि तुझसे मोमिन ही मुहब्बत करेगा और तुझसे बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ ही होगा। (मुस्लिम–सहीह–1/84-ह०-240)
(इब्ने माजा–सुनन–1/72-ह०-114)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1083-ह०-3736)
(मिश्कात–3/534-ह०-6088,6100)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/314-ह०-948)
(मुस्नद बज़्ज़ार–2/182-ह०-560)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/229-ह०-286)
(इब्ने अबी शैबा–9/500-ह०-32727)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/110-ह०-6924)
(कंजुल उ़म्माल–6/294-ह०-33026)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/169-ह०-100)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/492-ह०-5267)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/173)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)

उस ज़माने में सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) मुनाफ़िक़ों और मोमिनों की पहचान इस तरह किया करते थे कि जिसके चेहरे पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के नाम से मरोड़ व सिकुड़न आ जाये तो वो मुनाफ़िक़ है और जिसका चेहरा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के नाम से खुशी और मसर्रत से खिल उठे वो मोमिन है और क़यामत के दिन मोमिनों–

और मुनाफ़िक़ों की पहचान उनके चेहरों से की जायेगी

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और उन दोंनों यानी जन्नत व जहन्नम के दरमियान एक दीवार होगी और आअ़राफ़ पर यानी उस दीवार की बुलन्दियों पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को यानी जन्नतियों व दोज़ख़ियों को उनकी अ़लामतों से पहचान लेंगे। (सू०–आअ़राफ़–7/46)

➡हज़रत शाअ़लबी ने इस आयत की तफ़्सीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से बयान किया है कि आअ़राफ़ पुलसिरात पर एक बुलन्द जगह है हज़रत अ़ब्बास, हज़रत अ़ली हज़रत जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) खड़े होकर अपने चाहने वालों को सफ़ेद नूरानी चेहरों से और बुग़्ज़ रखने वालों को सियाह चेहरों से पहचान लेंगे।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/569)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया ऐ अली तू और तुझसे मुहब्बत करने वाले रोज़े क़यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब होकर आयेंगे और उनके चेहरे (नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन क़यामत के दिन मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा सियाह चेहरों के साथ सख़्त प्यास की हालत में आयेंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/474-ह०-941)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-998)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14749)

तमाम मुनाफ़िक़ीन हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत मैं अपने हाथों से मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरों को हौज़े कौसर से दूर भगा दूँगा जिस तरह कोई शख़्स अपनी चरागाह से अजनबी ऊँटों को भगा देता है। (तबरी-रियाजुन्नजरा-1/163)
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/383-ह०-1157)
(कंजुल उ़म्माल-7/78-ह०-36479,36484)

➡ हज़रत अ़ली बिन अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुआविया बिन हुदैज हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ देता था और उन पर तबर्रा (लाअ़न ताअ़न) करता था फिर जब मुआ़विया को हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के सामने पेश किया गया तो हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने पूछा कि ऐ मुआ़विया तू हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर तबर्रा करता है तो वो मुकर गया फिर हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया खुदा की क़सम अगर तेरी मुलाक़ात हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से हो तो तू उन्हें रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हौज़ पर खड़ा पायेगा और उनके हाथ में एक काँटेदार छड़ी होगी जिसके साथ वो मुनाफ़िक़ों को हौज़े कौसर से पीछे हटा रहे होंगे ये बात मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने बताई है।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/275-ह०-4669)
(तबरी-रियाजुन्नजरा-1/163)

सहाबा किराम मुनाफ़िक़ की पहचान किस तरह करते थे

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को हज़रत मौला अ़ली के बुग्ज़ से पहचानते थे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/259-ह०-4643)
(कंजुल उ़म्माल–7/59-ह०-36346)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–1/174)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/180)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह व हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा बयान करते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ की वजह पहचानते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3717)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/313-ह०-4151)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/126-ह०-14759)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/323-ह०-979,1086)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/180)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि चार आदमियों की मुहब्बत मुनाफ़िक़ के दिल में जमाअ़ नहीं हो सकतीं और मोमिन के सिवा इनसे कोई मुहब्बत नहीं करता और वो चार आदमी हैं हज़रत मौला अ़ली, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उ़मर फ़ारुक़, हज़रत उस्मान ग़नी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम)। (इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/427)

हज़रत अ़ली का रसूलुल्लाह से रिश्ता-ए-तअ़ाल्लुक़

➡हज़रत अबू सईद खुदरी व हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत अ़ली का मेरे साथ तअ़ाल्लुक़ इस तरह से है कि जिस तरह हारुन (अ़लैहिस्सलाम) का मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ तअ़ाल्लुक़ है अलबत्ता मेरे बाद नबूवत नहीं।
(बुख़ारी-सहीह-3/741-ह०-3706)
(मुस्लिम-सहीह-4/537-ह०-6217)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1082-ह०-3731)
(मुस्नद अहमद-2/364-ह०-3062)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/105-ह०-2003,3435)
(तबरानी-मुअ़जम औसत-1/737-ह०-1465)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/96-ह०-14642)
(इब्ने हिब्बान-सहीह-8/112-ह०-6927)
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/316-ह०-954)
(कंजुल उ़म्माल-780/-ह०-36488)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/411)

➡हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़ज़बए तबूक को तशरीफ़ ले जा रहे थे तो हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को मदीना मुनव्वरा का ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत अ़ली ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आप मुझे औ़रतों व बच्चों में छोड़े जाते हैं तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं हो कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है कि जैसे हारुन (अ़लैहिस्सलाम) का दर्जा मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के नज़दीक था पर मेरे बाद कोई नबी नहीं। (बुख़ारी–सहीह–4/423-ह०-4416)
(मुस्लिम–सहीह–5/558-ह०-6218)
(इब्ने माजा–सुनन–1/72-ह०-115)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3724)
(मिश्कात–3/534-ह०-6087)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/263-ह०-4652)
(मुस्नद अहमद–2/227-ह०-1608)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/658-ह०-4952)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/518-ह०-890)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/254-ह०-339,694,734,735)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/317-ह०-956,960,1041)
(इब्ने अबी शैबा–9/503-ह०-32732)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/111-ह०-6927)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32878)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/172)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/415)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/105-ह०-44)

हज़रत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के चचा ज़ाद भाई थे और हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चचा ज़ाद भाई थे जब आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़ज़वए तबूक पर जाने के लिये तैयार थे उस वक़्त आपने ये फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी व खुश नहीं हो कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसे हारुन का मूसा

(अ़लैहिमस्सलाम) के नज़दीक था इस इरशादे मुबारक से हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को वो शरफ़ (मर्तबा) मिला जो बनी ईसराईल में हारुन (अ़लैहिस्सलाम) को मिला था मगर फ़र्क़ इतना था कि हारुन अ़लैहिस्सलाम नबी हैं और हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ख़ातिमुल अम्बिया हैं आपके बाअ़द कोई पैग़म्बर दुनिया में नहीं आना था।

जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़ज़वए तबूक पर जाने लगे तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को मदीना मुनव्वरा का ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत मौला अ़ली ने अ़र्ज़ किया कि आप मुझे अपने साथ ग़ज़वए तबूक पर नहीं ले जा रहे हैं बल्कि अ़ौरतों और बच्चों की देखभाल व हिफ़ाज़त के लिये मदीने में छोड़े जा रहे हैं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं कि तुम्हारा मेरे साथ तअ़ाल्लुक़ इस तरह है जिस तरह हारुन का मूसा (अ़लैहिमस्सलाम) के साथ तअ़ाल्लुक़ था जब हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) कोहे तूर पर गये थे तो हज़रत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) को अपना ख़लीफ़ा बना गये थे लेकिन इस हदीस ये मुराद नहीं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के विसाल के बाद भी आप ख़लीफ़ा होंगे बल्कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने वक़्ती तौर पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया था ग़रज़ ये है कि जो क़राबत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) को मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से थी उससे कई गुना ज़्यादा क़राबत हज़रत अ़ली को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से थी।

-: तीन फ़ज़ीलतें :-

➡हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास को हुक्म दिया और पूछा कि तुम अबू तुराब (यानी हज़रत अ़ली) को बुरा क्यों नहीं कहते हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास ने कहा मैं तीन बातों की वजह से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को हरगिज़ बुरा नहीं कहूँगा जो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाई थीं मैंने सुना है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली से ग़ज़बा-ए-तबूक पर जाते वक़्त मुख़ातिब होकर फ़रमाया ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसा कि हारुन का मूसा (अ़लैहिमस्सलाम) के नज़दीक था पर मेरे बाअ़द कोई नबी नहीं

और मैंने सुना है ख़ैबर के दिन आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कल मैं ऐसे शख़्स को झण्डा दूँगा जो मुहब्बत रखता है अल्लाह व उसके रसूल से और अल्लाह और उसका रसूल भी उससे मुहब्बत रखते हैं और उसके हाथों पर अल्लाह तआ़ला फ़तह देगा पस ये सुनकर हम इंतिज़ार करते रहे और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली को बुलाओ फिर हज़रत अ़ली आये तो उनकी आँखें दुख्तीं थीं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की आँखों पर अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया (पस उनकी आँखों की तमाम तकलीफ़े ख़त्म हो गईं) फिर हज़रत मौला अ़ली को झण्डा दिया

गया और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अ़ली के हाथ पर फ़तह दी और मैंने सुना है जब ये आयत नाज़िल हुई कि बुलायें हम अपने बेटों को और बुलाओ तुम अपने बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपने आपको और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं फिर हम मुबाहला करते हैं और झूठों पर अल्लाह की लाअ़नत भेजते हैं (सू०-आले इमरान-3/61) तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया और फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं (अबू तुराब हज़रत मौला अ़ली की कुन्नियत है)
(मुस्लिम–सहीह–4/559-ह०-6220)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1078-ह०-3724)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/225-ह०-4575)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा–1/61)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/113-ह०-54)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/43-ह०-11)

मज़कूरा हदीस मुबारका से कई बातें वाज़ेह हुईं हैं एक ये कि अल्लाह व रसूल और हज़रत अ़ली की बाहमी मुहब्बत व क़राबत इस बात पर दलालत करती है कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मरतबत के आअ़ला मक़ामो मन्ज़िलत पर फ़ाइज़ थे और दूसरी बात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इ़ल्मे ग़ैब को साबित करती है कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये फ़रमाना कि कल मैं उस शख़्स को झण्डा अ़ता करूँगा कि जिसके हाथों पर अल्लाह तआ़ला फ़तह देगा ये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब पर दलालत करता है।

तीसरी बात ये कि जब आयते मुहाबला नाज़िल हुई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अब्नाअना में हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को और निसाअना में सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को और अन्फुसाना में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने साथ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को शामिल किया और फ़रमाया ये मेरे अहले बैत हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इस फ़रमाने मुबारक ने लोगों के अहले बैत के मुताअ़ल्लिक़ मुग़ालते की नफ़ी कर दी कि कोई शख़्स अ़ली, फ़ातिमा हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को मेरे अहले बैत से जुदा गुमान न करे बल्कि मेरे अह्ले बैत में हज़रत मौला अ़ली सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आअ़ला दरजात के मन्सब पर फाइज़ है।

➡हज़रत साअ़द बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को तीन ऐसी फ़ज़ीलतें हासिल हैं कि अगर मुझे उनमें से एक भी हासिल हो तो वो मेरे लिये दुनिया व जो कुछ इसमें है इससे बेहतर है एक ये कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ग़दीरे खुम के दिन अल्लाह तआ़ाला की हम्दो सना करने के बाअ़द फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि मैं मोमिनीन पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आपने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और उससे दुश्मनी रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे दूसरी

फ़ज़ीलत है कि हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को ग़ज़वाए ख़ैबर के मौक़े पर लाया गया उस वक़्त आपकी आँखों में तकलीफ़ थी आपने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी आँखों में तकलीफ़ है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली की आँखों में अपना लुआ़बे दहन लगाया और हज़रत अ़ली के लिये दुआ़ फ़रमाई उसके बाअ़द शहादत तक कभी भी आपको आँखों में तकलीफ़ नहीं हुई और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हाथ पर ख़ैबर फ़तह फ़रमाया

तीसरी फ़ज़ीलत ये है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने चचा हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और दीगर सहाबा किराम को मस्जिद से मुन्तक़िल होने का हुक्म दिया तो हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आपसे अ़र्ज़ की कि आप हमें यहाँ से मुन्तक़िल होने का हुक्म दे रहे हैं हालांकि हम आपके क़रीबी रिश्तेदार और आपके चचा हैं और हज़रत अ़ली को मस्जिद में ठहरा रहे हैं पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने न तो तुम्हें मुन्तक़िल किया है और न ही अ़ली को ठहराया है बल्कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मस्जिद से मुन्तक़िल किया है और अ़ली को ठहराया है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/239-ह०-4601)
(कंजुल उ़म्माल–6/82-ह०-36495)

➡ हज़रत अबू हुरैरा व हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं हज़रत अ़ली को तीन फ़ज़ीलतें अ़ता की गईं अगर मुझे उनमें

से कोई एक भी मिली होती तो ये मेरे लिये सुर्ख़ ऊँटों के मिलने से ज़्यादा खुशकुन होती तो पूछा गया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन वो फ़ज़ीलतें कौन सी हैं पस आपने फ़रमाया 1- नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की साहबज़ादी उनके अ़क्द में आयीं 2- वो रसूलुल्लाह के हमराह मस्जिद में रिहायश पज़ीर थे और उनके लिये मस्जिद में सब कुछ हलाल था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के लिये हलाल था 3- ग़ज़वए ख़ैबर के दिन अ़लम हज़रत मौला अ़ली को अ़ता हुआ।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/253-ह०-4632)
(मुस्नद अहमद–1/353-ह०-4797)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/111-ह०-14698)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/135-ह०-955)
(इब्ने अबी शैबा–9/512-ह०-32762)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–4/333-ह०-5575)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/60-ह०-36359)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/432)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)

➡ मुआ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान ने हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से हज़रत मौला अ़ली के बारे में कुछ कहा तो हज़रत साअ़द को गुस्सा आ गया फिर हज़रत साअ़द ने मुआ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान से कहा कि तुम हज़रत मौला अ़ली के बारे में ऐसी बातें करते हो जिनके पास ये फ़ज़ाइल हैं कि जिनमें से एक फ़ज़ीलत भी मेरे मुताअ़ल्लिक़ होती तो वो मेरे लिये सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर होती 1- ग़ज़वए ख़ैबर के दिन आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने उनको झण्डा दिया और ख़ैबर फ़तह हुआ 2- आप

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हारी मेरे साथ वही निस्बत है जो हारुन की मूसा अ़लैहिमस्सलाम के साथ थी 3- आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली भी मौला है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/74-ह०-121)
(इब्ने अबी शैबा–9/504-ह०-32741)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/362-ह०-1093)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/44-ह०-12)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/195-ह०-126)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते कि हज़रत अ़ली को तीन ख़सलतें अ़ता की गईं हैं और उनमें हर एक मुझे हर उस चीज़ से ज़्यादा महबूब है कि जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुमने मोमिनीन में सबसे पहले इस्लाम कुबूल किया और तुम्हारा मेरे साथ तआ़ल्लुक़ ऐसा है जैसा हारुन (अ़लैहिस्सलाम) का मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ था और झूटा है वो शख़्स जो मेरी मुहब्बत का दाअ़वा करता हो और वो तुझसे बुग्ज़ रखता हो। (कंज़ुल उ़म्माल–7/66-ह०-36392)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया शबे मेअ़राज अल्लाह तआ़ला ने मुझे वही के ज़रिये हज़रत अ़ली की तीन सिफ़ात की ख़बर दी हैं कि हज़रत अ़ली तमाम मोमिनीन के सरदार हैं व तमाम मुत्तक़ीन के इमाम हैं

और क़ियामत के दिन नूरानी चेहरे वालों के क़ायद हैं। (तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–2/88)

–: सात फ़ज़ीलतें :–

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया कि ऐ अ़ली मैं तुम्हारे ऊपर ग़ालिब हूँ नबूवत की वजह से और तुम औरों पर ग़ालिब हो सात बातों की वजह से उनमें से तुम्हारे साथ कोई दूसरा शामिल नहीं है कि कुरैश में से तुमने सबसे पहले ईमान कुबूल किया और तुम सबसे ज़्यादा अ़हद को पूरा करने वाले हो और अल्लाह तआ़ला के अहकाम को ज़्यादा क़ायम करने वाले हो और तुम रिआ़या के साथ सबसे ज़्यादा इन्साफ़ करने वाले हो और मुक़द्दमा को सबसे ज़्यादा समझने वाले साहिबे बसीरत हो और तुम रिआ़या के साथ सबसे ज़्यादा शफ़क़त करने वाले हो और अल्लाह तआ़ला के यहाँ सबसे ज़्यादा खुसूसियत व मर्तबे वाले हो। (कंज़ुल उ़म्माल–6/292-ह०-32994,32995)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-203,204)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/133)

रसूलुल्लाह ने सबसे ज़्यादा फ़ज़ाइल मौला अ़ली के बयान फ़रमाये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के जिस क़दर फ़ज़ाइल बयान–

फ़रमाये उस क़दर किसी और के फ़ज़ाइल बयान नहीं फ़रमाये। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/222-ह०-4572)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-216)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/172)

➡हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के किसी सहाबी के फ़ज़ाइल में इतनी अहादीस वारिद नहीं हैं जितनी अहादीस हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में हैं। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/223-ह०-4572)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/172)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/413)

–: मौला अ़ली की चार खुसूसियात :–

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में चार खुसूसियात ऐसी हैं कि जो किसी दूसरे में नहीं पाई जातीं 1- तमाम अ़रब व अजम में हज़रत मौला अ़ली ऐसे शख़्स हैं कि जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हमराह सबसे पहले नमाज़ पढ़ी 2- हर जंग में झण्डा हज़रत मौला अ़ली के पास ही रहा 3- जिस दिन लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को छोड़कर जंग से भाग गये थे मगर हज़रत मौला अ़ली साबित क़दम रहे और हज़रत मौला अ़ली ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ सब्र किया 4- हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ही वो शख़्स हैं जिन्होंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को

गुस्ल दिया और लहद में उतारा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/229-ह०-4582)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–1/600,601)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/148)

–: अट्ठारह सिफ़ात :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में अट्ठारह (18) सिफ़ात ऐसे थे कि जो किसी दूसरे सहाबी में इकट्ठा नहीं थे।
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)

मौला अ़ली के उ़म्दाह औसाफ़ में एक वस्फ़ भी तक़सीम हो तो वो वसीअ़ हो

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में इतने बेहतरीन औसाफ़ जमाअ़ हैं कि अगर उनमें से एक को भी लोगों के दरमियान तक़सीम कर दिया जाये तो वो ख़ैर के एतबार से बहुत ज़्यादा वसीअ़ हों।
(इब्ने अबी शैबा–9/522-ह०-32791)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)

हज़रत मौला अ़ली व हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की फज़ीलत

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जंगे बदर के मौक़ेअ़ पर मेरे और हज़रत

अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) के बारे में इरशाद फ़रमाया कि तुम में से एक की दायीं जानिब हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) हैं और दूसरे की दायीं जानिब हज़रत मीकाइल (अ़लैहिस्सलाम) हैं और हज़रत इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) बहुत अ़ज़ीम फ़रिश्ते हैं जो कि जंग में हाज़िर होते हैं और सफ़ों में शरीक होते हैं (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/268-ह०-4653)

–: मौला अ़ली का हुस्ने अख़्लाक़ :–

➡ हज़रत ज़िरार बिन ज़म्राह फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़ैसला कुन बात करते थे और आ़दिल थे और आपसे इ़ल्म व हिकमत के चश्मे जारी होते थे और आप दुनिया व उसकी आराइश से कोसों दूर रहते थे और आप रात में अल्लाह तआ़ाला का ज़िक्र व इबादत में मशगूल रहा करते थे और आप हमेशा मुताफ़क्किर रहते थे और आप अपने नफ़्स का मुहासिबा करते थे और हममें से जब कोई आपके पास जाता तो वो अपने क़रीब बैठाते थे और वो हमारे हर सुवाल का जवाब देते थे और आप तकल्लुम के वक़्त (कलाम करते वक़्त) गोया उनके दहन मुबारक से मोती झड़ते थे और आप अहले दीन की ताअ़ज़ीम करते थे मसाकीन से मुहब्बत फ़रमाते थे आपके दौरे हुकूमत में किसी ने भी नाजाइज़ फ़ायदा नहीं उठाया और आपके अ़द्ल की वजह से कमज़ोर इन्सान कभी भी नाउम्मीद नहीं होता था मैंने रात को आपको रोते हुये देखा और आप दुनिया से कहते थे कि तेरा मेरा कोई तआ़ल्लुक़ नहीं क्योंकि तेरी उ़म्र कम है।

(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/89-ह०-261)

(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–24/401)

रसूलुल्लाह ने मौला अ़ली के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के कंधे पर अपना हाथ मुबारक रखकर फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुझसे अ़दावत की जायेगी और झगड़ा किया जायेगा और तुम ईमान के ऐतबार से पहले मोमिन हो और तुम सबसे ज़्यादा इ़ल्म रखते हो और तुम सबसे ज़्यादा वाअ़दा वफ़ा करते हो और सबसे ज़्यादा दुरस्ती पर चलने वाले हो लोंगों पर सबसे ज़्यादा मेहरबान हो और तुम मेरे बाजू हो और मुझे गुस्ल देने वाले और मुझे दफ़न करने वाले हो और हर सख़्ती व परेशानी में आगे बढ़ने वाले हो और तुम क़यामत के दिन हम्द का झण्डा उठाये मुझसे आगे चलोगे ऐ अ़ली तुम हौज़े कौसर पर मेरे साथ होगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास फ़रमाते हैं कि मौला अ़ली तन्ज़ील व तावील का इ़ल्म रखते थे (कंजुल उ़म्माल–7/64-ह०-36378)

अम्बिया किराम के औसाफ़ मौला अ़ली में

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) का इ़ल्म व हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) का फ़हम और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का हिल्म और हज़रत याह्या बिन ज़करिया (अ़लैहिमस्सलाम) का जुहद और हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का बत्स (हमला करना)–

देखना चाहे तो उसे चाहिये कि वो अ़ली की तरफ़ देखे अ़ली में ये तमाम सिफ़ात मौजूद हैं।
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/192)

मौला अ़ली दुनिया व आख़िरत में सरदार हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तू दुनिया व आख़िरत में सरदार है और तेरा महबूब मेरा महबूब है और मेरा महबूब अल्लाह का महबूब है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और उसके लिये हलाकत (बर्बादी) है जो मेरे बाअ़द तुम्हारे साथ बुग्ज़ रखे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257-ह०-4640)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210-ह०-8325)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली तमाम मोमिनों के सरदार हैं और माल मुनाफ़िक़ीन का सरदार है।
(कंजुल उ़म्माल–06/286-ह०-32915)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/426)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तू दुनिया व आख़िरत में सरदार है जो तुझसे मुहब्बत करेगा वो मुझसे मुहब्बत करेगा व जिसने तुझसे मुहब्बत की उसने

मुझसे मुहब्बत की और तेरा महबूब मेरा महबूब तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और तेरा दोस्त मेरा दोस्त और मेरा दोस्त अल्लाह तआ़ला का दोस्त है और तुम्हारा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और हलाकत व बर्बादी है उस शख़्स के लिये जो मेरे बाअ़द तुमसे बुग्ज़ रखेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257-ह०-4640)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/361-ह०-1092)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210-ह०-8325)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/74)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अनस अ़रब के सरदार को बुला लाओ हज़रत आयशा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप अ़रब के सरदार नहीं हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं औलादे आदम का सरदार हूँ और अ़ली अह्ले अ़रब के सरदार हैं। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/251-ह०-4626)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/105-ह०-14682)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14753)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/377-ह०-2683)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/90-ह०-2749)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/738-ह०-1468)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/293-ह०-33007)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/74-ह०-364481)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/63)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/129)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/72)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने वुजू फ़रमाया फिर दो रकअ़त नमाज़ अदा की फिर फ़रमाया कि ऐ अनस इस दर‘वाज़े से दाख़िल होने वाला सय्यदुल मुस्लिमीन होगा और मैं दिल ही दिल में ये दुआ़ करता रहा कि ऐ अल्लाह दाख़िल होने वाले का तआ़ल्लुक़ अन्सार से हो फिर कुछ देर बाअ़द हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) दाख़िल हुये हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ की आज आपने मेरे मुताअ़ल्लिक़ अजीब बात इरशाद फ़रमाई फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐसा ही होगा।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/72-ह०-192)

➡ हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि मुसलमानों के सरदार और मुत्तक़ियों के इमाम अ़ली को खुश आमदीद और जो अ़ली की मदद करेगा वो मदद किया जायेगा और जो अ़ली को बेयारो मददगार छोड़ेगा वो ज़लील होगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/274-ह०-4668)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/528-ह०-904)
(कंजुल उ़म्माल–7/87-ह०-36527)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-205)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/73)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया शबे मेअ़राज–

अल्लाह तआ़ाला ने मुझे वही के ज़रिये हज़रत अ़ली की तीन सिफ़ात की ख़बर दी है कि हज़रत अ़ली तमाम मोमिनीन के सरदार हैं व तमाम मुत्तक़ीन के इमाम हैं और क़यामत के दिन नूरानी चेहरे वालों के क़ायद हैं।
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–2/88)

मौला अ़ली के हक़ में तीन सौ कुरान की अयात नाज़िल हुईं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला ने कुरान मजीद की जितनी आयतों में ''या अय्युहल लज़ीना आमनू'' करके ख़िताब किया है उसमें हज़रत अ़ली मोमिनीन के सरदार और अमीर मुराद हैं कुरान में बाअ़ज़ मक़ामात पर दूसरे सहाबा किराम को इताब किया गया लेकिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को हर जगह भलाई के साथ याद फ़रमाया गया हज़रत मौला अ़ली की शान में अल्लाह तआ़ाला ने जो कुछ भी फ़रमाया वो दूसरों के लिये नहीं फ़रमाया हज़रत मौला अ़ली की शान में 300 आयात कुरान में मौजूद हैं।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/369-ह०-1114)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/74-ह०-194)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/432)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हक़ में कुरान मजीद में तीन सौ आयात नाज़िल हुईं
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/369)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि कुरान मजीद में जितनी आयात हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हक़ में नाज़िल हुईं किसी और के हक़ में नाज़िल नहीं हुईं।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/363)

रसूलुल्लाह का हज़रत अ़ली से खूनी तआ़ल्लुक़

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से फ़रमाया कि ये अ़ली बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) हैं इनका खून मेरा खून है और इनका गोस्त मेरा गोस्त है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/18-ह०-12341)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/99-ह०-14654)
(कंजुल उ़म्माल–6/287-ह०-32933)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की अहमियत और मन्ज़िलत मेरे नज़दीक वही है जो मेरे सर की मेरे बदन के लिये है जो मेरे जिस्म से सर को हासिल है। (कंजुल उ़म्माल–6/286-ह०-32911)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/34)

➡ हज़रत जाबिर व इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और अ़ली एक ही नस्ल से हैं जबकि लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और एक रिवायत में है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और मैं और तुम एक ही नस्ल से हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/288-ह०-32940,32941)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/82-ह०-14582)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/50-ह०-6888)

हक़ अ़ली के साथ अ़ली हक़ के साथ

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये दुआ़ मांगी ऐ अल्लाह अ़ली पर रहम फ़रमां और ऐ अल्लाह अ़ली जिधर को रुख़ करें हक़ का रुख़ भी उधर को हो जाये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/173-ह०-3714)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/252-ह०-4629)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ व हिदायत के कामिल व बेहतरीन नमूना थे आपने कभी भी हक़ व हिदायत का और हक़ व हिदायत ने कभी आपका साथ नहीं छोड़ा जिस तरह रुह और जिस्म का मज़बूत बाहमी तआ़ल्लुक़ होता है उसी तरह से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हक़ व हिदायत से मज़बूत बाहमी तआ़ल्लुक़ था और ये सारा फ़ैज़ दुआ़–ए–मुस्तफ़ा के असर व निस्बते मुस्तफ़ा के सबब से था।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है

कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तअ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ पर कि उन्होंने मुझे अपनी लड़की ब्याह दी और मुझे हिजरत के घर ले आये और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया और अल्लाह तबारक व तअ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत उ़मर पर कि वो हक़ बात कहते हैं अगरचा किसी को नागवार लगे और हक़ ने उ़मर को ऐसे हाल में छोड़ा कि कोई उसका दोस्त नहीं सिवाय अल्लाह व रसूल के और अल्लाह तअ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत उस्मान पर कि फ़रिश्ते उससे हया करते हैं व अल्लाह तअ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत अ़ली पर और ऐ अल्लाह हक़ हमेशा अ़ली के साथ रहे वो जहाँ कहीं भी हों।
(तिर्मिज़ी–सुनन–21073/-ह०-3714)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/252-ह०-4629)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/483-ह०-5906)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/51-ह०-806)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/206-ह०-550)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/355-ह०-546)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली हक़ के साथ है और हक़ अ़ली के साथ है (कंजुल उ़म्माल–6/293-ह०-33018) (तबरी–रियाजुन्नजरा–1/116)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें बेहतर लोगों की ख़बर न दूँ सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्यों नहीं तो फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेहतर वो है जो पाक है

और वाअ़दों को पूरा करने वाले हैं और रब तआ़ला मुत्तक़ी परहेज़गार को पसंद फ़रमाता है कि इतने में हज़रत मौला अ़ली गुज़रे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हक़ अ़ली के साथ है हक़ अ़ली के साथ है ये जुमला आपने दो बार फ़रमाया। (अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/58-ह०-1047)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं अ़ली हक़ पर हैं जो इनकी पैर'वी करेगा वो हक़ की पैर'वी करेगा और जो इनकी पैर'वी नहीं करेगा वो हक़ को छोड़ देगा।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/129-ह०-14768)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली का मुसलमानों पर इस क़दर हक़ है जिस क़दर वालिद का बेटे पर हक़ होता है। (तबरी–रियाजुन्नजरा–1/64)

दुनिया व आख़िरत में मौला अ़ली रसूलुल्लाह के भाई हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सहाबा किराम के दरमियान भाई चारा क़ायम कराया तो हज़रत मौला अ़ली हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में इस हाल में हाज़िर हुये कि आपकी आँखों से आँसू जारी थे आपने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आपने सहाबा के दरमियान भाई चारा क़ायम फ़रमाया लेकिन

मुझे किसी का भाई नहीं बनाया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1076-ह०-3720)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/63-ह०-4288)
(मिश्कात–3/536-ह०-6093)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/335-ह०-1019)
(कंजुल उ़म्माल–6/283-ह०-32876)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–4/355)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/610)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/49)

रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को अपना भाई क़रार दिया और दुनिया व आख़िरत में आप इस अज़ीम मर्तबे से बहरेयाब हुये।

➡ नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे भाइयों में सबसे बेहतरीन हज़रत अ़ली हैं और मेरे चचाओं में सबसे बेहतरीन हज़रत हम्ज़ाह हैं। (कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32890)

➡हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुये फिर अल्लाह तआ़ाला की हम्दो सना की फिर फ़रमाया फ़ैसला अल्लाह का फ़ैसला है जो तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जुबान मुबारक से जारी हुआ है और वो ये है कि मुझसे मोमिन ही मुहब्बत करेगा और मुनाफ़िक़ मुझसे बुग्ज़ रखेगा और वो नुक़सान में हैं कि जिसने इफ़्तिरा

बांधा और मैं अल्लाह का बन्दा हूँ रसूलुल्लाह का भाई हूँ और मेरे बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को कोई भाई न कहे और मेरे बाअ़द जो भी ऐसा दाअ़वा करे वो झूटा है चुनांचा एक शख़्स ने यही बात कही तो वो पागल हो गया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-120)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/302-ह०-441)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/168-ह०-36410)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/128-ह०-67)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-949)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14750)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने लोगों के दरमियान मुआ़ख़ात (भाईचारा) क़ायम किया और मुझे छोड़ दिया मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह कि आपने सहाबा के दरमियान मुआ़ख़ात क़ायम की और मुझे छोड़ दिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें अपने लिये चुन लिया है तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ अगर कोई शख़्स तुम्हारे साथ झगड़ा करे तो कह देना कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और रसूलुल्लाह का भाई हूँ और इसका दाअ़वा तुम्हारे बाअ़द कोई झूटा ही करेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/72-ह०-36440)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/287-ह०-32936)

मौला अ़ली अल्लाह के महबूब बन्दे हैं

➡ हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास एक पका हुआ परिन्दा रखा हुआ था आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दुआ़ा माँगी ऐ अल्लाह मख़लूक़ में से अपने महबूब तरीन शख़्स को मेरे पास भेज दे ताकि वो मेरे साथ ये परिन्दा खाये इतने में मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हाज़िर हुये फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ वो परिन्दा खाया।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1076-ह०-3721)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/262-ह०-4650)
(मिश्कात–3/536-ह०-6094)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/640-ह०-6323)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/856-ह०-1744)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/117-ह०-14723)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/313-ह०-945)
(कंजुल उ़म्माल–7/83-ह०-36505,36508)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/41-ह०-10)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611,612)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/29)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का मौला अ़ली को बिन मांगे अ़ता करना

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जब भी मैं कुछ माँगता हूँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मुझे अ़ता फ़रमाते हैं और अगर मैं ख़ामोश रहता हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मुझसे इब्तिदा फ़रमाते हैं यानी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हज़रत अ़ली से खुद पूछते और बग़ैर सुवाल के अ़ता फ़रमाते
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1077-ह०-3722)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/253-ह०-4630)
(मिश्कात–3/536-ह०-6095)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/365-ह०-1099)
(इब्ने अबी शैबा–9/502-ह०-32732)
(कंजुल उ़म्माल–7/65-ह०-36987)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/186-ह०-119)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से अ़र्ज़ किया गया कि क्या बात है कि आप हदीस में रसूलुल्लाह के असहाब में सबसे ज़्यादा जानने वाले हैं आपने फ़रमाया कि जब मैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से पूछा करता था तो आप मुझे बता देते थे और जब मैं ख़ामोश रहता तो आप खुद मुझे बताया करते थे। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/408-ह०-5913)
(कंजुल उ़म्माल–7/68-ह०-36405)
(इब्ने साअ़द–तबकातुल कुबरा–2/275)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/74)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/419)

अल्लाह तआ़ला ने मौला अ़ली से सरगोशी फ़रमाई

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी

है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने तॉयफ़ के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुलाया और फिर उनसे सरगोशी (कानाफूसी) की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के साथ सरगोशी तवील हो गई तो फिर लोगों ने कहा कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने चचाज़ाद भाई हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बहुत देर तक सरगोशी की है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने अ़ली से सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह तआ़ला ने खुद हज़रत अ़ली से सरगोशी फ़रमाई है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1080-ह०-3726)
(मिश्कात–3/537-ह०-6097)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/186-ह०-1756)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/343-ह०-2160)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/296-ह०-33049)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/140)

रसूलुल्लाह की दुआ़ मेरा विसाल न हो जब तक अ़ली को न देख लूँ

➡ हज़रत उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक लश्कर भेजा था कि जिसमें हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) भी थे मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हाथ उठाये दुआ़ माँगते हुये सुना था ऐ अल्लाह उस वक़्त तक मेरा विसाल न करना जब तक

कि मुझे अ़ली को न दिखादे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1083-ह०-3737)
(मिश्कात–3/537-ह०-6099)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–25/68-ह०-168)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/221-ह०-2432)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/343-ह०-1039)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/186)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) की जुदाई में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये दुआ़ फ़रमाना इंतिहाई मुहब्बत की अ़लामत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हज़रत मौला अ़ली से बेहद मुहब्बत थी और मौला अ़ली को भी हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से बेइंतिहा मुहब्बत थी हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) अल्लाह व रसूल के मुहिब भी थे और मेहबूब भी थे।

रसूलुल्लाह ने अ़ली के सिवा सब दर‘वाज़े बन्द करने का हुक्म दिया

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के दर‘वाज़े के सिवा तमाम दर‘वाज़े बन्द करने का हुक्म दिया जो कि मस्जिदे नबवी में खुलते थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के सिवा किसी को हलाल नहीं कि वो हालते जनाबत में इस मस्जिद से गुज़रे हज़रत–

ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कुछ लोगों ने एअ़तराज़ किया तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फरमाया ख़ुदा की क़सम मैंने अपनी मर्ज़ी से न किसी का दर'वाज़ा बन्द कराया है और न किसी का खोले रखा है बल्कि मुझे अल्लाह तअ़ाला ने हुक्म दिया जिसकी मैंने पैर'वी की है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1080-ह०-3727)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/253-ह०-4631)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/104-ह०-1999)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/194-ह०-3930)
(मुस्नद अहमद–2/364-ह०-3062)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/422-ह०-8369)
(मिश्कात–3/5376098-ह०-6098)
(मुस्नद बज़्ज़ार–4/36-ह०-1197)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/422-ह०-699,705,714)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/576-ह०-1038,)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/354-ह०-1042)
(कंजुल उ़म्माल–6/293-ह०-33005,33051,33052)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/104-ह०-14677,14676,14679)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/325-ह०-985)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/466-ह०-5141)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/157)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/94-ह०-38,39)

➡ हज़रत साअ़द बिन मालिक रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने चचा हज़रत अ़ब्बास (रज़ि अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) और दीगर सहाबा को मस्जिद से मुन्तक़िल होने का हुक्म फ़रमाया तो हज़रत अ़ब्बास

(रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आप हमें यहाँ से मुन्तक़िल होने का हुक्म दे रहे हैं हालांकि हम आपके क़रीबी रिश्तेदार और आपके चचा हैं और हज़रत अ़ली को मस्जिद में ठहरा रहे हैं पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने न तो तुम्हें मुन्तक़िल किया है और न ही अ़ली को ठहराया है बल्कि अल्लाह तआ़ाला ने तुम्हें मस्जिद से मुन्तक़िल किया है और अ़ली को ठहराया है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/239-ह०-4601)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/82-ह०-36495)

हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) का खुत्बा

➡ हज़रत इमाम हसन बिन अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) ने खुत्बा दिया और रब तआ़ाला की हम्दो सना की और अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र फ़रमाया कि गुज़िश्ता कल तुमसे वो हस्ती जुदा हो गई कि जिनसे न तो गुज़िश्ता लोग इ़ल्म में सबक़त ले सके और न ही बाअ़द में आने वाले उनके इ़ल्मी मर्तबे को पा सकेंगे हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को अपना झण्डा देकर भेजते थे और जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) आपकी दाँयी तरफ़ होते थे और मीकाईल (अ़लैहिस्सलाम) आपकी बाँयी तरफ़ होते थे और आपकी फ़तह होने तक वो आपके साथ रहते थे और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के वसी थे और सिद्दीक़ीन व शुहदा के अमीन थे और मैं यानी हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) ग़ैब की ख़बरें बताने वाले

नबी का लख़्ते जिगर हूँ और मैं रहमतुललिल आ़लमीन का बेटा हूँ और मैं उन घर वालों का बेटा हूँ जिनसे अल्लाह तआ़ला ने पलीदी दूर कर दी और मैं उस घर का चश्मो चिराग़ हूँ कि जिनकी मुहब्बत और विलायत अल्लाह तआ़ला ने फ़र्ज़ की है फिर हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने सूरह शूरा की आयत पढ़ी 'ऐ प्यारे हबीब आप फ़रमां दें मैं इस (तबलीग़े दीन) पर तुमसे कोई उजरत व मुआवज़ा नहीं मांगता सिवाए अपने घर वालों की मुहब्बत के'।

(मुस्नद अहमद–2/344-ह०-1719)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/334-ह०-4802)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/364-ह०-2651,2656)
(तबरानी–मुअ़जम–औसत–2/83-ह०-2155)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/143-ह०-14798)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/307-ह०-922)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/179-ह०-6725)
(इब्ने अबी शैबा–9/510-ह०-32757)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/124-ह०-6936)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/65-ह०-23)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-201)

हज़रत मौला अ़ली ने क़िलाअ़ ख़ैबर का दर'वाज़ा उठा लिया

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि बिला शुबा ग़ज़बा–ए–ख़ैबर के दिन हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने अकेले ही क़िलाअ़ ख़ैबर का दर'वाज़ा उठा लिया यहाँ तक कि मुसलमान क़िलेअ़ पर चढ़ गये और उसे फ़तह कर लिया और बेशक ये बात आज़माई है कि उस दर'वाज़े को चालीस आदमी–

मिलकर उठाते थे। (इब्ने अबी शैबा–9/524-ह०-32802)
(कंजुल उ़म्माल–7/71-ह०-36431)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/412)
(कशफुल ख़िफ़ा–1/365-ह०-1168)

हज़रत मौला अ़ली फ़ातेह ख़ैबर हैं

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द व हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि ख़ैबर के दिन मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि ज़रुर मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं और वो पीठ फेर कर नहीं भागेगा पस लोगों ने इसी बात का तज़किरा करते हुये रात गुज़ारी कि झण्डा किसको अ़ता होगा जब सुबह हुई तो लोग हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाह में हाज़िर हुये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अ़ली कहाँ हैं तो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह उनको आँखों में तकलीफ़ है यानी उनकी आँखें दुखती हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उनको बुलवाया तो जब हज़रत अ़ली आये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली की आँखों में अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया व उनके लिये दुआ़ की पस वो उसी जगह तन्दरुस्त हो गये और उनकी आँखों की तकलीफ़ बिल्कुल ख़त्म हो गई कि गोया उनको कोई तकलीफ़ थी ही नहीं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उनको झण्डा–

अ़ता फ़रमाया तो उन्होंने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह क्या हम उनसे जिहाद इसलिये करें कि वो हमारी मिस्ल हो जायें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया आप उनके सहन में उतरें और उन्हें इस्लाम की दाअ़वत दें और उनको वो बात बतायें जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन पर वाजिब है फिर अगर वो गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद नहीं और बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो उन्होंने मुझसे अपनी जान व माल को बचा लिया तो खुदा की क़सम आपकी रहनुमाई से एक शख़्स को अल्लाह तआ़ला का हिदायत देना आपके लिये सुर्ख़ ऊँटों से ज़्यादा बेहतर है हज़रत सलमा बिन अक्वाअ़ फरमाते हैं कि हज़रत अ़ली तेज़ी से निकले और मैं आपके पीछे चला फिर हज़रत अ़ली ने हमला किया और झण्डा गाड़ा क़िलेअ़ के ऊपर से यहूदी ने देखा तो उसने कहा कि आप कौन हैं आपने फ़रमाया मैं अ़ली हूँ तो यहूदी ने कहा कि आप ग़ालिब आ गये हो फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली के हाथ पर फ़तह दी। (बुख़ारी–सहीह–3/738-ह०-3701)
(मुस्लिम–सहीह–4560/-ह०-6222,6223,6224)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/117-ह०-6932)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/106-ह०-4342)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/328-ह०-5744,6178)
(मुस्नद अहमद–1/641-ह०-1608)
(मिश्कात–3/534-ह०-6089)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/259-ह०-349)
(इब्ने अबी शैबा–9/511-ह०-32759)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/326-ह०-988,1009,1030)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/48-ह०-15,16)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/415)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/173)

➡ हज़रत अबू लैला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कल मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं फिर आपने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को बुलाया और उनको झण्डा दिया
(बुख़ारी–सहीह–3/739-ह०-3702)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/105-ह०-4342)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/632-ह०-6307)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/432-ह०-588)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/119-ह०-6934)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/114-ह०-14714)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/45-ह०-13)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह व उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं और वो भागता नहीं बल्कि वो बढ़कर हमला करता है अल्लाह तआ़ला उसके हाथ पर फ़तह नसीब फ़रमायेगा और जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) उसकी दांयीं तरफ़ होंगे और मीकाईल (अ़लैहिस्सलाम) उसकी बांयीं तरफ़ होंगे तो लोगों ने उम्मीद की हालत में रात गुज़ारी फिर जब सुबह हुई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली कहाँ हैं तो लोगों ने कहा या रसूलल्लाह उनकी आँखें दुखती हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली को मेरे पास लाओ तो जब हज़रत–

अ़ली आपके पास आये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली की आँखों में अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया फिर अ़ली उठ खड़े हुये उन्हें यूँ लगा कि गोया उन्हें आँखों का कोई मर्ज़ था ही नहीं फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हाथ पर फ़तह अ़ता फ़रमाई।
(मुस्नद अहमद–2/364-ह०-3062)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/66-ह०-36393)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/602,609)

रसूलुल्लाह इ़ल्म का शहर और अ़ली दर'वाज़ा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं इ़ल्म का शहर हूँ और अ़ली उसका दरवाज़ा है लिहाज़ा जो इस शहर में दाख़िल होना चाहता है वो बाबे अ़ली से आये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/256-ह०-4637)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/65-ह०-11061)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/103-ह०-14670)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/15-ह०-106)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/290-ह०-32975,32976)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/379)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/46)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/418)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/116)

रसूलुल्लाह हिकमत का घर और अ़ली दर‘वाज़ा

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं हिकमत का घर हूँ और अ़ली उसका दर‘वाज़ा है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1077-ह०-3723)
(मिश्कात–3/536-ह०-6096)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/357-ह०-1081)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-3288)
(कंजुल उ़म्माल–7/75-ह०-36462)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/72-ह०-193)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/418)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/46)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/116)

जो शख़्स हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़दस से इ़ल्मो हिकमत व माअ़रफत से फ़ैज़याब होने का तालिब हो तो उसे बाबे अ़ली से गुज़रना होगा बाबे अ़ली से गुज़रे बग़ैर बारगाहे मुस्तफ़ा से कोई फ़ैज़याब नहीं हो सकता और बाबे अ़ली अहले बैत अत्हार की सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत से खुलता है और अल्लाह तआ़ला की कुर्बत व रसाई और उसका फ़ज़्लो करम का हुसूल रहमते दो आ़लम हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अहले बैत अत्हार की मुहब्बत से ही हो सकता है।

हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना इ़बादत है

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/281-ह०-4682)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/109-ह०-14694)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/93-ह०-10006)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/48-ह०-6865)
(कंजुल उ़म्माल–6/295-ह०-33039)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–5/58)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/351,355)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं मैंने अपने वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को देखा कि वो कसरत से हज़रत अ़ली के चेहरे को देखा करते थे तो मैंने आपसे पूछा कि ऐ अब्बा जान क्या वजह है कि आप कसरत से हज़रत अ़ली के चेहरे की तरफ़ देखते रहते हैं तो उन्होंने जवाब दिया ऐ मेरी बेटी मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है। (अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–2/182)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/355)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/194)

हज़रत इमरान बिन हुसैन व हज़रत मुआ़ाज़ बिन जबल व हज़रत जाबिर व हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/280-ह०-4681)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/48-ह०-6866)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/353)

हज़रत तलीक़ बिन मुहम्मद रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फरमाते हैं मैंने हज़रत इ़मरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को देखा कि वो हज़रत मौला अ़ली को टकटकी बाँधे देख रहे थे किसी ने उनसे पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि मैंने हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि हज़रत अ़ली की तरफ़ देखना भी इ़बादत है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/280-ह०-4681)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/109-ह०-4695)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–18/109-ह०-207)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32892)

अ़ली का ज़िक्र इ़बादत है

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली का ज़िक्र भी इ़बादत है। (देलमी–अल फ़िरदौस–2/244-ह०-3151)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32891)

अ़ली व कुरान का बाहमी तअ़ाल्लुक़

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ली और कुरान का चोली दामन का साथ है ये दोनों कभी भी जुदा न होंगे यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े कौसर पर (भी इकट्ठे) आयेंगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/251-ह०-4628)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/707-ह०-4880)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/255)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9129/-ह०-14767)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/285-ह०-32909)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/421,428)

सूरह मरयम की आयत मौला अ़ली की शान में नाज़िल हुई

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं ये आयते करीमा ‘‘बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये तो (खुदाये) रहमान उनके लिये लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा फ़रमां देगा (सूरह–मरयम–19/96) ये आयते करीमा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शान में उतरी है और इससे मुराद मोमिनीन के दिलों में हज़रत अ़ली की मुहब्बत डालना है। (तबरानी–मुअ़जम औसत–4/304-ह०-5516)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/116-ह०-14722)
(तफ़्सीर कुरतबी–6/153)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि ये आयत हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हक़ में नाज़िल हुई कि मोमिनीन के दिलों में हज़रत मौला अ़ली की मुहब्बत डाल दी।
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–4/747) (तफ़्सीर मज़हरी–6/161)

इमाम अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत किया है कि इस आयत से मुराद दुनिया में मोमिनीन के दिलों में हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की मुहब्बत पैदा करना है।
(तफ़्सीर अब्दुल रज़्ज़ाक़–2/367)
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–4/748)

सूरह बक़राह की आयत मौला अ़ली की हक़ में नाज़िल हुई

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोग (अल्लाह की राह में) शब व रोज़ अपने माल पोशीदा व ज़ाहिर ख़र्च करते हैं तो उनके लिये उनके रब के पास उनका अज्र है और रोज़े क़यामत उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो रंजीदा होंगे।
(सू०–बक़राह–2/274)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान फ़रमाते हैं कि ये आयते करीमा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हक़ मे नाज़िल हुई कि आपके पास चार दिरहम थे तो आपने एक दिरहम रात को व एक दिरहम दिन को और एक दिरहम खुफ़िया और एक दिरहम ऐलानियाँ ख़र्च किया।

(सयूती–दुर्रे मन्सूर–1/936)(तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास–1/165) (तफ़्सीर इब्ने कसीर–1/384) (तफ़्सीर मज़हरी–1/539) (तफ़्सीर कुरतबी–2/419)

कुरान मजीद की सूरह तहरीम में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को सालिहुल मोमिनीन फ़रमाया–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तो बेशक अल्लाह ही उनका दोस्त व मददगार है और जिबरईल और सालिहुल मोमिनीन (नेक ईमान वाले) और फ़रिश्ते उनके मददगार हैं। (सू०–तहरीम–66/4)

मुफ़स्सिरीने किराम इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि सालिहुल मोमिनीन से मुराद हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर–28/566)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि मैनें नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना है कि सालिहुल मोमिनीन हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (सयूती–दुर्रे मन्सूर–6/643) (तफ़्सीर कुरतबी–9/504)

➡ इमाम इब्ने असाकर (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से बयान किया है कि सालिहुल मोमिनीन से मुराद हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/361)
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–6/643)

ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के मनाक़िब

ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल व आअ़ला हैं और तमाम जन्नती अ़ौरतों की सरदार हैं अल्लाह तअ़ाला ने इन्हें ख़ास इनायात व सिफ़ात से नवाज़ा है पूरी इन्सानी कायनात में किसी को हूर का लक़ब अ़ता नहीं हुआ आप ख़ास इनायात, सिफ़ात व एअ़ज़ाज़ की बुनियाद पर ख़ास अ़ज़मतों की हामिल हैं आप अ़ाबिदा, ज़ाहिदा ताहिरा, शाकिरा व साबिरा और रब की रज़ा पर राज़ी रहने वाली बेमिस्ल पाकीज़ा ख़ातून हैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की नूरे नज़र उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीज़ातुल कुबरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) की लख़्ते जिगर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की ज़ोजा व हसनैन करीमैन (अ़लैहिमस्सलाम) की माँ और तमाम ख़वातीने जन्नत की सरदार हैं।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को वो एअ़ज़ाज़ और बुलन्द मक़ामो मर्तबत से नवाज़ा कि जिसकी कोई दूसरी मिसाल मौजूद नहीं और किसी दूसरी ख़ातून को ये शरफ़ हासिल न हुआ आपकी खुसूसियात में से ये भी है कि आपका निकाह अ़र्शे आज़म पर मुनअ़क़िद हुआ और आप मासूमीन व आसमानी शख़्सियतों के ज़ुमरे में शामिल हैं सर‘वरे कायनात रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को अपनी सबसे ज़्यादा प्यारी व लाडली बेटी ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से बेहद मुहब्बत थी और इस मुहब्बत का अंदाज़ जुदागाना था

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा का रिश्ता सिर्फ़ बाप और बेटी का रिश्ता न था बल्कि हुक्मे इलाही से उम्मत के मुस्तक़बिल और हक़ व हिदायत और इमामत व क़ियादत और रहबरी से मुन्सलिक है।

ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा तमाम औ़रतों की सरदार हैं

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा फ़रमाती हैं सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम मेरी उम्मत की तमाम औ़रतों की सरदार और तमाम जन्नती औ़रतों की सरदार हो।
(बुख़ारी–सहीह–3/688-ह०-3624)
(मुस्लिम–सहीह–4/602-ह०-6313)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/306-ह०-4740)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–5/246-ह०-6850)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/237-ह०-15192)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/102-ह०-885)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/477-ह०-1343)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/635)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा ने मुझसे पूछा कि तुमने कब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से मुलाक़ात की थी तो मैंने कहा कि इतनी मुद्दत से मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) से नहीं मिल सका तो ये सुनकर वो रंजीदा हुईं तो मैंने अ़र्ज़ किया कि मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ूँ और तुम्हारे व अपने लिये दुआ़ये मग़फ़िरत कराऊँ पस मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपके साथ नमाज़े मग़रिब अदा की यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने नमाज़े इशां अदा फ़रमाई और चल पड़े मैं भी आपके पीछे चल पड़ा मेरी आहट सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कौन हुज़ैफ़ा है मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ आपने फ़रमाया तुझे क्या काम है अल्लाह तुझे और तेरी माँ को बख़्श दे फिर फ़रमाया यह एक फ़रिश्ता है जो आज रात से पहले कभी भी नहीं उतरा इसने अपने रब से इजाज़त माँगकर मुझे सलाम करने व मुझे ये खुशख़बरी देने के लिये हाज़िर हुआ है कि फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) तमाम जन्नती अ़ौरतों की सरदार हैं और हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) तमाम जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1104-ह०-3781)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/297-ह०-4721)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/714-ह०-5630)
(मिश्कात–3/557-ह०-6171)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/27-ह०-2606)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/677-ह०-6286)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/237-ह०-15191)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/464-ह०-1406)
(इब्ने अबी शैबा–9/557-ह०-32937,32841)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/102-ह०-885)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/144-ह०-6960)

(कंजुल उ़म्माल–6/400-ह०-34158)
(कंजुल उ़म्माल–7/303-ह०-37695)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/192,2/535)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/636)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/199-ह०-129)

मज़कूरा हदीस पाक से कई बातें वाज़ेह हुईं हैं कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अपनी और अपनी वालिदा की दुआ़ये मग़फ़िरत के इरादे से रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये थे लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा के दुआ़ये मग़फ़िरत अ़र्ज़ करने से क़ब्ल सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये फ़रमाना कि ऐ हुज़ैफ़ा अल्लाह तआ़ला तुझे और तेरी माँ को बख़्श दे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये इरशादे मुबारक आपके इ़ल्मे ग़ैब पर दलालत करता है कि आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के इ़ल्मे ग़ैब में ये बात थी कि हज़रत हुज़ैफ़ा किस इरादे से मेरे पास आये हैं।

दूसरी बात ये कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर सलाम पढ़ने पर लगने वाले एतराज़ात की नफ़ी कर दी कि जब मलाइका (फ़रिश्ते) इज़्ने खुदा से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को सलाम अ़र्ज़ करने की ग़रज़ से आते हैं तो हम मुसलमान अपने प्यारे आक़ा ताजदारे मदीना रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर सलाम भेजते हैं तो बाअ़ज़ लोगों को बहुत तकलीफ़ होती है और वो लोग सलाम पढ़ने पर एतराज़ात लगाते हैं हालाँकि उनके तमाम एतराज़ात

बे बुनियाद हैं ये उनकी बद अक़ीदगी व उनके बेईमान होने पर दलालत करते हैं।

तीसरी बात ये कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्ते के ज़रिये अपने प्यारे महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तक ये पैग़ाम व ख़ुश ख़बरी भेजी कि ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) तमाम ख़्वातीने जन्नत की सरदार हैं और आपके प्यारे नवासे हसनैन करीमैन अ़लैहिमस्सलाम तमाम जवानाने जन्नत के सरदार हैं और हक़ीक़त यही है कि हसनैन करीमैन तमाम जन्नती जवान मर्दों के सरदार हैं क्योंकि हदीस पाक में है कि जन्नत में कोई मर्द व औ़रत बूढ़ा नहीं होगा यानी सब जवान होंगे और तीस साल की उ़म्र के होंगे और हमेशा इसी उ़म्र में रहेंगे और उनकी जवानी कभी ख़त्म न होगी।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हसन और हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) जन्नती नौजवानों के सरदार हैं फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) तमाम जन्नती औ़रतों की सरदार हैं। (अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/452-ह०-1360)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम जन्नती औ़रतों की सरदार हो और तुम्हारे दोंनों बेटे जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/102-ह०-885)
(कंजुल उ़म्माल–7/307-ह०-37727)

➡ हज़रत अबू हुरैरा और इब्ने मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे लिये एक फ़रिश्ता पेश किया गया जिसने इस बात की इजाज़त ली कि वो मुझ पर सलाम भेजे और मुझे इस बात की खुश ख़बरी दे कि बेशक फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) तमाम जन्नती औ़रतों की सरदार हैं और हसन, हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) तमाम जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/403-ह०-1006)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/404-ह०-34192)

फ़ातिमा को तकलीफ़ देना गोया रसूलुल्लाह को तकलीफ़ देना है

➡ हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़ातिमा मेरे जिगर का टुकड़ा है फ़ातिमा तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ है और जो चीज़ उसे अज़्ज़ियत दे तो वो मेरे लिये भी अज़्ज़ियतनाक है और जो चीज़ फ़ातिमा को खुश करे तो मुझे भी उससे खुशी होती है और जिसने फ़ातिमा को नाराज़ किया तो उसने मुझे नाराज़ किया।
(बुख़ारी–सहीह–3/750-ह०-3729)
(मुस्लिम–सहीह–4/599-ह०-6308)
(इब्ने माजा–सुनन–2/72-ह०-1999)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1141-ह०-3867)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/140-ह०-6955)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/303-ह०-4734)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/404-ह०-1012,1013)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–10/340-ह०-20862)

(इब्ने अबी शैबा–6/406-ह०-34215)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/440-ह०-1324)

➡ हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़ातिमा मेरे जिस्म का हिस्सा है जिसने फ़ातिमा को गुस्सा दिलाया तो उसने मुझे गुस्सा दिलाया और जिसने फ़ातिमा से दुश्मनी रखी उसने मुझसे दुश्मनी रखी और जो चीज़ फ़ातिमा को रंजो ग़म पहुँचाये वो चीज़ मुझे रंजो ग़म पहुँचाती है। (बुख़ारी–सहीह–3/745-ह०-3714)
(मुस्लिम–सहीह–4/599-ह०-6307)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1141-ह०-3769)
(मिश्कात–3/548-ह०-6139)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/309-ह०-4747)
(इब्ने अबी शैबा–9/556-ह०-32935)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/239-ह०-15203)
(देलमी–अल फ़िरदौस–2/127-ह०-4389)
(मुस्नद बज़्ज़ार–6/150-ह०-2193)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/443-ह०-1333)
(कंजुल उ़म्माल–6/406-ह०-34222)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/205-ह०-133)

➡ हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को मिम्बर पर ये फ़रमाते हुये सुना कि हिशाम बिन मुग़ीरा ने मुझसे इजाज़त चाही कि वो अपनी बेटी की शादी हज़रत अ़ली से कर दें और मैं उन्हें इसकी इजाज़त नहीं देता मैं उन्हें इसकी इजाज़त नहीं देता ये जुमला दो बार फ़रमाया क्योंकि मेरी बेटी–

फ़ातिमा मेरी जान का हिस्सा है जो चीज़ उसे परेशान करे वो चीज़ मुझे परेशान करती है और जो चीज़ उसे ईज़ा दे वो चीज़ मुझे ईज़ा देती है।
(मुस्लिम–सहीह–4/599-ह०-6307)
(इब्ने माजा–सुनन–2/71-ह०-1998)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1141-ह०-3867)
(अबू दाऊद–सुनन–2/588-ह०-2071)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/394-ह०-8312)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/139-ह०-6955)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/472-ह०-1328)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/79,80)

➡हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक फ़ातिमा मेरी शाख़े समरबार (टहनी) है जिस चीज़ से फ़ातिमा को खुशी होती है उस चीज़ से मुझे भी खुशी होती है और जिस चीज़ से फ़ातिमा को तकलीफ़ पहुँचती है तो उस चीज़ से मुझे भी तकलीफ़ पहुँचती है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/303-ह०-4734)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/25-ह०-30)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/239-ह०-15203)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/480-ह०-1347)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–3/206)

➡हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक फ़ातिमा मेरी जान का हिस्सा है और मैं इस बात को पसंद नहीं करता कि कोई शख़्स उसे नाराज़ करे खुदा की क़सम–

मैं किसी हलाल काम को हराम क़रार नहीं देता लेकिन अल्लाह के रसूल की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी एक जगह एक खाविन्द के निकाह में इकट्ठी नहीं हो सकतीं। (बुख़ारी–सहीह–3/750-ह०-3729)
(मुस्लिम–सहीह–4/600-ह०-6309)
(इब्ने माजा–सुनन–2/72-ह०-1999)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/18-ह०-18)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/140-ह०-6956,6957)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/472-ह०-1329)

➡ हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़ातिमा मुझसे है और फ़ातिमा मेरी जान का हिस्सा है और जो चीज़ फ़ातिमा को नाराज़ करे वो चीज़ मुझे नाराज़ करती है और क़यामत के दिन तमाम नसब मुनक़ताअ़ हो जायेंगे सिवाए मेरे नसब व सबब के।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/239-ह०-15203)

ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत का यह एक अलग ही अंदाज़ है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को अपने जिस्म अक़दस का एक जुज़ और जिगर का टुकड़ा कहा और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये फ़रमाना कि सय्यदा फ़ातिमा की हर तकलीफ़ गोया मेरी तकलीफ़ है और फ़ातिमा को गुस्सा दिलाना और उन्हें नाराज़ करना गोया मुझे यानी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को गुस्सा दिलाना

और नाराज़ करना है और फ़ातिमा को जो चीज़ ख़ुशी पहुँचाती है वो चीज़ मुझे भी ख़ुशी पहुँचाती है और ये रसूलुल्लाह और फ़ातिमा के दरमियान एक अनोखी और बे मिस्ल बाहमी मुहब्बत है जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं और रसूलुल्लाह की तकलीफ़ व नाराज़गी दरअस्ल अल्लाह की नाराज़गी व उसके ग़ज़ब का बाइस है।

फ़ातिमा जिससे राज़ी अल्लाह उससे राज़ी
फ़ातिमा जिससे नाराज़ अल्लाह उससे नाराज़

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सय्यदा फ़ातिमा से फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला तेरी नाराज़गी पर नाराज़ होता है और तेरी रज़ा पर राज़ी होता है (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/301-ह०-4730)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/173-ह०-180)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/239-ह०-15204)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/535)
(कंजुल उ़म्माल–6/408-ह०-34237)
(कंजुल उ़म्माल–7/307-ह०-37725)

रसूलुल्लाह सफ़र से वापस आते तो सबसे पहले फ़ातिमा से मुलाक़ात करते

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व हज़रत सूबान (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जब सफ़र का इरादा फ़रमाते तो अपने अह्ल व अ़याल में सबसे आख़िर में सय्यदा फ़ातिमा से गुफ़्तगू फ़रमां कर सफ़र पर र’वाना होते और सफ़र से वापसी पर सबसे

पहले सय्यदा फ़ातिमा के पास तशरीफ़ लाते और आप फ़रमाते ऐ फ़ातिमा मेरे माँ बाप तुझ पर कुर्बान हों।
(अबू दाऊद–सुनन–4/237-ह०-4213)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/304-ह०-4737)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ये अ़ादते करीमा थी कि जब सफ़र पर र'वाना होते तो आप सबसे आख़िर में सय्यदा फ़ातिमा मुलाक़ात करते और जब आप सफ़र से वापस आते तो सबसे पहले ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा मुलाक़ात करते।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/305-ह०-4739)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/751-ह०-696,697)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/289-ह०-4105)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/734-ह०-2466)

तमाम सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) का ये माअ़मूल था कि जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होते और कुछ अ़र्ज़ करते तो कहते कि या रसूलल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मगर सरकारे दो अ़ालम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के नज़दीक ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) की क़दरो मन्ज़िलत व ऐअ़ज़ाज़ का वो बुलन्द मक़ाम था कि रसूले अकरम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपनी लख़्ते जिगर ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से फ़रमाते कि ऐ फ़ातिमा मेरे माँ बाप तुझ पर कुर्बान हों।

सय्यदा फ़ातिमा का निकाह माला-ए-आअ़ला पर हुआ

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे पास एक फ़रिश्ते ने आकर अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह अल्लाह तआ़ला ने आप पर सलाम भेजा है और फ़रमाया है कि मैंने आपकी बेटी फ़ातिमा का निकाह माला-ए-आअ़ला में आअ़ला तरीन मजलिस में अ़ली बिन अबू तालिब अ़लैहिमस्सलाम से कर दिया है पस आप ज़मीन पर फ़ातिमा का निकाह अ़ली बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) से कर दें। (तबरी-ज़ख़ाइरुल उ़क़बा-1/72)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ फ़रमां थे तो आपने हज़रत अ़ली से फ़रमाया कि ये जिबरईल हैं जो मुझे ये बता रहे हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी बेटी फ़ातिमा से तुम्हारी शादी कर दी है और तुम्हारे निकाह पर चालीस हज़ार फ़रिश्तों को गवाह के तौर पर निकाह में शरीक किया गया है और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तूबा के दरख़्त (जन्नत का एक दरख़्त) को अ़ली व फ़ातिमा पर मोती निछावर करने की तर्ग़ीब फ़रमाई कि इन पर मोती और याक़ूत निछावर करो फिर खूबसूरत हूरें उन मोतीयों व याक़ूत से थाल भरने लगीं जिन्हें फ़रिश्ते क़यामत तक एक दूसरे को बतौर तोहफ़ा देंगे (तबरी-रियाजुन्नजरा-1/89) (तबरी-ज़ख़ाइरुल उ़क़बा-1/72)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द व अबू अय्यूब अंसारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन वालों में देखा तो तेरे वालिद को पसंद किया और नबी बनाकर भेजा फिर अल्लाह तआ़ला ने दूसरी बार देखा तो तेरे शौहर को चुना और मेरी तरफ़ वही की कि मैं अ़ली से तुम्हारा निकाह कर दूँ।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/156-ह०-3941)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/193-ह०-10305)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/240-ह०-15208)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/284-ह०-32888,32753,32926)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–2/215-ह०-1693)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/546)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा–1/71)

➡ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा की शानो अ़ज़मत का ये आ़लम कि आपको ये अ़ज़ीम शरफ़ हासिल हुआ है कि आपका निकाह अल्लाह तआ़ला ने अ़र्शे आज़म पर मुनअ़क़िद किया और आपके मजलिसे निकाह में (40) चालीस हज़ार फ़रिश्तों ने शिर्कत की फिर हुक्मे ख़ुदा से ज़मीन पर आपका निकाह मौला अ़ली से हुआ।

रोज़े क़यामत सय्यदा फ़ातिमा का एअ़ज़ाज़ व इकराम

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी बेटी फ़ातिमा रोज़े क़यामत इस तरह उठेगी कि उस पर इज़्ज़त का जोड़ा होगा कि

जिसे आवे हयात में धोया गया होगा सारी मख़्लूक़ उसे देखकर दंग रह जायेगी फिर उसे जन्नत का बेहतरीन लिबास पहनाया जायेगा कि जिसका हर हुल्ला (जन्नती लिबास) हज़ार हुल्लों पर मुश्तमिल होगा और हर एक पर सब्ज़ ख़त से लिखा होगा कि मेरी बेटी फ़ातिमा को अहसन (बहुत अच्छी, बहुत खूब) सूरत और अकमल (बड़ी कामिल) और तमाम तर करामत और इज़्ज़त के साथ दुल्हन की तरह सजाकर (70) सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में जन्नत में ले जाया जायेगा।
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/95)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत मुझे बुर्राक पर व मेरी बेटी फ़ातिमा को मेरी सवारी उज़्बा पर बिठाया जायेगा। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/301-ह०-4727)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/238-ह०-32340)

रोज़े क़यामत अल्लाह तबारक व तआ़ला ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा को वो बुलन्द मक़ाम व इज़्ज़तो इकराम से सरफ़राज़ फ़रमायेगा कि अम्बिया किराम भी उन्हें देखकर रश्क करेंगे रोज़े क़यामत हुक्मे खुदा होगा कि ऐ महशर वालो अपनी निगाहें और सरों को झुका लो ताकि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) गुज़र जायें और आप दो सब्ज़ चादरों में लिपटी हुई सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में गुज़र जायेंगीं।

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रोज़े क़यामत अ़र्श की गहराइयों

से एक निदा देने वाला आवाज़ देगा कि ऐ महशर वालों अपने सरों को झुकालो और अपनी निगाहें नीची कर लो ताकि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पुल सिरात से गुज़र जायें पस आप सत्तर हज़ार ख़ादिमा हूरों के साथ गुज़रेंगी और आप पर दो सब्ज़ जोड़े होंगे।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/300-ह०-4727,4728)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/72-ह०-178)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/202-ह०-2386)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/249-ह०-15228)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/447-ह०-1344)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/405-ह०-34209,34210)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–1/429-ह०-823)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/535)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/633)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/94)

–: सय्यदा फ़ातिमा के ख़साइस :–

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की लख़्ते जिगर ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा से बढ़कर किसी को भी आदात व हसन सीरत व किरदार और वक़ार व उठने बैठने में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के मुशाबा नहीं देखा नीज़ फ़रमातीं हैं कि जब फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) तशरीफ़ लातीं तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनके इस्तक़बाल के लिये खड़े हो जाते और उन्हें चूमते फिर उन्हें अपनी जगह बिठाते और और फ़रमाते मेरी लख़्ते

जिगर खुश आमदीद और जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के यहाँ तशरीफ़ ले जाते तो सय्यदा फ़ातिमा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इस्तक़बाल के लिये खड़ी हो जातीं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को चूमती और अपनी जगह पर बिठाती जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अ़लील (बीमार) हुये तो सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा हाज़िर हुईं आपकी चाल हूबहू रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चलने के मुशाबा थी और ज़र्रा बराबर भी मुख़्तलिफ़ न थी जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को देखा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उन को खुश आमदीद कहा और फ़रमाया मेरी बेटी खुश आमदीद और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सय्यदा फ़ातिमा को अपनी दांयी जानिब बिठाया फिर सय्यदा फ़ातिमा आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर झुक गईं और आपका बोसा लिया फिर सर उठाया और रो पड़ीं फिर वो दोबारा झुकीं और सर उठाया तो हंस रही थीं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के विसाल के बाद मैंने उनसे पूछा बताओ जब आप हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर पहली बार झुकीं और सर उठाया तो आप रो रहीं थीं फिर दोबारा झुककर सर उठाया तो आप हंस रहीं थीं इसकी क्या वजह है तो आप ने फ़रमाया कि मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने बताया कि इसी मर्ज़ में मेरा विसाल होगा तो मैं रो पड़ी फिर

बताया अहले बैत में सबसे पहले तुम मुझसे मिलोगी ये सुनकर मैं हंस पड़ी।
(बुख़ारी–सहीह–5/722-ह०-6285,6286)
(बुख़ारी–सहीह–3/746-ह०-3715,3716)
(बुख़ारी–सहीह–3/687-ह०-3623,3624)
(मुस्लिम–सहीह–4/602-ह०-6312,6313)
(इब्ने माजा–सुनन–1/548-ह०-1621)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1143-ह०-3872)
(अबू दाऊद–सुनन–6/880-ह०-5217)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/393-ह०-8310,8311)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/138-ह०-6953)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/302-ह०-4732,4753)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/239-ह०-7715)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/416-ह०-1031)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/279-ह०-4089)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/392-ह०-8927)
(मिश्कात–3/548-ह०-6138)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/308-ह०-37731)
(इब्ने अबी शैबा–9/557-ह०-32936)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/440-ह०-1322,1343)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/198-ह०-127)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं जब ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) अपनी मरज़ुल मौत में मुब्तिला हुईं तो मैं उनकी तीमारदारी करती थी बीमारी के इस पूरे अ़र्से के दौरान जहाँ तक मैंने देखा कि एक दिन सुबह उनकी हालत बेहतर थी और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) किसी काम से बाहर गये थे तो सय्यदा फ़ातिमा ने कहा कि ऐ अम्मा (उम्मे सलमा) मेरे

गुस्ल के लिये पानी लायें तो मैं पानी लायी और आपने गुस्ल किया फिर बोलीं अम्मा मुझे नया लिबास दें और मैंने ऐसा ही किया फिर आप क़िब्ला रुख़ होकर लेट गईं और अपना हाथ मुबारक अपने रुख़सार अक़दस के नीचे कर लिया और फिर फ़रमाया अम्मा अब मेरी वफ़ात हो जायेगी और मैं गुस्ल करके पाक हो चुकी हूँ लिहाज़ा मुझे कोई भी न खोले पस उसी जगह आपकी वफ़ात हो गई और उसी गुस्ल के साथ आपकी तदफ़ीन हुई। (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/247-ह०-15220)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/354-ह०-1074)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–01/383-ह०-1455)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/103)

–: फ़ातिमा नाम रखने का सबब :–

➡ हजरत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी बेटी का नाम फ़ातिमा इसलिये रखा गया है कि अल्लाह तआ़ाला ने उसे और उससे मुहब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से अलग–थलग कर दिया है।
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/426-ह०-1395)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/146-ह०-1385)
(कंजुल उ़म्माल–6/407-ह०-34227)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/517)

फातिमा रसूलुल्लाह को सबसे ज़्यादा प्यारी और अ़ली सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़

➡ हजरत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से

रिवायत है कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपको मेरे और फ़ातिमा में कौन ज़्यादा महबूब है तो सर‘वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फ़ातिमा मुझे तुमसे ज़्यादा प्यारी है और तुम मुझे उससे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–7/717-ह०-7675)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/196-ह०-15016)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/379-ह०-1076)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/64-ह०-36379)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/407-ह०-34225)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–4/422-ह०-583)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/217-ह०-146)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि खुदा की क़सम हज़रत अ़ली के सिवा मैं किसी शख़्स को नहीं जानती कि जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को उनसे ज़्यादा महबूब हो और उनकी ज़ोजा सय्यदा फ़ातिमा से बढ़कर किसी और ख़ातून को नहीं जानती जो रुये ज़मीन पर उनसे ज़्यादा महबूब हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1142-ह०-3873)
(मिश्कात–3/553-ह०-6155)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/302-ह०-4741)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/180-ह०-111)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा व हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) औ़रतों में सबसे ज़्यादा ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा

से मुहब्बत करते थे और मर्दों में सबसे ज़्यादा हज़रत अ़ली से मुहब्बत करते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1141-ह०-3868,3874)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/303-ह०-4735,4744)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/403,404-ह०-1008,1009)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/507-ह०-7262)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/181-ह०-113)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/32)

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) एक बार ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा की ख़िदमत में हाज़िर हुये और अ़र्ज़ किया ऐ फ़ातिमा खुदा की क़सम मैंने आपसे ज़्यादा किसी को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का महबूब नहीं पाया और खुदा की क़सम आपके वालिद से बढ़कर मैं किसी से मुहब्बत नहीं करता।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/303-ह०-4736)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/193-ह०-532)
(इब्ने अबी शैबा–7/432-ह०-37045)
(कंजुल उ़म्माल–7/307-ह०-37724)

अ़ल्लाह तआ़ला ने दो शख़्सों को मुन्तख़ब फ़रमाया एक रसूलुल्लाह व दूसरे अ़ली

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि मैंने तुम्हारी शादी ऐसे शख़्स से की है जो सबसे पहले ईमान लाया और सबसे बड़ा आ़लिम है और सबसे बढ़कर हिल्म वाला है और ऐ–

फ़ातिमा तुम मेरी उम्मत की तमाम औ़रतों की सरदार हो जैसे हज़रत मरयम अपनी क़ौम की सरदार थीं ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन पर नज़र फ़रमाई तो दो शख़्सों को मुन्तख़ब कर लिया एक को तुम्हारा वालिद बनाया और दूसरे को तुम्हारा शौहर बनाया।
(मुस्नद अहमद–15/28-ह०-20185)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/229-ह०-537)
(कंजुल उ़म्माल–6/286-ह०-32922)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/132)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन पर नज़र फ़रमाई तो दो शख़्सों को चुन लिया उनमें से एक तुम्हारे वालिद हैं व दूसरा तुम्हारा ख़ाविन्द है।
(कंजुल उ़म्माल–7/60-ह०-36355)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर खुश नहीं हो कि तुम्हारा ख़ाविन्द पहला मुसलमान, सबसे ज़्यादा इ़ल्म वाला, और बुर्दबारी में सबसे अफ़ज़ल और इस्लाम लाने में सबसे मुक़द्द्दम है और खुदा की क़सम तुम्हारे दोंनो बेटे जन्नती नौजवानो के सरदार हैं (अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/448-ह०-1346) (कंजुल उ़म्माल–7/62-ह०-36270) (रियाजुन्नजरा–1/118) (इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/634)

सय्यदा फ़ातिमा पाकीज़ा ख़ातून हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी बेटी फ़ातिमा ऐसी पाकीज़ा हैं कि जिन्हें कभी हैज़ नहीं आया और न किसी ने उन्हें छुआ और बेशक अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उनका नाम फ़ातिमा इसलिये रखा कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें और उनसे मुहब्बत करने वालों को दोज़ख़ से अलग थलग रखा है।
(कंजुल उ़म्माल–6/407-ह०-34226)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/540)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी बेटी फ़ातिमा ने अपनी अ़स्मत व पाक दामनी की ऐसी हिफ़ाज़त की है कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी अ़स्मते मुताह्रा के तुफ़ैल उन्हें और उनकी औलाद को जन्नत में दाख़िल फ़रमां दिया है और उन पर आग को हराम कर दिया है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/33-ह०-2625)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/305-ह०-2559)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/299-ह०-4726)
(मुस्नद बज़्ज़ार–5/223-ह०-1829)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/238-ह०-15199)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/188)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/539,626)

–: अफ़ज़लयते फ़ातिमा :–

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैं सय्यदा फ़ातिमा से अफ़ज़ल सिर्फ़ आपके अब्बाजान रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को देखती हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–02/355-ह०-2721)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/237-ह०-15193)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नत में दाख़िल होने वाली ख़वातीन में सबसे पहले दाख़िल होने वाली मेरी बेटी फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) है और इस उम्मत में वो ऐसी है जैसे बनी इसराईल में हज़रत मरयम हैं।
(कंजुल उ़म्माल–6/408-ह०-34234)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के बाअ़द सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से ज़्यादा सच्चा कायनात में किसी को नहीं देखा।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–2/41)

रसूलुल्लाह की सय्यदा फातिमा के लिये दुआ़ाऐ खुसूसी

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मरवी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा के

लिये खुसूसी दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह मैं अपनी इस बेटी व इसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूँ। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/408-ह०-1021) (इब्ने हिब्बान–सहीह–6/129-ह०-6944)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/67)

रसूलुल्लाह का फ़रमान फ़ातिमा मेरी जान का हिस्सा है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है आप फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा वो बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि औ़रत के लिये कौन शैः बेहतर है इस पर सहाबाकिराम ख़ामोश रहे हज़रत मौला अ़ली फ़रमाते हैं कि जब मैं घर लौटा तो मैंने सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से पूछा कि बताओ कि औ़रत के लिये कौन शैः बेहतर है तो सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा ने जवाब दिया कि औ़रत के लिये सबसे बेहतर ये है कि वो किसी ग़ैर मर्द को न देखे हज़रत मौला अ़ली फ़रमाते हैं कि मैंने इस बात का तज़किरा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक फ़ातिमा मेरी जान का हिस्सा है।
(मुस्नद बज़्ज़ार–2/159-ह०-526)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/238-ह०-15200)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–2/40-ह०-175)

-: मनाक़िबे हसनैन करीमैन :-

सर'वरे कायनात रहमते दो आ़लम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के जिस्म अक़दस पर सवारी करने वाले हसनैन करीमैन अ़लैहिमस्सलाम अ़ज़ीम शानो अ़ज़मत व मरतबत के उस आअ़ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं जिसका तसव्वुर भी नामुम्किन है हसनैन करीमैन को नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की गोद मुबारक और हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा अ़लैहिमस्सलाम की ज़ेरे निगरानी और सरपरस्ती में तरबियत पाने का शरफ़ हासिल हुआ जिनको हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपनी जुबाने मुक़द्दस चुसाकर पाला जिनको अपनी पुश्त मुबारक पर सवार करके खिलाया जिनको अपने बेटे और गुलशने दुनिया के दो फूल क़रार दिया और इनसे मुहब्बत को अपनी मुहब्बत व इनसे अ़दावत (दुश्मनी) को अपनी अ़दावत क़रार दिया और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपनी उम्मत पर हसनैन करीमैन की मुहब्बत को वाजिब कर दिया ये वो अज़ीम हस्तियाँ है कि जिन पर फ़रिश्ते भी रश्क किया करते हैं।

मारका-ए-करबला में हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी आँखो से अपने गुलशन को उजड़ते हुये देखा फिर भी आपके क़दम मुबारक में एक लम्हे के लिये भी लग़ज़िश न आई आप पर मसाइब व आलाम के पहाड़ टूटे और आपके सामने आपके लख़्ते जिगर मासूम अ़ली अकबर अ़ली असग़र और आपके भाई भतीजे व आपके साथी शहीद कर दिये गये फिर-

भी आप सब्र और तहम्मुल पर इस्तिक़ामत का दामन मज़बूती से पकड़े हुये आपने दीने मुहम्मदी की हिफ़ाज़त फ़रमाई जंगे करबला में जिन्नातों का बादशाह आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ की ऐ इमाम अ़ाली मक़ाम आप इजाज़त दें तो मैं इन तमाम लश्करे यज़ीद का ख़ात्मा कर दूँ मगर हज़रत इमाम हुसैन ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें क़तई इजाज़त नहीं दे सकता क्योंकि तुम और तुम्हारा लश्कर सब जिन्न हैं जो दिखाई नहीं देते और इन्सान और जिन्नों की जंग ये नाइंसाफ़ी है और मैं नाइंसाफ़ी की जंग नहीं करना चाहता क्योंकि मैं यहाँ अ़द्लो इन्साफ़ की जंग कर रहा हूँ आपने ये कहकर जिन्नात बादशाह को रुख़सत कर दिया।

हज़रत इमाम हुसैन ने मैदाने करबला में अपने ख़ेमों गिर्द आग रोशन करवा ली थी और आप ख़ुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे कि मालिक बिन ज़ुर्वाह ने कहा ऐ हुसैन तुमने वहाँ की आग से पहले यहीं आग लगा दी तब आपने फ़रमाया ऐ दुश्मने खुदा मुझे उम्मीद है कि मैं जन्नत में जाऊँगा और तू दोज़ख़ में जायेगा फिर आपने बारगाहे खुदावन्दी में अपने हाथ मुबारक उठाये और ये दुअ़ा की ऐ मेरे रब इस नाबकार (बदज़ात, बदकार) को अ़ज़ाबे नारे जहन्नम से क़ब्ल इस दुनिया में आग का अ़ज़ाब दे आपकी दुअ़ा मक़बूल हुई और उसी वक़्त मालिक बिन ज़ुर्वाह का घोड़ा विदका और उसका पाँव रकाब में उलझ गया और घोड़ा उसे घसीटता हुआ ले गया और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया और वो आग में जलकर भस्म हो गया फिर हज़रत इमाम हुसैन ने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया और हम्दे इलाही बजा लाये और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है कि तूने आले रसूल के गुस्ताख़ को सज़ा दी। (सवानेह करबला-88)

एक यज़ीदी बद कलाम गुस्ताख़ ने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि आपको अल्लाह के रसूल से क्या निसबत इस जुमले ने हज़रत इमाम हुसैन को ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचाई और आपने दुआ़ फ़रमाई ऐ अल्लाह इस बद गुफ़्तार को अपने अ़ज़ाब में गिरफ़्तार फ़रमां आपकी दुआ़ मक़बूल हुई और उस बद गुफ़्तार को एकदम क़ज़ाये हाजत हुई और वो घोड़े से उतरकर एक तरफ़ बरहना (नंगा) होकर क़ज़ाये हाजत के लिये बैठा कि एक बिच्छू ने ऐसा डंक मारा कि चारों तरफ़ दौड़ा दौड़ा फिरा फिर मर गया। (सवानेह करबला–89)

हसनैन करीमैन (अ़लैहिमस्सलाम) की शानो अ़ज़मत व फ़ज़ीलत में बेशुमार अहादीस वारिद हैं जिनमें से कुछ का तज़किरा इस किताब में किया जा रहा है।

रसूलुल्लाह का फ़रमान हुसैन मुझसे है मैं हुसैन से हूँ

➡ हज़रत यअ़ाला बिन मुर्राह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन का बोसा लिया फिर फ़रमाया कि हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ और अल्लाह तआ़ला उसे दोस्त रखता है जो हुसैन को दोस्त रखता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1102-ह०-3775)
(इब्ने अबी शैबा–9/538-ह०-32860)
(कंज़ुल ऊ़म्माल–7/302-ह०-37681)

➡ हज़रत यअ़ाला बिन मुर्राह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम गली में खेल रहे थे कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) लोगों से आगे बढ़ गये और हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के लिये अपने हाथ मुबारक फैला दिये हज़रत इमाम हुसैन इधर उधर भगने लगे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उन्हें हंसाते रहे हत्ता कि उन्हें पकड़ लिया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक हाथ हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की ठोड़ी के नीचे व दूसरा हाथ मुबारक उनके सर के ऊपर रखा और फिर बोसा लिया और फिर फ़रमाया कि हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ और अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत रखता है जो हुसैन से मुहब्बत रखता है और एक रिवायत में है हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ और ऐ अल्लाह तू उस शख़्स से मुहब्बत कर जो हुसैन से मुहब्बत करे और हुसैन हमारी औलाद में से एक औलाद है।

(इब्ने माजा–सुनन–1/81-ह०-144)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1102-ह०-3775)
(मिश्कात–3/557-ह०-6169)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/343-ह०-4820)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/293-ह०-2522,2525)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/209-ह०-15075)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/452-ह०-1361)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/153-ह०-6971)
(इब्ने अबी शैबा–6/380-ह०-32196)
(कंजुल उ़म्माल–7/302-ह०-37684)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/638)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/231)

वज़ाहतः– मज़कूरा हदीस पाक में ये बात बड़ी क़ाबिले तवज्जो है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये फ़रमान कि हुसैन मुझसे है ये

बात तो समझ में आती है लेकिन ये फ़रमाना कि मैं हुसैन से हूँ इसमें क्या हिकमत है क्योंकि जुज़ कुल से होता है कुल जुज़ से नहीं होता तो इसका मफ़हूम और खुलासा ये है कि ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) की गोद मुबारक से करबला तक हुसैन (अ़लैहस्सलाम) मुझ यानी हुजूर अ़लैहस्सलाम से थे और करबला से लेकर क़यामत तक मैं यानी हुजूर हुजूर (अ़लैहस्सलाम) हुसैन से हैं दीन इस्लाम का वुजूद मुहम्मदी है और इस्लाम की बक़ा हुसैनी है दीन इस्लाम मारका-ए-करबला के बाद हुसैन से है और हक़ीक़त ये है कि कमालाते हुसैन का सुदूर मुस्तफ़ा से हुआ और कमालाते मुस्तफ़ा का जहूर हुसैन से हुआ और कमालाते हुसैन का मसदर मुस्तफ़ा हैं और कमालाते मुस्तफ़ा का मज़हर हुसैन हैं।

जो कमालात हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) में थे वो सब मुस्तफ़ा से थे और वो कमालाते मुस्तफ़ा जिनका ज़हूर होना बाक़ी था वो करबला में वाक़ेअ़ हुये थे शहादते इमाम हुसैन अस्ल में शहादते मुस्तफ़ा की तकमील थी और फ़रमाने मुस्तफ़ा कि मैं हुसैन से हूँ इस तरफ़ भी इशारा करता है कि हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का ज़ाहिरो बातिन और हुस्नो जमाल व खूबियाँ व किरदारो कमाल और सीरतो अख़लाक़ सब मुझ (हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से हैं और मेरी शहादत और सब्र व शुक्र और मक़ामे रज़ा पर इस्तिक़ामत के कमालात का ज़हूर हुसैन से सादिर होगा जो मेरे दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त और बक़ा का सबब बनेगा अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने महबूब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शहादत के ज़हूर के लिये हज़रत इमाम हुसैन को-

मुन्तख़ब फ़रमाया इसलिये अल्लाह तअ़ाला ने हसनैन करीमैन को जुर्रियते मुस्तफ़ा अ़ता फ़रमाई और ज़ाहिरी व बातिनी मुशाबहत अ़ता की और हसनैन करीमैन के कमालात का मसदर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को बनाया और कमालाते मुस्तफ़ा का मज़हर हसनैन करीमैन को बनाया

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जो मोअ़जिज़ात व कमालात और नेअ़मतें तमाम अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को मुख़्तलिफ़ अ़ता की वो सब अपने महबूब सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते पाक में यकजा जमाअ़ फ़रमांदी अब रहा सवाल शहादत का तो कुछ अम्बिया किराम को नेअ़मते शहादत भी अ़ता हुई तो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) इस नेअ़मते शहादत से कैसे महरुम रहते और अल्लाह तअ़ाला को ये कैसे गवारा होता कि मेरा प्यारा महबूब नेअ़मते शहादत से महरुम रह जाये अलबत्ता अल्लाह तअ़ाला को आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) पर ख़त्मे नबूवत भी करनी थी और नेअ़मते शहादत भी अ़ता करना थी लेकिन हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की शहादत का ज़हूर आपकी ज़ाते पाक से मुम्किन न था।

क्योंकि अल्लाह तअ़ाला ने अपने प्यारे मेहबूब से वाअ़दा फ़रमाया था कि ऐ मेहबूब तेरी वफ़ात किसी काफ़िर या दुश्मन के हाथों से न होगी कि कोई दुश्मन या काफ़िर आपको ये ताअ़ना न दे मअ़ाज़अल्लाह कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को क़त्ल किया है अल्लाह तअ़ाला को ऐसे ताअ़नो से अपने महबूब को बचाना भी था और आपकी

दुश्मनों से हिफ़ाज़त भी करना था और आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को जामे शहादत भी पिलाना था सूरह मायदा में अल्लाह तआ़ाला ने अपने महबूब सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से वाअ़दा फ़रमाया (ऐ महबूब) अल्लाह तआ़ाला लोगों से तुम्हारी निगेहबानी फ़रमायेगा। (सू०-मायदा-5/67)

अलबत्ता आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ये ख़्वाहिश थी कि मैं अल्लाह तआ़ाला की राह में शहीद कर दिया जाऊँ और मैं जामे शहादत से सैराब हो जाऊँ और अल्लाह तबारक व तआ़ाला को आपकी ख़्वाहिश की तकमील भी करनी थी और ख़त्मे नबूवत को भी बरक़रार रखना था और आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की ख़्वाहिशे शहादत जो आपने ज़ाहिर फ़रमाई वो हदीसे पाक में मज़कूर है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है आपने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में मेरी जान है कि अगर मुसलमानों के दिलों में इससे रंज न होता कि मैं जिहाद में चला जाऊँ और वो पीछे रह जायें और मेरे पास इतनी सवारियाँ नहीं हैं कि मैं सब को साथ ले जाऊँ अगर मुझे इस बात का ख़्याल न होता तो मैं हर टुकड़ी के साथ निकलता जो भी जिहाद पर जाती और क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी जान है मेरी तो यही आरज़ू है कि मैं अल्लाह तआ़ाला की राह में क़त्ल कर दिया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ और फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ और फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ फिर ज़िन्दा

किया जाऊँ फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ।
(बुख़ारी–सहीह–3/218-ह०-2797)
(मुस्लिम–सहीह–5/154-ह०-4859)

और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की औलाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह, हज़रत क़ासिम और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिमुस्सलाम) का जवानी तक ज़िन्दा रहना भी मुम्किन न था क्योंकि आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की औलाद हयात हो और उसे नबूवत न मिले तो ये कैसे मुम्किन होता कि बाअ़ज़ अम्बिया किराम की औलाद को भी नेअ़मते नबूवत मिली और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की औलाद को नेअ़मते नबूवत न मिले तो कल को कोई ताअ़ना देता कि फुलाँ नबी के बेटे भी नबी थे और इसके अ़लावा नबीयों को नबूवत आपके तुफ़ैल मिली और आपके बेटे नेअ़मते नबूवत से महरुम रहें अल्लाह तआ़ला को ये मंजूर व गवारा न था इसलिये आपकी औलाद को जवानी में पहुँचने से पहले ही वफ़ाद दे दी क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को सिलसिलाए नबूवत आपकी ज़ात पर ख़त्म भी करना था

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं हाँ वो अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी हैं। (सू०–अहज़ाब–33/40)

इसलिये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की औलाद जवानी तक ज़िन्दा न रही इसमें हिकमते इलाही थी कि ख़त्मे नबूवत भी क़ायम रहे और आपका बेटा भी रहे इसलिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया ऐ–

मेहबूब हर नबी की नस्ल उनके बेटों से चली है मगर तेरी नस्ल तेरी बेटी फ़ातिमा से चलेगी इसलिये हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हसन हुसैन ये मेरे दो बेटे हैं और मेरा नसब इन्हीं से चलेगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को देखा कि आप ने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन का हाथ पकड़कर फ़रमाया कि ये मेरे बेटे हैं जिसने इनसे मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की। (देलमी–अल फ़िरदौस–3/60-ह०-6973) (तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/216)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर औ़रत की औलाद अपने बाप की जानिब मन्सूब होती है सिवाए फ़ातिमा के बेटों के कि मैं उनका वली हूँ और वो मेरी ही औलाद हैं वो मेरी मिट्टी से पैदा किये गये हैं और हलाकत है जो इनकी फ़ज़ीलत झुठलाये और जो शख़्स इनसे मुहब्बत करेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत फ़रमायेगा और जो भी इनसे बुग्ज़ रखेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे बुग्ज़ रखेगा। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/25-ह०-2631) (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/196-ह०-15014)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने हर नबी की जुर्रियत उसकी सुल्ब से जारी फ़रमाई लेकिन मेरी जुर्रियत हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की सुल्ब से

चलेगी। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/35-ह०-2630)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/196-ह०-15013)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/526)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/124)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/54)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को फ़रमाते सुना कि हर औ़रत के बेटों की निसबत उनके बाप की तरफ़ होती है सिवाए फ़ातिमा की औलाद के कि मैं ही उनका नसब हूँ और मैं ही उनका बाप हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/35-ह०-2631,2633)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–4/290-ह०-7140)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/171-ह०-6709)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/376-ह०-1070)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/177-ह०-6609)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–4/245-ह०-10354)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/527)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/211)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला वसल्लम) ने फ़रमाया हर माँ के बेटों का आबाई खानदान होता है जिसकी तरफ़ वो मन्सूब होते हैं सिवाए फ़ातिमा के बेटों के पस मैं ही उनका वली हूँ और मैं ही उनका नसब हूँ और वो मेरी ही जानिब मन्सूब होते हैं।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/319-ह०-4770)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/25-ह०-2632)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/1818-ह०-6741)
(कंजुल उ़म्माल–6/402-ह०-34168)

➡ ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मेरे हसबो नसब के सिवा हर सिलसिलाए नसब मुनक़ताअ़ हो जायेगा और हर एक माँ की औलाद अपने बाप की तरफ़ मन्सूब होती है हर बेटे की निस्बत उसके बाप की तरफ़ होती है सिवाए औलादे फ़ातिमा के कि उनका बाप भी मैं ही हूँ और अ़सबा भी मैं ही हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/35-ह०-2631)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/423-ह०-1042)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–4/290-ह०-7141)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/171-ह०-6709)
(देलमी–अल फ़िरदौस–2/173-ह०-4787)
(कंजुल उ़म्माल–6/410-ह०-34266)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/625)

➡ हज़रत आसिम बिन बहदला बयान करते हैं कि हज्जाज के यहाँ कुछ लोग जमाअ़ थे वहाँ पर हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिसलाम का तज़किरा हुआ तो हज्जाज ने कहा कि इमाम हुसैन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की औलाद में से नहीं हैं वहीं पर हज़रत याह्या बिन याअ़मर मौजूद थे वो बोले कि आप ग़लत कह रहे हैं कि इमाम हुसैन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की औलाद में से नहीं हैं तो हज्जाज ने कहा कि आप अपने मौक़िफ़ पर दलील दें तो याह्या बिन याअ़मर ने कुरान मजीद की ये आयत पढ़ी ''और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब व यूसुफ़ और मूसा और हारुन (अ़लैहिमुस्सलाम को भी हिदायत अ़ता फ़रमाई थी) हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं और ज़करिया व

याहृया और ईसा व इलियास (अ़लैहिमुस्सलाम को भी हिदायत अ़ता फ़रमाई थी) और ये सब नेकोकार लोग थे'' (सू०–अनआ़म–6/84,85) अल्लाह तआ़ला ने बताया हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) माँ की निस्बत से हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद क़रार पाये इसी तरह हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) अपनी वालिदा की निस्बत से हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की जुर्रियत क़रार पाये फिर हज्जाज ने कहा कि आपने सच बोला है। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/319-ह०-4772)

इसलिये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हसनैन करीमैन को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शहादत के लिये चुन लिया व हसनैन करीमैन को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़ाहिरी व बातिनी शबीय बनाया।

➡ हज़रत उ़कबा बिन हारिस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैने अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को देखा कि आपने हज़रत इमाम हुसैन को कांधों पर उठाया हुआ था और आप फ़रमां रहे थे तुम पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों और मेरे बाप की क़सम तुम रसूले खुदा (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के मुशाबा हो हज़रत अ़ली के मुशाबा नहीं और हज़रत अ़ली हंस रहे थे।
(बुख़ारी–सहीह–3/760-ह०-3750)
(मिश्कात–3/560-ह०-6178)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/326-ह०-4784)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/277-ह०-2464)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/449-ह०-1351)
(कंजुल उ़म्माल–7/296-ह०-37634)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि हज़रत हसन सीने से सर मुबारक तक और हज़रत हुसैन सीने से पाँव मुबारक तक रसूलुल्लाह के मुशाबा थे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1103-ह०-3779)
(मुस्नद अहमद–1/501-ह०-774)
(मिश्कात–3/557-ह०-6170)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/453-ह०-1366)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/156-ह०-6974)
(कंजुल उ़म्माल–7/301-ह०-37678)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/127)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/464)

➡ हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को देखा है हज़रत इमाम हुसैन रसूलुल्लाह के मुशाबा थे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1102-ह०-3777)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/282-ह०-2480)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/105-ह०-882)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि लोगों में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से सबसे ज़्यादा मुशाबा हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) से ज़्यादा कोई न था। (बुख़ारी–सहीह–3/760-ह०-3752)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1102-ह०-3776)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से सबसे ज़्यादा मुशाबहत रखते थे। (मिश्कात–3/551-ह०-6146)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–7/562-ह०-20984)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के मरजुल विसाल के दौरान हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को आपके पास लायीं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये आपके बेटे हैं इन्हें अपनी विरासत में कुछ अ़ता फ़रमायें आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हसन के लिये मेरी हैबत व सरदारी और हुसैन के लिये मेरी जुर्रात व सख़ावत की विरासत है।

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/423-ह०-1041)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/657-ह०-6245)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/214-ह०-15098)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/43-ह०-6829)
(कंजुल उ़म्माल–7/305-ह०-37709,37710)
(कंजुल उ़म्माल–6/409-ह०-34250)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/636)

➡ हज़रत मौला (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते थे कि जिस शख़्स की ये ख़्वाहिश हो कि वो लोगों में ऐसी हस्ती को देखे जो गर्दन से चेहरे तक रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सबसे कामिल शबीय (मुशाबा, हमशक्ल) हो तो वो हसन को देख ले और जिस शख़्स की ये ख़्वाहिश हो कि वो लोगों में ऐसी हस्ती को देखे जो गर्दन से पैर तक रंगत व सूरत दोनो में हुजूर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सबसे कामिल शबीय हो तो वो हुसैन को देख ले।

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/389-ह०-2702)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/98-ह०-2768,2769)
(कंजुल उ़म्माल–7/301-ह०-37673)

ज़ाहिरी शक्ल में हसनैन करीमैन हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से इतनी मुशाबहत रखते थे कि अगर दोनो शहज़ादों (हसनैन करीमैन) को मिला दिया जाये तो दोंनों शहज़ादे रसूले अकरम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की मुकम्मल तस्वीर थे हसनैन करीमैन अ़लैहिमस्सलाम को अह्ले जन्नत की सियादत (सरदारी) का मिलना और कुरान को अह्ले बैत के मज़बूत तआ़ल्लुक़ के साथ जोड़ना ये हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रुहानी व बातिनी मुशाबहत पर दलालत करता है।

चुनाँचा हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सिर्री शहादत कि जिसकी इब्तिदा ग़ज़वये ख़ैबर में हुई जब एक यहूदिया औ़रत ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को खाने में ज़हर दिया और वो ज़हर इतना शदीद (सख़्त, तेज़) था कि एक सहाबी वहीं पर फ़ौत हो गये और इस शहादत की तकमील हज़रत इमाम हसन की शहादत पर मुकम्मल हुई जब हज़रत इमाम हसन को ज़हर दिया गया और आपने जामे शहादत नोश फ़रमाया।

हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को नबूवत के ऐअ़ज़ाज़ व तकरीम के साथ साथ शहादत की नेअ़मत व फ़ज़ीलत भी अ़ता की गई उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम उस मर्ज़ में थे कि जिसमें आपने रेहलत फ़रमाई मैं उस वक़्त आपके पास थी तो आपने फ़रमाया कि मैं उस लुक़्मे की तकलीफ़–

हमेशा करता रहा हूँ जिसे मैंने ख़ैबर में खाया था और अब उस ज़हर की वजह से मेरी रगे जान कट रही है (सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/544)

हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जहरी शहादत जिसकी इब्तिदा गज़बये उहद से हुई कि जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को नेज़ा लगा और चेहरे मुबारक से खून बहा और पत्थर लगे चेहरा मुबारक ज़ख़्मी हुआ और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के दाँत मुबारक का एक किनारा टूट गया और इसकी तकमील करबला में हज़रत इमाम हुसैन पर मुकम्मल हुई शहादते मुस्तफ़ा का ज़हूर जो हुजूरे पाक की ज़ाते अक़दस से मुम्किन न था वो हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन की ज़ाते पाक से ज़ाहिर हुआ और इस तरह से शहादते मुस्तफ़ा हसन व हुसैन की शक्ल में ज़ाहिर हुई

शहादते मुस्तफ़ा की ज़हर से इब्तिदा हुई तो हज़रत इमाम हसन पर ज़हर से इन्तिहां हुई और जब नेज़े से मुस्तफ़ा की शहादत की इब्तिदा हुई तो हज़रत इमाम हुसैन पर नेज़ो से इन्तिहां हुई और अगर शहादते हुसैन न होती तो न दीन इस्लाम बचता और न ईमान बल्कि दीन इस्लाम की शक्ल बिगड़ जाती।

हज़रत इमाम हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) से मुहब्बत की जज़ा और इनआ़म ये है कि हज़रत इमाम हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) से मुहब्ब्त रखने वाले शख़्स से अल्लाह तबारक व तआ़ला मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआ़ला जिससे मुहब्बत रखता वो ग़ज़बे इलाही से महफूज़ रहता है और हसनैन करीमैन की–

की मुहब्बत उसके लिये ख़ैर और भलाई और उसकी बख़्शिश का ज़रिया बनती है और वो अल्लाह तआ़ला की अमान में रहता है और वो जन्नत का मुस्तहिक़ हो जाता है और बारगाहे खुदावन्दी में उसका दर्जा बुलन्द मक़ाम की सआ़दत का शरफ़ हासिल करता है।

हसनैन करीमैन का रसूलुल्लाह की पीठ मुबारक पर सवार होना

➡ हज़रत अबू हुरैरा व हज़रत शद्दाद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) नमाज़ पढ़ा रहे थे हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की पुश्त (पीठ) मुबारक पर सवार हो गये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हालते सज्दा में अपने सज्दे को तवील (लम्बा) कर दिया हज़रत शद्दाद ने कहते हैं मैंने सर उठाकर देखा हसनैन करीमैन सज्दे की हालत में आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की पुश्त मुबारक पर सवार थे सहाबा-ए-किराम (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने ख़्याल किया कि कोई बात हो गई है फिर जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सलाम फेरा तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपने सज्दा तवील फ़रमाया कि हमने गुमान किया कि कोई अम्रे इलाही वाक़ेअ़ हो गया है या फिर आप पर वही नाज़िल होने लगी है या कोई और बात हो गई है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरा बेटा हुसैन मेरे ऊपर सवार था तो मैंने जल्दी करना मुनासिब नहीं समझा कि मेरे सज्दे से सर उठाने से कहीं मेरे-

हुसैन को कोई नुक़सान या चोट न पहुँचे और उसका दिल रंजीदा न हो जाये और मुझे ये अच्छा नहीं लगा कि मैं हुसैन को उसकी मर्ज़ी के बग़ैर अपनी पुश्त से नीचे उतारुँ यहाँ तक कि वो अपनी ख़्वाहिश पूरी करले
(नसाई–सुनन–2/616-ह०-1142)
(मुस्नद अहमद–6/631-ह०-16149)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/322-ह०-4775)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/212-ह०-6963)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–7/326-ह०-7107)
(इब्ने अबी शैबा–9/536-ह०-32855)
(इब्ने अबी शैबा–6/379-ह०-32191)
(कंजुल उ़म्माल–6/414-ह०-34308)
(कंजुल उ़म्माल–7/304-ह०-37702)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते है कि हम रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ नमाज़े इशां अदा कर रहे थे जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हालते सज्दा में थे तो हसन व हुसैन आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की पुश्त (पीठ) मुबारक पर सवार हो गये जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने सज्दे से सर उठाया तो उन दोंनों (हसन व हुसैन) को अपने पीछे नरमी के साथ पकड़कर ज़मीन पर बिठा दिया ताकि हसन व हुसैन को कहीं चोट न लग जाये और फिर जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) दोबारा सज्दे में गये तो दोंनों शहज़ादों ने दोबारा भी ऐसा ही किया यहाँ तक कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने नमाज़ मुकम्मल करली उसके बाद आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)–

ने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को अपनी रान मुबारक पर बिठा लिया।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/325-ह०-4782)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/319-ह०-2593)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/209-ह०-15076)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–3/191-ह०-3415)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/304-ह०-37700)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) नमाज़ अदा फ़रमां रहे थे तो हसन व हुसैन हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की पुश्त मुबारक पर सवार हो गये तो लोगों ने उनको मनाअ़ किया तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया इन्हें छोड़ दो इन पर मेरे माँ बाप कुर्बान हों और जो शख़्स मुझसे मुहब्बत करता है तो उसको चाहिये कि वो इन दोंनों से मुहब्बत करे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/40-ह०-2644)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/312-ह०-2578)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/207-ह०-15065)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/153-ह०-6970)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–4/256-ह०-5347)
(इब्ने अबी शैबा–9/532-ह०-32838)
(इब्ने खुज़ैमा–सहीह–2/119-ह०-887)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–8/305)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/215)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जब नमाज़ अदा फ़रमाते और जब सज्दा करते तो दोनों शहज़ादे इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आपकी पीठ मुबारक पर सवार हो जाते और जब कोई उन्हें रोकना चाहता तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उन्हें इशारे से मनाअ़ फ़रमाते फिर जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो आप उन दोंनों शहज़ादों हसन व हुसैन को अपनी गोद मुबारक में बिठाते और फ़रमाते कि जो मुझसे मुहब्बत करे वो इन दोंनों से भी मुहब्बत करे।
(मुस्नद बज़्ज़ार–5/226-ह०-1834)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/1493-ह०-5368)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) नमाज़ पढ़ रहे थे कि इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आपकी पुश्त मुबारक पर सवार हो गये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जब सज्दे से सर उठाते तो हसनैन करीमैन को अपने हाथों से धीरे से उठा लेते फिर जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो फ़रमाते तुम्हारी सवारी कितनी अच्छी है।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/222-ह०-3987)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/210-ह०-15080)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) नमाज़े अ़स्र पढ़ा रहे थे जब आप चौथी रक्अ़त में थे तो हसन व हुसैन अ़लैहिमस्सलाम आपकी पुश्त मुबारक पर सवार हो गये फिर जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो आपने उन दोंनों शहज़ादों को

अपने काँधों पर सवार कर लिया।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/64-ह०-2682)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/92-ह०-6462)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213-ह०-15097)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) जब हालते सज्दे में होते तो दोनों शहज़ादे इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आपकी पुश्त मुबारक पर सवार हो जाते जिसके सबब आप सज्दों को लम्बा कर देते एक मौक़ेअ़ पर आपसे अ़र्ज़ किया गया कि ऐ अल्लाह के रसूल आप सज्दों को लम्बा क्यों कर देते हैं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर मेरा बेटा सवार था इसलिये सज्दे से उठने में जल्दी करना मुझे अच्छा नहीं लगता। (अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–3/191-ह०-3415)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/210-ह०-15077)

नमाज़ इबादते खुदा है और हालते नमाज़ में कोई ऐसी बात हाइल हो जिसकी शरीअ़ते मुताह्रा ने मुमानियत की हो जैसे सलाम का जवाब देने या हालते नमाज़ में दोनों हाथों के इस्तेअ़माल करने वग़ैराह से नमाज़ फ़ासिद (ख़राब) हो जाती है मगर मेरे मुस्तफ़ा के नूरे नज़र हसनैन करीमैन का वो आअ़ला मक़ाम कि हालते नमाज़ में सर‘वरे कायनात रहमते दो अ़ालम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की पुश्त मुबारक पर सवारी करते और खेलते मगर नमाज़ फ़ासिद नहीं होती बल्कि हसनैन करीमैन के ऐसा करने से हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को क़ल्बी मसर्रत और आपकी चश्मे मुबारक

को ठन्डक मिलती हसनैन करीमैन का इस तरह आप की पुश्त मुबारक पर सवार होना और खेलना आपके क़ल्बे अतहर को खुशी पहुँचाता।

हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हालते नमाज़ में हसनैन करीमैन को बड़ी आहिस्तगी व नरमी के साथ अपनी पुश्त मुबारक से उतारते कि कहीं उन्हें कोई नुक़सान या चोट या रंज न पहुँचे इस बात का ख़्याल रखना मेरे मुस्तफ़ा की हसनैन करीमैन से बेहद मुहब्बत की अ़लामत है कि हालते नमाज़ में भी आपने अपने लख़्ते जिगर बेटों की पर'वाह और फ़िक्र रखना कि कहीं उनके दिल रंजीदा न हों और अल्लाह के रसूल का ये फ़रमान मेरे माँ बाप इन पर कुर्बान हों ये इरशाद मुबारक हसनैन करीमैन की शानो अ़ज़मत व एअ़ज़ाज़ को अ़ज़ीम बुलन्दी के मक़ाम पर फ़ाइज़ होने पर दलालत करता है।

रसूलुल्लाह का फ़रमान हसनैन करीमैन ये मेरे दो फूल हैं

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हसन और हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) दुनिया में ये मेरे दो फूल हैं।
(मिश्कात–3/555-ह०-6164)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/296-ह०-2527)
(कंजुल उ़म्माल–7/304-ह०-37699)
(कंजुल उ़म्माल–6/409-ह०-34252)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/464)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/215-ह०-144)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से एक शख़्स ने मच्छर के खून के बारे में पूछा कि उसे मारना जाइज़ है या नहीं तो आपने फ़रमाया कि तुम कहाँ के रहने वाले हो उसने कहा ईराक़ का फिर आप ने फ़रमाया कि इस आदमी को देखो जो मुझसे मच्छर के खून के बारे में पूछता है जबकि ईराक़ वालों ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद किया है और मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) मेरी दुनिया के ये दो फूल हैं।
(बुख़ारी–सहीह–03/764-ह०-3753)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1100-ह०-3770)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–08/152-ह०-6969)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–03/137-ह०-2884)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–02/434-ह०-2815)
(मुस्नद अहमद–05/118-ह०-5568)
(मुस्नद अहमद–05/178-ह०-5675,5940)
(मिश्कात–03/350-ह०-6145)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–01/1580-ह०-5739)
(कंजुल उ़म्माल–07/307-ह०-37719)
(इब्ने अबी शैबा–09/536-ह०-32854)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/459-ह०-1390)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–05/70)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/216-ह०-145)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी व हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुआ तो देखा

कि इमाम हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आपकी गोद मुबारक में खेल रहे हैं एक रिवायत में है कि आपके शिकम (पेट) मुबारक पर खेल रहे हैं मैने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप इनसे मुहब्बत करते हैं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं इनसे मुहब्बत क्यों न करूँ मेरे गुलशने दुनिया के यही तो दो फूल हैं जिनकी महक को मैं सूँघता रहता हूँ।

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/130-ह०-3892)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/155-ह०-3990)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/209-ह०-15073,15074)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/286-ह०-1078,1079)
(कंजुल उ़म्माल–6/413-ह०-34296)

हसनैन करीमैन का रसूलुल्लाह के काँधों पर सवारी करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के घर के सामने रुके तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़ातिमा को सलाम किया कि इतने में हसनैन करीमैन में से एक शहज़ादा घर से बाहर आया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उस शहज़ादे से फ़रमाया कि अपने बाप के काँधे पर सवार हो जा तू मेरी आँखो का तारा है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उन्हें हाथ से पकड़ा तो वो आपके काँधे पर सवार हो गये और फिर दूसरा शहज़ादा बाहर आया तो उससे भी आपने फ़रमाया कि खुश आमदीद–

अपने बाप के काँधे पर सवार होजा तू मेरी आँखो का तारा है फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनको भी अपने काँधे पर सवार कर लिया फिर आपने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ तू भी इनसे मुहब्बत फ़रमां और उन से भी मुहब्बत फ़रमां जो इनसे मुहब्बत करता हो।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/42-ह०-2652)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/315-ह०-2586,2587)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/207-ह०-15070)
(कंजुल उ़म्माल–7/304-ह०-37697)

➡ हज़रत उ़मर फारुक़ और हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के कन्धों पर सवार देखा तो मैंने हसरत भरे लहजे में कहा कि आपके नीचे कितनी बेहतर सवारी है तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने जवाबन इरशाद फ़रमाया ज़रा ये भी तो देखो कि सवार कितने बेहतर हैं और इन दोंनों के माँ बाप इन दोंनों से अफ़ज़ल हैं। (मिश्कात–3/558-ह०-6172)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/330-ह०-4794)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/342-ह०-2611)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/210-ह०-15078)
(इब्ने अबी शैबा–9/538-ह०-32859)
(मुस्नद बज़्ज़ार–1/417-ह०-293)
(कंजुल उ़म्माल–7/297-ह०-37648,37670)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/464)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को कन्धों पर सवार किया हुआ था फिर आप एक को बोसा देते फिर दूसरे को बोसा देते फिर आपने फ़रमाया कि जिसने इन दोंनों से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा।
(मुस्नद अहमद–1/654-ह०-9673)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/323-ह०-4777)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/206-ह०-15063)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/456-ह०-1376)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–6/32-ह०-8317)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/199)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत हसन (अ़लैहिमस्सलाम) को कन्धों पर उठाये हुये थे और फ़रमां रहे थे ऐ अल्लाह मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत फ़रमां
(बुख़ारी–सहीह–3/760-ह०-3749)
(मुस्लिम–सहीह–4/577-ह०-6258)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1104-ह०-3783)
(मिश्कात–3/549-ह०-6142)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/958-ह०-1972)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/450-ह०-1353)
(इब्ने अबी शैबा–9/537-ह०-32856)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/146-ह०-6962)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/297-ह०-37651)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/464)

हसनैन करीमैन को पुश्त पर सवार करके रसूलुल्लाह का हाथों के बल चलना

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं हजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) चार (दो टांगों और दो हाथों के बल) पर चल रहे थे और आपकी पुश्त मुबारक पर हसनैन करीमैन सवार थे और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ये फ़रमां रहे थे कि तुम्हारा ऊँट क्या खूब है और तुम दोनों सवार भी क्या खूब हो।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1105-ह०-3784)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/320-ह०-2595)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–03/46-ह०-2661)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/210-ह०-15079)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/229)
(कंजुल उ़म्माल–07/302-ह०-37687)

हसनैन करीमैन तमाम जन्नती नौजवानों के सरदार हैं

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने महबूब रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के नूरे नज़र हसनैन करीमैन को अह्ले जन्नत की सियादत (सरदारी) अ़ता फ़रमाई और अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अहले बैत अतहार को जन्नत का मालिको मुख़्तार बनाया वो जिसे चाहेंगे उसे जन्नत का वारिस बना देंगे तमाम मुहिब्बाने

अहले बैत रोज़े क़यामत शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा से बहरेयाब होंगे और इ़ज़्ज़त व इकराम के साथ जन्नत में दाख़िल होंगे और हसनैन करीमैन (अ़लैहिमस्सलाम) की ज़ेरे सरदारी में होंगे और तमाम ख़वातीन सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) की ज़ेरे सरदारी में होंगी।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) अहले जन्नत के सरदार हैं और इन दोंनों के वालिद इन दोंनों से अफ़ज़ल हैं।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/324-ह०-4779,4780)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/25-ह०-2601,2604)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/263-ह०-366)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/515-ह०-885)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/211-ह०-15082,15093)
(मिश्कात–3/555-ह०-6163)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/143-ह०-6959)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/629-ह०-1164)
(इब्ने अबी शैबा–9/533-ह०-32840)
(कंजुल उ़म्माल–6/409-ह०-34247)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/454-ह०-1368)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/464)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/536)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/131,132,133)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/415-ह०-3821)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/212-ह०-140)

➡ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और फिर फ़रमाया मेरा ये बेटा हसन (अ़लैहिस्सलाम) सरदार है अल्लाह तआ़ला इसके हाथों दो जमाअ़तों के दरमियान सुलह करायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–3/759-ह०-3746)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1101-ह०-3773)
(मिश्कात–3/550-ह०-6144)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/340-ह०-4810)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/294-ह०-2524,2526)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/148-ह०-6964)
(इब्ने अबी शैबा–9/533-ह०-32842)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/303-ह०-37691)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/450-ह०-1354)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/464)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/269)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–7/561-ह०-20981)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हसन व हुसैन तमाम जन्नती नौजवानों के सरदार हैं जिसने इनसे मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/30-ह०-2618)
(कंज़ुल उ़म्माल–06/412-ह०-34282,34285)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/132)

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैंने अपने नाना जान नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है हसन व हुसैन

को बुरा मत कहो क्योंकि वो पहली और पिछली तमाम उम्मतों के जन्नती नौजवानों के सरदार हैं।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/264-ह०-366)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213-ह०-15092)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/131,132)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हसन व हुसैन तमाम जन्नती नौजवानों के सरदार हैं और मेरी बेटी फ़ातिमा तमाम जन्नती औ़रतों के सरदार हैं।
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/415-ह०-3822)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/199-ह०-129)

➡ हज़रत अबू हुरैरा व हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे लिये एक फ़रिश्ता पेश किया गया जिसने इस बात की इजाज़त ली कि वो मुझ पर सलाम भेजे और मुझे इस बात की खुश ख़बरी दे कि बेशक फ़ातिमा तमाम जन्नती औ़रतों के सरदार हैं और हसन व हुसैन तमाम जन्नती नौजवानों के सरदार हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/403-ह०-1006)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/299-ह०-2539)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/211-ह०-15085)
(इब्ने अबी शैबा–9/533-ह०-32841)
(कंजुल उ़म्माल–6/404-ह०-34192)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि–

वसल्लम) ने सय्यदा फ़ातिमा से फ़रमाया कि क्या तुम राज़ी नहीं कि तुम तमाम जन्नती औरतों की सरदार हो और तुम्हारे दोंनों बेटे हसन व हुसैन तमाम जन्नती नौजवानों के सरदार हैं।
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/102-ह०-885)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/307-ह०-37727)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चेहरे अनवर पर एक दिन खुशी देखी तो मैंने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह हम आपके चेहरे अनवर पर खुशी देख रहे हैं तो आप ने फ़रमाया कि मैं खुश क्यों न हूँ कि मेरे पास जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) आये और मुझे ये खुश ख़बरी दी कि हसन व हुसैन जन्नती नौजवानों के सरदार हैं और उनके वालिद उन दोंनों से अफ़ज़ल हैं। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/300-ह०-2542)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी व खुश नहीं हो कि तुम्हारा ख़ाविन्द पहला मुसलमान व ज़्यादा इ़ल्म वाला और बुर्दबारी में सबसे अफ़ज़ल और इस्लाम लाने में सबसे मुक़द्दम हैं और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम कि आपके दोंनों बेटे हसन और हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) तमाम जन्नती नौजवानों के सरदार हैं।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/448-ह०-1346)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/62-ह०-36270)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/634)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/118)

हसनैन करीमैन जन्नत के दो सुतून हैं

➡ हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) अ़र्श के दो सुतून हैं लेकिन वो लटके हुये नहीं हैं नीज़ फ़रमाया कि जब अहले जन्नत जन्नत में मुक़ीम होंगे तो जन्नत अ़र्ज़ करेगी ऐ पर‘वर दिगार तूने मुझे अपने सुतूनों में से दो सुतूनो से मुझे मुज़य्यन (आरास्ता) व ज़ीनत देने का वाअ़दा फ़रमाया था फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे हसन व हुसैन की मौजूदगी के ज़रिये आरास्ता नहीं कर दिया यही तो मेरे दो सुतून हैं।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/250-ह०-337)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213-ह०-15096)
(कंजुल उ़म्माल–6/412-ह०-34290)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/228)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नत ने दोज़ख़ के सामने फ़ख़्र करते हुये कहा कि मैं तुझसे बेहतर हूँ तो दोज़ख़ ने कहा नहीं मैं तुझसे बेहतर हूँ पस जन्नत ने दोज़ख़ से कहा कि तुम मुझसे किस तरह बेहतर हो तो दोज़ख़ ने कहा मेरे अन्दर जाबिर बादशाह और जाबिर लोग और नमरुद व फिरऔन जैसे लोग होंगे ये बात सुनकर जन्नत ख़ामोश हो गई फिर अल्लाह तआ़ला ने जन्नत की तरफ़ वही की फ़रमाया कि ऐ जन्नत मैं तुझे रुसवा नहीं करूँगा मैं तुझे हसन और हुसैन से मुज़य्यन

करूँगा पस जन्नत नरम हो गई जिस तरह दुल्हन पर्दे में नरम होती है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/431-ह०-7120)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213-ह०-15094)

➡ हज़रत अ़ब्बास बिन ज़रीअ़ अपने वालिद से बयान करते हैं कि जन्नत ने अल्लाह तबारक व तआ़ाला की बारगाह में अ़र्ज़ किया ऐ मेरे पर'वर दिगाार तूने मुझे हसीन व जमील बनाया तो मेरे सुतूनों को भी हसीन व जमील बना तो अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने फ़रमाया कि मैंने हसन व हुसैन के ज़रिये तुझे हसीन व जमील बना दिया है। (ज़हबी–मीज़ानुल एअ़तिदाल–7/166-9458)
(इब्ने हजर अस्क़लानी–लिसानुल मीज़ान–8/417-8412)

–: हसन हुसैन जन्नत से आये हुये नाम हैं :–

हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) ये दोनो जन्नत से आये हुये नाम हैं तारीख़े दुनिया में इनसे पहले रुऐ ज़मीन पर किसी का भी नाम हसन व हुसैन नहीं था अल्लाह तआ़ाला ने इनके नामों को हिज़ाब में रखा यहाँ तक कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने लख़्ते जिगर बेटों के नाम हसन व हुसैन रखे और कुल जन्नत नूर है इसलिये हसन व हुसैन ये दोनो नाम भी नूर हैं।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि जब हसन (अ़लैहिस्सलाम) पैदा हुये तो उनका नाम हमजा और जब हुसैन अ़लैहिस्सलाम पैदा हुये तो उनका नाम जाअ़फ़र रखा एक रिवायत में है कि उनका नाम हर्ब रखा फिर मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु–

तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने बुलाकर फ़रमाया कि मुझे इन दोनों साहबज़ादों (हसनैन करीमैन) के नामों को तब्दील करने का हुक्म दिया गया है हज़रत मौला अ़ली फ़रमाते हैं मैने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह व उसके रसूल बेहतर जानते हैं पस आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनके नाम हसन व हुसैन रखे
(मुस्नद अहमद–2/19-ह०-953)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/320-ह०-4773)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/101-ह०-2777)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/280-ह०-2478)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–8/58-ह०-12868)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/332-ह०-494)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/453-ह०-1365)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/142-ह०-6958)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–3/335-ह०-7981)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/301-ह०-37676,37692)

➡ अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने हसन व हुसैन के नामों को हिज़ाब में रखा यहाँ तक कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने बेटों के नाम हसन व हुसैन रखे।
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–1/557-ह०-1165)
(इमाम नववी–तहज़ीबुल अस्मा–1/158-ह०-118)

➡ इब्ने साअ़द ने इमरान बिन सुलेमान से रिवायत किया है कि हसन और हुसैन अहले जन्नत के नामों में से दो नाम हैं जो कि दौरे जाहलियत में पहले कभी नहीं रखे गये। (तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/208)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–01/105)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/639)

जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) का हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की मदद करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि एक मर्तबा हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के सामने हसनैन करीमैन कुश्ती लड़ रहे थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) हज़रत इमाम हसन की मदद फ़रमां रहे थे कि ऐ हसन जल्दी करो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप हसन की मदद फ़रमां रहे है लगता है वो आपको हुसैन से ज़्यादा प्यारा है आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं है जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) हुसैन की मदद कर रहे हैं इसलिये मैंने चाहा कि मैं हसन की मदद करूँ। (इब्ने अबी शैबा–9/537-ह०-32858)
(कंजुल उ़म्माल–7/301-ह०-37679)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/223)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/536)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/236)

अह्ले बैत अत्हार से इंतिहाई मुहब्बत मज़बूत ईमान की अ़लामत और तारीके दिल की नूरानी रोशनी है और इनसे बुग्ज़ और कीना मुर्दा दिल और ख़ारिजे अज़ इस्लाम की दलील है जो शख़्स अल्लाह व रसूल की मुहब्बत को हासिल करने का तालिब व ख़्वाहिशमंद हो तो उसे हर हाल में अह्ले बैत अत्हार की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ना होगा हम गुनाहगारों के पास इतने

नेक आअ़्माल नहीं हैं जो हमारी बख़्शिश और अ़ज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रखने व जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी हों अलबत्ता अहले बैत की मुहब्बत यक़ीनन हमें अ़ज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रखने व हमारी बख़्शिश और जन्नत में ले जाने के लिये नफ़ा बख़्श और मददगार होगी अहले बैत की मुहब्ब्त हमें अल्लाह व रसूल के नज़दीक और राहे जन्नत की तरफ़ ले जाती है और इनसे बुग्ज़ व अ़दावत हमें जहन्नम की तरफ़ ले जाती है और अल्लाह व रसूल से महज़ दूरी के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

-: हसनैन करीमैन की मुहब्बत वाजिब है :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब नमाज़ पढ़ रहे होते और जब आप सज्दा करते तो इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आपकी पुश्त मुबारक पर सवार हो जाते सहाबाकिराम इन दोंनों को मनाअ़ करते तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) इशारे से कहते इन्हें छोड़ दो और जब आप नमाज़ मुकम्मल करते तो फिर हसनैन करीमैन को अपनी गोद मुबारक में बिठाते और फ़रमाते कि जिसने मुझसे मुहब्बत की उस पर लाज़िम है कि वो इन दोंनों हसन व हुसैन से भी मुहब्बत करे। (नसाई-सुनन कुबरा-7/318-ह०-8114)
(अबू यअ़ाला-अल मुस्नद-1/1493-ह०-5368)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/207-ह०-15065,15069)
(इब्ने अबी शैबा-6/378-ह०-32174)
(इब्ने खुज़ैमा-सहीह-2/119-ह०-887)
(मुस्नद बज़्ज़ार-5/226-ह०-1834)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुझसे मुहब्बत करता है उस पर इन दोंनों हसन व हुसैन से मुहब्बत करना वाजिब है। (हाकिम-अल मुस्तदरक-4/337-ह०-4806)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/207-ह०-15069)
(इब्ने अबी शैबा-6/378-ह०-32174)
(कंजुल उ़म्माल-6/413-ह०-34292)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाये और फिर फ़रमाया मुन्ना कहाँ है क्या यहाँ मुन्ना है चुनांचा हसन बाहर आये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने हाथ मुबारक फैलाये और हसन को अपने साथ चिमटा लिया और फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे माँ बाप तुझ पर फ़िदा हों जो शख़्स मुझसे मुहब्बत करता हो वो इससे भी मुहब्बत करे। (कंजुल उ़म्माल-7/296-ह०-37633)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हसन को अपनी गोद मुबारक में बिठाया और फिर फ़रमाया कि जो मुझसे मुहब्बत करता हो तो वो इससे भी मुहब्बत करे और जो यहाँ मौजूद हो वो ग़ायब को बतादे।
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/201-ह०-15039)
(इब्ने अबी शैबा-6/379-ह०-32188)
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/492-ह०-1387)
(इब्ने असाकर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-13/197)

हसनैन करीमैन से मुहब्बत का सिला जन्नत और बुग़्ज़ का बदला दोज़ख़

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) से मुहब्बत की उससे मैंने मुहब्बत की और जिससे मैं मुहब्बत करूँ उससे अल्लाह तअ़ाला मुहब्बत करता है और जिसे अल्लाह तअ़ाला महबूब रखता है उसे नेअ़मतों वाली जन्नत मे दाख़िल फ़रमाता है और जो भी इनसे बुग़्ज़ रखेगा या इनके साथ ज़्यादती करेगा तो मैं भी उससे बुग़्ज़ व अ़दावत रखूँगा और जिससे मैं अ़दावत रखूँगा तो रब तअ़ाला भी उससे अ़दावत रखेगा और अल्लाह तअ़ाला जिससे अ़दावत रखेगा तो उसे दोज़ख़ में दाख़िल किया जायेगा और उस पर दायमी अ़ज़ाब होगा।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/43-ह०-2655)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/208-ह०-15072)

मज़कूरा हदीस पाक में हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के फ़रमान का अंदाज़ जुदा व निराला है कि जिसने हसनैन करीमैन से मुहब्बत की उससे मैं मुहब्बत करता हूँ और बेशक हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जिसके मुहिब हों तो वो अल्लाह तअ़ाला का महबूब हो जाता है और जिसका मुहिब रब्बुल अ़ालमीन हो तो वो मख़सूस व मुक़र्रबे ख़ुदा हो जाता है और वो जन्नत का मुस्तहिक़ व सज़ावार हो जाता है हत्ता कि अल्लाह तअ़ाला उसके लिये जन्नत को वाजिब कर देता है।

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते है कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि हसन व हुसैन अ़लैहिमस्सलाम मेरे बेटे हैं जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह तअ़ाला से मुहब्बत की और जिसने अल्लाह तअ़ाला से मुहब्बत की तो अल्लाह तअ़ाला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया और जिसने हसन व हुसैन अ़लैहिमस्सलाम से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उस पर अल्लाह तअ़ाला का ग़ज़ब होगा और अल्लाह तअ़ाला उसको दोज़ख़ की आग में दाख़िल करेगा और उस पर हमेशा अ़ज़ाब होगा (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/316-ह०-2589)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/43-ह०-2655)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/208-ह०-15072)
(कंजुल उ़म्माल–6/412-ह०-34284)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/156)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा तो अल्लाह तअ़ाला उसको दोज़ख़ में दाख़िल करेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/322-ह०-4776)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) नमाज़े अ़स्र पढ़ा रहे थे तो हज़रत हसन व हज़रत हुसैन तशरीफ़ लाये ये दोंनों हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम

की पुश्त पर सवार हो गये जब हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ने सलाम फेरा तो दोनों को अपने आगे बिठाया हसन को दांयी जानिब व हुसैन को बांयी जानिब बिठाया फिर फ़रमाया ऐ लोगों क्या तुम्हें लोगों में सबसे बेहतर नाना नानी के लिहाज़ से न बताऊं मैं तुम्हें लोगों में बेहतर खाला के लिहाज़ से न बताऊं लोगों में बेहतर वालिदा और वालिद के लिहाज़ से न बताऊं लोगों में से बेहतर चचा के लिहाज़ से न बताऊं लोगों में से बेहतर फूफी के लिहाज़ से न बताऊं और फिर आपने फ़रमाया कि वो दोंनों हसन व हुसैन हैं इनके नाना रसूलुल्लाह इन की नानी हज़रत ख़दीजातुल कुबरा हैं व इनकी वालिदा ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा हैं इन दोंनों के वालिद हज़रत मौला अ़ली हैं इनकी खाला ज़ैनब व रुकय्या व कुलसुम रसूलुल्लाह की शहज़ादियाँ हैं इन दोनों के नाना नानी जन्नती इन दोंनों के वालिदैन जन्नती इन दोंनों के चचा जन्नती इन दोंनों की फूफी जन्नती इन दोंनों की खाला जन्नती और ये दोंनों जन्नती हैं इन दोंनों से जो मुहब्बत करेगा वो जन्नती है और इनसे जो बुग्ज़ रखेगा वो जहन्नमी है (मुअ़जम कबीर–2/345-ह०-2616)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/64-ह०-2682)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/92-ह०-6462)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213-ह०-15097)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/173,13/229)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/226,230)
(कंजुल उ़म्माल–6/411-ह०-34278)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) से मुहब्बत की तो मैं उससे मुहब्बत–

करूँगा और जिसने मुझसे मुहब्बत की तो रब तआ़ला उससे मुहब्बत करेगा और जिसने इन दोंनों से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और अल्लाह तआ़ला उससे नाराज़ होगा।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/459-ह०-5985)

रसूलुल्लाह की दुआ़ ऐ अल्लाह हसन व हुसैन से मुहब्बत कर

➡ हज़रत यआ़ला बिन मुर्राह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है हसनैन करीमैन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तरफ़ चलकर आये पस उनमें से जब एक पहुँचा तो आपने अपना बाजू उसके गले में डाला फिर दूसरा पहुँचा तो आपने अपना दूसरा बाजू उसके गले में डाला फिर एक को चूमा फिर दूसरे को चूमा फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ तू भी इनसे मुहब्बत कर।
(इब्ने माजा–सुनन–3/180-ह०-3666)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/293-ह०-2523)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/21-ह०-2587)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/274-ह०-703)
(इब्ने अबी शैबा–9/532-ह०-32839)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–7/243-ह०-20143)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/219)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं हसन से मुहब्बत रखता हूँ तू भी इससे मुहब्बत रख और उस शख़्स से भी मुहब्बत रख जो हसन (अ़लैहस्सलाम) से

मुहब्बत रखता हो। (मुस्लिम–सहीह–4/576-ह०-6256)
(इब्ने माजा–सुनन–1/81-ह०-142)
(मुस्नद अहमद–4/74-ह०-7392)
(मिश्कात–3/550-ह०-6143
(नसाई–सुनन कुबरा–7/316-ह०-8108)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/292-ह०-2519)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/50-ह०-6360)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/449-ह०-1349)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/147-ह०-6963)
(कंजुल उ़म्माल–6/414-ह०-34307)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/189)

➡ हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन मैंने देखा कि हज़रत हसन हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की गोद मुबारक में थे कि हज़रत हसन बार बार हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की दाढ़ी मुबारक में उँगलियाँ डाल रहे थे और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत हसन के मुँह में अपनी जुबान मुबारक डालते थे फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दुअ़ा माँगी कि ऐ अल्लाह मैं हसन से मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत कर और आपने ये कलिमात तीन बार इरशाद फ़रमाये। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/328-ह०-4791)
(कंजुल उ़म्माल–7/296-ह०-37642)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/376-ह०-1427)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/463)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं एक रात किसी काम के लिये सर‘वरे

कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) बाहर तशरीफ़ लाये और आपके पास कुछ लिपटा हुआ था मगर मुझे मालूम न हो सका कि वो क्या चीज़ है जब मैं अपनी ज़रुरत से फ़ारिग़ हुआ फिर मैने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपने क्या चीज़ लपेट रखी है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने चादर हटाई तो फिर मैंने देखा कि हसन व हुसैन आपकी रानों पर हैं फिर आपने फ़रमाया कि ये मेरे बेटे और मेरी बेटी के बेटे हैं ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ तू भी इन्हें महबूब रख और उन्हें भी मेहबूब रख जो इनसे मुहब्बत रखें।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1100-ह०-3769)
(मिश्कात–3/555-ह०-6165)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/685-ह०-1349)
(मुस्नद बज़्ज़ार–7/31-ह०-2580)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/150-ह०-6967)
(इब्ने अबी शैबा–6/378-ह०-32182)
(कंजुल उ़म्माल–7/306-ह०-37711)
(कंजुल उ़म्माल–6/409-ह०-34255)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/211-ह०-139)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/211)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/463,636)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हसनैन करीमैन (अ़लैहिमस्सलाम) में एक को दाँयी रान पर और दूसरे को बाँयी रान पर बैठाया और फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत

करता हूँ तू भी इन दोंनों से मुहब्बत कर।
(बुख़ारी–सहीह–3/759-ह०-3747)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/312-ह०-2576)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/30-ह०-2618)
(इब्ने अबी शैबा–9/534-ह०-32846)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/450-ह०-1352)

➡ हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को देखा कि हज़रत हसन को अपनी गोद मुबारक में उठाये हुये थे और फ़रमां रहे थे ऐ अल्लाह मैं हसन से मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत कर।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–04/344-ह०-4821)

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) को अपनी गोद मुबारक में उठाया और फिर दुआ़ की ऐ अल्लाह मैं हसन से मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत कर। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/236-ह०-355)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/685-ह०-1349)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/543-ह०-956)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/459-ह०-1388)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के घर तशरीफ़ ले गये और सहन में बैठ गये और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हसन व हुसैन कहाँ हैं फिर दोंनों शहज़ादे दौड़ते हुये आपके

पास आ गये आपने उन्हें अपने गले से लगाया व उन्हें चूमा और प्यार किया और फिर फ़रमाया ऐ–अल्लाह तू इनसे मुहब्बत फ़रमां और जो इनसे मुहब्बत करे उन्हें भी अपना महबूब बनाले।
(बुख़ारी–सहीह–2/505-ह०-2122)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह मैं हसन व हुसैन से मुहब्बत करता हूँ तू भी इन दोंनों से मुहब्बत कर और उससे भी मुहब्बत कर जो हसन व हुसैन से मुहब्बत करें।
(मुस्नद बज़्ज़ार–5/217-ह०-1820)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/207-ह०-15066)

➡ हज़रत अबू हुरैरा व हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम की तरफ़ देखकर फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ तू भी इन दोंनों से मुहब्बत कर।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1104-ह०-3782)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/206-ह०-15064,15068)
(इब्ने अबी शैबा–6/378-ह०-32175)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/487-ह०-1371)

➡ हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं मेरे इन कानों ने सुना और मेरी आँखों ने देखा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने दोंनों हाथों से हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम

को पकड़े हुये थे और इमाम हुसैन के क़दम रसूलुल्लाह के क़दमों पर थे और आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम फ़रमां रहे थे कि ऐ छोटे छोटे क़दमों वाले ऊपर चढ़ चुनांचा वो आप पर चढ़ गये हत्ता कि उनके क़दम रसूलुल्लाह के सीना मुबारक पर पहुँच गये और फिर आपने उनका बोसा लिया फिर फ़रमाया ऐ-अल्लाह इससे मुहब्बत कर मैं भी इससे मुहब्बत करता हूँ। (तबरानी-मुअ़जम कबीर-3/42-ह०-2653)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/201-ह०-15040)
(कंज़ुल उ़म्माल-7/297-ह०-37643)
(कंज़ुल उ़म्माल-7/304-ह०-37698)
(इब्ने असाकर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-13/194)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के घर तशरीफ़ ले गये और फिर आवाज़ देने लगे ऐ हसन ऐ हसन फिर हज़रत हसन दौड़ते हुये आये और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के साथ चिमट गये और आपने भी हसन को चिमटा लिया और तीन मर्तबा फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं हसन से मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत फ़रमां और इस से मुहब्बत करने वालों से भी मुहब्बत फ़रमां हज़रत अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि जब भी मैं हसन को देखता हूँ तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं।
(मुस्नद अहमद-4/934-ह०-10904)
(इब्ने असाकर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-13/192,193)

➡ हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि

वसल्लम) के साथ मदीना तय्यबा के एक बाज़ार में गया जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) वापस हुये तो मैं भी आपके साथ वापस आ गया फिर आपने फ़रमाया हसन बिन अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) को बुलाओ चुनांचा हज़रत हसन आये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने हाथ मुबारक फैला दिये तो हज़रत हसन ने भी उसी तरह हाथ फैलाये फिर आपने हज़रत हसन को गले लगाकर फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत कर और उससे भी मुहब्बत कर जो इससे मुहब्बत करे।
(बुख़ारी–सहीह–5/540-ह०-5884)
(कंजुल उ़म्माल–7/296-ह०-37640,37641)

➡हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं मैंने जब भी हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) को देखा तो मेरी आँखें आबदीदा हो गईं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मस्जिद में बैठे हुये थे और मैं भी आपके साथ था आपने फ़रमाया हसन को बुलाकर लाओ फिर हज़रत हसन दौड़ते हुये आये यहाँ तक कि अपना हाथ रसूलुल्लाह की दाढ़ी मुबारक में दाख़िल कर दिया और रसूलुल्लाह ने भी अपना मुँह उनके मुँह पर रख दिया और फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह बेशक मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत फ़रमां और उससे भी मुहब्बत फ़रमां जो इससे मुहब्बत करे। (कंजुल उ़म्माल–7/296-ह०-37642)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/499-ह०-1407)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/192)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम) हज़रत हसन (अलैहिस्सलाम) को पकड़ते और अपने सीने से लगाते और फ़रमाते ऐ अल्लाह बेशक ये मेरा बेटा है तू इससे मुहब्बत फ़रमां और उससे भी मुहब्बत फ़रमां जो इससे मुहब्बत करे।
(तबरानी–मुअजम कबीर–3/20-ह०-2585)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/201-ह०-15041)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/298-ह०-37653)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/197)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह मैं इन दोंनों (हसन व हुसैन) से मुहब्बत करता हूँ तू भी इन दोंनों से मुहब्बत फ़रमां और जो इनसे बुग्ज़ रखे तू भी उससे बुग्ज़ रख।
(तबरानी–मुअजम कबीर–03/42-ह०-2651)
(मुस्नद अहमद–1/659-ह०-9759)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/207-ह०-15068)
(इब्ने अबी शैबा–6/378-ह०-32175)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/487-ह०-1371)

जिसने हसनैन करीमैन से मुहब्बत की उसने रसूलुल्लाह से मुहब्बत की

➡ हज़रत मौला अली (अलैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने हसनैन करीमैन से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा।
(तबरानी–मुअजम कबीर–2/312-ह०-2577)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने हसन व हुसैन से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/81-ह०-143)
(मुस्नद अहमद–7/519-ह०-7862,7863)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/317-ह०-8112)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/332-ह०-4799)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/313-ह०-2579)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/40-ह०-2645)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/42-ह०-2651)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/649-ह०-4795)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–2/729-ह०-6369)
(मुस्नद बज़्ज़ार–5/217-ह०-1820)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/1691-ह०-6215)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/451-ह०-1359)
(कंजुल उ़म्माल–6/410-ह०-34268)

रसूलुल्लाह का हसनैन करीमैन के लिये खुत्बा मौकूफ़ करना

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक मर्तबा हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे कि हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आये उन दोंनों शहज़ादों ने सुर्ख़ कपड़े पहन रखे थे और गिरते गिराते (यानी बचपन की उ़म्र की वजह से) चले आ रहे थे उन दोंनों शहज़ादों को देखकर आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने खुत्बा रोक दिया और–

मिम्बर से उतरकर उन्हें उठा लिया और फिर दोबारा मिम्बर पर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ''बेशक तुम्हारे अमवाल व औलाद तो बस फ़ित्ना ही हैं' कि देखो मैंने इन दोंनों को देखा कि वो अपने कुर्तों में गिरते चले आ रहे हैं तो मैं सब्र न कर सका यानी मुझे घबराहट हुई कि गिरकर इन्हें कहीं चोट न लग जाये और मैंने खुत्बा मौकूफ़ करके इन्हें उठा लिया।

(इब्ने माजा–सुनन–3/163-ह०–3600)
(अबू दाऊद–सुनन–1/784-ह०–1109)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1092-ह०–3774)
(नसाई–सुनन–3/456-ह०–4993)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–7/127-ह०–6039)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/306-ह०-2560)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/483-ह०-1358)
(कंजुल ऊ़म्माल–7/302-ह०-37686)

हसनैन करीमैन का रसूलुल्लाह की जुबान मुबारक चूसना

➡ हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ निकला हम अभी आधे रास्ते में थे कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) के रोने की आवाज़ सुनी दोंनों अपनी वालिदा के पास थे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तेज़ी से चले और हसनैन करीमैन के पास आये और फिर आपने फ़रमाया मेरे दोंनों बेटों को क्या हुआ है ये क्यों रो रहे हैं सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) ने कहा इन्हें प्यास लगी है फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मशकीज़े की तरफ़ पानी तलाश किया मगर उसमें पानी मौजूद न था फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सय्यदा फ़ातिमा से फ़रमाया कि इन दोंनों शहज़ादों में से एक को मुझे दो हज़रत सय्यदा फ़ातिमा ने परदे के नीचे से एक को पकड़ाया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने सीने से लगाया और फिर अपनी जुबान मुबारक उनके मुँह में दाख़िल की और वो उसे चूसने लगे हत्ता कि वो ख़ामोश हो गये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दूसरा मुझे पकड़ाओ फिर आपने उनके साथ भी ऐसा ही किया हत्ता कि दोंनों ख़ामोश हो गये हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) से मुहब्बत क्यों न करूँ जबकि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये करते हुये देखा है।

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/316-ह०-2590)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/43-ह०-2656)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/208-ह०-15071)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/95)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/221)

क़यामत के दिन हसनैन करीमैन की इज़्ज़त व इकराम

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़यामत तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को बहुत खूब सूरत जानवरों पर सवार करके इकट्ठा किया जायेगा ताकि–

उन्हें इज़्ज़त दी जाये और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम अपनी ऊँटनी पर सवार होंगे और मैं बुर्राक पर सवार होऊँगा और मेरे दोंनों लख़्ते जिगर (हसन और हुसैन) जन्नत की ऊँटनीयों में से दो ऊँटनीयों पर सवार होंगे
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/307-ह०-2563)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/35-ह०-2629)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/531-ह०-909)

जिसने हुसैन से मुहब्बत की तो क़यामत में वो उनके साथ होगा

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जो मुझसे अल्लाह तआ़ला के लिये मुहब्बत करता है तो हम और वो क़यामत के दिन इस तरह साथ होंगे आपने शहादत वाली उंगली और बीच वाली उंगली को मिलाकर इशारा फ़रमाया।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/433-ह०-2811)

रसूलुल्लाह का हसनैन करीमैन को गर्मी से बचाना

➡ ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) फ़रमाती हैं एक दिन रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मेरे घर पर तशरीफ़ लाये और मुझसे पूछा कि मेरे दोंनों बेटे कहाँ हैं तो मैंने जवाब दिया कि कि वो अपने वालिद के साथ गये हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) उनकी तलाश में निकल पड़े आपको वो एक हौज़ के करीब खेलते हुये मिले आपने फ़रमाया ऐ अ़ली क्या तुम मेरे बेटों को गर्मी से नहीं बचाओगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/321-ह०-4774)

–ः आले मुहम्मद का मक़ाम व मर्तबा ः–

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आले मुहम्मद का मक़ाम व मर्तबा ये है कि जो मक़ाम सर का जिस्म के साथ होता है और आँख का मक़ाम सर के साथ होता है और जिस्म सर के बग़ैर नहीं और सर आँख के बग़ैर क़ाबिले हिदायत नहीं होता।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/311-ह०-2574)

रसूलुल्लाह हसनैन करीमैन से बेहद मुहब्बत किया करते थे

➡ उम्मे फ़ज़ल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरे पास तशरीफ़ लाये मैं उस वक़्त हज़रत हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को दूध पिला रही थी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत हुसैन को मुझसे माँगा तो मैंने हज़रत हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को आपकी गोद मुबारक में दे दिया कि हज़रत हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) ने आप पर पेशाब कर दिया तो मैंने अपने हाथ उनकी जानिब बढ़ाये मैं ताकि हुसैन को ले लूँ लेकिन आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे बेटे को मुझसे जुदा न करो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उस पर पानी छिड़क दिया। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/348-ह०-4829)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/632-ह०-6197)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/317-ह०-7038)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) आराम फ़रमां रहे थे कि अचानक हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) दाख़िल हुये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सीना मुबारक पर बैठ गये और फिर आपके सीना मुबारक पर पेशाब कर दिया मैं हज़रत इमाम हसन को हटाने लगा तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने रोक दिया और फ़रमाया ऐ अनस मेरे बेटे और मेरे दिल के फूल को छोड़ दो कि जिसने इसको तकलीफ़ पहुँचाई तो उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अललाह तआ़ला को तकलीफ़ दी फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने पानी मंगवाया और पेशाब पर बहा दिया और फिर फ़रमाया बच्चे के पेशाब पर पानी बहाया जाता है और बच्ची के पेशाब को धोया जाता है
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/306-ह०-2561)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/414-ह०-34310)

रसूलुल्लाह हसनैन करीमैन को सूँघते और अपने सीने से लगाते

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि किसी शख़्स ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से पूछा ऐ अल्लाह के रसूल आपको अपने घर वालों में कौन ज़्यादा प्यारा है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हसन व हुसैन और आप सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से फ़रमाते थे कि बुलायें हमारे दोंनों बेटों को फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उन दोंनों शहज़ादों हसन व हुसैन को सूँघते और अपने सीने

मुबारक से लगा लेते (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1101-ह०-3772)
(मिश्कात–3/556-ह०-6167)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/200-ह०-4294)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/216)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/153)

हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के ग़म में रोने के बदले जन्नत

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हमारे लिये अपनी आँख से आँसू बहाता है या एक क़तरा गिराता है तो अल्लाह तबारक व तअ़ाला उसके बदले उसे जन्नत अ़ता फ़रमायेगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/382-ह०-1154)

–: हसनैन करीमैन अ़र्श की दो तलवारें :–

➡ हज़रत उ़क़बा बिन अ़ामिर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हसनैन करीमैन अ़र्श की दो तलवारें हैं जो लटकी हुई नहीं हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/410-ह०-34262)

रसूलुल्लाह ने शैतान के शर से महफ़ूज़ रहने की दुअ़ा फ़रमाई

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रहमते दो अ़ालम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के लिये खुसूसी दुअ़ा फ़रमाई कि

ऐ अल्लाह मैं अपनी इस बेटी और इसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/408-ह०-1021)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–6/129-ह०-6944)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/67)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हसनैन करीमैन को दम करते तो ये पढ़ते 'मैं अल्लाह तआ़ला के बाबरकत और कामिल कलिमात के ज़रिये से पनाह माँगता हूँ हर शैतान और ज़हरीले कीड़े और नज़रे बद से नीज़ फ़रमाया हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) अपने साहबज़ादों इस्माईल व इस्हाक़ (अ़लैहिमस्सलाम) को यही दम किया करते थे।
(बुख़ारी–सहीह–3/548-ह०-3371)
(इब्ने माजा–सुनन–3/143-ह०-3525)
(अबू दाऊद–सुनन–4/595-ह०-4737)
(मुस्नद अहमद–2/523-ह०-2112)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/87-ह०-9984)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/648-ह०-4793)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/324-ह०-4781)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–10/220-ह०-17449)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–4/336-ह०-7987)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–2/166-ह०-1012)
(इब्ने अबी शैबा–5/47-ह०-23577)
(मुस्नद बज़्ज़ार–4/304-ह०-1483)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/224)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/235)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह मैं इन दोंनों हसन व हुसैन व नेक मोमिनीन को तेरी हिफ़ाज़ते ख़ास में देता हूँ।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/185-ह०-5037)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/412-ह०-34281)

हसनैन करीमैन के लिये अंधेरे में आसमान से रौशनी ज़ाहिर होना

➡ हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ नमाज़े इशां अदा कर रहे थे जब आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम सज्दे में गये तो इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम आपकी पुश्त मुबारक पर सवार हो गये और फिर जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सज्दे से सर उठाया तो आपने उन दोंनों शहज़ादों को अपने पीछे नरमी से पकड़कर ज़मीन पर बैठा दिया फिर जब आप दोबारा सज्दे में गये तो हसन व हुसैन अ़लैहिमस्सलाम ने दोबारा भी ऐसा ही किया फिर आप जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुये तो हसन व हुसैन को अपनी रानों पर बिठा लिया मैंने खड़े होकर अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं इन दोंनों शहज़ादों को इनके घर छोड़ आऊँ पस अचानक आसमान से रौशनी चमकी फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम दोंनों अपनी वालिदा के पास चले जाओ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि उन दोंनों शहज़ादों हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम के घर में दाख़िल

होने तक वो रौशनी बरक़रार रही।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/325-ह०-4782)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–9/45-ह०-2659)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/209-ह०-15076)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/305-ह०-37706)

रसूलुल्लाह और हसनैन करीमैन एक ही मिट्टी से तख़लीक़ हुये

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर औ़रत की औलाद अपने बाप की जानिब मन्सूब होती है सिवाए फ़ातिमा के दोंनों बेटों के कि मैं उनका वली हूँ और वो मेरी औलाद हैं और वो मेरी मिट्टी से पैदा किये गये हैं और हलाकत है इनकी फ़ज़ीलत झुठलाने वालों के लिये और जो हसन व हुसैन से मुहब्बत करेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत करेगा और जो हसन व हुसैन से बुग्ज़ रखेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे बुग्ज़ रखेगा।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/35-ह०-2631)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/402-ह०-34168)

हज़रत अबू हुरैरा ने हसन (अ़लैहिस्सलाम) का बोसा लिया

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की से हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात हुई हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि ऐ हसन अपना कपड़ा ऊपर उठाओ ताकि मैं उस जगह बोसा दूँ जहाँ मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को बोसा देते हुये देखा है तो हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने पेट से कमीस उठाई और हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) की नाफ़ पर मुँह रखकर बोसा लिया।
(कंजुल उ़म्माल–7/297-ह०-37647)

–: हज़रत इमाम हसन की शहादत :–

➡ हज़रत क़तादा बिन दिअ़ामा सदूसी से रिवायत है कि अशअ़त बिन क़ैस की बेटी जाअ़दा ने हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) को ज़हर दिया था हालांकि वो आपके निकाह में थी और इस सिलसिले में उसने बहुत सारा माल रिश्वत लिया था।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/341-ह०-4815)

हज़रत इमाम हसन की शहादत पर मुआ़विया का बुग्ज़ ज़ाहिर होना

➡ हज़रत मिक़दाम रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान के पास हाज़िर थे तो मुअ़ाविया ने कहा कि हसन वफ़ात पा गये तो हज़रत मिक़दाम रज़ि अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा तो मुअ़ाविया कहने लगा क्या तुम इसे एक बड़ी मुसीबत समझते हो तो हज़रत मिक़दाम (रज़ि अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने जवाब दिया हाँ क्यों नहीं ये तो एक बड़ी मुसीबत है क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत इमाम हसन को अपनी गोद मुबारक में बिठाया और फ़रमाया हसन मुझसे है। (कंजुल उ़म्माल–7/298-ह०-37657)

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ये पेशीनगोई फ़रमाई थी कि मेरे बाद ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रहेगी और फिर बादशाहत आ जायेगी (अबू दाऊद–सुनन–06/532-ह०-4647) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफ़त ढ़ाई साल रही हज़रत उमर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफ़त दस साल रही और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु की ख़िलाफ़त बारह साल रही व हज़रत अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफ़त पाँच साल रही और फिर हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफ़त छः महीने रही और फिर इसके बाद बादशाहत के दौर की इब्तिदा हुई।

जब हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ख़िलाफ़ते राशिदा के मन्सब पर फ़ाइज़ हुये उस वक़्त मुआ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान दमिश्क़ का गर्वनर था तो मुआ़ाविया पर लाज़िम था कि वो अपनी हुकूमत को हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िलाफ़ते राशिदा के ताबेअ़ कर देता लेकिन मुआ़ाविया ने ऐसा नहीं किया बल्कि ख़िलाफ़ते अ़ली की बैअ़त से इन्कार करते हुये अपनी हुकूमत को आज़ाद हुकूमत में तब्दील करते हुये आज़ाद हुकूमत का ऐअ़लान कर दिया जबकि मुआ़ाविया का ये फ़ैसला और इक़दाम शरअ़न नाजाइज़ व दुरस्त न था बल्कि हज़रत मौला अ़ली की ख़िलाफ़त से ज़ाहिरन बग़ावत थी जिसके नतीजे में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) और मुआ़ाविया के दरमियान जंग हाइल हुई जिससे मुसलमानों के इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ में दरार पड़ी और मुसलमानों का इत्तेहाद क़ायम न रह सका और फिर बाहमी तफ़रीक़ के बाइस मुसलमानो में क़िताल व ख़ूँरेज़ी का माहौल बपा हुआ।

फिर जब हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ख़िलाफ़ते राशिदा पर फ़ाइज़ हुये तो मुसलमानो को क़िताल और खूँरेज़ी से महफूज़ रखने व उनके इत्तेहाद और उनकी ख़ैरो बेहतरी के लिये हज़रत इमाम हसन ने मुआ़विया से होने वाली जंग को रोका व एक मुआ़हिदे के तहत तख़्ते ख़िलाफ़त से अलग हो गये उस मुआ़हिदे में ये तय हुआ था कि मुआ़विया अपने बाद अपनी हुकूमत अपने वारिसों को नहीं देगा बल्कि मुसलमान जिसे चाहें उसे हुकूमत के लिये मुन्तख़ब कर लेंगे मगर मुआ़विया ने मुआ़हिदे के बरअ़क्स अपने फ़ासिक़ो फ़ाजिर बेटे की मुहब्बत और नफ़्सानी ख़्वाहिसात के ग़लबे के बाइस मुआ़विया ने मुआ़हिदे को तोड़ते हुये अपने बदकार व ज़ालिम और नाअह्ल बेटे यज़ीद को अपनी हुकूमत की तख़्ता नशीनी के लिये नामज़द किया और यज़ीद पलीद को अपनी हुकूमत का वारिस और जानशीन बनाने का एअ़लान कर दिया।

और यहीं से जबरो जुल्म और ख़िलाफ़े दीनो सुन्नत की हुकूमत का आगाज़ हुआ कि जिसने इस्लामी कानून और अहकामे शरीअ़त व सुन्नत के निज़ाम को बदल कर रख दिया और इस हुकूमत में क़त्लो ग़ारत जबरो जुल्म व खूँरेज़ी की इंतिहा हुई यज़ीद पलीद के हुक्म से मदीना मुनव्वरा में हमला किया गया जिसमें औ़रतों की इज़्ज़त व आबरु को तार तार किया गया और उनकी बेहुरमती की गई व हज़ारों अफ़राद जिनमें मुहाजिरीन व अन्सार, हुफ़्फ़ाज़ व सहाबा और ताबईन व दीगर अफ़राद शहीद किये गये और तीन दिन तक मदीना मुनव्वरा में क़त्लो ग़ारत व लूटपाट की गई और हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की दाढ़ी पकड़कर तमाचे मारे गये उनकी बेइज़्ज़ती की गई

यज़ीदी फ़ौज ने मस्जिदे नबवी में घोड़े बाँधे और उनकी लीद व पेशाब से मस्जिद में गन्दगी बपा हुई और तीन दिन तक अज़ान व इक़ामत और नमाज़ मुअ़त्तल रही फिर यज़ीदी लश्कर ने मक्का मुकर्रमा पर हमला किया ख़ानाए काअ़बा पर पत्थर बरसाये कि मस्जिदे हराम के सुतून टूट गये और ख़ाना-ए-काअ़बा में आग लगा दी जिससे काअ़बे का ग़िलाफ़ व दीवारें जल गईं ये तमाम वाक़्आ़त चौसठ (64) हिजरी में हुये और इसी दौरान यज़ीद पलीद को कुलंग का शदीद दर्द उठा और इसी मर्ज़ में वो वासिले जहन्नम हुआ और उसकी मौत की ख़बर से यज़ीदी फ़ौज के हौसले पस्त हो गये और वो मैदाने जंग से भागने लगे और मक्का फ़तह हुआ और यज़ीदियों की दरिन्दगी व जुल्म से मक्का मुकर्रमा को निजात मिली। (मुस्लिम-सहीह-2/730-ह०-3245)
(मिश्कात-3/243-ह०-5409)

➡ हदीस पाक में है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने मदीना वालों के साथ बुराई का इरादा किया तो रब तआ़ला उसे दोज़ख़ में इस तरह पिघला देगा जैसे नमक पानी में पिघल जाता है। (बुख़ारी-सहीह-2/384-ह०-1877)
(इब्ने माजा-सुनन-2/469-ह०-3114)
(मुस्लिम-सहीह-3/377-ह०-3319)

तो जब अह्ले मदीना के लिये सिर्फ़ बुराई का इरादा करना गुनाहे अ़ज़ीम व जहन्नम में सख़्त तरीन दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइस है तो फिर जिसके हुक्म से मारका-ए-करबला बपा हुआ व जिन लोगो ने ख़ानवादा-ए-रसूल व असहाब को शहीद किया उन पर निहायत जुल्म व सख़्तियाँ की तो उनके अंजाम और उनके अ़ज़ाब का-

आ़लम क्या होगा एक रिवायत में है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मक्का मुकर्रमा को अल्लाह तआ़ला ने हरम क़रार दिया और मदीना को मैं हरम क़रार देता हूँ यानी क़ाबिले इहतिराम और मदीना मुनव्वरा व मक्का मुअ़ज़्ज़मा के दरख़्त न काटे जायें और ऐसा करने वालों पर अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों की लाअ़नत है और एक रिवायत में है मदीना में गुनाह करने वालों पर अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों की लाअ़नत है अल्लाह तआ़ला न तो उसके फ़र्ज़ कुबूल करेगा और न निफ़्ल।

(बुख़ारी–सहीह–2/380-ह०-1867)
(मुस्लिम–सहीह–3/375-ह०-3315)
(अबू दाऊद–सुनन–2/558-ह०-2036)
(बुख़ारी–सहीह–2/366-ह०-1833)
(बुख़ारी–सहीह–2/365-ह०-1832)
(मुस्लिम–सहीह–3/378-ह०-3324)
(मुस्लिम–सहीह–3/381-ह०-3330)

तो जब मक्का व मदीना के दरख़्त काटने की सख़्त मुमानियत है और काटने वाले पर लाअ़नत फ़रमाई गई मदीना में गुनाह करने वालों पर अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों की लाअ़नत फ़रमाई गई तो फिर जिसके हुक्म से और जिन लोगों ने मक्का व मदीना पर हमला किया और सहाबाकिराम और दीगर अफ़राद को शहीद किया और तीन दिन तक मदीना में क़त्लो ग़ारत व लूटपाट की गई औ़रतों की बेइज़्ज़ती की गई व जिसके हुक्म से और जिन लोगों ने करबला में ख़ानवादा–ए–रसूल और असहाब को शहीद किया और उन पर निहायत जुल्म और सख़्तियाँ की तो उनके अंजाम और उनके अ़ज़ाब का आ़लम क्या होगा।

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम व उनके जां निसारों के जसदे अक़दस घोड़ों की टापों से पामाल किये गये और ख़ानवादा-ए-रसूल के ख़ेमों को लूटकर आग लगा दी गई और उन्हें क़ैदी बनाया गया सरे हुसैन को नेज़े पर चढ़ाया गया ख़वातीने अहले बैत की बे हुरमती की गई जब हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का मज़लूम लुटा पिटा काफ़िला दमिश्क़ में दरबारे यज़ीद मलऊ़न में पहुँचा तो बद बख़्त काफ़िर बदकार यज़ीद मलऊ़न ने हज़रत इमाम हुसैन के दन्दाने मुबारक पर छड़ी मारी और कहा कि आज हमने अपने मक़तूलीन का बदला ले लिया बदबख़्त यज़ीद ने अपने अन्दर छुपे हुये कुफ़्र को ज़ाहिर कर दिया दरबारे यज़ीद में मौजूद ये मंजर देखकर एक सहाबी उठे और यज़ीद को इस कुफ़्राना हरकत से मनाअ़ किया और फ़रमाया खुदा की क़सम मैने अपनी आँखों से हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हज़रत इमाम हुसैन के लबों को बोसा देते हुये देखा है।

यज़ीद पलीद और उसके हुक्मरान और फ़ौजे यज़ीद के वो तमाम अफ़राद जो मारका-ए-करबला में ख़ानवादा-ए-रसूल और उनके असहाब के ख़िलाफ़ जंग में शामिल थे उन तमाम लोगों का अंजाम दुनिया में भी निहायत सख़्त दर्दनाक हुआ और आख़िरत में भी उन पर वो दर्दनाक निहायत सख़्त अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता यज़ीद लईन के इंतिहाई जुल्म व ज़्यादती व ख़ानावाद-ए-रसूल और असहाब को क़त्ल करने के इरतिकाब ने यज़ीद मरदूद को काफ़िर व मुरतद बना दिया और वो दायमी नारे जहन्नम का मुस्तहिक़ हो गया।

इमाम इब्ने कसीर ने अल विदाया वन निहाया में रक़म किया है कि जब हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का सरे अनवर यज़ीद के पास लाया गया तो वो हज़रत इमाम हुसैन के लबाने अक़दस पर छड़ी मारते हुये ये कहता था ऐ काश बदर में क़त्ल होने वाले मेरे बुजुर्ग ज़िन्दा होते जो ग़ज़बा-ए-बदर में मारे गये थे तो मैं उन्हें बताता कि तुम्हारे क़त्ल का बदला मैंने हुसैन की शहादत की शक्ल में ले लिया है और हमने तुम्हारे दो गुना अशराफ़ को क़त्ल करके योमे बदर का बदला ले लिया है पस उसका ये ऐअ़लान उसके ईमानदार होने का कोई इमकान बाक़ी नहीं रखता और उसके काफ़िर होने की कई दलीलें हैं।
(इब्ने कसीर-अल विदाया वन निहाया-8/192, 8/261)

मोमिन को क़त्ल करना गुनाह है और अहले बैत को क़त्ल करना कुफ़्र है क्योंकि ख़ानवादा-ए-रसूल की अज़्ज़ियत दरअस्ल अज़्ज़ियते रसूल व अज़्ज़ियते ख़ुदा है हालाँकि अल्लाह तबारक तआ़ला को कोई भी ईज़ा (तकलीफ़) नहीं दे सकता अलबत्ता हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की अज़्ज़ियत को अल्लाह तआ़ला ने अपनी अज़्ज़ियत क़रार दिया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक जो लोग अल्लाह व उसके रसूल को अज़्ज़ियत देते हैं तो उन पर अल्लाह की लाअ़नत है दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (सू०-अहज़ाब-33/57)

➡ हदीस पाक में है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा)-

के घर के पास से गुज़रे तो इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को रोते हुये सुना तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा क्या तुम्हें माअ़लूम नहीं कि हुसैन का रोना मुझे तकलीफ़ देता है
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/419-ह०-2778)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/124-ह०-2847)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/236-ह०-15188)

जब हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) का किसी मामूली बात पर रोना हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को तकलीफ़ देता है तो ज़रा ग़ौर करो कि करबला में जब हुसैन के गले पर तलवार चली होगी व तीरों से जिस्म छलनी हुआ होगा आपके जिस्म अत़हर पर तलवारो और नेज़ो की ज़रबें लगी होंगी उस वक़्त रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को कितनी तकलीफ़ हुई होगी जब ख़ानवादा–ए–रसूल की बे हुरमती व क़त्लो ग़ारत और उन्हें बेशुमार अज़्ज़ियते दी गई गुलशने रसूल जब करबला में उजड़ गया और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के दिल की दुनिया के फूल मुरझा गये उस वक़्त मेरे आक़ा रहमते दो अ़ालम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की तकलीफ़ का अ़ालम क्या होगा कि जिसका कोई भी अंदाज़ा और तसव्वुर नहीं कर सकता।

जब हज़रत हम्ज़ाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का क़ातिल मुसलमान हो गया तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उससे फ़रमाया कि तुम मेरे सामने कभी न आना क्योंकि मैं पसंद नहीं करता कि मैं अपने महबूबों के क़त्ल करने वालों को देखूँ ये बात आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)

ने इस अम्र के बावुजूद कही कि इस्लाम मा क़ब्ल की बातों को ख़त्म कर देता है तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की क़ल्बी कैफ़ियत क़ातिले हुसैन व हुसैन के क़त्ल का हुक्म देने वालों को देखने पर क्या होगी। (बुख़ारी–सहीह–4/235-ह०-4072)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/646)

जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) का हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की ख़बर देना

➡ उम्मुल फ़ज़ल बिन्ते हारिस जो हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) की अहलिया और हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की वालिदा थीं बयान करती हैं कि एक दिन नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आज रात मैंने एक बुरा ख़्वाब देखा है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया वो ख़्वाब क्या है तो मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुई ऐ अल्लाह के रसूल मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के जिस्म अक़दस का एक टुकड़ा काटकर मेरी गोद में रख दिया गया तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तूने अच्छा ख़्वाब देखा है इंशा अल्लाह मेरी बेटी फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के यहाँ लड़का पैदा होगा जो तेरी गोद में आयेगा फिर ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के यहाँ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) पैदा हुये और मेरी गोद में आये जैसा कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया था फिर एक दिन मैं–

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो मैंने हज़रत इमाम हुसैन को उठाकर आपकी गोद मुबारक में रख दिया फिर मेरी तवज्जो इधर उधर हो गई फिर मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की आँखो से आँसू जारी हैं तो मैं अ़र्ज़ गुजार हुई ऐ अल्लाह के रसूल मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों क्या बात है तो आपने फ़रमाया कि जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) मेरे पास आये और मुझे ख़बर दी कि अ़नक़रीब मेरी उम्मत मेरे बेटे हुसैन को शहीद करेगी और मेरे पास उस जगह की मिट्टी लाये हैं जो सुर्ख़ है। (मिश्कात–3/561-ह०-6180)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/276-ह०-2463)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/342-ह०-4819)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/253)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/640)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) बयान करती है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुये उस वक़्त आप लेटे हुये थे और आप पर वही नाज़िल हो रही थी कि हज़रत हुसैन आपके जिस्म अक़दस पर चढ़ गये और वो खेलने लगे कि हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से कहा या मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) आप अपने इस बेटे हुसैन से मुहब्बत करते हैं तो आपने फ़रमााया ऐ जिबराईल मैं अपने बेटे हुसैन से मुहब्बत क्यों न करूँ फिर जिबराईल (अ़लैहस्सलाम) ने कहा बेशक अ़नक़रीब आपकी उम्मत आपके बाअ़द आपके इस बेटे हुसैन को शहीद करेगी और जिबरईल

(अ़लैहिस्सलाम) ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को मिट्टी दी और कहा इस मिट्टी वाली ज़मीन पर आपका बेटा हुसैन शहीद किया जायेगा और उस ज़मीन का नाम करबला है फिर इसके बाअ़द हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) चले गये फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) बाहर तशरीफ़ लाये और वो मिट्टी आपके दस्ते अक़्दस में थी और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) आबदीदा थे फिर आपने फ़रमाया ऐ आयशा जिबरईल ने मुझे ख़बर दी कि मेरा बेटा हुसैन करबला में शहीद किया जायेगा फिर आप असहाब की तरफ़ तशरीफ़ ले गये जिनमें हज़रत मौला अ़ली, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ हज़रत उ़मर, हज़रत हुज़ैफा और हज़रत अम्मार व हज़रत अबूज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) मौजूद थे और आप उस वक़्त भी आबदीदा थे सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह किस चीज़ ने आप को आबदीदा कर दिया है आपने फ़रमाया जिबराईल ने मुझे ख़बर दी कि मेरा बेटा हुसैन मेरे बाद करबला में शहीद किया जायेगा और मेरे लिये वहाँ की मिट्टी लाये हैं और मुझे ये बताया कि इस मिट्टी वाली ज़मीन पर हुसैन शहीद किया जायेगा।

(मुस्नद अहमद–1/336-ह०-648)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/406-ह०-2746)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/113-ह०-2814)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/691-ह०-6316)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/218-ह०-15114)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–3/146-ह०-3389)
(कंजुल उ़म्माल–6/415-ह०-34318)

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने वो मिट्टी उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) के पास रखवा दी और फ़रमाया कि जब ये मिट्टी खून में बदल जाये तो समझ लेना मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/407-ह०-2748)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/640)

जिस वक़्त हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) को वो मिट्टी रखने के लिये दी थी तो उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तमाम अज़्वाजे मुताह्रात हयात थीं मगर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उम्मे सलमा को ही मिट्टी रखने को क्यों दी क्योंकि आपके इ़ल्मे ग़ैब में ये बात थी और आपकी चश्मे नबूवत ये देख रही थी कि जिस वक़्त मेरा बेटा हुसैन करबला में शहीद किया जायेगा उस वक़्त तमाम अज़्वाजे मुताह्रात में से सिर्फ़ हज़रत उम्मे सलमा ही ज़िन्दा रहेंगी इसलिये आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उस मिट्टी को रखने के लिये हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) को ही मुन्तख़ब फ़रमाया और उन्हें मिट्टी रखने के लिये दी और फ़रमाया कि जब ये मिट्टी खून में बदल जाये तो समझ लेना कि मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया है और जब वाक़आ़ करबला का ज़हूर हुआ और हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम शहीद किये गये तो उस वक़्त सिर्फ़ हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा ही ज़िन्दा थीं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तमाम अज़्वाजे मुताह्रात वफ़ात पा चुकी थीं।

शहादते हुसैन के दिन हज़रत उम्मे सलमा का ख़्वाब देखना

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि उन्होंने शहादते इमाम हुसैन के दिन ख़्वाब में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को देखा कि आप रो रहे हैं और आपका सरे अक़्दस और रीश (दाढ़ी) मुबारक पर गर्द पड़ी हुई है तो हज़रत उम्मे सलमा ने इसकी वजह दरयाफ़्त की तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं अभी-अभी मशहदे हुसैन (हुसैन की शहादत गाह) से आ रहा हूँ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने देखा कि उस शीशी की मिट्टी खून में बदल गई थी।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1100-ह०-3771)
(मिश्कात-3/556-ह०-6166)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/642)

शहादते हुसैन के दिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास का ख़्वाब देखना

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि एक दोपहर के वक़्त मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को ख़्वाब में देखा कि गेसू मुबारक बिखरे हुये हैं और दस्त मुबारक में एक शीशी है जिसमे खून है मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुआ मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों ये क्या है तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये हुसैन और उसके असहाब (साथियों) का खून है और-

मैं दिन भर इसे जमाअ़ करता रहा हूँ तो मैंने वो वक़्त याद रखा तो माअ़लूम हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) उसी वक़्त शहीद किये गये थे।
(मुस्नद अहमद–2/93-ह०-2165)
(मिश्कात–3/561-ह०-6181)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/410-ह०-2753)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/457-ह०-1380)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/256)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/643)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) का सर मुबारक उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया तो वो छड़ी अपने हाथ में लेकर हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के दातों पर मारने लगा और आपकी खूबसूरती के बारे में भी कुछ कहा ये देखकर हज़रत अनस ने कहा ऐ इब्ने ज़ियाद अल्लाह की क़सम मैं तुझे ज़रुर रुसवा करुँगा मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को इस जगह पर बोसा लेते हुये देखा है।
(बुख़ारी–सहीह–03/759-ह०-3748)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1102-ह०-3778)
(मिश्कात–03/560-ह०-6179)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–02/32-ह०-2809)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/228-ह०-15149)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–08/155-ह०-6972)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–02/650-ह०-2833)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/462-ह०-1397)
(कंजुल उ़म्माल–07/298-ह०-37660,37717)

ख़ानवादा–ए–रसूल और असहाब पर जुल्म व

ज़्यादती करने वाले व उन्हे क़त्ल करने वाले और इनके क़त्ल का हुक्म देने वाले तमाम लोग अ़ज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हुये और इनका इस दुनिया में भी निहायत दर्दनाक व ख़ौफ़नाक अंजाम हुआ और उनमें से कोई एक भी ऐसा नहीं था जिसे अल्लाह तअ़ाला ने दुनिया में सख़्त तरीन सज़ा देते हुये हलाक न किया हो और आख़िरत में भी उन सब लोगों पर दोज़ख़ में निहायत सख़्त तरीन दर्दनाक मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब मुसल्लत किये जायेंगे और वो हमेशा जहन्नम के सख़्त तरीन अ़ज़ाब में मुब्तिला रहेंगे।

हज़रत मुख़्तार सक़फ़ी बिन उ़बैद और इनके साथियों ने क़ातिलाने हुसैन को चुन चुन कर मारा और वासिले जहन्नम किया कमोवेश छः हज़ार लोगों का बुरी तरह क़त्ल किया और उनका सरदार अम्र बिन साअ़द भी क़त्ल हुआ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के क़ातिल शिम्र को सख़्त तरीन अ़ज़ाब दिया गया उसके सीने व पुश्त को घोड़ों से रौंधा गया लोगों ने इस पर मुख़्तार सक़फ़ी का शुक्रिया अदा किया।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/658)

एक मजमेअ़ में लोग आपस में गुफ़्तगू कर रहे थे कि जिस किसी नें भी क़त्ले हुसैन में मुअ़ावनत की है यानी मदद और हिमायत की है उसे मौत से पहले मुसीबत ज़रुर आयी है एक बूढ़े ने कहा कि मैंने भी तो क़त्ले हुसैन की मदद की थी मुझे तो कोई मुसीबत नहीं आयी पस वो चिराग़ को दुरस्त कर रहा था तो उसे आग ने पकड़ लिया और वो आग आग कहता था मगर आग ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और वो उस आग में जलकर मर गया और वो कोयले की तरह हो

गया इसी तरह बाअ़ज़ लोग सख़्त प्यास की मुसीबत में मुब्तिला हुये वो चाहे कितना भी पानी पियें मगर सैराब नहीं होते थे इसी तरह बाअ़ज़ लोग अंधे हो गये और इसी तरह बाअ़ज़ लोगों का चेहरा खिंजीर की तरह हो गया अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने उन्हें दुनिया में भी सज़ा दी और आख़िरत में भी वो सख़्त तरीन अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे। (सयूती-ख़साइसुल कुबरा-2/257)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/648)

जब उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद व उसके साथियों के सर लाकर मस्जिद के सहन में एक दूसरों के साथ मिलाकर रखे गये तो एक साँप आया वो उन सरों के दरमियान से निकला और इब्ने ज़ियाद के नथुनों में दाख़िल हो गया और दो तीन बार उसने ऐसा ही किया और थोड़ी देर बाद वो चला गया और गायब हो गया।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1103-ह०-3780)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/414-ह०-2763)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/658)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ाला ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर वही भेजी कि मैंने यह्या बिन ज़करिया अ़लैहिमस्लाम के बदले सत्तर हज़ार अफ़राद क़त्ल किये हैं और तेरे नवासे के बदले मुझे सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार क़त्ल करना है।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/344-ह०-4822)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/662)

हिस्सा दोम

तज़ियादारी के जाइज़ व सवाबे दारैन होने के शरई दलाइल

अ़शरा मुह़र्रम में ताज़ियादारी करना जाइज़ व सबावे दारैन है इन अय्याम में शर्बत, ख़िचड़ा, बिरयानी, खीर वग़ैराह पर फ़ातिह़ा दिलाना व लोगों में तक़सीम करना और चाय, शर्बत, खीर वग़ैराह की सबील करना और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) व शुहदाए करबला के ज़िक्रे ख़ैर के लिये मजलिस मुनअ़क़िद करना बाइसे ख़ैरो बरकत व अज्रे अ़ज़ीम है जो कि कुरानो सुन्नत और औलिया किराम व सूफ़िया इज़ाम के अक़वाल व अफ़आ़ल से साबित है।

इरशादे बारी तआ़ला है:–
जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की निशानियों की ताअ़ज़ीम करता है तो ये (ताअ़ज़ीम) दिलों के तक़वे में से है (ये ताअ़ज़ीम वही लोग करते हैं जिनके दिलों को तक़वा नसीब हो गया है) (सूरह–हज–22/32)

तफ़ासीर व अह़ादीस में लिखा है कि हर वो चीज़ (शआ़इरुल्लाह) यानी अल्लाह तआ़ला की निशानी और उसकी यादगार में दाख़िल है कि जिसको देखकर अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें तो मैं ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वालों से पूछता हूँ कि क्या उन्हें ताज़िया देखकर इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और उनकी कुरबानी याद नहीं आती और जो चीज़ कुरानो सुन्नत और औलिया किराम व सूफ़िया इज़ाम के अक़वाल व अफ़आ़ल से साबित हो वो हर सूरत जाइज़ और मुबाह के जुमरे में दाख़िल है

और किसी जाइज़ और मुबाह चीज़ को नाजाइज़ या हराम कहना गोया कुरानो सुन्नत का इनकार है और कुरानो सुन्नत का मुन्किर नारे दोज़ख का मुस्तहिक़ है

कुरान हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान है

कुरान मजीद में हर शैः (चीज़) का मुफ़स्सल बयान है कायनात में कोई ज़र्रा ऐसा मौजूद नहीं कि जिसका तज़किरा कुरान में सराहतन या इशारातन मौजूद न हो ख़्वाह वो चीज़ आसमानों में हो या ज़मीन में हो ख़्वाह वो चीज़ खुश्की में हो या तरी में हो ज़मीन के ऊपर हो या ज़मीन के नीचे हो और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिसके ह़लाल या ह़राम और जाइज़ व नाजाइज़ होने का तज़किरा कुरानो सुन्नत में मौजूद न हो अलबत्ता कुरान की ह़िकमतों और फ़लसफ़ों को समझना आसान नहीं है पस अल्लाह तअ़ाला जिस क़दर जिसको अ़क्लो फ़हम व दानाई अ़ता करे वो उसी के मुताबिक़ सिर्फ़ उतना ही समझ सकता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

(ऐ मह़बूब) हमने आप पर वो अ़ज़ीम किताब (कुरान) नाज़िल फ़रमाई है जो हर चीज़ का तफ़्सीली बयान करने वाली है और इसमें मुसलमानों के लिये हिदायत और रह़मत और बिशारत है। (सू०-नहल-16/89)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

(ऐ मह़बूबे मुकर्रम) हमने अपनी तख़लीक़ कर्दा कोई भी चीज़ ऐसी न छोड़ी जिसकी तफ़्सील (सराह़तन या इशारातन) कुरान में बयान न की हो।
(सू०-अनअ़ाम-6/38)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ये कुरान ऐसा कलाम नहीं जो घड़ लिया जाये बल्कि ये तो उन (आसमानी किताबों) की तस्दीक़ है जो इससे पहले नाज़िल हुईं हैं और कुरान हर शैः का तफ़्सीली बयान करता है और ये हिदायत और रह़मत है उसके लिये जो ईमान ले आये।
(सूरह–यूसुफ़–12/111)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और ज़मीन की तारीकियों में कोई ऐसा दाना नहीं है और कोई ख़ुश्क व तर चीज़ ऐसी नहीं जिसका बयान रौशन किताब (कुरान) में मौजूद न हो।
(सूरह–अनआ़म–6/59)

मज़कूरा कुरान मजीद की आयात से साबित हुआ कि कायनात में ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ ऐसी नहीं कि जिसका ज़िक्र कुरान में मौजूद न हो और जिस चीज़ का ज़िक्र कुरान में नहीं तो वो चीज़ कायनात में मौजूद ही नहीं और हर चीज़ ख़्वाह वो ह़राम हो या ह़लाल उसका तज़किरा कुरान में मौजूद है मगर उसे समझना मुश्किल है सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह तआ़ला समझ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये

कुरान मजीद में तमाम हराम चीज़ों का तफ़्सीलन बयान है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

उसने तुम्हारे लिये उन (तमाम) चीज़ो को तफ़सीलन बयान कर दिया जो तुम पर ह़राम की हैं।
(सूरह–अनआ़म–6/119)

मज़कूरा आयते करीमा से ये वाज़ेह हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने उन (तमाम) चीज़ो को तफ़सीलन बयान कर दिया जो हम मुसलमानों पर ह़राम की हैं और अल्लाह तआ़ला ने जिन चीज़ों को ह़राम क़रार नहीं दिया वो सब हलाल हैं क्योंकि कुरानो हदीस में किसी चीज़ का नाजाइज़ न होना ही उसके जाइज़ होने की सबसे बड़ी दलील होती है और कुरान व हदीस में ढोल बजाने व त़ज़ियादारी करने की कहीं मुमानियत नहीं है अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ढोल बजाने व त़ज़ियादारी करने को ह़राम या नाजाइज़ नहीं फ़रमाया तो हर वो चीज़ जो नाजाइज़ न हो तो वो जाइज़ व मुबाह होती है

पस माअ़लूम हुआ ढोल बजाना और त़ज़ियादारी करना और अय्यामे मुहर्रम में शर्बत, ख़िचड़ा, बिरयानी, खीर वग़ैराह पर फ़ातिह़ा दिलाना व लोगों में तक़सीम करना हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) व शुहदाए करबला के ज़िक्रे ख़ैर के लिये मजलिस मुनअ़क़िद करना जाइज़ व सवाबे दारैन है क्योंकि इन तमाम उमूर की निस्बत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से है और जिस चीज़ की निस्बत अल्लाह तआ़ला के महबूब व मख़्सूस बन्दों से हो वो चीज़ क़ाबिले ताअ़ज़ीमो इहतिराम और बाइसे अज्र होती है पस तज़ियादारी करने व ढोल बजाने या वो काम जिनको अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ने नाजाइज़ या हराम न कहा हो और कोई मौलवी उनको नाजाइज़ या हराम कहे तो ये उसकी जहालत व कम इल्मी और अह्ले बैत अत्हार से बुग्ज़ की अ़लामत है इसलिये वो त़ज़ियादारी को नाजाइज़ या हराम कहता है और ऐसा शख़्स पक्का मुनाफ़िक़ और दोज़खी है और वो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल का दुश्मन है क्योंकि

वो उन चीज़ो को नाजाइज़ या हराम कहता है जिनको अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल ने नाजाइज़ या हराम नहीं कहा है पस वो खुद अल्लाह और रसूल बन रहा है और वो खुद भी गुमराह है और लोगों को गुमराह कर रहा है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

ऐ ईमान वालो जो पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह तआ़ाला ने तुम्हारे लिये हलाल की हैं उन्हें हराम न ठहराओ और न ही हद से बढ़ो बेशक अल्लाह तआ़ाला हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं फ़रमाता। (सूरह-मायदा-5/87)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

ऐ नबी (मुकर्रम सल्ल०) आप क्यों ह़राम करते हैं उस चीज़ को जिसे अल्लाह तआ़ाला ने आपके लिये ह़लाल किया है। (सूरह-तहरीम-66/1)

मज़कूरा आयते करीमा के शाने नुजूल के मुताअ़ल्लिक़ बाअ़ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने अपने ऊपर शहद को ह़राम कर लिया था तब सूरह तहरीम की ये आयत नाज़िल हुई बाअ़ज़ ने कहा अपने बेटे ह़ज़रत इब्राहीम की माँ उम्मे इब्राहीम को अपने ऊपर ह़राम लिया था तब ये आयत नाज़िल हुई। (सयूती-दुर्रे मन्सूर-6/631) (तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास-3/390) (तफ़्सीर इब्ने कसीर-28/562) (तफ़्सीर मदारिक-3/897) (तफ़्सीर कमालैन-6/463)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की ये अ़ादत मुबारका थी कि अ़स्र के बाअ़द सब अज़वाजे मुतह्हरात के यहाँ थोड़ी थोड़ी देर के लिये

तशरीफ़ ले जाते थे एक रोज़ सय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के यहाँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को कुछ देर लगी माअ़लूम हुआ कि सय्यदा ज़ैनब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने शहद पेश किया है उसके नोश फ़रमाने में वक़्फ़ा हुआ फिर कई रोज़ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का यही माअ़मूल रहा पस ह़ज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) व ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने मिलकर ये तदबीर की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) वहाँ शहद पीना छोड़ दें

चुनाँचा ह़ज़रत आयशा सिद्दीक़ा और ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) दोंनों ने ये मशवरा किया कि हममें से जिसके पास भी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तशरीफ़ लायें तो वो ये कहे कि मुझे आपसे मग़ाफ़ीर की बू आ रही है क्या आपने मग़ाफ़ीर खाया है चुनांचा नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) उन दोनो में से एक के पास तशरीफ़ ले गये तो उनमें से एक ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से वही कुछ कह दिया तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं बल्कि मैंने तो ज़ैनब से शहद पिया है और मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि हरगिज़ दोबारा शहद नहीं पिऊँगा और आपने ये ख़्याल फ़रमाया कि ज़ैनब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को इसकी इत्तिलाअ़ होगी तो उसे ख़्वाह मख़्वाह तकलीफ़ होगी इसलिये आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को मनाअ़ फ़रमाया कि इसकी इत्तिलाअ़ किसी को भी न करना तब ये आयत नाज़िल हुई।

(बबूल का दरख़्त जिसमें गोंद टपकता है उसे मग़ाफ़ीर कहा जाता है इसकी बू शहद में आ जाती हैं)
(बुख़ारी–सह़ीह़–5/218-ह०-5267)
(मुस्लिम–सह़ीह़–4/100-ह०-3678)
(तफ़्सीर–मज़हरी–9/471)
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–6/629)
(तफ़्सीर कुरतबी–9/489)
(तफ़्सीर कमालैन–6/463)

मज़कूरा सूरह तहरीम की आयत व हदीसे पाक से उन लोगों को सबक लेना चाहिये जो अपनी कम इ़ल्मी के सबब ग़ैर मुस्तनद व क़यासी फ़तवो से ह़लाल चीज़ों को ह़राम क़रार कर देते हैं और ग़ैर ममनूअ़ अम्र व फ़ेअ़्ल को नाजाइज़ व विदअ़त और ह़राम का फ़तवा जारी कर देते हैं जिस चीज़ को अल्लाह तअ़ाला और उसके महबूब (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ह़राम क़रार न दिया हो वो किसी सूरत ह़राम नहीं हो सकती जब हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का अपने ऊपर शहद को ह़राम करने पर रब तअ़ाला ने नापंसदी का इज़हार फ़रमाते हुये सूरह तहरीम की आयत नाज़िल फरमाई कि आप उस चीज़ को अपने ऊपर क्यों ह़राम ठहराते हैं जिसे अल्लाह तअ़ाला ने ह़लाल क़रार दिया हो तो ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि बिना सोचे समझे सिर्फ़ क़ियास की बिना पर किसी चीज़ को ह़राम ठहराना कितना बड़ा गुनाह है जो लोग ताज़ियादारी व ढ़ोल को ह़राम कहते हैं जबकि उनके पास कोई कुरान व ह़दीस या सहाबाकिराम के अक़वाल व अफ़अ़ाल की कोई दलील मौजूद नहीं सिर्फ क़ियासी फ़तवों की बुनियाद पर ताज़ियादारी को ह़राम कहने से ताज़ियादारी या ढ़ोल ह़राम नहीं हो जाता।

हालांकि उस अल्लाह ने तुम्हारे लिये उन (तमाम) चीज़ों को तफ़्सीलन बयान कर दिया जो उसने तुम पर हराम की हैं सिवाये इसके तुम उनकी तरफ़ इंतिहाई मजबूर हो जाओ बेशक बहुत से लोग बग़ैर (पुख़्ता) इ़ल्म के अपनी ख़्वाहिशात (और मन घढ़त तसव्वुरात) के ज़रिये (लोगों को) बहकाते हैं और यक़ीनन आपका रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है (सूरह–अनआ़म–6/119)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप फ़रमादें कि मेरी तरफ़ जो वही भेजी गई है उसमें मैं किसी (भी) खाने वाले पर (ऐसी चीज़ को) जिसे वो खाता हो हराम नहीं पाता सिवाये इसके कि वो मुर्दार हो या बहता खून हो या सुअर का गोस्त हो क्योंकि ये नापाक हैं या नाफ़रमानी का जानवर जिस पर ज़िब्हा के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम बुलन्द किया गया हो (और) फिर जो शख़्स (भूक के बाइस) सख़्त लाचार हो जाये और वो न नाफ़रमानी कर रहा हो और न ही हद से आगे बढ़ रहा हो तो बेशक आप का रब बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सूरह–अनआ़म–6/145)
सूरह–बक़राह–6/173 में इसी के मिस्ल आयत मज़कूर है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप फ़रमादें कि आओ मैं वो चीज़ें पढ़कर सुनादूँ जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं (वो) ये हैं कि तुम उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और मुफ़लिसी के बाइस अपनी औलाद को क़त्ल न करो और बेहयाई के कामों के क़रीब न जाओ (ख़्वाह) वो ज़ाहिर हों और (ख़्वाह) वो पोशीदा हों और उस जान को क़त्ल न करो जिसे–

(क़त्ल करना) हराम ठहराया है उसे नाहक़ क़त्ल न करो यही वो उमूर हैं जिनका अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम अ़क़्ल से काम लो। (सूरह–अनआ़म–6/151)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तुम पर हराम हैं तुम्हारी माँये व तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें व तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी ख़ालायें व भतीजियाँ व भांजियाँ और तुम्हारी वो माँयें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और तुम्हारी रजाअ़त में शरीक बहनें और तुम्हारी बीवियों की माँयें सब हराम कर दी गईं हैं और इसी तरह तुम्हारी गोद में पर'वरिश पाने वाली वो लड़कियाँ जो तुम्हारी उन औरतों के बतन से हैं कि जिनसे तुम सुहबत कर चुके हो (भी हराम हैं) फिर अगर तुमने उनसे सुहबत न की हो तो तुम पर कोई हर्ज नहीं और तुम्हारे उन बेटों की बीवियाँ (भी हराम हैं) जो तुम्हारी पुश्त से हों और ये भी हराम हैं कि तुम दो बहनों को एक साथ निकाह में जमाअ़ करो सिवाए इसके कि जो दौरे जाहलियत में गुज़र चुका है बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह निसा–4/23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो जो कुछ रसूल तुम्हें अ़ता फ़रमां दें वो ले लो और और जिससे तुम्हें मनाअ़ फ़रमांदे तो उससे रुक जाओ (सूरह–हश्र–59/7)

पस माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने जिन चीज़ो को हराम या नाजाइज़ नहीं फ़रमाया वो हलाल व जाइज़ हैं।

दीन इस्लाम आसान व सह्ल दीन है

अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने आसान व सह्ल दीन हमें अ़ता फ़रमाया मगर बाअ़ज़ उ़ल्माओं ने इसे बेहद दुश्वार और मुश्किल कर दिया छोटी छोटी बातों और ग़ैर ममनूअ़ चीज़ों के लिये अपनी ला इ़ल्मी और कम अ़क़्ली और क़ियासी सोच व अपनी तबियत पर मबनी बे बुनियादी और ग़ैर मुस्तनद फ़तवे जारी किये और जिसे चाहा उसे ह़लाल कर दिया और जिसे चाहा उसे ह़राम कर दिया।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
अल्लाह तआ़ाला तुम्हारे ह़क़ में आसानी और सहूलियतें चाहता है और तुम्हारे लिये दुश्वारी व तंगी नहीं चाहता (सूरह–बक़राह–2/185)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
सो हमने यक़ीनन आप ही की ज़बान में इस (कुरान) को आसान कर दिया ताकि लोग नसीहत हासिल करें। (सूरह–दुख़ान–44/58)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और उसने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं रखी यही तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन है और उस (अल्लाह) ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। (सूरह–हज–22/78)

अल्लाह तआ़ाला ने हमारा नाम मुसलमान रखा है और अल्लाह तआ़ाला से बेहतर नाम कायनात में कोई नहीं रख सकता मगर फ़िरक़ा परस्त मौलवी व उनके चाहने

वालों और उनकी इक़्तिदा और पैर'वी करने वालों को अल्लाह तआ़ला का रखा हुआ नाम पसंद नहीं आया और उन्होंने अपना नाम बदलकर किसी ने बरेलवी रख लिया किसी ने वहाबी रख लिया किसी ने देववन्दी रख लिया वग़ैराह।

इरशादे बारी तआ़ला है:-
सो बेशक हमने इस (कुरान) को अपकी ही ज़बान में आसान कर दिया ताकि आप इसके ज़रिये परहेज़गारों को खुशख़बरी सुना सकें व इसके ज़रिये झगड़ालू क़ौम को डर सुना सकें। (सूरह-मरयम-19/97)

और बेशक हमने कुरान को नसीहत के लिये आसान कर दिया तो क्या कोई नसीहत कुबूल करने वाला है। (सूरह-क़मर-54/17,22,32,40)

कोई भी अम्र या फ़ेअ़ल ह़राम या नाजाइज़ नहीं होता जब तक कि कुरान व ह़दीस और सहाबा किराम के अक़्वाल व अफ़आ़ल से उसका ह़राम या नाजाइज़ होना साबित न हो जाये बाअ़ज़ चीज़े व उमूर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ह़याते तय्यबा के अ़हदे मुबारक में और सहाबा किराम के ज़माने में न थे लेकिन बाअ़द में ज़रुरत के तहत वुजूद में आये लेकिन वो सब उमूर जाइज़ क़रार पाये क्योंकि उनकी मुमानियत कुरान व हदीस में नहीं थी तो हर वो चीज़ जाइज़ व मुबाह है जिसकी कुरानो सुन्नत में मुमानियत न हो अगर किसी अम्र का कुरान व सुन्नत के किसी अह़काम के साथ कोई मुख़ालिफ़त या तआ़रुज (यानी एक दूसरे के मुक़ाबिल होना) पाया जाये तो वो अम्र व फ़ेअ़ल नाजाइज़ करार पायेगा मगर बाअ़ज फ़िरक़ा-

परस्त मौलवी अपनी जहालत और कम इ़ल्मी और तंग नज़री के सबब उन अशया को नाजाइज़ ठहराते हैं कि जिनको अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने नाजाइज़ नहीं फ़रमाया और ऐसे फ़िरक़ा परस्त मौलवी अपनी राय व अपनी तबीअ़त व अपने क़ियास के मुताबिक़ अहकामे शरीअ़त को वो एक नई शक्लो सूरत में तब्दील करके मुसलमानों पर नाफ़िज़ करना चाहते हैं और लोगों को फ़तवों के ज़रिये डरा धमका कर हर सूरत अपनी बात मनवाना चाहते हैं और बग़ैर शरई दलील और बिला इ़ल्म के अपनी कही हुई बात को मुक़द्दम रखने के लिये बहसो मुबाहसा करते हैं यहाँ तक कि झगड़े पर भी उतारु हो जाते हैं ऐसे फ़िरक़ा परस्त मौलवीयों के के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने कुरान में फ़रमाया–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सुनलो तुम वही लोग हो जो उन बातों में भी झगड़ते रहे हो जिनका तुम्हें (कुछ न कुछ) इ़ल्म था मगर उन बातों में क्यों तकरार करते हो जिनका तुम्हें (सिरे से) कोई इ़ल्म ही नहीं है और अल्लाह तआ़ला जानता है और तुम नहीं जानते। (सूरह–आले इमरान–3/66)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हमारे लिये दीन इस्लाम में किसी जगह और किसी मुआ़मले में तंगी व दुश्वारी नहीं रखी बल्कि हर जगह आसानी मरहम्त फ़रमाई है मगर इन फ़िरक़ा परस्त मौलवियों ने इसे तंग व दुश्वार बना दिया और लोंगों को अजीब कशमकश में उलझा कर रख दिया और अपने बातिल अ़क़ाइद की बुनियाद पर अपने अकाबिर के अक़वाल व अफ़आ़ल की पैरवी करते हुये दीन इस्लाम को एक नये मसलक का नाम–

देते हुये दीनी मुआ़मलात में बेशुमार दुश्वारियाँ पैदा कीं जबकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हर मुआ़मले में आसानी को इख़्तियार करते व लोगों को भी हुक्म फ़रमाते आसानी करो और लोगों को तंगी में न डालो

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आसानी करो और लोगों को तंगी में न डालो और लोगों को तसल्ली दो उनके लिये नफ़रत की फ़ज़ा पैदा न करो।
(बुख़ारी–सहीह–05/637-ह०-6125)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उन्हें और हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को यमन भेजा तो आपने फ़रमाया कि तुम लोगों के लिये आसानियाँ पैदा करना और उन्हें तंगी में न डालना और उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाना व नफ़रत न डालना और आपस में इत्तिफ़ाक़ से काम करना। (बुख़ारी–सहीह–05/637-ह०-6124)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक देहाती ने मस्जिदे नबवी में पेशाब कर दिया तो लोग उसकी तरफ़ उसे रोकने व डांटने के लिये दौड़ पड़े तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसे छोड़ दो और उसके पेशाब पर एक डोल पानी बहा दिया और फिर फ़रमाया कि तुम सिर्फ़ आसानी करने वाले बनाकर भेजे गयो हो तुम तंगी करने वाले बनाकर नहीं भेजे गये हो। (बुख़ारी–सहीह–05/638-ह०-6128)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को जब दो कामों में इख़्तियार दिया जाता तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उन दोंनों में से आसानी को इख़्तियार करते बशर्त ये कि वो गुनाह न हो।
(बुख़ारी–सहीह–5/637-ह०-6126)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/529-ह०-906)

➡हज़रत अज़रक बिन क़ैस से रिवायत है वो कहते हैं कि हम आह्वाज़ शहर में एक नहर के किनारे पर थे जो ख़ुश्क थी वहाँ पर हज़रत अबू बरज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) घोड़े पर सवार होकर आये और नमाज़ पढ़ने लगे और घोड़े को छोड़ दिया घोड़ा भागने लगा तो उन्होंने नमाज़ तोड़ दी और घोड़े का पीछा किया यहाँ तक कि उसको पकड़ लिया फिर वापस आये और नमाज़ अदा की हममें से एक शख़्स था जो ख़ारजियों का अ़क़ीदा रखता था वो आया और कहने लगा इस बूढ़े को देखो कि इसने घोड़े की वजह से नमाज़ छोड़ दी तो अबू बरज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि जब से मैं नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से जुदा हुआ हूँ किसी ने मुझसे इस तरह सख़्त बात नहीं की मज़ीद फ़रमाया कि मेरा घर दूर है अगर मैं नमाज़ पढ़ता रहता और घोड़े को छोड़ देता तो अपने घर रात तक न पहुँच पाता नीज़ फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सुहबत में रहा हूँ और मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को आसानी की सूरत इख़्तियार करते हुये देखा है।
(बुख़ारी–सहीह–5/638-ह०-6127)

ताज़ियादारी का जाइज़ होना हदीस से साबित

अगर कोई शख़्स ताज़ियादारी को नाजाइज़ या ह़राम कहता है जिसे अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ने नाजाइज़ या ह़राम नहीं फ़रमाया तो वो शख़्स राहे ह़क़् से भटक गया है और अगर कोई शख़्स ताज़िये को ह़राम या नाजाइज़ कहे जो अल्लाह तआ़ला की मख़्सूस निशानी और इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की यादगार है तो वो शख़्स ह़दीस का मुन्किर और बद अ़कीदा और बेइ़ल्म है और ये उसकी मुनाफ़िक़त और ख़ारजियत की निशानी है क्योंकि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है जो हदीस से साबित है और ताज़ियादारी का जाइज़ व सवाबे दारैन होना कुरान के साथ साथ हदीस से भी साबित है।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने ह़राम क़रार दिया वो ह़राम है और जिसको ह़लाल क़रार दिया वो ह़लाल है और जिस चीज़ के बारे में ख़ामोश रहा वो जाइज़ है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/95-ह०-3367)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/942-ह०-1726)
(अबू दाऊद–सुनन–4/942-ह०-3800)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/713-ह०-7113)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/250-ह०-6124)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–10/12-ह०-19699)
(देलमी–अल फ़िरदौस–02/158-ह०-2800)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जो चीज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई उन्हें ज़ाया मत करो और जो ह़राम कर दिया है उनकी हुरमत मत तोड़ो और जो हुदूद मक़र्रर किये हैं उन हुदूद के आगे मत बढ़ो और जिन चीज़ों में अल्लाह तआला ने सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार की है (और ये सुकूत) किसी भूल की वजह से नहीं है बल्कि ये रह़मत और करम की वजह से है तो उन चीज़ों को कुबूल कर लिया करो और उनमें बहस न किया करो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/714-ह०-7114)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/222-ह०-589)
(कंजुल उ़म्माल–1/259-ह०-1656)

मज़कूरा अह़ादीस की रोशनी में ये बात साबित हुई कि ताज़ियादारी करना व ढोल बजाना जाइज़ है क्योंकि अल्लाह तआला ने ताज़ियादारी व ढोल के मुताअ़ल्लिक़ ख़ामोशी इख़्तियार की है और कुरान व ह़दीस में ढोल व ताज़ियादारी की कहीं मुमानियत नहीं आई और जिन चीज़ों के बारे में अल्लाह तआला ने ख़ामोशी इख़्तियार की है वो चीज़ें हमारे लिये मुआ़फ़ हैं और जिन चीज़ों को अल्लाह तआला ने मुआ़फ़ फ़रमाया हो तो वो चीज़ें किसी भी तरह से नाजाइज़ व ह़राम नहीं हो सकतीं और अल्लाह व रसूल ने जिन चीज़ों को ह़राम क़रार न दिया हो उन चीज़ों को ह़राम या नाज़ाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद और ताज़ियादारी करने वालों पर ज़ुल्म व ज़्यादती है जिस तरह हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत में जश्ने ईद मिलादुन्नबी बड़े ज़ॉक़ व जोश और इह़तिमाम के साथ मनाते हैं इसी तरह हम इमाम हुसैन की मुहब्बत–

में ताज़ियादारी करते हैं और उनकी यादगार मनाते हैं हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार मनाने व ढोल बजाने और तज़ियादारी करने के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने ख़मोशी इख़्तियार की है मगर बुग्ज़े अहले बैत में बाअ़ज़ मौलवियों ने अपनी ज़बाने दराज़ करली हैं और अपनी कम इ़ल्मी व अहले बैत से अ़दावत के सबब बेबुनियादी और बातिल फ़तवों के ज़रिये यादगारे हुसैन (तज़ियादारी) को मिटाने की साजिश व पूरी कोशिश कर रहे हैं हालांकि उनकी ये साजिश व कोशिश कभी कामयाब न होगी क्योंकि रब तआ़ला जिसको क़ायम व दायम रखे उसे कोई भी नहीं मिटा सकता और ढोल व तज़ियादारी को जब अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने नाजाइज़ नहीं फ़रमाया तो आज के मौलवी कौन होते हैं मनाअ़ करने वाले और ऐसे मौलवी जो ढोल बजाने और तज़ियादारी करने से रोकते हैं हक़ीक़त में वो पक्के मुनाफ़िक़ और यज़ीदी हैं

➡ ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि आपने फ़रमाया अगर किसी चीज़ की तस्वीर बनाना ज़रुरी समझो तो दरख़्तों की या ऐसी चीज़ की तस्वीर बनाओ कि जिसमें रुह न हो यानी जानदार न हो। (बुख़ारी–सहीह–04/192-ह०-4002) (मिश्कात–02/697-ह०-4498,4507)

मज़कूरा ह़दीस भी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़िया बनाना जाइज़ है क्योंकि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है और ताज़िया ग़ैर जानदार है क्योंकि उसमें जान नहीं होती जिस तरह पहाड़, मकान जंगल, नदी, झरना, बाग़ात मस्जिदे मक्का मुअ़ज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा वग़ैराह की तस्वीर बनाना जाइज़ है तो

इसी तरह रोज़ा-ए-इमाम हुसैन यानी ताज़िया बनाना जाइज़ है बाअ़ज़ लोग ढोल बजाने व तज़ियादारी करने को हराम कहते हैं तो जब अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सब हराम कर्दा चीज़ो का कुरान मजीद में तफ़्सीलन बयान फ़रमाया तो फिर ताज़िया व ढोल हराम कैसे हो गया क्योंकि कुरान व अहादीस में ताज़िया व ढोल के हराम होने का तो तज़किरा ही मौजूद नहीं है।

किसी चीज़ की हुरमत साबित करने के लिये कुरान व हदीस की दरकार होती

कुरान व सुन्नत के सिवा किसी भी दलील से किसी चीज़ की हुरमत को साबित नहीं किया जा सकता यानी जिन दलाइल से फ़राइज़ व वाजिबात साबित किये जाते हैं उससे कमतर दलील से किसी चीज़ की हुरमत को साबित नहीं किया जा सकता फ़र्ज़ और वाजिब अम्र को साबित करने के लिये जितनी मुस्तहकम (मज़बूत) व क़वी दलील की दरकार होती है उतनी ही मुस्तहकम व क़वी दलील की दरकार किसी अम्र को हराम साबित करने लिये भी होती है मगर आज के मौलवियो का तो अजीब हाल है कि ग़ैर मुस्तनद व ग़ैर मुस्तहकम और अपनी बातिल सोच व अपनी तबियत के मुताबिक़ जिसे चाहते उसे हराम क़रार दे देते यूँ लगता है जैसे इस्लाम इनके बाप की जागीर हो या दीन इस्लाम के ये मालिको मुख़्तार हों कि जिसे चाहें हराम ठहरा दें या जिसे चाहें दीन से ख़ारिज करदें मानो इनके पास दीन इस्लाम का ठेका हो बल्कि हक़ीक़त ये है कि ऐसे मौलवी अल्लाह व रसूल बनने की कोशिश कर रहे हैं और वो चाहते हैं कि दीन और अ़वामुन्नास उनकी तबियत और मर्ज़ी के मुताबिक़ चलें और ये हरगिज़ मुम्किन नहीं है।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने कुरान में कुछ अपनी अ़क्ल से कहा यानी बग़ैर इ़ल्म के कहा तो उसे चाहिये कि वो दोज़ख़ में अपनी जगह ढूँढ ले।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/577-ह०-2952)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ऐसी बात कहे जो न अल्लाह की किताब में हो और न रसूलुल्लाह की सुन्नत में हो तो वो जब अल्लाह तआ़ाला से मुलाक़ात करेगा तो उसे पता नहीं होगा कि उसका दीन क्या है।
(दारमी–सुनन–1/164-ह०-160)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब किसी को कोई फ़ैसला करना पड़े तो अल्लाह तआ़ाला की किताब (कुरान) से फ़ैसला करे और जो अल्लाह तआ़ाला की किताब में न हो तो उसे चाहिये कि वो उससे फ़ैसला करे जिससे अल्लाह के रसूल ने फ़ैसला किया हो यानी हदीस से फ़ैसला करे और हराम ज़ाहिर हो गया है व हलाल ज़ाहिर हो गया है। (दारमी–सुनन–1/165-ह०-167)

➡ हज़रत मैमून बिन मेहरान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के पास जब कोई फ़ैसला कराने के लिये आता तो वो अल्लाह की किताब (कुरान) में देखते अगर वो उसमें कुछ पाते तो उसके साथ फ़ैसला कर देते अगर कुरान से मसले का हल न मिलता तो वो हदीस से फ़ैसला करते अगर कुरान और हदीस में जब उन्हें उस मसले का हल न–

मिलता तो आप निकल कर लोगों से पूछते थे और वो कहते थे कि मेरे पास फुलां फुलां मसला आया है क्या तुम्हें माअ़लूम है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इस बारे में कोई फ़ैसला किया हो तो लोग उनके पास जमाअ़ हो जाते और उन्हें हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की हदीस का ज़िक्र करते फिर अबूबक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने हममें ऐसे आदमी पैदा किये जो हमारे नबी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की हदीसें याद रखतें हैं।
(दारमी–सुनन–1/163-ह०-163)

हर शख़्स पर ये वाजिब है वो आ़लिमे दीन हो या न हो कि बिला तहक़ीक़ और बग़ैर इ़ल्म के कोई बात न कहे कि ये जाइज़ है ये नाजाइज़ है ये हलाल है ये हराम है क्योंकि बिला तहक़ीक़ और बग़ैर इ़ल्म के और बग़ैर शरई दलील की किसी चीज़ को नाजाइज़ व हराम कहना गुनाहे अ़ज़ीम और बाइसे हलाकत है और जब किसी चीज़ का इ़ल्म न हो तो उसके लिये ये बेहतर है कि वो ये कहे अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल बेहतर जानते हैं।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जो इ़ल्म जानता हो उसे बता देना चाहिये और जो नहीं जानता तो वो उसके मुताअ़ल्लिक़ ये कह दे कि अल्लाह ही जानता है और किसी आ़लिम से जब उस चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाये जिसे वो नहीं जानता तो वो कहे कि अल्लाह ही जानता है।
(दारमी–सुनन–1/171-ह०-179)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा कलेजे को ठन्डा करने वाली क्या ही चीज़ है कि जब मुझसे किसी ऐसी चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ कोई सुवाल किया जाये जिसका मुझे इ़ल्म न हो तो मैं कहूँ अल्लाह ही जानता है। (दारमी–सुनन–1/172-ह०-181)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा कलेजे को ठन्डा करने वाली बात ये है कि जब तू कोई बात न जानता हो तो कह दे अल्लाह ही जानता है। (दारमी–सुनन–1/172-ह०-182)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और तू उस बात की पैर'वी न कर जिसका तुझे इ़ल्म न हो बेशक कान व आँख और दिल इनमें से हर एक से सुवाल होगा। (सूरह–बनी इसराईल–17/36)

किसी चीज़ को हलाल या हराम क़रार देने हक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को है इनके अ़लावा किसी को भी ये इख़्तियार हासिल नहीं है और जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने हराम न कहा हो और कोई शख़्स उस चीज़ को हराम कहे तो वो अ़ज़ीम गुनाह का मुरतकिब व नारे दोज़ख़ का ज़्यादा मुस्तहिक़ व सज़ावार है क्योंकि किसी चीज़ को हलाल व हराम क़रार देने का हक़ व इख़्तियार अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने किसी को नहीं दिया हत्ता कि किसी मुजद्दिद को भी ये इख़्तियार नहीं कि अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने जिसे हलाल क़रार दिया हो वो उसे हराम ठहराये और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने जिसे जाइज़ क़रार दिया हो तो वो उसे नाजाइज़ कहे ये इख़्तियार किसी को हासिल नहीं हैं।

क़ुरान मजीद का एक क़ायदा कुल्लिया व उस्लूब रहा है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने जिन चीज़ों को चाहा उन्हें हराम क़रार दे दिया और तमाम हराम कर्दा चीज़ों का वाज़ेह तौर पर क़ुरान में ज़िक्र फ़रमाया और हराम कर्दा चीज़ों के बाअ़द जो बाक़ी रह गया वो सब हलाल कर दिया यानी हम मुसलमानों को तमाम हराम कर्दा चीज़ों की एक फेहरिस्त अ़ता कर दी और इस हराम कर्दा चीज़ों की फेहरिस्त के अ़लावा जो कुछ बाक़ी रह गया वो सब हलाल है क्योंकि जो चीज़ हराम न हो तो वो हलाल ही होती है और हमें किसी मौलवी से पूछने की ज़रुरत नहीं पस हर चीज़ के बारे में ये देखो कि वो हराम तो नहीं है अगर क़ुरानो सुन्नत में वो हराम न हो तो फिर वो हलाल ही होगी

इसी तरह अल्लाह के रसूल ने जो चीज़ें नाजाइज़ फ़रमाईं उन्हें छोड़कर बाक़ी हर चीज़ जाइज़ है आज हज़ारों चीज़ें ऐसी हैं जो मुस्तअ़मल हैं यानी जो हमारे काम में आती हैं या फिर जिनका हम इस्तेअ़माल करते हैं मगर 14 चौदह सौ साल पहले वो वुजूद में ही नहीं थीं और इन हज़ारों चीज़ो का हराम या नाजाइज़ होना न क़ुरान से साबित है न हदीस से साबित इसलिये तो हम इन चीज़ों का इस्तेअ़माल करते क्योंकि इन चीज़ों के बारे में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने ख़ामोशी इख़्तियार की है और अगर जाइज़ व मुबाह चीज़ों की फ़ेहरिस्त बनाई जाये तो हज़ारों किताबें भर जायेंगी फिर भी बेशुमार चीज़ें बाक़ी ही रहेंगी क्योंकि हर रोज़ एक नई चीज़ ईजाद होती है तो इस तरह जाइज़ व मुबाह चीज़ों की फ़ेहरिस्त कभी मुकम्मल ही नहीं होगी इसलिये अल्लाह तबारक व तआ़ला व उसके रसूल ने हमें एक बेहतरीन तरीक़ा व क़ायदा कुल्लिया अ़ता फ़रमां दिया–

कि जब तुम देखो कि जिस चीज़ की मुमानियत कुरान व हदीस में नहीं है तो वो जाइज़ है फिर अगर कोई शख़्स किसी चीज़ को हराम या नाजाइज़ कहे कि जिसे अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने हराम या नाजाइज़ नहीं फ़रमाया तो वो शख़्स अल्लाह व उसके रसूल पर झूठा बोहतान बांध रहा है और ऐसा शख़्स दोज़ख़ी है जो कुरान व हदीस से साबित है तो माअ़लूम हुआ कि किसी भी चीज़ को हराम या नाजाइज़ क़रार देना सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के इख़्तियार में है किसी आ़लिम या मुफ़्ती के इख़्तियार में नहीं है।

अहले इ़ल्म इस बात को जानते हैं कि किसी चीज़ का जाइज़ या नाजाइज़ होना चार चीज़ों पर मुन्हसिर होता है 1-कुरान 2-हदीस 3-इज्माअ़ 4-क़ियास और इन चारों चीज़ों से ढोल व तज़ियादारी का नाजाइज़ होना साबित नहीं है तो फिर बाअ़ज़ लोग किस बिना पर तज़ियादारी व ढोल को नाजाइज़ कहते हैं जबकि उनके पास कोई शरई दलील मौजूद ही नहीं उनके पास सिर्फ फ़तवे हैं वो भी बग़ैर कुरानो सुन्नत की दलील के जो महज़ एक रददी के कागज़ की मानिन्द हैं क्योंकि दीन की कोई भी बात बग़ैर शरई दलील के बे बुनियाद और बे माअ़ना होती है और इज्माअ़ वो सहीह है जो कुरानो सुन्नत के मुवाफ़िक़ हो और जो कुरानो सुन्नत से टकराये या कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो तो वो इज्माअ़ बातिल है ढोल व तज़ियादारी इज्माअ़ से भी नाजाइज़ साबित नहीं है

➡ हज़रत इब्ने मिग़वल बयान करते हैं कि मुझे शाअ़बी ने कहा कि जो बात तुम्हें रसूलुल्लाह से नक़ल करके सुनायें तो उसे ले लो और जो अपनी राय से कहें उसे गन्दगी में फेंक दो। (दारमी–सुनन–1/182-ह०-206)

➡ हज़रत शाअ़बी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि क़ियास आराइयों से बचो मुझे उस पाक ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है अगर तुम दीन की किसी बात पर क़ियास करोगे तो हलाल को हराम करने लगोगे इसलिये तुम सिर्फ कुरानो सुन्नत पर अ़मल करो। (दारमी–सुनन–1/142-ह०-110,198)

➡ हज़रत अ़ता से किसी चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया आपने फ़रमाया मैं नहीं जानता तो साइल ने कहा क्या तुम अपनी राय से इसके मुताअ़ल्लिक़ कुछ न कहोगे तो आपने फ़रमाया कि मुझे अललाह से शर्म आती है कि ज़मीन पर मेरी राय की फ़रमांबरदारी की जाये। (दारमी–सुनन–1/141-ह०-108)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से किसी चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो आप ने फ़रमाया कि मैं इस बात को बुरा समझता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये वो चीज़ हलाल कर दूँ जिसको अल्लाह तआ़ला ने हराम किया हो और वो चीज़ हराम कर दूँ कि जिसको अल्लाह तआ़ला ने हलाल किया हो। (दारमी–सुनन–1/157-ह०-148)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने अबू शाअ़शा से फ़रमाया कि तुम बसरा के अ़लिमों में से है तुम कुरान व सुन्नत से ही फ़तवा बयान करना अगर तुम इसके अ़लावा फ़तवा दोगे तो तुम खुद भी हलाक होगे और लोगों को भी हलाक करोगे। (दारमी–सुनन–1/165-ह०-166)

अहले इ़ल्म आइम्मा व मुहद्दिसीन का यही वतीरा

रहा है कि उन्होंने दीन में अपनी राय को पेश करने से हमेशा इहतिराज़ (परहेज़) किया और अगर कुरानो सुन्नत से मसले का इल्म हो जाता तो ठीक वरना वो साइल को लौटा देते कि वो किसी और साहिबे इल्म से दरयाफ़्त करले।

हज़रत इमाम मालिक (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) का एक वाक़िआ़ है कि एक शख़्स कहीं दूर से कई मसले दरयाफ़्त करने आया आपने सभी के बारे में ला इल्मी का इज़हार कर दिया तो वो आपकी इमामत के बारे में इशारा करने लगा तो आपने फ़रमाया कि मदीने में ये ऐअ़लान करदो कि मालिक को कुछ भी पता नहीं और आज कल के जाहिल मौलवी इल्म का झूठा दाअ़वा भी करते हैं और दूसरी तरफ़ हर मसले में कुरानो हदीस की जगह ये लिखते हैं कि फुलां हज़रत ने यूँ लिखा है फुलां हज़रत फ़रमाते हैं जबकि कुरान व हदीस से ही हर माअ़लूम बात ही कहना चाहिये वरना उनकी पकड़ का बाइस बन सकता है अ़दम इल्म के बावुजूद फ़तवा देना जुल्म है और इल्म होने पर छुपाना बाइसे अ़ज़ाब है साबिक़ा अह्ले इल्म व अह्ले अ़क्ल अ़दम इल्म की बिना पर साइल को लौटा देते थे लेकिन आज कल के मौलवी जब तक झूठा सच्चा जवाब न दे दें तब तक उनके दिलों को चैन नहीं मिलता।

अह्ले इल्म और अह्ले राय के दरमियान इसी वजह से इख़्तिलाफ़ रहा है कि अह्ले इल्म कुरान व सुन्नत की रौशनी में जवाब देते हैं और अह्ले राय खुद ही मसला और उसका हल अपनी राय से खुद वज़अ़ कर लेते हैं पस जो आ़लिमे दीन कुरान व सुन्नत के दलाइल से हर मसले का जवाब देते हैं वो लोगों के लिये ख़ैर-

और नूरे हिदायत का बाइस होते हैं और अह्ले राय लोगों की गुमराही का सबब होते हैं क़ियास और राय वाला रास्ता इंतिहाई ख़तरनाक होता है और कुरान व हदीस वाला रास्ता सलामती वाला रास्ता होता है जो ज़लालत के अंधेरों से निकालकर हिदायत के उजालों की तरफ़ ले जाता है।

➡ हज़रत बरा बिन अ़ाज़िब रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि एक यहूदी का गुज़र सरवरे कायनात सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के सामने से हुआ जिसका मुँह काला था उसे कोढ़े लगाये गये थे आपने यहूदियों के अ़ालिमों को बुलवाया और पूछा क्या तुम अपनी किताब में ज़ानी की हद इसी तरह पाते हो तो उन्होंने कहा जी हाँ फिर तौरात मंगवाई गई तो उसमें ज़ानी की सज़ा रज्म थी जो छुपाई गई थी वो ज़ाहिर हो गई फिर आपने यहूदी के अ़ालिमों में से एक शख़्स को बुलाया और उससे फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ कि जिसने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर तौरात नाज़िल फ़रमाई क्या तुम अपनी किताब में ज़ानी की हद इसी तरह से पाते हो तो उसने कहा कि हमारे लोगों में ज़िना बहुत ज़्यादा बढ़ गया था तो हम किसी मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स को पकड़ते तो उसे छोड़ देते थे और किसी कमज़ोर को पकड़ते तो उसे सज़ा देते थे फिर हमने आपस में कहा किसी ऐसी सज़ा पर जमाअ़ हो जायें जिसे हम मुअ़ज़्ज़ज़ और कमज़ोर दोनों आदमियों पर लागू कर सके तो हमने रज्म के बजाये मुंह काला करने व कोढ़े लगाने की सज़ा वज़अ़ कर ली इस पर अल्लाह तअ़ाला ने ये आयात नाजिल फ़रमाईं ‘‘और जो अल्लाह तअ़ाला के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला न करे वो काफ़िर है। (सूरह–मायदा–5/44) और

जो अल्लाह तआ़ला के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला न करे वही लोग ज़ालिम हैं (सूरह–मायदा–5/45) जो अल्लाह तआ़ला के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला न करे वो लोग फ़ासिक़ हैं (सूरह–मायदा–5/47)
(मुस्लिम–सहीह–3/515-ह०-4440)
(अबू दाऊद–सुनन–04/395-ह०-4447,4448)

पस माअ़लूम हुआ कि दीन की कोई बात बग़ैर कुरानो सुन्नत या बग़ैर इज्माअ़ की दलील के अपनी राय से कहना बाइसे हलाकत है उ़ल्माओं की अपनी राय और अंदाज़े और क़ियास की ज़रा सी ग़लती लोगों के लिये गुमराही का सबब बन सकती है और आ़लिम के लिये ज़लालत व ख़सारे का बाइस बन सकती है और बग़ैर शरई दलील के दीन से वाबस्ता कोई बात कहना गोया अल्लाह व रसूल बनना है लिहाज़ा हर तालिबे इ़ल्म को चाहिये कि वो तरजीहन व अव्वलियत की बुनियाद पर कुरान व हदीस का इ़ल्म हासिल करे इसलिये किसी भी मसले में जब तक कोई शरई दलील मौजूद न हो फ़तवा देना क़ाबिले मज़म्मत है कुरान व हदीस से मसला न मिलने की सूरत में आसारे सहाबा के मुताबिक़ फ़तवा देना चाहिये लेकिन अफ़सोस आजकल के मौलवी का सारा इ़ल्म खुद की राय के इर्द गिर्द घूमता है मसाइल अख़्ज़ करने में कुरान और हदीस बुनियाद हैं लिहाज़ा हुज्जत पकड़ते वक़्त सबसे पहले कुरान और हदीस को देखा जायेगा फिर इनके बाअ़द इज्माअ़ फिर क़ियास को देखा जायेगा।

उसूले फ़िक़ा का क़ायदा है कि तमाम उमूर और अशिया व अफ़आ़ल जाइज़ व मुबाह हैं जब तक किसी शैः के बारे में हुरमत या ममनूअ़इत की दलील न हो–

उसे हराम या ममनूअ़ नहीं कहा जा सकता इस उसूल का इस्तिख़राज ऊ़ल्मा व फुक़हा ने जिन नुसूस से किया है उनमें से बाअ़ज़ का तज़किरा यहाँ किया जाता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

आप फ़रमादें कि मेरी तरफ़ जो वही भेजी गई है उसमें मैं किसी (भी) खाने वाले पर (ऐसी चीज़ को) जिसे वो खाता हो हराम नहीं पाता सिवाये इसके कि वो मुर्दार हो या बहता खून हो या सुअर का गोस्त हो क्योंकि ये नापाक हैं या नाफ़रमानी का जानवर जिस पर ज़िब्हा के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम बुलन्द किया गया हो (और) फिर जो शख़्स (भूक के बाइस) सख़्त लाचार हो जाये और वो न नाफ़रमानी कर रहा हो और न ही हद से आगे बढ़ रहा हो तो बेशक आप का रब बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सूरह-अनआ़म-6/145)
सूरह-बक़राह-2/173 में इसी के मिस्ल आयत मज़कूर है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

आप फ़रमादें कि आओ मैं वो चीज़ें पढ़कर सुनादूँ जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं (वो) ये हैं कि तुम उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और मुफ़लिसी के बाइस अपनी औलाद को क़त्ल न करो और बेहयाई के कामों के क़रीब न जाओ (ख़्वाह) वो जाहिर हों और (ख़्वाह) वो पोशीदा हों और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) हराम ठहराया है उसे नाहक़ क़त्ल न करो यही वो उमूर हैं जिनका अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम अ़क़्ल से काम लो।
(सूरह-अनआ़म-6/151)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

उसने तुम्हारे लिये उन (तमाम) चीज़ों का तफ़्सीलन बयान कर दिया जो उसने तुम पर हराम की हैं सिवाये इसके कि तुम उनकी तरफ़ इंतिहाई मजबूर हो जाओ बेशक बहुत से लोग बग़ैर (पुख़्ता) इ़ल्म के अपनी ख़्वाहिशात (और मन घढ़त तसव्वुरात) के ज़रिये (लोगों को) बहकाते हैं और यक़ीनन आपका रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (सूरह–अनआ़म–6/119)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सो जो कुछ रसूल तुम्हें अ़ता फ़रमां दें वो लेलो और और जिससे तुम्हें मनाअ़ फ़रमांदे तो उससे रुक जाओ (सूरह–हश्र–59/7)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम पर हराम हैं तुम्हारी माँये व तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें व तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी ख़ालायें व भतीजियाँ व भांजियाँ और तुम्हारी वो माँयें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और तुम्हारी रजाअ़त में शरीक बहनें और तुम्हारी बीवियों की माँयें सब हराम कर दी गईं हैं और इसी तरह तुम्हारी गोद में पर‘वरिश पाने वाली वो लड़कियाँ जो तुम्हारी उन औरतों के बतन से हैं कि जिनसे तुम सुहबत कर चुके हो (भी हराम हैं) फिर अगर तुमने उनसे सुहबत न की हो तो तुम पर कोई हर्ज नहीं और तुम्हारे उन बेटों की बीवियाँ (भी हराम हैं) जो तुम्हारी पुश्त से हों और ये भी हराम हैं कि तुम दो बहनों को एक साथ निकाह में जमाअ़ करो सिवाए इसके कि जो दौरे जाहलियत में गुज़र चुका है बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह निसा–4/23)

कुरान मजीद की इन मज़्कूरा आयात से माअ़लूम हुआ कि जिस चीज़ के बारे में हुरमत की दलील न हो वो जाइज़ व मुबाह है इसी तरह कई अहादीस से भी इस क़ायदे का इस्तिंम्बात व इस्तिख़्राज होता है।

उसूल अ़स्ल की जमाअ़ है और अ़स्ल का माअ़नी है जिस पर किसी दूसरी शैः की बुनियाद रखी जाये और फ़िक़ा का लुग्वी माअ़ना है फ़हम व फ़िरासत (दानाई, अ़क़्ल, शऊर, समझ,) और इसका मतलब क़वानीन व क़वाइद और ज़वाबित का ऐसा मजमुअ़ा है कि जिसकी बुनियाद पर शरई दलाइल से अहकामे शरअ़ा अख़्ज़ किये जाते हैं और तमाम अहकाम का दारोमदार चार बुनियादी चीज़ों पर मुन्हसिर है कुरान व हदीस और इज्माअ़ व क़ियास यानी अंदाजा नस के मुक़ाबले में न हो यानी नस के होते हुये क़ियास की इजाज़त नहीं है यानी जो चीज़ कुरानो सुन्नत से साबित हो जाये उस चीज़ पर क़ियास क़तअ़न नाजाइज़ है बल्कि गुनाह व गुमराही का बाइस है और क़ियास के लिये दूसरी शर्त है कि क़ियास से नस का कोई भी हुक्म न बदले और इज्माअ़ का माअ़ना है इत्तेफ़ाक़ करना यानी अ़ादिल व मुजतहिद सहीह उल अ़क़ीदा उ़ल्माए अह्ले सुन्नत का किसी हुक्म पर मुत्तफ़िक़ हो जाना इज्माअ़ कहलाता है और नस की मौजूदगी में क़ियास और इज्माअ़ जाइज़ नहीं है मज़्कूरा दलाइल से ये बात वाज़ेह और साबित हुई कि ढोल बजाना और तज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है क्योंकि ढोल व तज़ियादारी का नाजाइज़ होना न कुरान से साबित है न हदीस से और न इस पर इज्माअ़ है बल्कि ढोल बजाना व तज़ियादारी करना कुरान व हदीस और औलिया किराम व सूफ़िया इज़ाम के अक़्वाल व अफ़अ़ाल से जाइज़ व सवाबे दारैन है।

बिला शरई दलील के हर फ़तवा रद्दी के मानिन्द है

फ़तवे का माअ़ना शरई हुक्म होता है यानी इन दो लफ़्ज़ों शरई व हुक्म का बाहम मिलना फ़तवा कहलाता है और शरई हुक्म जब बनता है जब किसी अम्र में कुरान व सुन्नत की दलील शामिल हो यानी कुरान व सुन्नत के दलाइल पर मुश्तमिल हर हुक्म शरई हुक्म यानी फ़तवा है अगर किसी फ़तवे में कुरान व सुन्नत के दलाइल शामिल न हों तो शरई हुक्म नहीं बल्कि वो सिर्फ़ फ़तवा देने वाले का अपना ज़ाती हुक्म है और किसी का ज़ाती हुक्म मानना या ना मानना मुसलमानों फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है बल्कि दीन में एसे फ़तवे जो बिला शरई दलील के हों वो क़ाबिले मज़म्मत व तरदीद के अह्ल होते हैं क्योंकि ऐसे फ़तवे लोंगों की हलाकत व गुमराही का बाइस होते हैं और शरई मसाइल शरई दलाइल से ही साबित किये जाते हैं और शरई दलाइल के बग़ैर किसी अम्र व फ़ेअल को जाइज़ या नाजाइज़ और हलाल व हराम क़रार नहीं दिया जा सकता और किसी मसले में किसी की राय या उसका अपना ज़ाती हुक्म व क़ियास बे माअ़ना और मरदूद होता है

अगर कोई अ़ालिमे दीन किसी मसले में फ़तवा जारी करता है और वो फ़तवा कुरानो सुन्नत के मुस्तनद व मुस्तहकम दलाइल पर मुश्तमिल हो या उस फ़तवे में इज्माअ़ की दलील शामिल हो तो वो फ़तवा हक़ और शरई हुक्म में दाख़िल है जिसको तसलीम करना और उस पर अ़मल करना हर मुसलमान पर वाजिब है इस दौरे फ़ितन में बाअ़ज़ मौलवी अपनी तबियत और मर्ज़ी और अपनी राय व बातिल क़ियास से लोगों पर नाहक़

और बे बुनियादी फ़तवे नाफ़िज़ कर रहे हैं मुसलमानों के दरमियान इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार का माहौल क़ायम कर रहे हैं अपने बातिल क़ियास और अपनी राय से हलाल को हराम बना देते हैं और जाइज़ को नाजाइज़ बना देते हैं जिसे चाहें उसे दीन से ख़ारिज कर देते हैं जिसे चाहें उसे काफ़िर व फ़ासिक़ बना देते हैं ऐसे ही मौलवी बुग्ज़े अहले बैत के सबब तज़ियादारी करने व ढोल बजाने को नाजाइज़ व हराम कहते हैं अगर इनसे कोई दलील माँगी जाये तो इनके पास कोई दलील नहीं होती इनके पास सिर्फ़ इनके अकाबिर के फ़तवे होते हैं वो भी बग़ैर दलील के होते हैं ऐसे मौलवी और इनके अकाबिर सबके सब गुमराह हैं और लोगों को गुमराह कर रहे हैं तो ऐसे मौलवीयों की सुहबत से हमें बचना चाहिये व इनके फ़तवों से हमें डरना नहीं चाहिये और न ही अ़मल करना चाहिये और इनसे बहुत होशियार रहना चाहिये कि कहीं ऐसे जाहिल व मुनाफ़िक़ मौलवी हमें राहे हक़ से गुमराह न कर दें जो हमारी हलाकत और अ़ज़ाबे इलाही का बाइस बने और ऐसे मौलवी अपने अकाबिरीन उ़ल्मा व अपने पीरो मुर्शिद के फ़तवों और उनके अक़वाल को कुरानो सुन्नत के बराबर का दर्जा देते हैं ऐसे मौलवी कुरान मजीद की सूरह तौबा की उस आयत के मिस्दाक़ हैं जिसमें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया–

इरशादे बारी तआ़ला है:–

उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने आ़लिमो को अपना रब बना लिया था। (सूरह–तौबा–9/31)

➡ हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैं नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और मेरे गले में सोने की चलीपा थी यानी सलीब जो ईसाई पहनते हैं तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़दी दूर कर तू अपने पास से इस बुत को और मैंने सुना कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सूरह तौबा की आयत पढ़ी 'ठहरा लिया उन्होंने अपने मौलवियों और दरवेशियों को अपना माअ़बूद अल्लाह के सिवा' फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया वो लोग उनकी इ़बादत नहीं करते थे मगर उनके मौलवी जब किसी चीज़ को हलाल कह देते तो वो उसे हलाल मान लेते थे और जब वो मौलवी किसी चीज़ को हराम ठहरा देते तो वो उसे हराम मान लेते थे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/673-ह०-3095)

तज़ियादारी की इब्तिदा से लेकर आज तक मुनाफ़िक़ मौलवियों ने ताज़ियादारी पर जितने भी फ़तवे दिये वो सब के सब बिला शरई दलील अपनी राय से दिये हैं इसलिये किसी सूरत अपनी ज़ाती राय पर मबनी ऐसे फ़तवे क़ाबिले मज़म्मत और रद्दी के कागज़ की मिस्ल हैं इसलिये ऐसे फ़तवों को न तो फ़तवा कहा जायेगा और न ही उन पर अ़मल किया जायेगा और जो ऐसे फ़तवों को शरई हुक्म यानी फ़तवा कहे वो अव्वल दर्जे का जाहिल और बेइ़ल्म है अल्लाह तआ़ला ने तमाम फ़राइज़ व वजिबात और सुनन व नवाफ़िल और हराम व हलाल और जाइज़ व नाजाइज़ के तमाम अहकाम कुरान व अहादीस के ज़रिये हम तमाम मुसलमानों तक पहुँचा दिये फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया अल यौमा अक्मलतु लकुम दीनाकुम यानी 'मैने आज तुम्हारे लिये दीन को मुकम्मल कर दिया' सूरह–मायदा–5/3 तो दीन

मुकम्मल होने के बाअ़द तज़ियादारी करना और ढोल बजाना हराम या नाजाइज़ कैसे हो गया क्योंकि कुरान व हदीस से तो इसका नाजाइज़ होना साबित ही नहीं है और न ही इसके नाजाइज़ होने पर इज्माअ़ है या फिर ये कोई नया दीन है जो लोगों के सामने पेश किया जा रहा है बल्कि इस हक़ीक़त से क़तई इन्कार नहीं किया जा सकता कि बदतरीन मुनाफ़िक़ और जाहिल मौलवी अपने अकाबिर उ़ल्मा और शुयूख़ के बातिल फ़तवो व उनके अक़वाल को दीन तसलीम व तसव्वुर करते हुये लोगों के सामने पेश कर रहे हैं और दीन को अपनी राय व अपनी तबियत पर मबनी बेबुनियादी बातिल क़ियास से नया दीन लोंगों पर नाफ़िज़ करने की कोशिश कर रहे हैं व तज़ियादारी को ख़त्म करके यादगारे हुसैन मिटाने व लोगों के दिलों से अहले बैत की मुहब्बत को ख़त्म करने का काम अन्जाम दे रहे हैं और यज़ीद व उसके बाप मुआ़विया का दिफ़ाअ़ कर रहे हैं जबकि ये दोंनों काफ़िर व दोज़ख़ी हैं और जिस चीज़ का कुरान व हदीस या इज्माअ़ से नाजाइज़ होना साबित न हो और फिर अगर कोई नाजाइज़ कहे तो ये दीन इस्लाम का हिस्सा नहीं बल्कि वो नया दीन है ये वो दीन नहीं है जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) लेकर आये।

बाअ़ज़ लोगों ने तो ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में इन्तिहां कर दी हत्ता कि रोज़ाए इमाम हुसैन (ताज़िये) को ही नाजाइज़ क़रार दे दिया और ज़ियारते ताज़िया और ताअ़ज़ीमे ताज़िया को नाजाइज़ व हराम कहते हैं हालाँकि हदीस पाक में है कि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है लेकिन इन लोगों की अह्ले बैत से बुग्ज़ व कीना के बाइस रोज़ाए इमाम हुसैन (ताज़िये) से

नफ़रत व दुश्मनी है जो हदीस पाक को नज़र अंदाज करने पर इन्हें मज़बूर कर रही है हालाँकि बिला शरई दलील व सबूत के किसी चीज़ को नाजाइज़ क़रार देते हुये फ़तवा देना शरअ़न व क़तअ़न (हरगिज़) जाइज़ नहीं है बल्कि गुनाह है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो बग़ैर सबूत व बिला शरई दलील के फ़तवा दिया जायेगा उसका गुनाह उस पर है जिसने उसको फ़तवा दिया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/46-ह०-53)
(दारमी–सुनन–1/162-ह०-161)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मेरी तरफ़ ऐसी बात मन्सूब करे कि जो मैंने न कही हो तो उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना लेना चाहिये और जिस शख़्स को ग़ैर मुस्तनद (ग़ैर सनद) फ़तवा दे दिया गया हो तो उसका गुनाह फ़तवा देने वाले पर है।
(मुस्नद अहमद–4/429–ह०-8761)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने बग़ैर इ़ल्म के फ़तवा दिया तो अ़मल करने वाले का गुनाह फ़तवा देने वाले पर होगा और जिसने अपने भाई को कोई ऐसा मश्वरा दिया जबकि उसे इ़ल्म था कि भलाई उस के ख़िलाफ़ में है तो उसने ख़्यानत की (तो जब अ़ाम

मुआ़मलात में मश्वरा देना ख़्यानत है तो दीनी व शरई मसाइल में बिला शरई दलील के अपनी राय से फ़तवा देना बड़ा गुनाह और अ़ज़ीम ख़्यानत है)
(अबू दाऊद–सुनन–04/854-ह०-3657)
(मुस्नद अहमद–04/299-ह०-8249)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ऐसी बात कहे जो न अल्लाह की किताब में हो और न रसूलुल्लाह की सुन्नत में हो तो वो जब अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात करेगा तो उसे पता नहीं होगा कि उसका दीन क्या है।
(दारमी–सुनन–1/164-ह०-160)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम में से फ़तवा देने पर ज़्यादा जुर्रात करने वाला वो है जो तुममें से आग पर ज़्यादा जुर्रात करने वाला है। (दारमी–सुनन–1/161-ह०-159)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स ऐसा फ़तवा दे जिसका उसे इ़ल्म न हो तो उसका गुनाह उसी पर होगा। (दारमी–सुनन–1/162-ह०-165)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो बग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देंगे वो खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–1/46-ह०-52)

किसी मसले पर कोई फ़तवा जब तक फ़तवे की शक्ल इख़्तियार ही नहीं कर सकता जब तक कि वो कुरानो सुन्नत की मुस्तहकम, मोअ़तवर व मुस्तनद दलील पर मुश्तमिल न हो और किसी चीज़ को हराम या हलाल और जाइज़ या नाजाइज़ साबित करने के लिये उसूले शरआ़ से गुज़रना पड़ता है और साबिक़ा आइम्मा व मुहद्‌दिसीन व फुक़्हा का हमेशा से यही तरीक़ा रहा है इस उसूले शरआ़ के बग़ैर किसी चीज़ को हराम या हलाल और जाइज़ या नाजाइज़ नहीं ठहराया जा सकता

किसी मसले का हल अगर कुरान में न मिले तो फिर हदीस में देखा जायेगा और जो अम्र व फ़ेअ़ल कुरान व हदीस और इज्माअ़ से भी उसका हराम या हलाल जाइज़ या नाजाइज़ होना साबित न हो तो ऐसे मसलों पर सुकूत इख़्तियार किया जायेगा जिस तरह अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जिन चीज़ों का चाहा उनका हराम या हलाल जाइज़ या नाजाइज़ होना कुरान व सुन्नत में मुफ़स्सल और वाज़ेह बयान फ़रमां दिया और जो बाक़ी रहा यानी जिन चीज़ों का हराम या हलाल, जाइज़ या नाजाइज़ होने का ज़िक्र कुरान व सुन्नत में नहीं किया उन चीज़ों पर अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ने सुकूत इख़्तियार फ़रमाया

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के बाअ़द हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) सबसे बड़े अ़ालिम हैं इनके बाअ़द किसी भी अ़ालिमे दीन का सभी उलूम पर वाक़िफ़ होना मुम्किन ही नहीं है और जो हर मसले में सब कुछ बताता जाये तो ये उसकी दीवानगी की अ़लामत है बाअ़ज़ मौलवी तो इस

क़दर जाहिल हैं कि उन्हें ये भी माअ़लूम नहीं है कि वो जिस मसले में फ़तवा दे रहे हैं उस मसले से वो नावाक़िफ़ हैं और जो अपनी जहालत से आगाह नहीं होते वही दीन की तबाही और लोगों की गुमराही का बाइस बनते हैं और उन्हें इसकी कोई पर'वाह भी नहीं होती जबकि जाहिल अ़ालिम के लिये ये बड़ी इ़ज़्ज़त का मसला होता है अगरचा इसके बदले उन्हें दोज़ख ही क्यों न ख़रीदनी पड़े मगर उन्हें इसकी कोई फ़िक्र नहीं होती कि जाइज़ को नाजाइज़ व हलाल को हराम कहने से उनकी आ़क़िबत बर्बाद हो जायेगी।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और वो झूठ मत कहा करो जो तुम्हारी ज़बाने बयान करती रहती हैं कि ये हलाल है और ये हराम है इस तरह कि तुम अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधो बेशक जो लोग अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधते हैं वो कभी फ़लाह नहीं पायेंगे फ़ायदा थोड़ा है मगर उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह-नहल-16/116,117)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

फ़रमां दीजिये ज़रा बताओ तो सही कि अल्लाह ने जो (पाकीज़ा) रिज़्क़ तुम्हारे लिये उतारा सो तुमने उसमें से बाअ़ज़ (चीज़ों) को हराम और (बाअ़ज़ को) हलाल क़रार दे दिया फ़रमांदें क्या अल्लाह तआ़ाला ने तुम्हें (इसकी) इजाज़त दी थी या तुम अल्लाह पर बोहतान बांध रहे हो और ऐसे लोगों का रोज़े क़यामत के बारे में क्या ख़्याल है जो अल्लाह तआ़ाला पर झूठा बोहतान बांधते हैं। (सूरह-यूनुस-10/59,60)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा)

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने कुरान में कुछ अपनी अ़क्ल से कहा तो वो जहन्नम में अपनी जगह ढूंढ ले। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/578-ह०-2951)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि बनी इसराईल का मुआ़मला दुरस्त चलता रहा यहाँ तक कि उनमें क़ैदी औ़रतों की औलाद फल फूल गईं फिर उन्होंने अपनी राय से (उस औलाद के मुताअ़ल्लिक़) फ़तवे देना शुरु कर दिये तो वो खुद भी गुमराह हुये और दूसरों को भी गुमराह किया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/47-ह०-56)
(दारमी–सुनन–1/146-ह०-122)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जो हर मसले में लोगों को फ़तवा दे वो दीवाना है। (दारमी–सुनन–1/170-ह०-176)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) ने अबू शाअ़शा से फ़रमाया कि तुम बसरा के अ़लिमों में से है तुम कुरान व सुन्नत से ही फ़तवा बयान करना अगर तुम इसके अ़लावा फ़तवा दोगे तो तुम खुद भी हलाक होगे और लोगों को भी हलाक करोगे।
(दारमी–सुनन–1/165-ह०-166)

➡ हज़रत मुआ़ाज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जब मुझे यमन की तरफ़ भेजा

तो इरशाद फ़रमाया कि ऐ मुआ़ज़ सिर्फ तुम उसी के मुताबिक़ फ़ैसला करना कि जितना तुम जानते हो और जिस चीज़ में तुम्हें इशकाल वाक़ैअ़ हो तो तुम तहक़ीक़ करना हत्ता कि मुआ़मले को वाज़ेह कर लो या उसके बारे में मुझे लिख दो (इब्ने माजा–सुनन–01/47-ह०-55)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब किसी को कोई फ़ैसला करना पड़े तो अल्लाह तआ़ला की किताब (कुरान) से फ़ैसला करे और जो अल्लाह तआ़ला की किताब में न हो तो उसे चाहिये कि वो उससे फ़ैसला करे जिससे अल्लाह के रसूल ने फ़ैसला किया हो यानी हदीस से फ़ैसला करे और हराम ज़ाहिर हो गया है व हलाल ज़ाहिर हो गया है। (दारमी–सुनन–1/165-ह०-167)

➡ हज़रत इब्ने मिग़वल बयान करते हैं कि मुझे हज़रत शाअ़बी ने कहा कि जो बात तुम्हें रसूलुल्लाह से नक़ल करके सुनायें उसे ले लो और जो अपनी राय से कहें उसे गन्दगी में फेंक दो।
(दारमी–सुनन–01/182-ह०-206)

➡ हज़रत मैमून बिन मेहरान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास जब कोई फ़ैसला कराने के लिये आता तो वो अल्लाह की किताब (कुरान) में देखते अगर वो उसमें कुछ पाते तो उसके साथ फ़ैसला कर देते और अगर कुरान से मसले का हल न मिलता तो हदीस फ़ैसला करते और अगर कुरान व हदीस में जब उन्हें मसले का हल न मिलता तो आप निकल कर लोगों से पूछते थे और वो कहते थे कि मेरे पास फुलां फुलां मसला आया है क्या

तुम्हें माअ़लूम है रसूलुल्लाह ने इस बारे में कोई फ़ैसला किया हो तो लोग उनके पास जमाअ़ हो जाते व उन्हें रसूलुल्लाह की हदीस ज़िक्र करते फिर अबूबक्र सिद्दीक़ फ़रमाते कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने हममें ऐसे आदमी पैदा किये जो हमारे नबी की हदीसें याद रखतें हैं। (दारमी–सुनन–1/163-ह०-163)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तू उस बात की पैर‘वी न कर जिसका तुझे इ़ल्म न हो बेशक कान व आँख और दिल इनमें से हर एक से सुवाल होगा। (सूरह–बनी इसराईल–17/36)

बदतरीन उल्माओं को दोज़ख़ मे सख़्त अ़ज़ाब दिया जायेगा

बाअ़ज़ जाहिल और मुनाफ़िक़ उ़ल्माओं ने ताज़ियादारी करने व ढोल बजाने को बुराई व गुनाह के उस मुक़ाम पर रखा है जिस मुक़ाम पर देवबन्दी, वहाबी जश्ने ईद मीलादुन्नबी को रखते हैं और ये उनकी अह्ले बैत से बुग्ज़ व अ़दावत की अ़लामत है वो अपने बयानात व तक़ारीर में ताज़ियादारी व ढोल को जिस मिक़्दार में नाजाइज़ व ह़राम क़रार देते हैं उस मिक़्दार में दीगर हज़ारों बुराइयों और उमूरे गुनाहे कबीरा को ज़िमनन नहीं लेते अगर तमाम उ़ल्मा अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की फ़रमांबरदारी करते हुये अह़कामे शरीअ़त के पाबन्द होते और अल्लाह व रसूल की इताअ़त व सुन्नतों पर अ़मल पैरा होते तो उनमें से बाअ़ज़ की दोज़ख़ में जाने व उन पर सख़्त अ़ज़ाब मुसल्लत किये जाने की हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पेशीनगोई न फ़रमाते।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शबे मेअ़राज मैंने कुछ लोगों को देखा कि उनके होंठों को चाकू से काटा जा रहा है तो मैंने जिबरईल अ़लैहिस्सलाम से उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि ये आपकी उम्मत के खुतबा हैं। (अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–06/430-ह०-8547)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन एक शख़्स को लाया जायेगा और उसे दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा तो दोज़ख़ में उस पर मुसल्लत अ़ज़ाब के सबब उसकी अंतडियाँ (आँतें) निकल पड़ेंगी और वो दोज़ख़ में इस तरह घूमता फिरेगा जिस तरह गधा चक्की के गिर्द घूमता है फिर अह्ले दोज़ख़ उसके पास जमाअ़ होकर कहेंगे कि ऐ फुलां देख तेरा क्या हाल है क्या तू हमें अच्छी बातों का हुक्म नहीं देता था और बुरे कामों से नहीं रोकता था वो जवाब देगा हाँ मैं तुम्हें अच्छी बातों का हुक्म देता था और तुम्हें बुरे कामों से रोकता था मगर मैं खुद उन पर अ़मल नहीं करता था और मैं तुम्हें बुरे कामों से रोकता था मगर मैं खुद बुरे काम किया करता था। (बुख़ारी–सहीह–03/480-ह०-3267)
(बुख़ारी–सहीह–6/400-ह०-7098)
(मुस्नद अहमद–01/1566-ह०-21794)
(मुस्लिम–सहीह–6/486-ह०-7483)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मेरी उम्मत–

में बिदअ़त और बुराई व गुनाह के काम आ़म हो जायें तो आ़लिमे दीन अपने इ़ल्म का मुज़ाहरा करें और जो आ़लिमे दीन अपने इ़ल्म का मुज़ाहरा न करे और वो ख़ामोश रहें तो ऐसे आ़लिमों पर अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत हो।
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/135-ह०-1271)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत पर गुमराह इमामों का ख़ौफ़ है। (अबू दाऊद–सुनन–05/265-ह०-4252)

➡ हज़रत ज़ियाद बिन हुदैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि दीन इस्लाम को आ़लिमों की लग़ज़िश और मुनाफ़िक़ों का कुरान में झगड़ना और गुमराह कुन पेशवाओं का हुक्म इस्लाम को तबाह करेगा।
(दारमी–सुनन–1/190-ह०-220)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत पर गुमराह करने वाले पेशवाओं का ज़्यादा ख़ौफ़ रखता हूँ। (दारमी–सुनन–1/188-ह०-217)

➡ हज़रत उ़क़बा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी उम्मत के अक्सर मुनाफ़िक़ीन कुर्रा होंगे।
(मुस्नद अहमद–7/208-ह०-17545)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि कोई शख़्स उस वक़्त तक अ़ालिम नहीं होता जब तक कि वो अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे। (दारमी–सुनन–1/224-ह०-301)

अ़ालिम बाअ़मल ही हक़ीक़ी मक़बूल अ़ालिम है वरना इ़ल्म बिला अ़मल वबाले जान है और इसी तरह अपने आप को नुमायां करने के लिये इ़ल्म का हुसूल गुनाह का बाइस है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

(ये) वो लोग हैं जो दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में ज़्यादा पसंद करते हैं और (ये लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं और इस (दीने हक़्) में कजी (टेढ़ापन) तलाश करते हैं ये लोग दूर की गुमराही में (पड़ चुके) हैं। (सूरह–इब्राहीम–14/3)

मज़कूरा आयत में कुफ़्फ़ारों के मुताअ़ल्लिक़ बयान किया गया जो दुनिया पसंद हैं और दुनिया की ज़िन्दगी पर खुश व राज़ी और मुतमइन हैं और वो दुनिया की ज़िन्दगी को उख़्र‘वी ज़िन्दगी पर तरजीह देते हैं और वो आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं और वो लोगों को अल्लाह तअ़ाला के रास्ते से रोकते हैं वो रास्ता जो रब तअ़ाला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर किया और दीन में टेढ़ा पन तलाश करते हैं यानी लोगों को सिराते मुस्तक़ीम से रोकना दीने हक़् के मुताअ़ल्लिक़ शुकूक और शुबहात डालना और इस तरह काफ़िर ईमान से और मुनाफ़िक़ इख़्लास से और फ़ासिक़ नेक आअ़माल से लोगों को रोकते हैं और बातिल दलाइल से अपनी बात व अपने बातिल नज़रियात और अ़क़ाइद साबित करते हैं तो ऐसे

लोग ख़्वाह वो मुसलमान हों या ग़ैर मुस्लिम हों अ़ालिम हों या ग़ैर अ़ालिम वो अ़मली तौर पर खुद गुमराह हैं और लोगों को भी गुमराह करते हैं।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हर वो शख़्स जिसने दुनिया और उसकी लज़्ज़ात को आख़िरत पर तरजीह दे और लोगों को अल्लाह तआ़ाला और उसके दीन से फेर दे तो वो इस आयत में दाख़िल है वो खुद भी गुमराह हैं और लोगों को भी गुमराह कर रहा है। (तफ़्सीर कुरतबी–5/353)

आज कल ऐसे बहुत से अ़ालिम हैं जो लोगों राहे हक़ से दूर करने में मशगूल हैं वो दीन इस्लाम को कुरानो सुन्नत के बजाए अपने बातिल अ़क़ीदे और बेबुनियादी फ़तवों और अपनी ज़ाती राय व क़ियास से लोगों को राहे हक़ से भटका रहे हैं वो खुद भी गुमराह हैं और लोगों को भी गुमराह कर रहे हैं।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं इ़ल्म को उसके ख़त्म होने से पहले हासिल करलो और ख़बरदार मुबालग़ा व बिदअ़त और बाल की खाल उतारने से बचो और सुन्नते रसूल को लाज़िम पकड़ लो अ़नक़रीब तुम ऐसी क़ौमों को पाओगे जो दाअ़वा करेंगे कि वो तुम्हें अल्लाह की किताब की तरफ़ बुला रहे हैं हालांकि उन्होंने उसे अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया होगा।
(दारमी–सुनन–1/155-ह०-144,145)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमारे लिये एक दिन ख़त खींचा फिर फ़रमाया कि ये अल्लाह का रास्ता है फिर उसके दाँयें बाँयें और ख़त खींचे फिर फ़रमाया कि ये दीगर रास्ते हैं इनमें से हर रास्ते पर शैतान है जो अपनी तरफ़ बुलाता है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये आयत पढ़ी ''बेशक ये मेरा सीधा रास्ता है इसकी पैर'वी करो और दीगर रास्तों की पैर'वी न करो वरना वो तुम्हें उसके रास्ते से हटा देगा। (सूरह–अनआ़म–6/153)
(दारमी–सुनन–1/182-ह०-208)

पस माअ़लूम हुआ कि सिराते मुस्तक़ीम सिर्फ़ एक ही है जो सीधा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ले जाता है कि जिसके बारे में वज़ाहत करते हुये सर'वरे कायनात हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बनी ईसराईल 72 मज़हबों पर मुतफ़र्रिक़ हुये और मेरी उम्मत 73 मज़हबों पर मुताफ़र्रिक़ होगी और उनमें से एक मज़हब जन्नत में जायेगा और बाक़ी सब अह्ले मज़हब दोज़ख़ में जायेंगे तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल जन्नत में जाने वाले लोग कौन हैं तो सर'वरे कायनात हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर होंगे। (यानी कुरान और सुन्नत पर होंगे)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/418-ह०–2641)

तो ये वाज़ेह हुआ कि कुरान व हदीस ही दुनिया व आख़िरत में कामयाबी की ज़मानत है और जो भी फ़तवा ग़ैर मुस्तनद और बिला शरई दलील के हो वो फ़तवा नहीं बल्कि फ़ित्ना है।

अगर कोई शख़्स ढोल बजाने और ताज़ियादारी करने को बग़ैर सनद के हराम या नाजाइज़ का फ़तवा दे तो वो कज़्ज़ाब है क्योंकि बग़ैर सनद के जब कोई हदीस कुबूल नहीं की जाती तो बग़ैर सनद के फ़तवे की तो कोई औक़ात ही नहीं और जब बग़ैर सनद के मौजूअ़ हदीस बयान करने वाला कज़्ज़ाब है तो बग़ैर सनद के फ़तवा देने वाला सबसे बड़ा कज़्ज़ाब है ऐसे कज़्ज़ाब उ़ल्मा बाअ़ज़ अम्र में लोगों को बाअ़ज़ो नसीहत करते हैं लेकिन वो खुद उस पर अ़मल नहीं करते ऐसे उ़ल्मा क़ाबिले मज़म्मत हैं कि वो जो लोगों से कहते हैं मगर वो खुद उस पर अ़मल नहीं करते।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

ऐ ईमान वालो वो बात क्यों कहते हो कि जो खुद नहीं करते अल्लाह के नज़दीक बहुत सख़्त ना पसंदीदा बात ये है कि तुम वो बात कहो जो खुद नहीं करते।
(सूरह-सफ़-61/02,03)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

तुम लोगों को तो नेकी का हुक्म देते हो मगर खुद को भूल जाते हो हालांकि तुम (अल्लाह की) किताब पढ़ते हो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं है। (सूरह-बक़राह-2/44)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़नक़रीब मेरे बाअ़द ऐसे उम्रा (सरदार, हाकिम, बादशाह) भी आयेंगे जो ऐसी बातें कहेंगे जो करेंगे नहीं और वो करेंगे कि जिनका उन्हें हुक्म नहीं दिया गया होगा।
(मुस्नद अहमद-2/746-ह०-4363)

हलाल कर्दा चीज़ों को हराम कहना शैतानी काम है

हर चीज़ उस वक़्त तक हलाल है जब तक उस पर हुरमत की दलील क़ायम न हो और हलाल को हराम ठहराना अल्लाह से बग़ावत और शैतानी काम है और जो बग़ैर दलील किसी चीज़ को हराम कहे वो शैतान है

➡ इयाज़ बिन हिमार (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि हर क़िस्म का माल जो मैंने अपने बन्दों को अ़ता किया वो हलाल है यानी जो शरीअ़त की रु से हराम न हो ख़्वाह लोगों ने उसे हराम कर रखा हो और मैंने अपने तमाम बन्दों को मुसलमान पैदा किया और फिर शयातीन उनके पास आये और उन्हें उनके दीन से दूर कर दिया और जो मैंने उनके लिये हलाल किया था तो उन्होंने उसे उनके लिये हराम कर दिया।
(मुस्लिम–सहीह–6/395-ह०-7207)

पस माअ़लूम हुआ कि ढोल बजाने व त़ज़ियादारी करने से जो लोग रोकते हैं अस्ल में वो इन्सानी शैतान हैं जो जाइज़ व मुबाह और सवाबे दारैन अम्र को नाजाइज़ व हराम कहते हैं शयातीन की दो क़िस्में हैं शयातीनुल जिन्न व शयातीनुल इन्स और शयातीन की इन दोनों क़िस्मों का तज़किरा कुरान व अहादीस में मौजूद है।

जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता रहता है ख़्वाह वो जिन्नात में से हो या इन्सानों में से हो।
(सूरह–नास–114/5-6)

इरशादे बारी तआ़ला है:-

और इसी तरह हमने हर नबी के लिये इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे के दिल में बनावट की बातें वसवसा के तौर पर धोका देने के लिये डालते रहते हैं।
(सूरह-अनआ़म-6/112)

शैतान ख़्वाह इन्सानों में से हो या जिन्नो में से हो उनकी कोई भी बात न मानी जाये क्योंकि अगर उनकी एक भी बात मान ली तो ये मलऊ़न उसी पर इक्तिफ़ा नहीं करते बल्कि ये और भी बातें मनवाने की कोशिश करते हैं और जितना इनकी बात मानते चले जायेंगे तो इसका सिलसिला उतना ही बढ़ता चला जाता है इसी तरह इनके साथ झगड़े व बहस में भी मसरुफ़ न हुआ जाये लिहाज़ा इनसे निजात की सूरत ये है कि इनकी कोई बात न सुनी जाये क्योंकि अगर इनकी बात सुनेंगे तो मुम्किन है कोई बात दिल पर असर कर जाये और सुनने वाला कुफ़्र व गुमराही के दलदल में फंस जाये।

लोगों में कुछ गिरोह ऐसे होते हैं जो गुमराही के रास्ते पर गामज़न होते हैं वो बातिल दलाइल के साथ हक़ से झगड़ते हैं वो लोग बातिल को हक़ व हक़ को बातिल साबित करना चाहते हैं और उनका हाल ये है कि वो जहालत की इन्तिहा को पहुँच गये और उनके इ़ल्म की इन्तिहा ये है कि वो गुमराह आ़लिम के पीछे चलते हैं और जो गुमराह आ़लिमों की पैरवी करेगा वो राहे हक़ से भटक जायेगा और जो शख़्स इनसे दोस्ती करेगा तो ये उसे गुमराह कर देंगे और उसे जन्नत से दूर और जहन्नम के क़रीब कर देंगे।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया आख़िरी ज़माने में ऐसे दज्जाल और फ़रेबी कज़्ज़ाब होंगे जो तुम्हारे पास ऐसी हदीसें लायेगे जो न तुमने सुनी होंगी न तुम्हारे आबा ने तुम उनसे दूर रहना कहीं वो तुम्हें गुमराह न कर दें और तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें (मुस्लिम–सहीह–1/58-ह०–16) (कंजुल उ़म्माल–5/432-ह०–29024)

शैतान हर सरकश व नाफ़रमान को कहते हैं चाहे वो इन्सान हो या जिन और जो शख़्स गुमराह हो और वो लोगों को शरीअ़त के ख़िलाफ़ किसी भी काम की तरग़ीब दे वो इन्सानी शैतान है चाहे वो अपने अ़ज़ीज़ों में से हो या अ़ालिम के लिबास में हो इसलिये तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि वो ऐसे इन्सानी शैतानों से खुद भी बचें व दूसरों को भी बचायें और कुछ लोग दज्जाल उसी एक को समझते हैं जो सबसे बड़ा ख़बीस दज्जाल है जो आने वाला है जबकि ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि तमाम गुमराहों के दाई और मुनादी दज्जाल हैं और हमें सब दज्जालों से दूर भागने का हुक्म है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक हमने दोज़ख़ के लिये जिन्नों और इन्सानों में से बहुत से अफ़राद को पैदा फ़रमाया वो दिल व दिमाग़ रखते हैं मगर वो उनसे हक़ को समझ नहीं सकते वो आँखें भी रखते हैं मगर वो उनसे हक़ को देख नहीं सकते वो कान भी रखते हैं मगर वो उनसे हक़ को सुन नहीं सकते वो लोग चौपायों की मिस्ल हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं और वही लोग ग़ाफ़िल हैं। (सूरह–आअ़राफ़–7/179)

मज़्कूरा कुरान मजीद की आयत से माअ़लूम हुआ कि अ़ालिम के लिबास में बेशुमार लोग ऐसे हैं जो बातिल दलाइल से जाइज़ व मुबाह उमूर को नाजाइज़ व हराम कहते हैं ऐसे जाहिल और गुमराह अ़ालिम अह्ले बैत अत्हार से बुग्ज़ व अ़दावत के बाइस तज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं ऐसे गुमराह अ़ालिम कुरान व हदीस की इताअ़त के बजाए अपने अकाबिरीन की इताअ़त और अपने ज़न व गुमान की पैर‘वी करते हैं ऐसे मौलवी दिल व दिमाग़ के बावुजूद हक़ को समझ नहीं सकते और आँखों के बावुजूद हक़ को देख नहीं सकते और कानों के बावुजूद हक़ को सुन नहीं सकते पस ऐसे मौलवी चौपायों की मिस्ल हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह और ग़ाफ़िल हैं।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और अल्लाह ने उसे इ़ल्म के बावुजूद गुमराह ठहरा दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँख पर परदा डाल दिया है फिर उसे अल्लाह के बाअ़द कौन हिदायत दे सकता हैं सो क्या तुम नसीहत कुबूल नहीं करते। (सूरह–जासिया–45/23)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

अगर तू ज़मीन में मौजूद लोगों की अक्सरियत का कहना मान ले तो वो तुझे अल्लाह की राह से भटका देंगे वो (हक़ व यक़ीन की बजाए) सिर्फ़ वहमो गुमान की पैर‘वी करते हैं और महज़ ग़लत क़ियास करते रहते हैं बेशक आपका रब उसे खूब जानता है जो उसकी राह से बहका हुआ है और वही हिदायत याफ़्ता लोगों से खूब वाक़िफ़ है।

(सूरह–अनअ़ाम–6/116-117)

इन्सानों में भी शैतान होने में हिकमत ये है कि सच्चे व झूठे और अ़क्लमंद व जाहिल और साहिबे बसीरत व अन्धे के दरमियान इम्तियाज़ हो सके और बन्दों की आज़माइश हो सके कि कौन अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त करता है कौन गुमराहों की इताअ़त करता है और रहमत वाले और लाअ़नत वाले लोगों में फ़र्क़ किया जा सके व इससे दीनी व दुनियावी निज़ाम क़ायम रहे अल्लाह तआ़ला ने लोगों की अक्सरियत की इताअ़त से बचने की तल्क़ीन फ़रमाई कि अगर लोगों की अक्सरियत का कहना माना तो वो अल्लाह तआ़ला के रास्ते से बहका देंगे क्योंकि उनमें अक्सर लोग अपने दीन व उ़लूमे हक़ और आअ़माले सहीहा से मुनहरिफ़ हो चुके हैं पस उनके दीन फ़ासिद व उनके आअ़माल उनकी ख़्वाहिशाते नफ़्स के ताबेअ़ हैं और उनके उ़लूम में न तहक़ीक़ है न सीधे रास्ते की तरफ़ राहनुमाई है उनका तमाम तर मक़सद ज़न व गुमान की पैर‘वी है पस ऐ मुसलमानों तुम पर फ़र्ज़ है तुम अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की नसीहतों पर अ़मल करो और अल्लाह तआ़ला के अवामिर व नवाही पर अ़मल पैरा हो जाओ।

पस माअ़लूम हुआ कि किसी गिरोह की कसरत से उसके हक़ होने पर इस्तिदलाल नहीं किया जा सकता और इसी तरह अगर किसी मुआ़मले में उस अम्र के इतिख़्यार करने वाले थोड़े हों तो ये क़िल्लत उनके ना-हक़ होने की दलील नहीं बन सकती और हक़ीक़त ये है कि बेशक किसी एक जगह पर अहले हक़ ताअ़दाद में बहुत कम हो मगर वो अह्ले हक़ ही रहेंगे उनको किसी बातिल दलील की बिना पर अह्ले बातिल ठहराना अव्वल दर्जे की जहालत और गुमराही है मसलन किसी

जगह पर ताज़ियादारी का इहतिमाम करने वाले कम हों और ताज़ियादारी के मुख़ालिफ़ीन की ताअ़दाद ज़्यादा हो इस वजह से हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और शुहदाए करबला की यादगार मनाना, ताज़ियादारी करना और हज़रत इमाम हुसैन व आपके साथियों की शहादत और कर्बला की जंग में फ़तह हासिल होने की ख़ुशी में ढोल बजाना नाजाइज़ व हराम नहीं होगा।

जिन्नाती शैतान किसी को बहकाने के लिये इन्सान की मदद भी लेते हैं फिर इब्लीस इन्सानों में से चुनता है और उनके ज़रिये से लोगों को बहकाता है पहले तो ये अपने नुमांइंदों के दिलों में वसवसे डालता है और फिर उसके नुमांइंदे लोगों को बहकाते हैं।

शैतान मुख़्तलिफ़ लोगों के पास मुख़्तलिफ़ शक्लो में जाता है दुनिया परस्तों के पास दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पैरोकारों के पास लज़्ज़ात व शहवात की शक्ल में और बद आअ़मालियों के पास वो शर व बुराई की हसीनो जमील तस्वीर बनकर जाता है अहले हक़ व दीनदारों के पास गुमराह कुन मौलवी और बेदीन पीर बनकर जाता है और बद आअ़माल और बद अ़क़ीदगी को बातिल दलाइल से साबित करता है शैतान ने लोगों के लिये मुख़्तलिफ़ जाल बना रखे हैं जिनके ज़रिये वो लोगों को अपने जाल में फंसाता है और इब्लीस व उसकी ज़ुर्रियात तमाम इन्सानों के दिलो दिमाग़ पर तसर्रुफ़ कर सकते हैं कि लोंगों के दिलों में वसवसे डालें और उन्हें सारे इन्सानों की ख़बर होती है और हर एक पर नज़र भी होती है और उन्हें हर एक का मक़ाम व दर्जा भी माअ़लूम होता है कि कौन सा शख़्स उनके बहकावे आयेगा और कौन सा शख़्स उनके

बहकावे में नहीं आयेगा और जिनके दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े इलाही व इश्क़े रसूल और इश्क़े अहले बैत है वो शैतान के जाल में नहीं फंसते।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
शैतान और उसका गिरोह तुम्हें वहाँ से देखता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते और बेशक हमने शैतानों को ऐसे लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं रखते। (सूरह-आअराफ़-7/27)

याद रहे जो शख़्स ख़िलाफ़े शरअ़ बात की तरफ़ रग़बत दिलाये या फिर जाइज़ और मुबाह उमूर को नाजाइज़ या हराम कहे वो शैतान है ख़्वाह वो हमारा अ़ज़ीज़ ही क्यों न हो या मौलवी या पीर हो और ऐसे लोग हमारे और अल्लाह व रसूल के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ ईमान वालो बेशक तुम्हारी बीवियों व तुम्हारी औलाद में से बाअ़ज़ तुम्हारे दुश्मन हैं इसलिये उनसे होशियार रहो। (सूरह-तग़ाबुन-64/14)

इन्सानों में जिनका नफ़्स शर व बुराई की तरफ़ ज़्यादा मानूस रहता है तो उन पर बुराई का ग़लबा भी ज़्यादा होता है और फिर शैतान उनके दिलों में वसवसे ज़्यादा डालता रहता है फिर वो इन्सान दूसरे इन्सानों के दिलों में वसवसे डालते हैं और शैतान जिन्न और शैतान इन्स लोगों को गुमराह करने व धोके में डालने के लिये बुराईयों को खुशनुमा बना कर बयान करते है इसलिये हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने शैतान इन्स व शैतान जिन्न से

पनाह मांगने का हुक्म फ़रमाया।

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू ज़र अल्लाह तआ़ला की पनाह मांग जिन्नो के शैतानों से व इन्सानों के शैतानो से तो मैंने कहा क्या इन्सानों में भी शैतान होते हैं तो आपने फ़रमाया हाँ इन्सानों में भी शैतान होते हैं।
(नसाई–सुनन–3/562-ह०–5512)
(मुस्नद अहमद–16/259-ह०–22189)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/652-ह०–7779)

ताज़ियादारी शआ़इरुल्लाह में दाख़िल है

ताज़ियादारी शआ़इरुल्लाह में दाख़िल है यानी ताज़िया अल्लाह तआ़ला की निशानी और ह़ज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार है और जो चीज़ अल्लाह तआ़ला की निशानी हो और जिसकी निसबत ह़ज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से हो तो वो किसी सूरत ह़राम या नाजाइज़ नहीं हो सकती क्योंकि जिस चीज़ से अल्लाह तआ़ला और उसके मक़बूल, मुक़र्रब और मख़्सूस बन्दो की निसबत वाबस्ता हो वो अल्लाह तआ़ला की निशानी है और उसके मक़बूल व मुक़र्रब बन्दों की यादगार है चुनांचा अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जो लोग अल्लाह तआ़ला की निशानियों व यादगारों की ताअ़ज़ीम व अदबो एह़तिराम करते हैं तो ये फ़ेअ़ल उनके दिलों का तक़वा है। (सूरह–हज–22/32)

और हर वो चीज़ अल्लाह तआ़ला की निशानी और यादगार में दाख़िल है कि जिसे देखकर अल्लाह–

और अल्लाह वाले याद आ जायें सूरह हज की आयते करीमा में शआ़इर जमाअ़ है शई़रा की यानी हर वो चीज़ जिसमें अल्लाह तआ़ला का कोई अम्र या निशानी हो जिससे वो जाना पहचाना जाये और शआ़इरुल्लाह से दीन की निशानियाँ मुराद हैं ख़्वाह वो मकानात हों जैसे काअ़बातुल्लाह अरफ़ात मुजदल्फ़ा व तीनों जमरात (जिस पर रमी की जाती है) और सफ़ा मर‘वाह, मिना मस्जिद या वो शआ़इरे ज़माने हों जैसे रमज़ान, हुरमत वाले महीने ई़दुल फ़ित्र, ईदुल अज़्हा, योमे जुमा और अज़ान इक़ामत नमाज़े बाजमाअ़त, नमाज़े जुमाअ़ और नमाज़े ई़दैन, ये सब शआ़इरे दीन हैं या शआ़इरे दीन की दूसरी अ़लामतें हों (तफ़्सीर–रुहुल मआ़नी–17/223) (तफ़्सीर–कुरतबी-6/382)(तफ़्सीर-सिरातुल जिनान-1/256) (तफ़्सीर–तिबयानुल कुरान–7/748)(तफ़्सीर–बग़वी–1/91)

आइम्मा सलफ़, सालिहीन और औलिया–ए–किराम शआ़इरुल्लाह में दाख़िल हैं क्योंकि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात या उसकी किसी सिफ़त की अ़लामत हो वो शआ़इरुल्लाह में दाखिल है और अल्लाह तआ़ला का वली वो होता है जिसे देखकर खुदा याद आ जाये और जिसकी मजलिस में बैठकर दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा हो और उसका दिल इ़बादत की तरफ़ झुक जाये और अल्लाह के वली का शआ़इरुल्लाह में दाख़िल होने में कोई शक नहीं है कि जब कुर्बानी का जानवर शआ़इरुल्लाह का मिस्दाक़ हो सकता है तो अल्लाह के मुक़र्रब व मख़्सूस नेक बन्दे शआ़इरुल्लाह का मिस्दाक़ क्यों नहीं हो सकते और जब रेत मिटटी व ईंट पत्थर से बनी हुई मस्जिदें शआ़इरुल्लाह का मिस्दाक़ हैं तो अल्लाह का वली शआ़इरुल्लाह में दाखिल क्यों नहीं हो सकता। (तफ़्सीर–तिबयानुल कुरान–7/749)

पस माअ़लूम हुआ कि जिस चीज़ से अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल व मह़बूब बन्दों की निस्बत हो जाये तो वो चीज़ अ़ज़मत वाली बन जाती है कि जैसे सफ़ा मरवाह पहाड़ ह़ज़रत हाज़रा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के क़दमैन मुबारक की बरकत से वो अल्लाह तआ़ला की निशानी बन गये और हमें ये भी माअ़लूम हुआ कि मुअ़ज़्ज़म चीज़ो की ताअ़ज़ीम व तौक़ीर करना दीन में दाख़िल है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक सफ़ा और मर'वाह (पहाड़) अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है चुनांचा जो शख़्स बैतुल्लाह का हज या उ़म्राह करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं है कि वो उन दोनों के दरमियान चक्कर लगाये।
(सूरह-बक़राह-2/158)

शआ़इर जमा कसरत है शई़रा की जो दस से ज़्यादा ला ताअ़दाद पर बोली जाती है क़ुरान ने बतलाया कि इस्लाम में बहुत सी चीज़े शआ़इरुल्लाह हैं सफ़ा मरवाह की तरह जिसको मक़्बूल बन्दो से निसबत हो तो वो शआ़इरुल्लाह हैं और उन दो पहाड़ों को इस वजह से शआ़इरुल्लाह कहा जाता है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इनको गुज़िश्ता साबिरीन की यादगार और निशानी बतलाया। (तफ़्सीर नईमी-2/98)

सफ़ा मर'वाह की तरह जिसको अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल बन्दों से निसबत हो तो वो शआ़इरुल्लाह हैं तो ताज़िया की निस्बत अल्लाह के मह़बूब व मक़्बूल बन्दे ह़ज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से है तो माअ़लूम हुआ कि ताज़िया भी अल्लाह तआ़ला की निशानी और

यादगारे हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) है तो इससे साबित हुआ कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है।

अगर मुअ़ज़्ज़म जगह में कुछ ख़राबियाँ पैदा हो जायें तो उससे उस जगह की न इ़ज़्ज़त घटेगी और न उस जगह को मिटाया जायेगा जैसा कि औलिया किराम के मज़ारात पर उ़र्स वग़ैराह में नाजाइज़ काम भी हाते हैं और आ़म दिनो में भी कुछ काम ख़िलाफ़े शरअ़ होते हैं तब भी उनके मज़ारात व उनकी क़ब्रों को मिस्मार करके मिटाया नहीं जायेगा जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने दौरे जाहलियत में बुतपरस्ती की वजह से ख़ाना-ए-काअ़बा और सफ़ा मर'वाह को नहीं मिटाया।

सफ़ा व मर'वाह पहाड़ों को इसलिये शआ़इरुल्लाह फ़रमाया गया कि इन पर अल्लाह तबारक व तआ़ला के प्यारों का गुज़र हुआ था जब कुछ देर ठहर जाने से ये पहाड़ शआ़इरुल्लाह बन गये तो औलिया किराम के मज़ारात यक़ीनन शआ़इरुल्लाह हैं क्योंकि वहाँ वो ह़ज़रात हमेशा के लिये आराम फ़रमां हैं जो अल्लाह तआ़ला मुक़र्रब व मक़बूल बन्दे हैं तो उनके मज़ारात जो कि बेजान ईंट पत्थर के बने होते हैं मगर अल्लाह वालों के क़दम बोसी की बरकत से वो शआ़इरुल्लाह बन गये। (तफ़्सीर नईमी-2/99,100)

तो बेजान ईंट पत्थर अल्लाह वालों की निसबत से अल्लाह तआ़ला की निशानी बन गये तो ताज़िया यानी रोज़ा-ए-इमाम हुसैन इमाम आ़ली मक़ाम ह़ज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की निसबत से अल्लाह तआ़ला की निशानी क्यों न होगी हालाँकि ह़क़ीक़त ये है कि ताज़िया अल्लाह तआ़ला की निशानी और इमाम हुसैन

की यादगार है जिसकी ताअ़ज़ीमो तकरीम करना हम मुसलमानों पर वाजिब और बाइसे अज्रो सवाब है।

मक़ामे इब्राहीम अल्लाह तआ़ला की निशानी है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
उसमें रौशन (खुली हुई) निशानियाँ हैं उनमें से एक मक़ामे इब्राहीम है। (सूरह-आले इ़मरान-3/97)

इससे मुराद मक़ामे इब्राहीम में आपके क़दमो के निशानात हैं। (सयूती-दुर्रे मन्सूर-2/153) (तफ़्सीर तबरी -4/17) (तफ़्सीर मदारिक-1/47) ह़ज़रत इब्ने जरीर व इमाम इब्ने अबी हातिम ने ह़ज़रत मुजाहिद से रिवायत किया इस आयत से मुराद काअ़बा मुकर्रमा और सफ़ा मरवाह व मक़ामे इब्राहीम है (सयूती-दुर्रे मन्सूर-2/152)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मक़ामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बनालो।
(अबू दाऊद-सुनन-5/103-ह०-3969)

बाबे काअ़बा के सामने मिम्बर व ज़मज़म के दरमियान क़दीम बाबुस्सलाम के क़रीब चार खम्भों पर एक छोटा सा गुम्बद है जिसके इर्द गिर्द पीतल का चौकोर चौखट नुमा मक़सूराह बना हुआ है उसके अन्दर वो पत्थर नसब है जो मक़ामे इब्राहीम कहलाता है ये पत्थर चाँदी से मढ़ा हुआ है इस पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दोनो क़दम मुबारक और उँगलियों के निशानात उस पर वाज़ेह हैं इसके क़रीब नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है।

ये वो पत्थर है जिस पर खड़े होकर ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने काअ़बे की दीवार बनाई थी हज़ारों साल बाद भी उसके निशानात का बाक़ी और मह़फ़ूज़ रहना अल्लाह तआ़ला की ये सब निशानियाँ हैं।
(तफ़्सीर नईमी–4/34)

जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) काअ़बे की दीवार बना रहे थे तो जिस क़दर दीवार ऊँची होती जाती थी तो ये पत्थर भी ऊँचा हो जाता था और शाम को उतरते वक़्त ये नीचा हो जाता था ये पत्थर आपके क़दम मुबारक की जगह रेत या ग़ारे की तरह नरम हो गया था कि उसमें बखूबी निशाने क़दम वाक़ैअ़ हो गये जो अब तक उसमें मौजूद हैं और बाक़ी आसपास का ह़िस्सा सख़्त ही रहा और तमाम हुज्जाज के सर इस पत्थर की जानिब झुकवा दिये गये जिस पत्थर को रब तआ़ला के मक़बूल व मुक़र्रब बन्दों के क़दम बोसी का शरफ़ ह़ासिल हो जाये तो पत्थरों की भी की शान बढ़ जाती है और वो पत्थर भी शआ़इरुल्लाह यानी अल्लाह तआ़ला की निशानी बन जाता है तो फिर इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) जो कि अल्लाह और उसके रसूल के महबूब हैं तो इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की निसबत से ताज़िया अल्लाह तआ़ला की निशानी क्यों नहीं हो सकता।

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की क़ब्रे अनवर का वो हिस्सा जो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के जिस्मे अत्हर से मस है वो काअ़बा मुकर्रमा बल्कि अ़र्शे मुअ़ल्ला से भी अफ़ज़ल है और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा)–

का सीना मुबारक, हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) करीम का जानू मुबारक और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की गोद मुबारक जो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की आराम गाह बनी वो अ़र्शे मुअ़ल्ला से भी अफ़ज़ल है जब कुरान पाक की रहल का इहतिराम किया जाता है तो ये बुजुर्ग तो कुरान वाले की रहल हैं।
(तफ़्सीर नईमी–4/37)

मज़कूरा तफ़्सीर से माअ़लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के जिस्म अत्हर से मस होने वाली चीज़ अ़र्शे मुअ़ल्ला से भी अफ़ज़ल है तो ज़रा ग़ौर करो और अन्दाज़ा लगाओ कि इमाम ह़सन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) के जिस्मे अत़हर के वो हिस्से जिनको हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़ारों मर्तबा बोसे दिये तो उन हिस्सों की अफ़ज़लियत का आ़लम क्या होगा जिनको हुज़ूर ने अपनी गोद मुबारक में खिलाया और जिनको काँधों मुबारक पर सवार किया जिनको दौराने नमाज़ पीठ मुबारक और कभी सीना मुबारक पर चढ़ाया तो उन शहज़ादगान ह़सन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) की शानो अ़ज़मत मक़ामो मन्ज़िलत का आ़लम क्या होगा।

कुर्बानी के जानवर अल्लाह तआ़ला की निशानी हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और कुर्बानी के बड़े जानवरों को हमने तुम्हारे लिये अल्लाह की निशाानियों में से बना दिया इनमें तुम्हारे लिये भलाई है। (सूरह–हज–22/36)

इन्सानी वुजूद में भी निशानियाँ हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और ज़मीन में (कामिल यक़ीन वालो) के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं और खुद तुम्हारे वुजूद में भी हैं सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (सूरह–ज़ारियात–51/20,21)

कायनात में अल्लाह तआ़ला की निशानियाँ हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक आसमानों और ज़मीन की तख़लीक़ में और शब व रोज़ (रात व दिन) में अ़क्ल वालों के लिये (अल्लाह की कुदरत की) निशानियाँ हैं।
(सूरह–आले इ़मरान–3/190)

ज़मीन व आसमान में अल्लाह तआ़ला की निशानियाँ हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और ये भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान हो जो कि ज़मीन पर फैले हुये हो और ये भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स में से जोड़े पैदा किये ताकि तुम उनकी तरफ़ सुकून पाओ और उसने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रह़मत पैदा कर दी बेशक इस (निज़ामे तख़लीक़) में उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो ग़ौर व फ़िक्र करते रहते हैं और उसकी निशानियों में से ज़मीनो आसमान की तख़लीक़ भी है और तुम्हारी जुबानों व तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़

भी है बेशक इसमें अह्ले इ़ल्म (व तह़क़ीक़) के लिये निशानियाँ हैं और उसकी निशानियों में से रात व दिन में तुम्हारा सोना और उसके फ़ज़्ल (यानी रिज़्क़) का तुम्हारा तलाश करना भी है बेशक उसमें उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो (ग़ौर से) सुनते हैं और उसकी निशानियों में से ये (भी) है कि वो तुम्हें डराने और उम्मीद दिलाने के लिये बिजली दिखाता है व आसमान से (बारिश का) पानी उतारता है फिर उससे ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बाद ज़िन्दा व शादाब कर देता है तो बेशक इसमें उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अ़क़्ल से काम लेते हैं और उसकी निशानियों में से ये भी है कि आसमान व ज़मीन उसके निज़ामे अम्र (हुक्म) के साथ क़ायम है फिर जब वो तुमको ज़मीन से निकलने के लिये एक बार पुकारेगा तो तुम सब अचानक बाहर निकल आओगे। (सूरह–रुम–30/20–ता–25)

मज़कूरा आयात व तफ़ासीर से माअ़लूम हुआ कि कुल कायनात में अल्लाह तआ़ला की निशानियाँ हैं पस उनमें से उन तमाम निशानियों की ताअ़ज़ीम व तकरीम करना तमाम मुसलमानों पर वाजिब है जिनसे अल्लाह और अल्लाह वालों की ख़ास निसबत वाबस्ता हो तो ताज़िया (रोज़ा–ए–इमाम हुसैन) की निसबत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लख़्ते जिगर और दिल के फूल ह़ज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से है इसलिये ताज़िया की ताअज़ीम व इहतिराम करना हम तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है और ताज़ियादारी करना और ख़ानवादा–ए–रसूल और शुहदाऐ–करबला की यादगार मनाना बाइसे अज्रे अ़जीम है जो कुरानो सुन्नत और औलिया किराम के अक़वाल व अफ़आ़ल से साबित है।

सय्यद अ़ल्लामा व मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) जयपुरी अपनी किताब ''मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रोशनी में'' फ़रमाते हैं कि कुरान व हदीस के हुक्म के बाअ़द भी जिन्हें अहले बैत अत्हार से मुहब्बत नहीं वो मुनाफ़िक़ हैं क्योंकि मुहब्बत का तक़ाज़ा ये है जो चीज़ महबूब से निसबत रखती है तो मुहब्बत करने वाला उस चीज़ से भी निसबत रखता है और उसकी ताअ़ज़ीम व तकरीम करता है और ताज़िया अहले बैत से निसबत रखता है तो जिसे अहले बैत से मुहब्बत होगी वो ताज़िये से भी मुहब्बत करेगा

मिसाल के तौर पर हाजी लोग मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा से बहुत सी चीज़ें अपने अपने मुल्कों में लाते हैं फिर उन चीज़ों को अपने रिश्तेदार व दोस्त अहबाब बग़ैराह को बतौर तोहफ़ा देते हैं और उन चीज़ो को लेने वाले लोग उन चीज़ों को इज़्ज़त की नज़र से देखते हैं और उन चीज़ों को तबर्रुक समझते हैं जबकि हक़ीक़त ये है कि वो चीज़ें मक्का व मदीना से आती ज़रुर हैं लेकिन वो चीज़ें मक्का व मदीना की बनी हुयी नहीं होती हैं बल्कि वो दूसरों मुल्कों से लाकर मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में बेची जाती हैं लेकिन फिर भी वो उन तमाम चीज़ों की ताअ़ज़ीम व तकरीम करते हैं क्योंकि वो सब चीज़ें मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा से निसबत रखती हैं इसलिये क़ाबिले ताअ़ज़ीम होती हैं

इसी तरह जो लोग हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से सच्ची और ख़ालिस मुहब्बत करते हैं तो जब वो ताज़िये को देखते हैं तो उसकी ताअ़ज़ीम करते हैं और

उसको रोज़ा-ए-इमाम हुसैन तसव्वुर करते हैं क्योंकि ताज़िये की निसबत हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से जुड़ी हुई है इसलिये ताज़िया भी क़ाबिले ताअ़ज़ीम होता है।

इसी तरह जब किसी औलिया-ए-किराम व बुजुर्गानेदीन की दरगाहों पर हम हाज़िरी के लिये जाते हैं और जो तबर्रुकात हम दुकानों से ख़रीदते हैं लेकिन वो तबर्रुक जब तक दुकानों पर था तो उसकी ताअ़ज़ीम नहीं होती थी लेकिन जब वो तबर्रुक को आस्ताना-ए-औलिया की हाज़िरी का शरफ़ हासिल हो जाता है तो वही तबर्रुक क़ाबिले ताअ़ज़ीम हो जाता है क्योंकि उस तबर्रुक को दरगाहे औलियाकिराम व बुजुर्गानेदीन की ज़ियारत का शरफ़ हासिल हो जाता है और उस तबर्रुक की निसबत उस दरगाह में मौजूद अल्लाह के वली से वाबस्ता हो जाती है इसलिये हम उस तबर्रुक को भी इ़ज़्ज़त और इहतिराम की नज़र से देखते हैं

जब कोई शख़्स उस तबर्रुक को लेकर वापस अपने घर आता और उस तबर्रुक को लोगो में तक़सीम करता और ये कहता कि मैं ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दरगाह पर हाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ गया था या हज़रत वारिस पाक की दरगाह देवा शरीफ़ गया था या हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलयरी की दरगाह पर हाज़िरी के लिये गया था वग़ैराह और ये तबर्रुक वहीं का है तो हम लोग उस तबर्रुक को निसबते औलिया-ए-किराम के सबब बड़ी इ़ज़्ज़त की नज़र से देखते हैं एक बात क़ाबिले तवज्जो है और हमें उस पर ग़ौर करना चाहिये कि कुछ शहर व कस्बे और गाँव ऐसे हैं जिनके नाम के आख़िर में हम लफ्ज़े शरीफ़ का इस्तेअ़माल करते हैं

जैसे बग़दाद शरीफ़, अजमेर शरीफ़, देवा शरीफ़, और किछौछा शरीफ़, काल्पी शरीफ़, बिलग्राम शरीफ़, मारैहरा शरीफ़, बरेली शरीफ़, मकनपुर शरीफ़, वग़ैराह आख़िर ऐसा क्यों है क्योंकि इन तमाम शहरों व कस्बों व गाँव में औलिया-ए-किराम और बुजुर्गानेदीन मदफून हैं और इन शहरों व कस्बों से अल्लाह तबारक व तआ़ला के नेक सालिहीन बुजुर्गों और वालियों की निसबत जुड़ी है इसलिये इन शहरों व कस्बों के नाम भी हम ताअ़ज़ीम के साथ लेते हैं तो नेक सालेह बुजुर्गों और औलियाए किराम की निसबत से उस शहर का नाम भी ताअ़ज़ीम के क़ाबिल हो जाता है तो ताज़िया हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की निसबत से है तो ताज़िया कितनी बड़ी ताअ़ज़ीमो अदब और एहतिराम के क़ाबिल होगा इसका हम और आप खुद अन्दाज़ा लगायें और ताज़िये को ताअ़ज़ीमो तकरीम की नज़र से देखें।

जिस तरह काग़ज़ अस्ल में सिर्फ़ काग़ज़ ही होता है लेकिन जब उस काग़ज़ पर अल्लाह व रसूल का नाम लिख दिया जाये तो वो चूम कर सर आँखों पर लगाने के क़ाबिल हो जाता है इसी तरह जब किसी काग़ज़ पर कुरान लिख दिया जाता है तो वो अल्लाह तआ़ला का कलाम हो जाता है और वो ताअ़ज़ीमो अदबो इहतिराम के क़ाबिल हो जाता है इसी तरह हम मस्जिदे नबवी और गुम्बदे खज़रा या ख़ाना-ए-काअ़बा की तस्वीरें जो सिर्फ़ काग़ज़ पर बनी हुई होती हैं मगर हम उसे चूमते और उसकी ताअ़ज़ीम व उनका इहतिराम करते हैं और उन तस्वीरों को ऐसी जगह रखते और सजाते हैं कि जहाँ उनकी बे अदबी न हो हालाँकि वो सिर्फ़ काग़ज़ पर बनी होती हैं और वो अस्ल भी नहीं होती बल्कि उसकी नक़ल होती हैं लेकिन फिर भी हम उन तस्वीरों

की ताअ़ज़ीम करते हैं क्योंकि वो अल्लाह व रसूल से निसबत रखती हैं पस हम उस काग़ज़ को नहीं देखते बल्कि हम ये देखते हैं कि उस काग़ज़ पर लिखा और बना क्या है और इसी तरह हम ताज़िये की काग़ज़ व पन्नी को नहीं देखते हैं बल्कि ये देखते हैं कि ये रोज़ा -ए-इमाम हुसैन है कि जिसकी निसबत सय्यदुना इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से है जो अपने नाना जान हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के लख़्ते जिगर हैं इसलिये हम ताज़िये को ताअ़ज़ीमो इहतिराम की नज़र से देखते हैं और बा नीयते ताअ़ज़ीम रोज़ाए इमाम हुसैन (ताज़िया) की ज़ियारत करना इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है

बाअ़ज़ उ़ल्मा ढोल बजाने और तज़ियादारी करने को हराम व नाजाइज़ कहते हैं व इसके हराम व नाजाइज़ का फ़तवा देते हैं वो कहते हैं कि ताज़ियादारी में कुछ काम ग़ैर शरई हैं जैसे ढोल, ताशे, बेहूदा खेल तमाशे, मर्दों व अ़ौरतों का जमाअ़ होना वग़ैराह ये सब काम नाजाइज़ हैं जबकि ढोल बजाना शरअ़न जाइज़ है और इसको नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत और बेबुनियाद है क्योंकि जिस चीज़ का नाजाइज़ होना कुरान व हदीस से साबित नहीं उस चीज़ को नाजाइज़ या हराम कहना अल्लाह तबारक व तअ़ाला व उसके रसूल पर झूठा बोहतान बांधना है और जो शख़्स अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल पर झूठा बोहतान बांधते हैं वो दोज़ख़ी हैं जो कि कुरान व हदीस से साबित है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

और वो झूठ मत कहा करो जो तुम्हारी ज़बाने बयान-

करती रहती हैं कि ये हलाल है और ये हराम है इस तरह कि तुम अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधो बेशक जो लोग अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधते हैं वो कभी फ़लाह नहीं पायेंगे फ़ायदा थोड़ा है मगर उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह–नहल–16/116,117)

इरशादे बारी तआ़ला है:–

फ़रमां दीजिये ज़रा बताओ तो सही अल्लाह तआ़ला ने जो पाकीज़ा रिज़्क़ तुम्हारे लिये उतारा सो तुमने उसमें से बाअ़ज़ (चीज़ों) को हराम और (बाअ़ज़ को) हलाल क़रार दे दिया फ़रमांदें क्या अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें (इसकी) इजाज़त दी थी या तुम अल्लाह पर बोहतान बांध रहे हो और ऐसे लोगों का रोज़े क़यामत के बारे में क्या ख़्याल है जो अल्लाह तआ़ला पर झूठा बोहतान बांधते हैं। (सूरह–यूनुस–10/59,60)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो बग़ैर सबूत व बिला शरई दलील के फ़तवा दिया जायेगा उसका गुनाह उस पर है जिसने उसको फ़तवा दिया।
(इब्ने माजा–सुनन–01/46-ह०-53)
(दारमी–सुनन–01/162-ह०-161)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने अबू शाअ़शा से फ़रमाया कि तुम बसरा के अ़लिमों में से है तुम कुरान व सुन्नत से ही फ़तवा बयान करना अगर तुम इसके अ़लावा फ़तवा दोगे तो तुम खुद भी हलाक होगे और लोगों को भी हलाक करोगे।
(दारमी–सुनन–1/165-ह०-166)

तज़ियादारी में कुछ ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर भी शामिल हैं लेकिन इस वजह से ताज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम कहना ये जाहलियत और कम इल्मी और अहले बैत अत्हार से बुग्ज़ व अ़दावत की अ़लामत है और ये उनकी ज़्यादती व जुल्म है जो कि मुसलमानों को इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार मनाने से रोकते हैं जो कि एक मुस्तहब व मुस्तहसन और नेक अ़मल है जो कि अज्रो सवाब का बाइस है और रहा सवाल इस अ़मल से जुड़ी हुई बुराइयों का तो हर अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी होती है तो उन्हें चाहिये कि सिर्फ़ बुराई को रोकने की लोगों को ताकीद करें न कि अच्छाई को जिस तरह हर इन्सान के साथ अल्लाह तआ़ला ने एक शैतान मुक़र्रर कर रखा है जो हमें बुराई का हुक्म देता है और हमारे नफ़्स से बुरे काम कराता है।

तो क्या हम इन्सान से सरज़द होने वाले गुनाहों और बुराइयों को रोकेंगे या उससे वाक़ैअ होने वाले नेक काम और अच्छाइयों को रोकेंगे क्योंकि इन्सान के साथ अच्छाई और बुराई दोंनों जुड़ी होती हैं पस हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ बुराई को रोकें न कि अच्छाई को मिसाल के तौर पर शादी ब्याह और दीगर तक़ारीब में बहुत सी बातें ख़िलाफ़े शरअ़ हैं जैसे मर्द औ़रत का एक साथ जमाअ़ होना और बेपर्दा औ़रतों का मर्दों से गुफ़्तगू करना, मर्दों का ना मेहरम को देखना जो सख़्त हराम है जो कुरान से साबित है इसके अ़लावा बहुत सी बुरी रस्में, आतिश बाज़ी डीजे पर बेहूदा गाने और खड़े होकर खाना पीना, जूता चुराई की रस्में वग़ैराह ये सब बुराई और ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर हैं तो क्या इस वजह से किसी को शादी ब्याह और दीगर तक़ारीब से रोका जायेगा और शादी ब्याह को नाजाइज़ कहा जायेगा

और क्या शादी ब्याह के नाजाइज़ होने का फ़तवा दिया जायेगा नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि शादी ब्याह में शामिल होने वाली बुराईयों और ख़िलाफ़े शरअ़ कामों को रोका जायेगा।

इसी तरह रोज़ा नमाज़ फ़र्ज़ है मगर बाअ़ज़ लोग रोज़ा व नमाज़ में दिखावा (रियाकारी) करते हैं और रियाकारी फ़ेअ़ले हराम है तो क्या इस वजह से रोज़ा व नमाज़ को नाजाइज़ कहा जायेगा और रोज़ा, नमाज़ से लोगों को रोका जायेगा या रियाकारी से रोका जायेगा इसी तरह नौकरी करना शरअ़न जाइज़ है मगर इसके साथ रिश्वत भी ली जाती है जो कि फ़ेअ़ले हराम है तो क्या इस वजह से नौकरी करने को नाजाइज़ कहा जायेगा या फिर रिश्वत लेने को नाजाइज़ कहा जायेगा इसी तरह तिजारत और कारोबार में भी झूठ व फ़रेब, धोका व बेईमानी वग़ैराह दीगर कई तरह की बुराइयाँ व गुनाह हाइल होते हैं और बाअ़ज़ लोग तो अपनी तिजारत व ख़रीद फ़रोख़्त में हराम व हलाल का भी तमीज़ नहीं रखते तो क्या इन बुराईयों और गुनाहों की वजह से तिजारत और कारोबार को नाजाइज़ या हराम कहा जायेगा या फिर तिजारत व कारोबार से वाबस्ता बुराईयों व गुनाहों के कामों से रोका जायेगा इसी तरह हर अच्छे काम के साथ बुराई वाबस्ता होती है।

पस हमें चाहिये ताज़ियादारी में जो काम ख़िलाफ़े शरअ़ हैं हमें उन कामों को रोकना चाहिये न कि ताज़ियादारी को रोकना चाहिये जिस तरह मस्जिद ख़ाना-ए-काअ़बा की नक़ल है जो एक इमारत है उसी तरह से ताज़िया इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के रोज़े की नक़ल है इस दलील से भी ताज़िया बनाना जाइज़ व मुबाह है और-

हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) व शुहदाए करबला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) की यादगार मनाना और ताज़ियादारी करना और इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) व शुहदाए करबला का ज़िक्रे ख़ैर करना और मजलिस का इनइक़ाद करना सब जाइज़ व सवाबे दारैन है।

कोई अ़मल ऐसा किया जाये कि जिसकी वजह से अस्ल वाक़िआ़-ए-कर्बला नज़रों के सामने आ जाये तो वही अ़मल ज़्यादा कारगर होता है जैसा कि ताज़िये को देखकर वाक़िआ़ करबला हमारी नज़रों के सामने आ जाता है और इस दलील से भी ताज़ियादारी करना एक बेहतर अ़मल है जो बाइसे अज्र है हदीस पाक में है जो जिससे मुहब्बत करेगा उसका हश्र उसके महबूब के साथ होगा यानी अल्लाह तआ़ला के यहाँ दोनों एक ही मुक़ाम पर होंगे और अगर हम अहले बैत से मुहब्बत करेंगे और उनकी मुहब्बत में उनकी यादगारी मनाने के लिये ताज़ियादारी करेंगे और उनके ज़िक्र की मजलिसों का इनइक़ाद करेंगे तो क़यामत के दिन हमें उनका साथ मिलेगा जो हमारे लिये बड़े फ़ख़्र की बात होगी और उनकी कुर्बत व उनका साथ हमारे लिये निजात है जो हमें जन्नत में ले जायेगा।

बाअ़ज़ लोग अहले बैत से मुहब्बत का दाअ़वा करते हैं मगर कभी अहले बैत की मुहब्बत में कोई भी ऐसा अ़मल नहीं करते जो उनकी दाअ़वाए मुहब्बत को सच साबित करे न वो कभी हज़रत मौला अ़ली की मुहब्बत में ईदे ग़दीर मनाते हैं और न ही सय्यदा फ़ातिमा की शानो अ़ज़मत के ज़िक्र की मजलिस मुनअ़क़िद करते हैं और न ही हज़रत इमाम हसन की योमे शहादत पर उनके ज़िक्र की मजलिस का इहतिमाम करते हैं और न

ही हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की यादगार मनाते हैं और न ही वो ताज़ियादारी करते हैं बल्कि जो लोग ताज़ियादारी करते हैं तो ये लोग उन्हें रोकते हैं और ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने का फ़तवा देते हैं और ये लोग अपने अकाबिर अ़ालिम का उ़र्स बड़े जोश व बड़े इहतिमाम के साथ मनाते हैं और अपने अपने मदरसों में इनके उ़र्स की मजलिसों का इनइक़ाद करते हैं और नज़रो नियाज़ करते हैं और मस्जिदों के मिम्बरों से ये अपने अकाबिर का ज़िक्रे ख़ैर करते हैं मगर अहले बैत अत्‌हार के लिये कोई अ़मल ऐसा नहीं करते जो इनकी अहले बैत से मुहब्बत को ज़ाहिर करे तो अहले बैत से इनकी मुहब्बत का दाअ़वा बातिल है बल्कि ये सच्चे व पक्के मुनाफ़िक़ हैं और तमाम मुनाफ़िक़ दोज़ख़ी हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को दोज़ख़ में जमाअ़ करने वाला है। (सूरह–निसा–4/140)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ नबी) आप मुनाफ़िक़ो को ये ख़बर सुनादें कि उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह–निसा–4/138)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे और आप उनके लिये हरगिज़ कोई मददगार न पायेंगे। (सूरह–निसा–4/145)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ मर्दों व मुनाफ़िक़ औ़रतों और काफ़िरों से आतिशे दोज़ख़ का वाअ़दा फ़रमां रखा

है वो उसमें हमेशा रहेंगे वो आग उन्हें काफ़ी है और अल्लाह तआ़ला ने उन पर लाअ़नत की है और उनके लिये हमेशा बरक़रार रहने वाला अ़ज़ाब है।
(सूरह–तौबा–9/68)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और आप कभी भी उन (मुनाफ़िक़ों) में जो कोई मर जाये उस (के जनाज़े) पर न नमाज़ पढ़ें और न ही आप उसकी क़ब्र पर खड़े हों। (सूरह–तौबा–9/84)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे साथियों में से बारह अफ़राद मुनाफ़िक़ हैं उनमें से आठ ऐसे हैं जो कभी जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे हत्ता कि ऊँट सूई के नाके में दाख़िल हो जाये।
(मुस्लिम–सहीह–05/284-ह०-7035)

बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं जो बिला तहक़ीक़ो तस्दीक़ और बग़ैर इल्म के सिर्फ़ सुनी हुई बात बयान करते हैं और उसकी पैर'वी करते हैं और दूसरे लोगों को भी पैर'वी करने की तर्ग़ीब देते हैं हांलांकि शरई अहकाम व दीनी मसाइल में सुनी हुई बात को बिला तहक़ीक़ व तस्दीक़ बयान करना बाइसे हलाकत व गुमराही और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल पर झूठ बांधना है बाअ़ज़ लोग सिर्फ़ अपने फ़िरक़े के मौलवियों का बयान सुनकर ढोल बजाने व ताज़ियादारी करने को नाजाइज़ व हराम कहते हैं और बिला शरई दलील के जो सिर्फ़ सुनी बात की बुनियाद पर किसी चीज़ को हराम व नाजाइज़ कहे वो झूठा है और वो अल्लाह व रसूल पर झूठ बांध रहा है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी का झूठा होने के लिये यही काफ़ी है कि वो हर सुनी हुई बात को बयान कर दे (मुस्लिम–सहीह–1/56-ह०-07,08,09,10)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी आदमी के गुनाहगार होने के लिये यही बात काफ़ी है कि वो हर सुनी सुनाई बात को बयान कर दे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/749-ह०-4992)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ (शख़्स) कोई ख़बर लाये तो तुम खूब तहक़ीक़ कर लिया करो (ऐसा न हो) कि तुम किसी क़ौम को लाइल्मी के सबब (नाहक़) तकलीफ़ पहुँचा बैठो फिर तुम अपने किये पर पछताते रह जाओ। (सूरह–हुजुरात–49/6)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर झूठ न बोलो बिला शुबा जिसने मुझ पर झूठ बोला वो दोज़ख़ में जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–1/148-ह०-106)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/431-ह०-2661)
(मुस्लिम–सहीह–1/55-ह०-02,03,04,05,06)

➡ हज़रत अबू क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई मुझ पर ऐसी बात कहे जो मैंने न कही हो तो वो अपना ठिकाना आग में बनाले। (इब्ने माजा–सुनन–1/39-ह०-34)
(दारमी–सुनन–1/201-ह०-243)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
यक़ीनन अल्लाह तआ़ला झूठों को हिदायत नहीं देता। (सूरह–जुमर–39/3)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
फ़िरऔ़न के ख़ानदान में से एक मर्द मोमिन ने कहा जो अपना ईमान छुपाये हुये था क्या तुम एक शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल करना चाहते हो कि वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह निशानियाँ लेकर आया है अगर वो झूठा है तो उसके झूठ का बोझ उसी पर होगा और अगर वो सच्चा है तो जिस क़दर अ़ज़ाब का वो तुमसे वाअ़दा कर रहा है वो तुम्हें पहुँच कर रहेगा वेशक अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूठा है। (सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/28)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सूरह नस्र की आयत तिलावत फ़रमाई ''जब अल्लाह की मदद और फ़तह आये और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं' फिर आपने फ़रमाया कि जिस तरह लोग इसमें दाख़िल होंगे उसी तरह इससे निकल भी जायेंगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/640-ह०-8518)
(दारमी–सुनन–1/129-ह०-91)

आज सूरते हाल यही है कि लोगों ने मुताफ़र्रिक़ फ़िरक़े वज़अ़ कर लिये और वो दीन से निकल कर फ़िरक़ों में बट हो गये और उन्होंने उम्मते मुस्लिमा के इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ को मुन्तशिर कर दिया वो दीन को कमज़ोर व लोगों को गुमराह करने का काम बखूबी अंजाम दे रहे हैं फ़िरक़ा परस्त ये लोग अपने फ़िरक़े को सुन्नत वल जमाअ़त कहते हैं मगर अस्ल हक़ीक़त ये है कि तमाम फ़िरक़ा परस्त लोग गुमराह और दोज़खी हैं सिवाए एक जमाअ़त के जो सबसे बड़ी जमाअ़त है वही सुन्नत वल जमाअ़त है जो जन्नती है।

ताज़ियादारी पर एतराज़ात के जवाबात

ढोल पर मुश्तमिल ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ बाअ़ज़ जाहिल बद अ़क़ीदा लोग बुग्ज़े अहले बैत के सबब वो अपनी मुनाफ़िक़ाना नज़रियात पर मबनी सोच से वो अक्सर ये कहते हैं कि जब तुम्हारे घर कोई मर जाये तब ढोल बजाना तो मेरा उनसे जवाब ये है कि क्या तुम इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को मुर्दा ख़्याल करते हो जबकि शहीद ज़िन्दा होता है और शहीद सिर्फ़ मौत का ज़ायक़ा चखता है फिर वो हमेशा के लिये ज़िन्दा हो जाता है कि अल्लाह तआ़ला जिसको कुरान में ज़िन्दा फ़रमाये और मुल्ला उसको मुर्दा कहे तो ये उनकी बद अ़क़ीदगी व जाहलियत और अहले बैत से दुश्मनी की अ़लामत है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वो ज़िन्दा हैं लेकिन तुम्हें उनकी ज़िन्दगी का शऊर नहीं। (सूरह–बक़राह–2/154)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये जायें उन्हें हरगिज़ मुर्दा ख़्याल न करना बल्कि वो अपने रब के हुज़ूर ज़िन्दा हैं और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है।
(सूरह–आले इमरान–3/169)

और जो ज़िन्दा होता है उसका ग़म नहीं बल्कि खुशी मनाई जाती है और खुशी के मौक़अ़ पर ढोल बजाना जाइज़ है और जंगे करबला में हज़रत इमाम हुसैन ने फ़तह हासिल की और उनकी फ़तह से इस्लाम ज़िन्दा हुआ तो ये कितनी बड़ी खुशी की बात है पस इस्लाम के ज़िन्दा होने और करबला फ़तह होने की खुशी में ढोल बजाना जाइज़ है।

बाअ़ज़ जाहिल बद अ़क़ीदा लोग ये कहते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की शहादत पर यज़ीद ने ढोल बजाया था और तुम भी ढोल बजाते हो तो यज़ीद लईन मरदूद ने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ व अ़दावत में ढोल बजाया था तो ये उसकी बद नीयती और बद अ़क़ीदगी थी और हम हुसैनी हज़रत इमाम हुसैन की शहादत और हक़ व बातिल की जंग में हक़ की फ़तह की खुशी में ढोल बजाते हैं ये हमारी नियते हस्ना और हुस्ने अ़क़ीदा है पस दोंनों की नियतें व अ़क़ीदा मुताफ़र्रिक है इससे वाज़ेह हुआ है कि ढोल बजाने से मनाअ़ करने वाले लोगों का अ़क़ीदा इंतिहाई मज़मूम है अगर कोई शख़्स ये कहे कि ग़ैर मुस्लिम भी पत्थर को बोसा देते हैं और मुसलमान भी हज्रे अस्वद पत्थर को बोसा देते हैं मगर दोनों की नीयतों मे ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है मुसलमानों की नियत हक़ है और ग़ैर मुस्लिमों की नियत बातिल है।

अब रहा सुवाल ढोल के जाइज़ होने का तो ढोल की मुमानियत न तो कुरान से साबित और न ही हदीस से साबित और न ही इसके नाजाइज़ होने पर इज्माअ़ है और किसी चीज़ का नाजाइज़ न होना ही उसके जाइज़ होने की सबसे बड़ी दलील होती है तो किस बुनियाद पर बाअ़ज़ लोग ढोल को नाजाइज़ कहते हैं और बिला किसी दलील व सबूत के किसी चीज़ को नाजाइज़ या हराम कहने का दाअ़वा झूठा व बातिल होता है शरीअ़त में किसी चीज़ को नाजाइज़ या हराम क़रार देना किसी की अ़क़्ल व ज़ाती राय पर मुनहसिर नहीं होता बल्कि किसी चीज़ की हिल्लत व हुरमत साबित करने के लिये कुरानो सुन्नत के मुस्तनद व मुस्तहकम और मोअ़तवर दलाइल की दरकार होती है।

जिन मज़ामीर व आलाते मौसिक़ी की मुमानियत अहादीस में वारिद है वो ये हैं मसलन डमरु व घन्टी व घन्टा और घुंघरु वग़ैराह लेकिन ढोल की मुमानियत किसी हदीस से साबित नहीं है अलबत्ता एक हदीस में ढोल के जाइज़ होने का तज़किरा मिलता है।

➡ हज़रत हब्बार (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि उन्होंने अपनी बेटी की शादी की और उनके पास एक ढोल था जिसको वो इस्तेअ़माल कर रहे थे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जब आये और आवाज़ें सुनी तो पूछा ये क्या है ये आवाज़े क्यों आ रही हैं तो कहा गया कि हब्बार ने अपनी बेटी की शादी की है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि निकाह की तशहीर करो निकाह की तशहीर करो ये निकाह है ज़िना नहीं एक रावी कहता है मैंने अलकबरु क्या होता है उन्होंने

कहा अल कबरु ढोल को कहते हैं।
(अल बानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–03/62-ह०-1444)

ढोल को अ़रबी में ''अल कबरु'' कहते हैं और इसकी जमाअ़ किबारुन है और ''तबलुन'' यानी बड़ा ढोल या नक्कारा और इसकी जमाअ़ तुबूलुन है तमाम कुतुबे अहादीस में ढोल के नाजाइज़ होने का ज़िक्र मौजूद नहीं है कुतुबे अहादीस में मौसिक़ी के हवाले से ''मअ़ाज़िफ़'' और ''मज़ामीर'' इन दो लफ्ज़ों का तज़किरा मिलता है मअ़ाज़िफ मेअ़ज़फ़ की जमाअ़ है और इसका माअ़ना है बाजा, खुशी व शादमानी देने वाला आला और मज़ामीर मिज़मार की जमाअ़ है और इसका माअ़ना है बांसुरी, दफ़, साज़, बाजा, मुँह का बाजा और मुतरिबों के साज़ वग़ैराह और बुख़ारी व इब्ने माजा में दफ़ को मिज़मार कहा गया यानी दफ़ भी मज़ामीर में दाख़िल है

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) मेरे घर पर तशरीफ़ लाये तो मेरे पास अन्सार की दो लड़कियाँ दफ़ के साथ जंगे बुअ़ास में अन्सार की बहादुरी के गीत गा रही थीं तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने जब ये देखा तो फ़रमाया कि रसूलुल्लाह के घर में शैतानी बाजा ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र इन्हें रहने दो हर क़ौम की ईद होती है और ये हमारी ईद है। (बुख़ारी–सहीह–1/582-ह०–949)
(बुख़ारी–सहीह–4/153-ह०–3931)
(इब्ने माजा–सुनन–2/37-ह०–1898)
(बैहक़ी–शुअ़बुल–ईमान–4/226-ह०–5110)

माअ़लूम हुआ कि अहादीस में मज़ामीर का ज़िक्र कई जगह मिलता है और मज़ामीर में सिर्फ दफ़ ही नहीं है बल्कि दीगर साज़ और बाजे शामिल हैं जो कि मुबाह हैं मज़ामीर का माअ़ना इस बात पर भी दलालत करता है कि दफ़ के अ़लावा दीगर साज़ और बाजे जिनका नाजाइज़ होना कुरानो सुन्नत से साबित नहीं हैं वो सब जाइज़ और मुबाह के ज़ुमरे में आते हैं और अगर हम मआ़ज़िफ़ के माअ़ने पर ग़ौर करे तो इसका माअ़ना है बाजे और खुशी व शादमानी देने वाले आलात लेकिन इसमें किसी भी आला को ख़ास नहीं किया गया दूसरी बात ये है कि खुशी देने वाला आला तो दफ़ भी है तो दफ़ भी नाजाइज़ हो जायेगी तो हासिल नतीजा है ये है कि जिन आलाते मौसिक़ी की मुमानियत कुरानो सुन्नत से साबित है सिर्फ़ वही आलात नाजाइज़ या हराम है बाक़ी मुबाह चीज़ों की तरह मुबाह हैं वशर्ते वो लह्व व लाअ़व और फुहश कलामी और लग़वियात के लिये न हो और उनसे फ़ित्ने का ख़ौफ़ न हो तो वो जाइज़ व मुबाह हैं और जिन आलात की मुमानियत अहादीस में मज़कूर है उनमें से बाअ़ज़ ये है:-

(1):- **जरसुन- (घण्टी)**
(2):- **जुल्जुलुन- (घुँघरू, जांझ)**
(3):- **दक्काकतुन- (घण्टा)**
(4):- **कूबतुन- (डमरु, डुगडुग़ी)**

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने शराब, जुऐ और डुगडुगी बजाने से मनाअ़ फ़रमाया। (अबू दाऊद-सुनन-4/874-ह०-3685)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया घण्टी शैतान का बाजा है। (मुस्लिम–सहीह–5/312-ह०–5548)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़रिश्ते उन मुसाफ़िरों के साथ नहीं रहते जिनके साथ कुत्ता या घण्टी हो। (मुस्लिम–सहीह–5/311-ह०–5546)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते उस मकान में दाख़िल नहीं होते जिस मकान में घुँघरू या घण्टी हो और फ़रिश्ते उन लोगो के साथ भी नहीं रहते जिनके साथ घण्टा हो। (नसाई–सुनन–3/528-ह०–5228)

तो माअ़लूम हुआ कि मज़कूरा आलात जैसे घण्टी, घुँघरु, घण्टा, डमरु, डुगडुगी बग़ैराह ये भी मज़ामीर में आते हैं तो मज़ामीर के वो आलात जिनकी मुमानियत अहादीस में वारिद है वो ये आलात है न कि ढ़ोलक व हरमोनियम और तबला बग़ैराह तो ये वाज़ेह हुआ कि ढ़ोल बजाना जाइज़ है।

बाअ़ज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़ियादारी करने व ढोल बजाने को बाअ़ज़ उ़ल्मा रोकते व मनाअ़ करते हैं और ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं तो उ़ल्माओं की बात हमें मानना चाहिये से क्योंकि उ़ल्मा वारिसे अम्बिया हैं और उनकी हर बात मानना हम पर लाज़िम है तो

इसका जवाब ये है अगर हम तमाम उ़ल्मा को वारिसे अम्बिया मान लें और उनकी बात पर अ़मल करें तो दीनी व फुरुई उमूर पर अ़मल करना दुश्वार हो जायेगा और दीन इस्लाम की शक्ल मुताबद्दल हो जायेगी और कोई भी फ़िरक़ा दोज़ख़ी न होगा जबकि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी उम्मत के 72 फ़िरक़े दोज़ख़ में जायेंगे व एक जमाअ़त जन्नत में जायेगी जो ताअ़दाद के एतबार से बहुत बड़ी जमाअ़त होगी

करबला के मैदान का वो यज़ीदी लश्कर जिन्होंने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और ख़ानवादा-ए-रसूल को शहीद किया उनमें भी बहुत से उ़ल्मा मौजूद थे क्या उन उ़ल्माओं को वारिसे अम्बिया कहा जायेगा और जो 72 फ़िरक़े जो दोज़ख़ में जायेंगे इनमें भी तो उ़ल्मा मौजूद हैं तो क्या इन उ़ल्माओं को भी वारिसे अम्बिया कहा जायेगा नहीं हरगिज़ नहीं कहा जायेगा हर फ़िरक़े के उ़ल्माओं में मसाइली व अ़क़ाइदी इख़्तिलाफ़ है कोई कहता कि फुलां चीज़ हराम है तो दूसरा कहता कि नहीं फुलां चीज़ हलाल है तो इस तरह अगर हर फ़िरक़े के उ़ल्मा की बात पर अ़मल किया जाये तो दीन की बेशुमार चीज़ें जो कि अस्ल में हलाल हैं वो हराम हो जायेंगी और जो हराम हैं वो हलाल हो जायेंगी और दीनी उमूर का एक बहुत बड़ा हिस्सा दीन से ख़ारिज हो जायेगा और दीन का निज़ाम बिगड़ जायेगा क्योंकि बेशुमार चीज़ों के नाजाइज़ो हराम होने के फ़तवे मौजूद हैं हालांकि वो किसी शरई दलील से साबित नहीं हैं मसलन एक फ़िरक़े के उ़ल्माओं का फ़तवा है कि ईद मीलादुन्नबी मनाना नाजाइज़ और बिदअ़त है तो दूसरे फ़िरक़े के उ़ल्माओं का फ़तवा है कि ताज़ियादारी करना

नाजाइज़ है जबकि दोनो फ़तवे बातिल व बेबुनियाद हैं क्योंकि बिला शरई दलील के हर फ़तवा बातिल होता है

बाअ़ज़ लोग ये कहते हैं कि औलिया किराम ने ताज़ियादारी नहीं की बाअ़द में लोगों ने उनकी तरफ़ मन्सूब करके ये बात किताबों में रक़्म कर दी तो मेरा उनसे ये कहना है कि तुम्हारे अकाबिर उ़ल्माओं ने भी तो ताज़ियादारी को नाजाइज़ नहीं कहा बाअ़द में लोगों ने उनकी तरफ़ मन्सूब करके ये बात किताबों में रक़्म कर दी बल्कि उन्होंने तो ढोल बजाने और ताज़ियादारी करने को जाइज़ व सवाबे दारैन कहा था।

बाअ़ज़ लोग कहते है कि किसी की मौत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाना शरअ़न जाइज़ नहीं व बीवी के लिये शौहर की मौत पर चार महीना दस दिन तक सोग मनाना जाइज़ है इससे ज़्यादा सोग मनाना हराम व नाजाइज़ है हालांकि ये बात बिल्कुल सहीह है लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) तो शहीद हुये हैं और शहीद ज़िन्दा होता है और हमेशा ज़िन्दा ही रहेगा मुसलमान उनके मरने का सोग नहीं मनाता बल्कि वो तो इस बात का ग़म मनाता है कि हजरत इमाम हुसैन और आपके घर वालों और आपके साथियों ने करबला में जो मुसीबतें और तकलीफ़ें उठाईं और आपके जिस्म मुबारक पर बहात्तर (72) से ज़्यादा तलवारों के ज़ख़्म थे और आपके सामने आपके भाई और बेटे व भतीजे भूके प्यासे करबला में शहीद हो गये और आपके भाई हज़रत अ़ब्बास का सीना छलनी कर दिया गया और बाजू काट दिये गये और आपका ख़ानदान करबला में लुट गया और ख़ानवादा-ए-रसूल को कितनी अज़्ज़ियतें दी गई और आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी-

बेटी सय्यदा सकीना की बेहुरमती की गई और बेशुमार अज़िज़यतें दी गईं और ख़ानवादा-ए-रसूल दीन इस्लाम के लिये कुरबान हो गये तमाम शुहदा-ए-करबला भूके प्यासे शहीद हो गये हत्ता कि उन्हें पानी की एक बूँद भी न मिली तो हम इन तमाम बातों का ग़म मनाते हैं और जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला होता है तो इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से मुहब्बत करने वालों की आँखों से आँसू खुद व खुद जारी हो जाते हैं।

बाअ़ज़ लोग तो इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) का ग़म मनाने और उनके ग़म में आँसू बहाने को भी नाजाइज़ व बिदअ़त क़रार देते हैं जबकि हक़ीक़त ये है कि जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला हो और दिल ग़मगीन न हो तो वो दिल इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की मुहब्बत से खाली हैं क्योंकि मुहब्बत का तक़ाज़ा ये होता है कि महबूब के पाँव में काँटा भी चुभे और तकलीफ़ मुहिब को हो और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) ने करबला में कितनी बड़ी-बड़ी बेशुमार तकलीफ़ें उठाईं तो हमें उनका कितना ज़्यादा ग़म होना चाहिये मुहब्बत के कई दरजात होते हैं और उनमें सबसे ऊँचा दर्जा ये कि कोई शख़्स मुहब्बत की तमाम हुदूद को पार करते हुये खुद को अपने महबूब की मुहब्बत में ग़र्क़ कर दे तो यही सच्ची व हक़ीक़ी मुहब्बत होती है।

हज़रत इमाम मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से इंतिहाई मुहब्बत थी तो जब आप मदीने की गलियों से गुज़रते तो वहाँ की दीवारों को चूमते हुये जाते थे जिसके सबब से आपका चेहरा गर्द आलूद हो

जाता था तो वहाँ के लोगों ने आप से कहा कि हज़रत आप ऐसा क्यों करते हैं कि जिससे आपका चेहरा गर्द आलूद हो जाता है हज़रत इमाम मालिक ने फ़रमाया कि मैं अपने महबूब की मुहब्बत के सबब ऐसा करता हूँ क्योंकि जब मेरे आक़ा रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम जब इन गलियों से गुज़रते होंगे तो आपका हाथ मुबारक इन दीवारों से भी लगा होगा इसलिये मैं इन दीवारों को चूमता हूँ क्योंकि इन दीवारों की निसबत मेरे आक़ा सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से है

तो लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा मुम्किन नहीं है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) मदीने की गलियों से गुज़रते हों और अपने दस्ते मुबारक उन दीवारों को लगाते हुये चलते हों फिर इमाम मालिक ने फ़रमाया ठीक है कि ऐसा नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो हो सकता है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के जिस्म अक़दस के कपड़े कोई हिस्सा इन दीवारों से लग गया हो फिर लोगों ने कहा कि ऐसा भी नहीं हो सकता क्योंकि आप हमेशा दीवारों से कुछ दूरी बनाकर चला करते थे फिर इमाम मालिक ने फ़रमाया ठीक है हमने माना कि ये नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो ज़रुर हुआ होगा कि मेरे आक़ा जब इन मदीने की गलियों से गुज़रते होंगे तो इन दीवारों पर आपकी निगाहे रहमत ज़रुर पड़ी होगी फिर लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा भी मुम्किन नहीं क्योंकि जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) चलते थे तो आप अपनी नज़रें हमेशा नीची रखते थे फिर इमाम मालिक ने फ़रमाया कि चलो हमने माना ये भी ठीक है लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे आक़ा

सर‘वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम का जिस गली से गुज़र हो और उस गली की दीवारों ने आपके रुख़े अनवर का दीदार न किया हो और जिन दीवारों ने मेरे महबूब का दीदार किया हो वो ताज़ीमो तकरीम व चूमने के क़ाबिल हैं इसलिये इन दीवारों को चूमना मेरे लिये बेहतरी व ख़ैरो बरकत का बाइस है और ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है

जब हम अपने आक़ा का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सुनते हैं तो हम अपने अगूँठों को चूमकर आँखों से लगाते हैं क्योंकि ये हुजूर से मुहब्बत की अ़लामत है इसी तरह जब आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के बेटे और लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र हो और दिल ग़मगीन और आँखें नम न हों तो ये अ़क़ीदत मन्दों व उनसे मुहब्बत रखने वालों के लिये कैसे मुम्किन हो सकता है बल्कि हक़ीक़त ये है कि जब हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र होता है या जब ताज़िया नज़रों के सामने होता है तो हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से मुहब्बत रखने वाले लोगों के आँसू जारी हो जाते हैं क्योंकि जिस वक़्त ताज़िया उन की नज़रों के सामने होता है उस वक़्त उनका ज़ाहिरी जिस्म तो ताज़िये के नज़दीक होता है लेकिन वो खुद हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और करबला की यादों के ख़्याल व तसव्वुर में खो जाते हैं और उनके दिल ग़मगीन और आँखें आबदीदा हो जाती हैं लेकिन बाअ़ज़ लोग हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ग़म और उनकी याद में रोने पर भी एतराज़ करते हैं और कहते हैं कि किसी के ग़म या किसी की याद में रोना–

नाजाइज़ और बेसब्री की अ़लामत है जबकि अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ग़म व उनकी याद में हज़रत याकूब (अ़लैहिस्सलाम) के रोने को फसबरुन जमील फ़रमाया यानी बेहतर सब्र फ़रमाया हज़रत याकूब (अ़लैहिस्सलाम) कई सालों तक अपने प्यारे बेटे हज़रत यूसुफ की जुदाई के ग़म और उनकी याद में इतना रोये कि रो-रो कर आपकी आँखें सफ़ेद हो गईं और अगर रोना नाजाइज़ या बेसब्री की अ़लामत होती तो अल्लाह सुबहानहू व तआ़ला कुरान मजीद में हज़रत याकूब के रोने को ''फ़सबरुन जमील'' यानी बेहतर सब्र क़रार न देता।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और वो (यूसुफ़ को कुँऐ में फेंककर) अपने बाप के पास रात के वक़्त रोते हुये पहुँचे (और) वो कहने लगे ऐ हमारे बाप कि हम लोग दौड़ में मुक़ाबला करने चले गये थे और हमने यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था उसे भेड़िये ने खा लिया और वो कमीज़ पर झूठा खून लगाकर ले आये (याकूब) ने कहा (कि हक़ीक़त ये नहीं है) बल्कि तुम्हारे (हासिद) नफ़्सों ने एक (बहुत बड़ा) काम तुम्हारे लिये आसान और खुश गवार बना दिया (जो तुमने कर डाला) पस इस हादसे पर सब्र ही बेहतर है और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उस पर जो कुछ तुम बयान कर रहे हो।
(सूरह-यूसुफ़-12/16 ता 18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और याकूब ने उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ (की जुदाई) पर और उनकी आँखें ग़म से रो-रो कर सफेद हो गईं सो वो ग़म को ज़ब्त किये

हुये थे (यानी वो सब्र करते रहे) (सूरह–यूसुफ़–12/84)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ाला ने रोना हक़ व ईमान की अ़लामत क़रार दिया है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

और (यही वजह है कि उनमें बाअ़ज़ सच्चे ईसाई) जब सुनते हैं वो जो रसूल की तरफ़ उतरा तो उनकी आँखें देखो आँसुओं से उबल रहीं हैं इसलिये कि वो हक़ को पहचान गये हैं (और वो) कहते हैं ऐ हमारे रब हम ईमान लाये तू हमें हक़ के गवाहों में लिख ले। (सूरह–मायदा–5/83)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शहादत का जब–जब ज़िक्र किया तब–तब आप ग़मगीन हुये और आपकी चश्मे मुबारक से आँसू जारी हुये व जिस वक़्त जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शहादत की ख़बर दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ये ख़बर सुनकर आबदीदाह हो गये तो इन तमाम दलीलों से ये साबित हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के ग़म व उनकी याद में आँसू बहाना जाइज़ व सुन्नते रसूल और बेहतर अज्र का बाइस है।

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन नुजइ के वालिद एक मर्तबा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ जा रहे थे जब वो सिफ़्फ़ीन की तरफ़ जाते हुये नैनवा के करीब पहुंचे तो हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने पुकार कर फ़रमाया कि

अबू अ़ब्दुल्लाह फ़रात के किनारे पर रुक जाओ तो मैंने पूछा कि ख़ैरियत है फ़रमाया मैं एक दिन नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपकी आंखों से आसुओं की बारिश हो रही थी मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल क्या किसी ने आपको गुस्सा दिलाया है ख़ैर तो है कि आप की आंखों से आंसू बह रहे हैं फरमाया ऐसी कोई बात नहीं है बल्कि अस्ल बात ये है अभी थोड़ी देर पहले मेरे पास से जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) उठ कर गये हैं वो कह रहे थे कि हुसैन को फ़रात के किनारे शहीद कर दिया जायेगा फिर उन्होने मुझसे से कहा कि आप चाहें तो मैं आपको उस मिट्टी की खुश्बू सुंघा सकता हूँ तो उन्होंने अपना हाथ बढ़ा कर एक मुट्ठी भर कर मिट्टी उठायी और मुझे दे दी पस उस वक़्त से अपने आँसुओं पर मुझे काबू नहीं है।
(मुस्नद अहमद–1/337-ह०-648)

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हमारे लिये अपनी आँख से आँसू बहाता है या एक क़तरा गिराता है तो अल्लाह तबारक व तआ़ाला उसके बदले उसे जन्नत अ़ता फ़रमायेगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/382-ह०-1154)

बाअ़ज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़ियादारी यज़ीदी काम है जिस तरह से यज़ीदियों ने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद करके उनके सरे मुबारक को नेज़े पर रखकर घुमाया था ठीक उसी तरह ताज़ियादार भी ताज़िये को घुमाता है तो मैं उन बद अ़क़ीदा रखने वाले लोगों से कहना चाहता हूँ कि जाहिल से जाहिल मुसलमान का भी अ़क़ीदा और नीयत ये नहीं होती कि

वो सरे मुबारक को अपने काँधों पर रखे हुये है बल्कि उसका अक़ीदा और नीयत ये होती है कि जिस तरह रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने प्यारे बेटों और नवासों यानी हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम को अपने काँधे मुबारक पर सवार किया था उसी तरह हम हुसैनी भी रोज़ा-ए-इमाम हुसैन यानी ताज़िये को अपने काँधों पर रख कर बानीयते ज़ियारत घुमाते हैं और जो इस तरह की बात करता है कि यज़ीदियों ने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद करके उनके सरे मुबारक को नेज़े पर रखकर घुमाया था ठीक उसी तरह ताज़ियादार भी ताज़िये को घुमाता है तो ऐसी बात कहने वाला क्या अन्धा है उसे दिखाई नहीं देता जो ताज़िये को हज़रत इमाम हुसैन का सर कहता है और ऐसा वो ही कहेगा जो अहले बैत का दुश्मन और पक्का यज़ीदी होगा।

हदीस पाक में है कि हर इन्सान के आअ़माल का दारो मदार उसकी नीयतों पर मौकूफ़ होता है और अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दे का सिर्फ़ बातिन यानी उसकी नीयतों को देखता है कि मेरे बन्दे की नीयत व इरादा क्या है और अल्लाह तआ़ला इन्सान को उसके नेक आअ़मालों का बदला उसके ज़ाहिरी आअ़माल को देखकर नहीं देता बल्कि उसकी नेक नीयतों को देखकर अ़ता करता है जैसे अगर कोई शख़्स अपनी इ़बादत व नेक अ़मल लोगों को दिखाने के लिये करता है तो उसे अपनी इ़बादत व नेक अ़मल का कोई भी अज्र (बदला या सवाब) नहीं मिलेगा क्योंकि हर नेक अ़मल के लिये नेक नीयत का होना ज़रुरी है।

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आअ़माल का मदार नीयतो पर है और हर शख़्स को उसकी नीयत के मुताबिक़ ही अज्र मिलेगा। (बुख़ारी–सहीह–1/69–ह०-01)
(मुस्लिम–सहीह–3/775-ह०-4927)

जिस तरह हम अपनी आँखों से माँ बहन बेटी बीवी वग़ैराह को देखते हैं लेकिन उन तमाम लोगों को देखने की नज़र व नीयत अलग–अलग होती है अगर कोई शख़्स ये कहे कि कोई शख़्स अपनी आँखों से तमाम लोगों को अलग–अलग नज़र से कैसे देख सकता है क्योंकि आँखें तो दो ही होती हैं तो ये उसकी जहालत और बद नीयती और बद गुमानी की दलील है क्योंकि आँखें दो हैं निगाह एक है लेकिन उस निगाह में नीयतें हज़ारों हैं और जो लोग ताज़िये के बारे में इस तरह का ख़्याल करते हैं कि इमाम हुसैन का सरे मुबारक को लोग लिये घूमते हैं तो ये उनकी बद नीयती और बद गुमानी है और बद गुमानी सख़्त गुनाह है उन्हें चाहिये कि इस तरह के बुरे ख़्यालात व बद नीयतों और बद गुमानियों से बचें और इस तरह के गुनाहों से इजतिनाब करें ताकि अल्लाह तअ़ाला की नाराज़गी और गुनाहों से महफ़ूज़ रहें और ताज़िये को ताज़ीमो तकरीम की नज़र से देखें।

बाअ़ज़ लोग कहते हैं कि शरअ़ में ताज़ियादारी की कुछ असल नहीं और ये फ़ेअ़ल बिदअ़त व नाजाइज़ है तो मैं उनसे ये पूँछना चाहता हूँ कि कुरान व हदीस और फ़िक़ा में इसकी मुमानियत कहाँ पर आई है हालाँकि गुज़िश्ता सफ़हात पर कुरान व हदीस की रोशनी में ये

बात साबित हो चुकी है कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है और कुरान मजीद की सूरह हज की आयात से भी वाज़ेह हो चुका है

कि कायनात हर वो चीज़ अल्लाह तआ़ला की निशानी है जिसे देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें तो ताज़िये को देखकर इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की याद आना इस बात पर दलालत करता है कि ताज़िया भी अल्लाह तआ़ला की निशानी है और जो लोग अल्लाह तआ़ला की निशानियों और यादगारों का इहतिमाम करते हैं ये फ़ेअ़ल उनके दिलों का तक़वा है यानी ताज़िया बनाना व लोगों को उसकी ज़ियारत कराना एक अच्छा व बेहतरीन और महबूब व मक़बूल अ़मल है।

और अहादीस मुबारका से भी ये बात साबित हो चुकी है कि जिस काम के लिये अल्लाह व रसूल ने ख़ामोशी इख़्तियार की है या जिन उमूर (कामों) की हमें मुमानियत नहीं फ़रमायी वो काम हमारे लिये मुआ़फ़ हैं ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की ख़ामोशी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़ियादारी नाजाइज़ नहीं बल्कि जाइज़ व सवाबे दारैन है और ताज़ियादारी करना ये हमारी इमाम हुसैन से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत है और जिसे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम से मुहब्बत हो वो ताज़ियादारी करे और उनकी यादगार मनाये और जिसे उनसे मुहब्बत न हो तो वो उनकी यादगार न मनाये।

दुनिया में बहुत से काम दीन में नये हुये हैं जो कुरान व हदीस से साबित नहीं लेकिन वो तमाम काम

दीन और मुसलमानों के लिये फ़ायदेमन्द साबित हुये हैं और वो तमाम काम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के बाअ़द विसाल ज़हूर में आये जैसे कुरान का एक साथ जमाअ़ होना कुरान मजीद के हरुफ़ पर ज़ेर, ज़बर, पेश, वग़ैराह का लगाना जुमाअ़ के दिन वक़्ते जुमाअ़ एक और अज़ान का इज़ाफा करना व मस्ज़िदों में औ़रतों का न आना व जमाअ़त में औ़रतों की शिर्कत से मुमानियत, रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करना वग़ैराह और जिस नये काम को करने से दीन या मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचे वो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतर व पसंदीदा होते हैं और इसे बिदअ़ते हसना कहते हैं यानी अच्छी बिदअ़त और दीन में नया वो काम जिससे दीन या मुसलमानों को नुकसान पहुँचे उसे बिदअ़ते सय्या कहते हैं यानी बुरी बिदअ़त इसलिये सबसे पहले हमें बिदअ़त की ताअ़रीफ़ व इसका माअ़ना व मफ़हूम और इसकी अक़साम को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये ताकि किसी अच्छे या बुरे काम में फ़र्क़ करने में हमसे ग़लती न हो और किसी काम को बुरा कहने से पहले अच्छी तरह समझ लें कि ये काम अच्छा है या बुरा और सहीह है या ग़लत और ये बिदअ़ते हसना है या बिदअ़ते सय्या तब इसके बाअ़द हम किसी भी काम के मुताअ़ल्लिक़ अच्छा या बुरा ख़्याल करें यही सहीह और अच्छा तरीक़ा है और यही दीन व मुसलमानों के हक़ में बेहतर है।

–: बिदअ़त की ताअ़रीफ़ :–

बिदअ़त का माअ़ना है नई चीज़ ईजाद करना यानी ऐसी चीज़ का ईजाद करना जिसका पहले से कोई

वुजूद या मिस्ल न हो अल्लाह तआ़ला ने हर शैः की तख़लीक़ की जो पहले से वुजूद में न थी और न ही उसकी मिस्ल कोई चीज़ थी तो इस एतवार से कायनात की हर शैः बिदअ़त हुई जब अल्लाह तआ़ला ने आदम (अ़लैहिस्सलाम) की तख़लीक़ की तो वो भी बिदअ़त है क्योंकि आदम (अ़लैहिस्सलाम) से पहले इन्सानी वुजूद ही नहीं था और न ही उसका कोई मिस्ल था तो इस एतवार से तख़लीक़े इन्सानी भी बिदअ़त है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(वो अल्लाह) आसमानों व ज़मीनों को पैदा करने वाला है (कि जिसने कुछ नहीं से सब कुछ बना दिया) और जब वो किसी काम इरादा फ़रमाता है तो उसको यही फ़रमाता है कि हो जा पस वो हो जाता है।
(सूरह-बक़राह-2/117)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
वही आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है।
(सूरह-अनआ़म-6/101)

तो माअ़लूम हुआ कायनात की हर शैः बिदअ़त है अल्लाह तआ़ला जो किसी ऐसी चीज़ को वुजूद में लाये जो कि पहले से मौजूद न हो तो उस चीज़ को बदीअ़ कहते हैं और उस नई चीज़ के बनाने वाले को मूजिद कहते हैं दीन में वो नया काम बिदअ़ते ज़लालत और मरदूद है जो अहकामे कुरान व सुन्नत के ख़िलाफ़ हो और किसी तरह से उसका तअ़ाल्लुक़ दीन से न हो या वो नये काम जो कुरान व सुन्नत के हुदूद को तोड़ते हों या वो नये काम जिससे दीन या उम्मते मुस्लिमा को नुक़सान पहुँचे वो तमाम नये काम बिदअ़ते ज़लालत व

बिदअ़ते सय्या हैं यानी बुरी बिदअ़त हैं और दीन में वो तमाम नये उमूर जिससे दीन को या मुसलमानों को दुन्यावी या उख़रवी फ़वाइद हासिल हों या वो नये उमूर जो ज़रियाए सवाब या ख़ैर का बाइस बनें या वो नये उमूर जिनके सबब से लोग दीन और नेक आअ़माल की तरफ़ राग़िब हों और जिसके ज़रिये उनके दिलों में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल और अह्ले बैत की शानो अ़ज़मत और मुहब्बत में इज़ाफ़ा हो और दीन में वो नये काम जिसके सबब से लोग शर व बुराई और गुनाहों से तौबा व इजतिनाब करें और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के फ़रमां बरदार बन्दे बनें और कुरान व सुन्नत के अहकामात पर गामज़न हों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात व शहवात को तर्क करें और आख़िरत की तरफ़ माइल हों तो ऐसे तमाम नये उमूर जो किसी भी तरीक़ से कुरानो सुन्नत के खिलाफ़ न हों तो वो तमाम नये काम बिदअ़ते हसना हैं यानी अच्छी बिदअ़त हैं जो बाइसे अज्रे अ़ज़ीम हैं।

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के विसाल के बाअ़द से लेकर आज तक हज़ारों दीनी व शरई अहकाम और मुआ़मलात में वक़्त के तक़ाज़े व हालात के मद्दे नज़र उनमें फेर बदल किया गया और दीन में कसीर ताअ़दाद में नये उमूर शामिल किये गये जिन्हें फुक़हा व आइम्मा और उ़ल्मा ने उन तमाम कामों को जाइज़ क़रार दिया और दीन में शामिल नये उमूर और दीनी व शरई अहकाम में फेर बदल किया और ये उम्मते मुस्लिमा की भलाई व बेहतरी के लिये ऐसा किया गया जो बारगाहे खुदा वन्दी में मक़बूल हैं और जिनके करने से मुसलमान फ़ैज़याब हुये व सवाबे दारैन के मुस्तहिक़ बने।

दीन में हर नया काम जिसकी अस्ल कुरान व हदीस में न हो अगर उसे विदअ़ते ज़लालत शुमार किया जाये तो दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़रुरियात और इस्तेअ़माल में आने वाली हज़ारों चीज़े वो सब नाजाइज़ हो जायेंगीं क्योंकि वो कुरानो सुन्नत से साबित नहीं इसके अ़लावा ताअ़लीमाते दीन व शरीअ़त का ज़्यादातर हिस्सा बिदअ़ते ज़लालत और बिदअ़ते सय्या के जुमरे में आ जायेगा।

इसके अ़लावा इजतिहाद की तमाम सूरतें व क़ियास और इस्तिंम्बात व इस्तिदलाल की जुमला तमाम शक्लें सब नाजाइज़ हो जायेंगी इसी तरह उ़लूम व फुनून में मसलन उसूले तफ़्सीर व अहादीस और फ़िक़ा व उसूले फ़िक़ा की तालीफ़ व तदरीस व इ़ल्मे सर्फ़ व नह्व की ताअ़लीम सब नाजाइज़ व बिदअ़ते ज़लालत हो जायेगी क्योंकि इनकी अस्ल कुरान व अहादीस में नहीं है और न आसारे सहाबा से साबित है बल्कि इन्हें वक़्त और हालात के तक़ाज़े के तहत इन्हें वज़अ़ किया गया है इसके अ़लावा मदरसों की ताअ़मीर व ताअ़लीम सब बिदअ़ते ज़लालत व नाजाइज़ के जुमरे में आ जायेगी क्योंकि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम और सहाबाकिराम से मदारिस की ताअ़मीरात व ताअ़लीमात साबित नहीं है।

इसके अ़लावा एक मजलिस की इकट्ठी दी हुईं तीन तलाक़ों का तीन ही वाक़ैअ़ होने का हुक्म होना और ज़कात में कागज़ के नोटों और सिक्कों का चलन व हज के लिये हवाई जहाज़ व रेलगाड़ी और बस व कार से सफ़र करना और चार सिलसिले यानी हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, व हम्बली और इसके अ़लावा नमाज़े तरावीह का जमाअ़त से अदा करना रोज़े जुमाअ़ ख़ुत्बे

की अज़ान से पहले एक और अज़ान का इज़ाफ़ा होना कुरान को तीस पारो की शक्ल देना व कुरान के हरफ़ पर एअ़राब यानी ज़ेर ज़बर पेश वग़ैराह का लगाना व दस्तार बन्दी करना और कराना सनद लेना व अहादीस को किताबी शक्ल देना वग़ैराह ये मज़कूरा तमाम उमूर कुरानो सुन्नत से साबित नहीं मगर जाइज़ व मुबाह हैं

➡हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल क़ारी फरमाते हैं कि मैं हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के साथ रमज़ान की एक रात में मस्जिद की तरफ़ निकला तो लोग मुताफ़र्रिक नमाज़ पढ़ रहे थे तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि मेरे ख़्याल में इन्हें एक क़ारी के पीछे जमाअ़ कर दिया जाये तो अच्छा होगा तो हज़रत उबई बिन काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पीछे सबको जमाअ़ कर दिया गया और फिर मैं एक दूसरी रात को उनके साथ निकला तो देखा कि लोग अपने क़ारी के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे तो हज़रत उ़मर फ़ारुक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने (इस इज्तिमाई इ़बादत को देखकर) फ़रमाया कि ये कितनी अच्छी बिदअ़त है।
(बुख़ारी–सहीह–2/446-ह०-2010)
(बैहक़ी शुअ़बुल ईमान–3/148–ह०-3269)

फिर हमने उन रसूलों के नुक़ूशे क़दम पर दूसरे रसूलों को भेजा और हमने उनके पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा हमने उन्हें इन्जील अ़ता फ़रमाई और हमने उन लोगों के दिलों में जो उनकी (यानी ईसा बिन मरयम की सहीह) पैर‘वी कर रहे थे उनके दिलों में शफ़क़त व रहमत पैदा कर दी और रुहबानियत यानी इ़बादते इलाही के लिये तर्के दुनिया व लज़्ज़्तों से किनारा कशी

की बिदअ़त उन्होने खुद ही बज़अ़ कर ली थी हमने उसे फ़र्ज़ नहीं किया था मगर उन्होंने ये बिदअ़त महज़ अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिये वज़अ़ की थी (इसलिये हमने उसे कुबूल कर लिया) लेकिन वो इसके जुमला तक़ाजों और आदाब का लिहाज़ क़ायम न रख सके तो उनमें से जो लोग ईमानदार थे हमने उनको अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाया। (सूरह–हदीद–57/27)

मज़कूरा आयते करीमा इस बात पर दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने के सबब जो बिदअ़त ईजाद की जाती है वो बारगाहे खुदा वन्दी में शरफ़े मक़बूलियत पाती है और बेहतरीन जज़ा का सबब बनती है हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की उम्मत पर रुहबानियत फ़र्ज़ नहीं की गई थी बल्कि बाअ़द के लोगों ने इसे खुद बिदअ़त के तौर पर रज़ाऐ इलाही के हुसूल के सबब ईजाद कर लिया था तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उसे हराम या नजाइज़ नहीं फ़रमाया बल्कि जिन लोगों ने इस बिदअ़ते हसना का कामिल इहतिमाम किया और उसके तक़ाज़ो पर खरे उतरे तो अल्लाह तआ़ला ने उनका ये अ़मल कुबूल फ़रमाया और उनको अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाया।

मज़कूरा दलाइल से ये वाज़ेह हुआ कि ताज़ियादारी करना अच्छी बिदअ़त है जो बाइसे अज्रो सवाब है कि इस अ़मल से दिलों में अह्ले बैत अत्हार की मुहब्बत का मज़ीद इज़ाफ़ा होता है और हज़रत इमाम हुसैन व शुहदाए कर्बला की यादें ताज़ा होती हैं कर्बला की यादें हमें ये बताती हैं कि किस तरह हज़रत इमाम हुसैन अपनी व अपनी औलाद और भाई भतीजों व साथियों की कुर्बानी देकर इस्लाम की बक़ा के मुहाफ़िज़ बने।

-: बिदअ़त की अक़साम :-

बिदअ़त की कई क़िस्मे हैं बिदअ़ते हसना यानी अच्छी बिदअ़त और दूसरी बिदअ़ते सय्या यानी बुरी बिदअ़त

बिदअ़ते मुबाहः- जो अ़मल बिदअ़ते हसना व बिदअ़ते सय्या में से न हो और शरीअ़त ने जिसे मनाअ़ भी न किया हो उसे बिदअ़ते मुबाह (जाइज़) कहते हैं जैसे- नमाज़ के बाद मुसाफ़ाह करना, उ़म्दाह उ़म्दाह खानों में वुस्अ़त करना और हर वो नया काम जिसकी शरीअ़त में मुमानियत न हो।

बिदअ़ते वाजिबाः- वो अम्र जो नया तो हो लेकिन दीन की ज़रुरत बन जाये तो उसे बिदअ़ते वाजिबा कहते है जैसे इ़ल्मे सर्फ़ व नह्व का सीखना व सिखाना ताकि उसके ज़रिये कुरआ़नी आयात व अहादीस के माअ़नी की सहीह पहचान हो और कुरान व हदीस को समझने में आसानी हो इसके अ़लावा उसूले फ़िक़ा की तदवीन यानी अहकामे शरीअ़त को किताबी शक्ल में जमाअ़ करना ताकि लोगों को शरीअ़त के अहकाम को जानने व समझने में सहूलियत व आसानी हो और लोग उस पर अ़मल पैरा हों और कुरान के हरुफ़ पर एअ़राब लगाना जैसे ज़ेर ज़बर और पेश वग़ैराह लगाना ताकि अल्फाज़ों के समझने में आसानी हो और उसूले तफ़्सीर उसूले हदीस और फ़िक़ा व उसूले फ़िक़ा व दीगर उ़लूम की ताअ़लीम का इहतिमाम करना वग़ैराह।

बिदअ़ते मुस्तहबः- वो नया काम जो कि शरीअ़त में मुस्तह्सन और पसंदीदा हो यानी वाजिब की तरह और

शरअ़न ममनूअ़ न हो और मुसलमान उसे अच्छा और बेहतर जानते हों उसे बिदअ़ते मुस्तहब (मुस्तहसन व पसंदीदा और बेहतर) कहते हैं जैसे–मुसाफ़िर ख़ानों व मदरसों का ईजाद करना, बा जमाअ़त नमाज़े तरावीह पढ़ना और हर वो काम जो शरअ़न मनाअ़ न हो और जिसको मुसलमान अच्छा व बेहतर और बाइसे ख़ैर व सवाब जानते हों जैसे जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाना व मीलाद पढ़ना, अल्लाह तआ़ला के नेक सालिहीन और महबूब व मक़बूल बन्दों की यादगार मनाना ताज़ियादारी करना व औलियाए किराम व बुर्जुगानेदीन की मज़ारात पर हाज़िरी व नज़रो नियाज़ करना, अज़ान के बाअ़द सलातो सलाम पढ़ना और बुर्जुगों के नाम से जलसे व उ़र्स का मुनअ़क़िद करना वग़ैराह हैं।

बिदअ़ते मकरुहः–वो नया काम जिससे सुन्नते मुअ़क्क़दा का तर्क हो उसे बिदअ़ते मकरुह तहरीमी कहते हैं और जिससे सुन्नते ग़ैर मुअक्क़दा का तर्क हो उसे बिदअ़ते मकरुह तंजीही कहते हैं जैसे मस्जिदों को फ़ख़्र के तौर पर ज़ैब व ज़ीनत से आरास्ता करना वगैराह।

बिदअ़ते हरामः– वो नया काम जिससे कोई वाजिब तर्क हो जाये यानी वाजिब को मिटाने वाली या फिर वो नया काम जो कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो जिससे दीन में फ़ित्ना व इंतिशार पैदा हो उस काम को बिदअ़ते हराम कहते हैं इनमें अह्ले बिदअ़त की नफ़्सानी ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ (पैर‘वी) में नये मज़हब और फ़िरक़े बने।

मज़कूरा दलाइल से साबित हुआ कि हर नया काम बुरा नहीं है बल्कि जिससे दीन को या मुसलमानों को दुन्यावी व उख़रवी नुक़सानात का ख़दशा हो वो बिदअ़ते

सय्या हैं और हर वो काम जो शरअ़न ममनूअ़ न हो वो जाइज़ है और हर वो काम जिससे मुसलमानों और दीन को दुन्यावी या उख़रवी फ़वाइद हासिल हों और वो काम कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ भी न हो तो वो काम बिदअ़ते हसना है यानी अच्छी बिदअ़त है।

➡ जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने इस्लाम में किसी नेक काम की इब्तिदा की उसको अपने अ़मल का भी अज्र मिलेगा और बाअ़द में अ़मल करने वालों का भी अज्र मिलेगा और उन अ़ामलीन (अ़मल करने वालों) के अज्र में कोई कमी न होगी व जिसने इस्लाम में किसी बुरे अ़मल की इब्तिदा की उसे अपने अ़मल का भी गुनाह होगा और बाद में अ़मल करने वालों का भी गुनाह होगा और उन अ़ामलीन के गुनाहों में कोई कमी न होगी। (नसाई–सुनन–4/167–ह०-2558)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/441–ह०-2675)
(मुस्लिम–सहीह–6/264–ह०-6800)
(इब्ने माजा–सुनन–1/102–ह०-203)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/248–ह०-2384)
(अब्दुर्रज़्ज़ाक–अल मुसन्निफ़–11/466–ह०-21025)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–2/350–ह०-9802)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के दिलों को देखा तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का दिल सब बन्दों के दिलों से बेहतर पाया इसके बाअ़द अल्लाह तआ़ला फिर मुतावज्जे हुआ और रसूलुल्लाह के गुलाम सहाबा के दिलों को बेहतर–

पाया और उनको अपने दीन के लिये चुना पस जिस काम को मुसलमान अच्छा जाने वो अल्लाह तआ़ला के यहाँ भी अच्छा होता है और जिस काम को मुसलमान बुरा ख़्याल करें वो अल्लाह के यहाँ भी बुरा होता है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/174–ह०-4465)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/798–ह०-3602)
(मुस्नद अहमद–3/505–ह०-3600)

पस मज़कूरा कुरान व हदीस और आसारे सहाबा और इल्मी दलाइल से ये बात साबित और वाज़ेह हुई कि ताज़ियादारी करना बिदअ़ते हसना व जाइज़ और सवाबे दारैन है इसके अ़लावा हर वो चीज़ जाइज़ है जिसकी मुमानियत कुरान व अहादीस में न हो या जिस अम्र पर सुन्नी सहीउल अ़क़ीदा उ़ल्माओं का इज्माअ़ क़ायम न हो सके यानी किसी अम्र की मुमानियत के इज्माअ़ पर उल्माओं का मुत्तफ़िक़ न होना भी उस अम्र के जाइज़ होने की दलील होती है।

अल्लाह तआ़ला हम तमाम ग़ुलामाने रसूल व ग़ुलामाने आले रसूल के दिलों को अपनी व अपने महबूब रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) व अहले बैत अत्हार की इंतिहाई मुहब्बत से लबरेज़ फ़रमादे व अपने महबूब व मक़बूल और मख़्सूस बन्दों से सच्ची अक़ीदत व मुहब्बत का हामिल बनादे और दीनी उ़लूम को समझने और उस पर अमल पैरा होने और हक़ व बातिल और सहीह व ग़लत में फ़र्क़ करने की तौफीक़ मरहम्त फ़रमाये और हमारी अ़क़्लो फ़हम को फ़ित्नों व शैतान के शर से महफ़ूज़ रखे और हम मुसलमानों की अपने महबूब के सदक़े व तुफ़ैल बख़्शिश फ़रमादे और सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमां।

बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं जो जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाते हैं व उसको जाइज़ व सवाबे दारैन अ़मल कहते हैं और ताज़ियादारी से रोकते व इसको नाजाइज़ कहते हैं नाना की यादगार मनाना और नवासे की यादगार न मनाना क्या ये सही व दुरस्त है यानी नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की यादगार मनाने को जाइज़ कहना और उनके नवासे हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाने को नाजाइज़ कहना क्या ये हक़ व इंसाफ़ की बात है बल्कि ऐसा कहना हज़रत इमाम हुसैन से मुहब्बत करने व अ़क़ीदत रखने वालों पर जुल्म व ज़्यादती है हज़रत इमाम हुसैन की यादगार हम जुलूसे ताज़िया की शक्ल में मनाते हैं जैसे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की आमद की यादगार हम जुलूस की शक्ल में मनाते हैं तो इसमें हम क्या बुरा करते है जो लोग हमें इससे रोकते और बिदअ़त और नाजाइज़ होने का फ़तवा देते हैं।

हालाँकि हक़ीक़त ये है कि जब हम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अहले बैत की मुहब्बत में यादगारे हुसैन मनाते और जुलूसे ताज़िया निकालते हैं तो हमारा ये फ़ेअ़ल अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतरीन व पसंदीदा है और इस फ़ेअ़ल के इहतिमाम करने से हमारे आक़ा नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को बहुत ज़्यादा खुशी मिलती है और रसूलुल्लाह को खुश करना गोया अल्लाह तआ़ला को खुश व राज़ी करना है और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को खुशी पहुँचाने के सबब हमें उनकी कुर्बत नसीब होती है जो हमें कुर्बे इलाही की मन्ज़िल तक पहुँचाती है हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार मनाने से हमारे दिलों में-

मौजूद उनकी मुहब्बत और ईमान में पुख़्तगी व निखार आता है और इससे हमारे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के दरमियान रिश्ताए मुहब्बत में मज़बूती आती है और ये मज़बूती हमें रसूलुल्लाह व उनके अहले बैत अत्हार के क़रीब कर देती है और हमारे दिल रसूलुल्लाह और अहले बैत की मुहब्बत से मुनव्वर होते हैं और ये मुहब्बत क़यामत के दिन हमारे लिये शफ़ाअ़त का बेहतरीन ज़रिया होगी।

बाअ़ज़ लोग अहले बैत अत्हार से इतनी बड़ी दुश्मनी रखते हैं कि ताज़िया व अ़लम को ग़ैर मुस्लिमों के झन्डों की मिस्ल कहते हैं इस तरह ग़ैर मुस्लिमों से मुशाबहत देना ये उनकी मुनाफ़िक़त को ज़ाहिर करता है जबकि ग़ैर मुस्लिमों से हर मुशाबहत मनाअ़ नहीं है बल्कि बुरी बातों में मुशाबहत मनाअ़ है हम भी आवे ज़म ज़म मक्का से लाते हैं और ग़ैर मुस्लिम भी गंगा से गंगा जल लाते हैं हम भी मुँह से खाते हैं हाथों से काम करते हैं पैरों से चलते हैं और ग़ैर मुस्लिमों का तरीक़ा भी यही है ग़रज़ ये है कि हज़ारों काम जो ग़ैर मुस्लिम करते हैं वो मुसलमान भी करते हैं मगर दोंनों के अ़क़ीदे व नियतें मुताफ़र्रिक़ होती हैं

बाअ़ज़ लोग कहते हैं कि ताज़ियादारी में कुछ ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर शामिल हैं इसलिये ताज़ियादारी नाजाइज़ है जबकि अहकामे शरई व उसूले शरई के मुताबिक़ किसी काम में नाजाइज़ चीज़ों के शामिल होने की वजह से अस्ल जाइज़ काम नाजाइज़ नहीं होता फ़तह मक्का से पहले ख़ाना-ए-काअ़बा में बुत थे और सफ़ा मर‘वाह पर भी बुत थे लेकिन बुतों की वजह से मुसलमानों ने हज व उ़मराह करना नहीं छोड़ा अगर इसमें कुछ काम

ख़िलाफ़े शरअ़ हैं तो हमें चाहिये उन कामों से परहेज़ करें और ताज़ियादारी में शामिल बुराइयों को दूर करने की हत्तल इमकान कोशिश करें लेकिन इस वजह से ताज़ियादारी को नाजाइज़ या बिदअ़त कहना गोया इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और शुहदाए करबला से निफ़ाक़ और बुग्ज़ रखने की दलील है।

जिन बुराईयों की वजह से बाअ़ज़ लोग जुलूसे हुसैनी या रोज़ाए इमाम हुसैन (ताज़िये) को नाजाइज़ या हराम कहते हैं और फ़तवा देते हैं तो मैं उनसे एक सुवाल करता हूँ ठीक इसी तरह की बुराईयाँ दीगर कामों में भी पायी जाती है तो वो लोग उन कामों को नाजाइज़ व हराम क्यों नहीं कहते और उन कामों पर नाजाइज़ व हराम का फ़तवा जारी क्यों नहीं करते क्या ये हक़ और इंसाफ की बात है।

मिसाल के तौर पर बाज़ार में दुकानदार से ज़रुरत का सामान ख़रीदने के लिये बहुत सी ना मेहरम औ़रतें भी आती हैं और दुकानदार अपनी सौदा फ़रोख़्त करने के लिये उन औ़रतों से बातचीत भी करता है और उनमें अक्सर औ़रतें बे पर्दा होती हैं और सौदा को परखने और समझने फिर सौदा को अपनी पसन्द के मुताबिक़ इन्तेख़ाब करने और सौदा की क़ीमत तय करने यानी इस दरमियान दुकानदार और औ़रत कुछ वक़्त बाहम गुफ़्तगू करते हैं और दोनो लोगों की निगाहें एक दूसरे पर कई बार पड़ती हैं और कभी-कभी तो दिल में बद ख़्याली भी पैदा होती है और बाअ़ज़ औक़ात दुकानदार मर्द की बदनिगाह व बदख़्याली उसे बुराई व गुनाह की तरफ़ ले जाती है और वो ज़िना जैसी बड़ी बुराई और अ़ज़ीम गुनाह की इरतिकाब कर बैठता है और वो इस

अ़ज़ीम गुनाह के मुरतकिब हा जाता हैं और कुछ लोग तो झूठ, फ़रेब, धोका, बेईमानी पर मुश्तमिल अपनी सौदा को बेचते हैं और हराम माल कमाते हैं और ये तमाम बातें बुराई व गुनाह हैं तो क्या इन सब बुराईयों की वजह से तिजारत करना व ख़रीद फ़रोख़्त नाजाइज़ व हराम होगा- हरगिज़ नहीं होगा।

इसी तरह जब हम बाज़ार में जाते हैं तो रास्तों और बाज़ारों में बहुत सी अ़ौरतें बे पर्दा घूमती हैं या जब हम सफ़र पर जाते हैं तो रास्तों में रेलवे प्लेटफार्म पर, ट्रेनों में, बसों में, हवाई जहाज़ पर अक्सर अ़ौरतें बे पर्दा होती हैं और अक्सर लोगों की बद निगाह उन अ़ौरतों पर पड़ती है और दिल में बुरे ख़्यालात पैदा हो जाते हैं इसके अ़लावा दीगर बेशुमार बुराईयाँ बाज़ारों और सफ़र के रास्तों के दरमियान हाइल होती हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से बाज़ार जाना या सफ़र करना हराम व नाजाइज़ होगा- हरगिज़ नहीं होगा।

बुराई तो शैतान की तरह हर जगह मौजूद है तो क्या हर जगह जाना बुरा और गुनाह है बल्कि हमें चाहिये कि जिन अच्छे और सवाब के कामों के साथ बुराई भी जुड़ी हुई हो तो हम सिर्फ़ बुराई से बचें व अच्छे कामों के साथ बुराई जुड़ी होने की वजह से अच्छे कामों को तर्क न करें यही अ़क्लमन्दी की अ़लामत है और दुनिया व आख़िरत में हमारे लिये बेहतर व ख़ैरो बरकत और अज्रो सवाब का बाइस है।

हदीस पाक में है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने बाज़ार को ज़मीन पर सबसे बुरी जगह बताया लेकिन कभी बाज़ार जाने या बाज़ारों में-

तिजारत करने को मनाअ़ नहीं फ़रमाया बल्कि बाज़ार और तिजारत में वाकैअ़ होने वाली बुराईयों व गुनाहों से बचने की हमें ताकीद फ़रमाई तो यही तरीक़ा हमारा भी होना चाहिये कि हम खुद को बुराईयों और गुनाहों से पाक रखने की हर मुमकिन कोशिश करें और उन अच्छे कामों को करना न छोड़े जिनसे कुछ बुराईयाँ भी वाबस्ता हों।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा जगह मस्जिद और सबसे बुरी जगह बाज़ार है।
(मुस्लिम–सहीह–2/205-ह०-1528)

इसी तरह शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब भी कई तरह की बुराइयों और गुनाहों पर मुश्तमिल होती हैं लेकिन ताज़िया और जुलूसे हुसैनी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोगों को वहाँ कोई बुराई नज़र नहीं आती है बल्कि वो लोग उम्दाह लिवास ज़ैबे तन करके उन तक़रीबों में शिर्कत करते और खाते पीते बैठते उठते और लोगों से गुफ़्तगू करते और निकाह पढ़ाते और नज़राना हासिल करते और उन्हें मुबारक बाद देते और वो कभी भी ऐसी जगहों से एअ़राज़ नहीं करते ख़्वाह वहाँ खड़े होकर खाना पीना हो या औ़रतों की बेपर्दगी हो मर्दों व औ़रतों का बाहम हंसी मज़ाक, आतिशबाजी मर्दों व औ़रतों का इख़्तिलात, बैन्ड़ बाजा व दीगर ग़ैर मुस्लिमों की बुरी रस्में हों लेकिन वो लोग इन तमाम बुराइयों व गुनाहों से बे पर‘वाह रहते हैं और लोग रोज़ बाज़ार जाते हैं और साल भर में सैंकड़ों शादी ब्याह व

दीगर तक़ारीब में शिर्कत करते हैं लेकिन बाज़ार और शादी ब्याह वग़ैराह में उन्हें कोई भी काम ख़िलाफ़े शरअ़ दिखाई नहीं देता और न ही कोई बुराई नज़र आती है और जुलूसे हुसैनी (ताज़िये) तो साल में एक बार ही निकलते हैं तो उन्हें इसमें सेंकड़ों बुराइयाँ दिखाई देती हैं हालाँकि हम पर ये वाजिब है कि हम जहाँ कहीं भी कोई बुराई व गुनाह या ख़िलाफ़े शरअ़ काम को देखें तो उसे अपनी ताक़त के मुताबिक़ रोकने की हत्तल इमकान कोशिश करें ख़्वाह बाज़ार हो, शादी ब्याह हो या जुलूसे हुसैनी हो या दीगर कोई भी मजालिस या तक़ारीब हो लेकिन बुराई के साथ अच्छाई को भी ख़त्म करना ये हिमाक़त और कम इल्मी की दलील है और हमें इससे इजतिनाब (परहेज़) करना चाहिये।

हालाँकि शरीअ़त हमें इस बात की क़तअ़न इजाज़त नहीं देती कि अगर किसी अच्छे व नेक काम के साथ बुराई जुड़ी हो तो उस अच्छे काम को हराम या नाजाइज़ क़रार दिया जाये बल्कि जो काम शरअ़न जाइज़ हैं या जिस काम को अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने जाइज़ व हलाल क़रार दिया या जिस काम की अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने हमें मुमानिअ़त नहीं फ़रमाई तो उस काम को किसी भी सूरत नाजाइज़ या हराम गुमान करना भी सख़्त गुनाह है और हर अच्छे काम का सवाब मिलता है और हर बुरा काम गुनाह है इसलिये हमें चाहिये कि बुरे कामों से परहेज़ करें और अच्छे कामों की तरफ़ राग़िब हों और ताज़िया जो कि अस्ल में हज़रत इमाम हुसैन के रोज़ाए पाक से निस्बत रखता है तो ताज़िये की ताअ़ज़ीमो तकरीम करना और इमाम हुसैन की यादगार मनाना और जुलूसे हुसैनी में ताज़िये की ज़ियारत करना व लोगों को ज़ियारत कराना

यह एक अच्छा अ़मल है जो बेहतर अज्र का बाइस है इसलिये हमें चाहिये कि इस अ़मल को बड़े जोश और मुहब्बत और खुलूस और इहतिमाम के साथ करें इंशा अल्लाह हम और आप इस अच्छे अ़मल का बेहतरीन अज्र पायेंगे।

बाअ़ज़ लोग ऐसे भी हैं जो बे नमाज़ी हैं जब जी चाहा नमाज़ पढ़ली और जब जी नहीं चाहा तो नहीं पढ़ी इसके अ़लावा वो टी०वी० व मोबाइल पर फिल्में देखते टी०वी० सीरियल बड़े शौक़ व तवज्जौ से देखते हैं और टी०वी० और मोबाइल फोन पर गाने सुनते हैं और दीगर बहुत से बुरे और गुनाहों के काम करते हैं और ताज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं लेकिन खुद का मुहासिबा नहीं करते और ना अपनी बुराइयों पर ग़ौरो फ़िक्र करते हैं जबकि नमाज़ फ़र्ज़ है हमें हर हाल में पढ़नी होगी रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं हमें हर हाल में रखने चाहिये और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और वो नेक आअ़माल जिनका हमें अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल ने करने का हुक्म दिया है वो हमें ज़रुर करना चाहिये लेकिन बाअ़ज़ लोग इन तमाम आअ़मालों से वे फ़िक्र और वे परवाह होते हैं लेकिन जुलूसे हुसैनी व ताज़िये की मुख़ालिफ़त करते नहीं थकते और खुद को दीनदार मुत्तक़ी व परहेज़गार गुमान करते हैं क्या ये उनकी कम अ़क्ली और वे इ़ल्मी और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ और निफ़ाक़ रखने की दलील नहीं है।

हालाँकि हकीक़त ये है कि ताज़ियादारी करने से इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम व दीगर शुहदा-ए-करबला की यादें ताज़ा होती हैं और ये ख़्याल

आता है कि हमारे इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) ने दीन इस्लाम के लिये खुद को कुरबान कर दिया और अपने ख़ानदान को दीन पर निछावर कर दिया ये इब्रत हमारे लिये बाइसे ख़ैर है जो हमें सबक़ देती है कि हम भी उनकी राह पर चलें और खुद को दीन इस्लाम के लिये वक़्फ़ कर दें और उनका रास्ता इख़्तियार करें व उनकी मुहब्बत में खुद को ग़र्क़ कर दें कि जिसने हमारे दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त की तो उनकी यादगार मनाना व ताज़ियादारी करना हमारे लिये बेहतर अ़मल है जिसने हमारे दीन को बचाने के लिये सब कुछ कुर्बान किया तो उनकी याद को ताज़ा करना और अपने दिलों को उनकी याद और उनकी मुहब्बत से मुनव्वर करना और अपने ईमान को नया निखार देना ये दुनिया और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर व अफ़ज़ल है।

जब कोई शख़्स ताज़िये को देखता है तो वो उस वक़्त वो ताज़िये के क़रीब होता है लेकिन उसका ख़्याल व तसव्वुर हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम व करबला की तरफ मुतवज्जै होता है जो उसके दिल को ग़मगीन और आँख को रोने पर मजबूर कर देता है और उनकी याद में आँख से निकला हर आँसू अहले बैत से मुहब्बत की गवाही देता है और जिस तरह हम इमाम आ़ली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के नाना जान रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की आमद और विलादत की यादगार मनाते हैं उसी तरह हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के नवासे और बेटे इमाम हुसैन की यादगार मनाते हैं और ये फ़ेअ़ल मुहब्बत व अ़क़ीदत से वाबस्ता है और दुनिया की कोई भी चीज़ किसी के दिल से मुहब्बत व अ़क़ीदत को नहीं निकाल

सकती क्योंकि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल और अहले बैत की मुहब्बत ईमान की बुनियाद है और जिस चीज़ की बुनियाद मज़बूत होती है तो वो उस चीज़ की पुख़्तगी और मज़बूती के लिये कारसाज़ होती है तो इन तमाम दलाइल से ये बात साबित होती है कि हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाना व ताज़ियादारी करना व जुलूसे हुसैनी में ताज़ियों की ज़ियारत करना व लोगों को ताज़ियों की ज़ियारत कराना ये सब जाइज़ व सवाबे दारैन है।

अ़शरा मुहर्रम में ताज़ियादारी औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम ने बड़े जोशो मुहब्बत व इहतिराम व इहतिमाम के साथ की है और जो काम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम से साबित हो तो वो काम नाजाइज़ व ग़लत हो ही नहीं सकता क्योंकि ये लोग अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रबीन व नेक, सालिहीन महबूब बन्दे हैं जो कभी नाजाइज़ो हराम काम की तरफ़ निगाह भी नहीं करते और वो छोटी से छोटी कम दरजे वाली सुन्नतों को भी तर्क नहीं करते और वो आअ़ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाया है और उनके दरजात को इ़ज़्ज़त व एअ़ज़ाज़ से सर बुलन्द फ़रमाया।

ख़बरदार बेशक अल्लाह तआ़ला के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न वो रंजीदा होंगे और न ग़मगीन जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते हैं उनके लिये दुनिया की ज़िन्दगी में (भी इ़ज़्ज़त व मक़बूलियत की) ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में (भी मग़फ़िरत व शफ़ाअ़त की) और अल्लाह तआ़ला के फ़रमान बदला नहीं करते और यही वो अ़ज़ीम कामयाबी है। (सू०-यूनुस-10/62-ता-64)

जनाब मुहम्मद क़ासिम नियाज़ी बरेलवी अपनी किताब फज़ाइले अहले बैत में हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) का वाक़आ़ यूँ लिखते हैं कि आफ़ताबे शरीअ़त हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ साहब चिश्ती क़ादरी बरेलवी (रहमतुल्लाहि अ़लैहि) कि जिनके दर पे अहले तरीक़त व अहले शरीअ़त सब ही अ़क़ीदत के साथ अपना सर झुकाने में फ़ख़्र महसूस करते हैं आपका वाक़आ़ करामाते निज़ामियाँ में लिखा है

कि एक बार हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) के साथ सूरत के रहने वाले एक आ़लिम ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ का हमेशा से ये तरीक़ा था कि आप ताज़िये के तख़्त को हाथ लगाकर अपने मुँह व क़ल्ब (दिल) पर फेरते थे मगर इस बार हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को ही बोसा दे दिया तो ये देखकर आपके साथ जो आ़लिम साहब थे उनके दिल में ख़्याल आया कि हज़रत साहब ने ये क्या ग़ज़ब कर दिया कि ताज़िये के तख़्त को ही बोसा दे दिया

आ़लिम साहब के दिल में जैसे ही ये ख़्याल आया तो हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) को इसकी ख़बर हो गई क्योंकि आप बहुत बड़े बुजुर्ग और अल्लाह तआ़ाला के वली थे फिर हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ ने उन आ़लिम साहब से फ़रमाया कि ताज़िये की तरफ़ देखिये फ़िर जब आ़लिम साहब ने ताज़िये की तरफ़ देखा तो क्या देखते हैं कि ताज़िये के दोनों तरफ़ हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम खड़े हैं तो आ़लिम साहब ने जब ये देखा तो उन पर रिक़्क़त तारी हो गई और

वो ज़मीन पर लोटने लगे इसके बाअ़द हज़रत नियाज़ बे नियाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) दूसरे ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये।

बाअ़ज़ लोग ये कहते हैं कि रोज़ा-ए-इमाम हुसैन की सही नक़ल बनाकर किसी एक जगह पर रख दो और वहीं उसकी ज़ियारत करो तो इस तरह ताज़िया बनाना व उसकी ज़ियारत करना जाइज़ है यानी जैसा हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) का रोज़ा मुबारक है वैसा ही नक्शा बनाओ तो ये जहालत व कम अ़क्ली की अ़लामत है रोज़ा-ए-इमाम हुसैन जो एक इ़मारत और इ़मारतों की ताअ़मीरात अक्सर होती रहती है व उनके नक्शे बदलते रहते हैं क़दीम ज़माने में ख़ाना-ए-काअ़बा व मस्जिदे नबवी की तस्वीर कुछ और थी मगर आज कुछ और है और जिस चीज़ को हम दिल से मुकम्मल तौर पर मान लें वो चीज़ वही हो जाती है जैसे हमने ईंट सीमेन्ट बालू वग़ैराह से एक चार दीवारी बनाई और दिल से मान लिया ये मस्जिद है तो वो मस्जिद हो जाती है

इसके लिये ज़रुरी नहीं कि वो मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी की सही नक़ल हो तभी मस्जिद होगी तो ऐसा ख़्याल रखना हिमाक़त व ग़लत और बे बुनियाद है इसी तरह हमने ताज़िया बनाया व दिल से ये मान लिया कि ये रोज़ा-ए-हुसैन है तो यक़ीनन वो रोज़ा-ए-इमाम हुसैन है और यही हमारा अ़क़ीदा होना चाहिये क्योंकि ईमान की बुनियाद अच्छे अ़क़ीदे पर होती है और अच्छा गुमान व सहीह अ़क़ीदा हमें निजात और जन्नत की तरफ़ ले जाता है और बद गुमानी और बद अ़क़ीदा हमें गुमराही व दोज़ख़ की तरफ़ ले जाता है।

बाअ़ज लोग कहते ये हैं कि मुहर्रमुल हराम ग़म का महीना है और ताज़ियादार इस ग़म के महीने में ढोल बजाते फिरते हैं तो इसका जवाब है कि मुहर्रमुल हराम ग़म और खुशी दोनों का महीना है ग़म इस बात का है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और आपके ख़ानदान और आपके साथियों पर तकलीफ़ो, मुसीबतों के पहाड़ टूटे और उस पर भूक व प्यास की शिद्दत हत्ता कि मासूम बच्चों को पानी भी मयस्सर न हुआ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की गोद मुबारक में आपके लख़्ते जिगर अ़ली असगर को शहीद किया गया एक ऐसा तीर अ़ली असगर की गर्दन में लगा कि खून के फ़व्वारे निकल पड़े और मैदाने करबला की ज़मीन शहीदों के खून से लाल हो गई हज़रत इमाम हुसैन ने अपने जिस्मे अक़दस में बे शुमार जख़्मों के अलावा बे शुमार तकलीफें और मुसीबतें उठाईं और आख़िर में आप भी हालते सजदे में शहीद कर दिये गये।

और खुशी इस बात की है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) तमाम तकलीफ़ों को बर्दास्त करते हुये सब्र व तहम्मुल पर साबित क़दम रहते हुये अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहे और ऐसे मुश्किल और नाजुक और सख़्त परेशानियों भरे हालातों पर साबित क़दम रहते हुये आपने जामे शहादत नोश फ़रमाया तो ये तमाम मुसलमानों के लिये ये बड़े फ़ख़्र और खुशी की बात है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको शहादत के अ़ज़ीम शरफ़ से बहरेयाब फ़रमाया और आप क़यामत तक के लिये ज़िन्दा हो गये अल्लाह तआ़ला कुरान में इरशाद फ़रमाता है कि जो लोग मेरी राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वो ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा का ग़म नहीं बल्कि खुशी मनाई जाती है।

बाअ़ज़ लोग फ़ेअ़ले ताज़ियादारी में वाक़ैअ़ होने वाले उमूर में सिर्फ़ बुराइयाँ ढूँढते रहते हैं और ताज़ियादारी में शामिल उमूर में ऐबो नक़ाइस के मुतलाशी रहते हैं लेकिन वो उमूर जो बाइसे ख़ैरो बरकत व अज्रो सवाब हैं वो उन्हें दिखाई नहीं देते हालांकि सिर्फ़ ताज़ियादारी ही नहीं बल्कि ऐसा कोई भी नेक अ़मल ही नहीं है कि जिसके साथ कोई न कोई बुराई वाबस्ता न हो जो लोग किसी नेक अ़मल में कोई बुराई मुत्तसिल होने के सबब अपने क़ियास से उस नेक अ़मल को नाजाइज़ कहें तो क़ियास में ग़लती होने का इमकान रहता है और किसी अम्र में नस मिल जाये तो क़ियास बातिल व मरदूद हो जाता है और किसी चीज़ के जाइज़ या नाजाइज़ क़रार देने में ग़लती किसी से भी हो सकती है हमारे आइम्मा सलफ़ व सहाबाकिराम का ये तरीक़ा रहा है कि बाअ़ज़ औक़ात जब उन्हें किसी चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ कुरान व सुन्नत से कोई दलील मिल जाती तो वो उस मसले में रुजूअ़ किया करते थे।

इमाम आ़ज़म अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम में वो किसी मर्ज़ में मुब्तिला थे आपने पानी मंगवाया फिर वुजू किया और पैरों में पहने हुये दोनों जुर्राबों (मोज़ों) पर मसाह किया फिर फ़रमाया कि मैंने आज वो काम किया है जो कि पहले कभी नहीं किया था यानी हदीस मिल जाने के बाअ़द आपने खुद अपने ही मसले पर रुजूअ़ किया हज़रत मुग़ीरा बिन शुअ़बा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया और दोनों जुर्राबों (मोज़ों) पर मसाह किया। (तिर्मिज़ी-सुनन-1/35-ह०-99) (तबरानी-मुअ़जम कबीर-1/537-ह०-1096,97,98)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) तीस साल तक ये फ़तवा देते रहे कि हालते जनाबत में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं मगर बाअ़द में उन्हें माअ़लूम हुआ कि हालते जनाबत में रोज़ा रखना जाइज़ है तो उन्होंने रुजूअ़ किया। (मुस्लिम–सहीह–2/456-ह०-2589)
(बुख़ारी–सहीह–02/406-ह०-1925,1926)

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को ये माअ़लूम नहीं था कि मस्जिद में शेअ़र पढ़ना जाइज़ है मगर बाअ़द में जब उन्हें माअ़लूम हुआ कि मस्जिद में शेअ़र पढ़ना जाइज़ है तो उन्होंने रुजूअ़ किया।
(बुख़ारी–सहीह–3/461-ह०-3212)
(मुस्लिम–सहीह–4/645-ह०-6384)

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि किसी आ़लिम मुजतहिद की पैर‘वी करो मगर साथ साथ ये अ़क़ीदा रखो कि वो एक ग़ैर माअ़सूम इन्सान है और उसका क़ौल ग़लत भी हो सकता है और उल्मा –ए–किराम का ये मुत्तफ़िक़ क़ौल है और अ़क़ाइद की किताबों में लिखा है कि मुजतहिद का क़ौल कभी ग़लत भी होता है और कभी सहीह भी होता है ऐसे में हर मुक़ल्लिद का फ़र्ज़ है कि वो हमेशा इस बात के लिये तैयार रहे कि अगर किसी मसले में उसको अपने इमाम व पेशवा के ख़िलाफ़ कोई बात मिल जाये तो वो फ़ौरन अपने इमाम व पेशवा की बात को तर्क करदे और वो हदीस की इत्तेबाअ़ करे।

मगर फ़िरक़ा परस्त मौलवियों का मुआ़मला इसके बरअ़क्स है कि उनके हज़रत ने जो कुछ फ़रमां दिया तो उनके लिये हज़रत का हर क़ौल लफ़्ज़े आख़िर है।

इमाम मालिक (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं सिवाय रसूलुल्लाह के कोई ऐसा शख़्स नहीं कि जिसकी बाअ़ज़ बातें मक़बूल हों और बाअ़ज़ बातें मरदूद न हों (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा–सफ़ा–512)

इमाम आ़ज़म अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जिसको मेरे क़ौल की दलील माअ़लूम न हो तो वो मेरा कलाम सुनकर कोई फ़तवा न दे। (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा–सफ़ा–512)

इमाम आ़ज़म अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं अगर तुम्हें मेरे क़ौल के ख़िलाफ़ कोई भी हदीस मिल जाये तो वही मेरा मज़हब है (और उस हदीस पर ही तुम अ़मल करना)
(जाअल हक़–सफ़ा–5,-25)

इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जब कोई सहीह हदीस तुम्हें मिल जाये तो बस वही मेरा मज़हब है और जब तुम देखो कि मेरा क़ौल रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के के मुख़ालिफ़ है तो तुम हदीस पर अ़मल करो और मेरे क़ौल को दीवार पर मार दो व ये भी इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) का क़ौल है कि हदीस के मुक़ाबले में किसी के क़ौल का कुछ ऐतबार नहीं और क़ियास या कोई भी दलील हदीस के मुक़ाबले में पेश नहीं की जा सकती।

इमाम अहमद (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल के कलाम के मुक़ाबले में किसी के कलाम का कोई ऐतबार नहीं है।

माअ़लूम हुआ कि जो चीज़ कुरान व सुन्नत से साबित हो जाये वो चीज़ जाइज़ और मुबाह है और कुरान व सुन्नत के मुक़ाबले में किसी का क़ौल या फ़तवा बातिल और मरदूद होता है और ढोल बजाना व ताज़ियादारी करना कुरानो सुन्नत और औलियाकिराम व उ़ल्माकिराम और सलफ़ सालिहीन से साबित है इसके बाअ़द अगर कोई ढोल बजाने और ताज़ियादारी करने को नाजाइज़ कहे तो वो अव्वल दर्जे का जाहिल मुनाफ़िक़ और झूठा है लेकिन हम मुसलमानों को भी चाहिये कि शरई तरीक़े के मुताबिक़ ताज़ियादारी करें और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत का सबूत पेश करें और अ़शरा मुहर्रम में रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िया) बनायें और मुहब्बत व अ़क़ीदत और अदबो इहतिराम के साथ उनकी ज़ियारत करें व जुलूसे हुसैनी की शक्ल में लोगों को रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) की ज़ियारत करायें ताकि हमारे लिये ये अ़मल ख़ैर व बरकत और अज्रो सवाब का बाइस बने।

उ़ल्माये अहले सुन्नत और बुजुर्गाने दीन का ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ क़ौल व फ़ेअ़ल

1-हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ बरेलवी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) का ये माअ़मूल था कि शबे आ़शूरा की रात में ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और जब हज़रत को ज़ॉफ हुआ (यानी कमजोरी की हालत में) दूसरे लोगों के सहारे से तशरीफ़ ले जाते थे और हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को बोसा भी दिया। (करामाते निज़ामियाँ-37)

2- हज़रत मुफ़्ती याकूब लाहौरी फ़रमाते हैं कि मुहर्रम-

अपने तमाम लमाजात के साथ करना जाइज़ है और ये अच्छा अ़मल है जो औलिया अल्लाह से साबित है। (तोहफ़तुन नाज़रीन-52)

3- आले रसूल हज़रत सय्यद अब्दुल रज़्ज़ाक़ बाँसवी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) जिस वक़्त ताज़िया उठता तो आप खड़े रहते और जब ताज़िया रुख़सत होता तो आप नंगे पाँव ताज़िये के साथ जाते और दफ़न करके घर वापस आते थे ये वो आले रसूल वली-ए-कामिल थे कि जिनकी नस्ल में से सय्यद हज़रत वारिस पाक (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) तशरीफ़ लाये कि जिनकी दरगाह देवा शरीफ़ में है। (करामाते रज़्ज़ाक़िया-15)

4-शाह कुतबुद्दीन संभली का माअ़मूल था कि आपके सामने ताज़िया आता तो आप बा अदब खड़े हो जाते थे और आप रोते रहते थे। (फ़तावा ताज़ियादारी-3)

5-सय्यद अ़ल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी ने ताज़ियादारी की हिमायत में एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई है और आपने ताज़ियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन और अच्छा अ़मल बताया।
(मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रोशनी में)

6-हज़रत अ़ल्लामा सलामत अ़ली देहलवी शागिर्दे हज़रत शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ देहलवी फ़रमाते हैं कि खुदा का शुक्र है कि ताज़ियादारी इस्लाम में है और इससे दीनी फ़ायदे होते हैं। (तब्सरातुल ईमान- दीने मुहम्मदी और ताज़ियादारी)

7-हज़रत सय्यद शाह अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ बाँसवी फ़रमाते हैं

कि ताज़िये को कोई ये न जाने कि खाली काग़ज़ या पन्नी है बल्कि शहीदाने करबला की मुक़द्दस रुहें इस तरफ़ मुतवज्जै होती हैं। (करामाते रज़्ज़ाक़िया-15)

8-हज़रत नईमुद्दीन मुरादाबादी साहब (मुफ़स्सिरे कुरान) ताज़िया बनाने में पाबन्दी से चन्दा दिया करते थे और आपके साहबज़ादे और जांनशीन और जामए नईमियाँ मुरादाबाद के मुतवल्ली सय्यद इज़हारुद्दीन मियाँ साहब क़िब्ला का बयान है कि मेरे वालिद ने पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िये की मुख़ालिफ़त नहीं की।
(फज़ाइले अहले बैत-35)

9- हज़रत अ़ल्लामा मौलाना भोले मियाँ साहब क़िब्ला सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया गंज मुरादाबाद जिला उन्नाव फ़रमाते हैं कि ताज़ियादारी करना सवील लगाना फ़ातिहा दिलाना जाइज़ व सवाबे दारैन है।
(फ़तवा- हज़रत अ़ल्लामा मौलाना भोले मियाँ साहब)

10- मौलाना तजम्मुल हुसैन रहमानी बयान फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम को उम्मत की सिफ़ारिश के लिये पैदा फ़रमाया है तो इस हक़ की अदायगी और इमाम हुसैन की ज़्यादा से ज़्यादा खुशी हासिल करने के लिये गुलामाने हुसैनी सवाब पाने की नीयत से सालाना यादगार को अपना सरमाये हयात बनाये हुये हैं कि जिस तरह हर साल हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम यादगारे उ़हद के लिये शुहदाए उ़हद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनके लिये दुआ़ये रहमत किया करते थे। (कमालाते रहमानी-121)

11–आले रसूल हज़रत सय्यद हाजी वारिस पाक देवा शरीफ़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ताज़िया वाले घरों पर तशरीफ़ ले जाते थे और कभी बैठते थे और कभी खड़े रहकर लौट आते थे और बस्ती के तमाम ताज़िये आपकी बारगाह तक आते थे तो उस वक़्त आप बाहर खड़े होकर ताज़ियों की ज़ियारत किया करते थे।
(मिशकात–ए–हक्कानियाँ–84)

12–आले रसूल हज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यद क़ारी उवैस मुस्तफ़ा साहब सज्जादा नशीन बिलग्राम शरीफ़ मुहर्रम की सात तारीख़ को मुहब्बत और ख़ुलूस और इहतिराम व इहतिमाम के साथ अ़लम उठाते व लोगों की ज़ियारत के लिये गलियों में ले जाते हैं और हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास जो अ़लम करबला में था उसका एक मुतबर्रक टुकड़ा जो हज़रत सय्यद उवैस मुस्तफ़ा साहब के पास मौजूद है वो उस टुकड़े को इस अ़लम में नसब करते हैं।

13-उ़ल्माये मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा का फ़तवा है मुहर्रमुल हराम में मुरव्वजा ताज़िया वाजिबुल इहतिराम है और दस मुहर्रम को फ़ातिहा दिलाना लाज़िम है और शरबत की सबील और मलीदा खिचड़ा वग़ैराह ताज़िये पर रखकर फ़ातिहा दिलाना तबर्रुक है।
(फ़तावा मकइया–37,–38–सालेह इब्ने अहमद मक्का मुकर्रमा व अबू तुराब उमरी मदीना मुनव्वरा)

-: ताज़ियादारी एक महबूब व मक़बूल अ़मल है :-

हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) इमारते इस्लाम के सुतून हैं और दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये ख़ानबादाए रसूल की कुर्बानी दीन इस्लाम के लिये एक बे मिस्ल अम्रे अ़ज़ीम थी कि जिससे इस्लाम आज ज़िन्दा व ताबिन्दा है तारीख़े इस्लाम में हक़ व बातिल की सैंकड़ों जंगे हुई और हज़ारो अफ़राद शहीद हुये लेकिन किसी और शहादत को इस क़दर शौहरत और मक़ामो मन्ज़िलत हासिल न हुई जितनी शहादते इमाम हुसैन को हुई हज़रत इमाम आ़ली मक़ाम की शहादत अक़बरो आज़म है हज़ारों साल गुज़र जाने के बाद भी इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की शहादत का ज़िक्र अर्श ता फ़र्श आज भी ज़िन्दा है और ता क़यामत ज़िन्दा व ताबिन्दा रहेगा।

हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) शहादत के उस मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं जहाँ आज तक किसी की रसाई न हो सकी ख़ानबादा-ए-रसूल व आपके असहाब पर करबला में इंतिहाई जुल्मों सितम ढाये गये इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) और आपके असहाब को तीन दिन का भूका प्यासा शहीद किया गया व उनके जसदे मुबारक घोड़ों की टापों से पामाल किये गये ख़वातीने अहले बैत की वे हुरमती की गई यतीम मासूम बच्चों को नंगे पाँव और हज़रत इमाम हुसैन और आपके असहाब के सरे मुबारक को नेज़ो पर रखकर कूफ़ा से दमिश्क़ तक ले जाया गया और ख़ानबादा-ए-रसूल ने करबला में जिस क़दर मसाइबो आलाम, निहायत सख़्त तकलीफ़ें बर्दाश्त की ऐसी तकलीफ़ो मुसीबतें किसी पर नहीं गुज़रीं।

लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) व ख़ानबादा -ए-रसूल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुश्नूदी हासिल करने के लिये सब्र व तहम्मुल पर क़ायम और मक़ामे रिज़ा पर साबित क़दम रहे हालाँकि इस मुक़ाम पर तो बड़े-बड़े औलियाए किराम के क़दम इस्तिक़ामत हासिल न कर सके लेकिन ख़ानबादा-ए-रसूल का वो बुलन्द व आअ़ला मक़ाम है कि मक़ामे रिज़ा पर ज़र्रा बराबर भी लग़्जिशे क़दम न हुये इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की ताअ़लीमो तरबियत और अपनी माँ ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा के दूध की लाज रखते हुये और अपने नाना जान रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जुबाने अक़दस से चूसे हुये लुआवे दहन का हक़ अदा करते हुये दीन इस्लाम के अहकामात व सुन्नतों पर मुकम्मल अ़मल पैरा रहते हुये दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त की।

लेकिन आज उसी इस्लाम के मानने वाले और खुद को सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का गुलाम कहने वाले व अहले बैत अत्हार से मुहब्बत का दाअ़वा करने वाले बाअ़ज़ लोग यादे करबला और यादे हुसैन में ताज़ियाादरी करने से बिला वजह और बिला शरई दलील के मुहिब्बाने अहले बैत को रोकते हैं और फ़तवा देते हैं और अहले बैत अत्हार की मुहब्बत व अ़क़ीदत से वाबस्ता इस बेहतर और महबूब व मक़बूल अ़मल को नाजाइज़ क़रार देते हैं जो कि असल में अज्रे अ़ज़ीम व सवाबे दारैन का बाइस है बाअ़ज़ कम इ़ल्म जाहिल और हिकमतों से अंजान कुछ मुनाफ़िक़ उ़ल्माओं ने मज़हब के नाम पर दहशत गर्दी और बे बुनियादी फ़तवो के ज़रिये लोगों में

डर और इख़्तिलाफ़ व इन्तिसार को हमारे मुआ़शरे पर मुहीत कर दिया है और सुन्नत वल जमात के इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ को मुन्तशिर कर दिया है जिसके बाइस जमाअ़ते अहले सुन्नत कई मुख़्तलिफ़ टुकड़ो में बंटकर कमज़ोर हो गई है कुछ उ़ल्माओं के बाहमी व मज़हबी इख़्तिलाफ़ ने लोगों को एक दूसरे से अलग कर दिया और हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी के मौजूअ़ पर इख़्तिलाफ़ व इन्तिसार और अ़जीब कशमकश में लोगों को उल्झा कर रख दिया जिसके सबब से बाअ़ज़ लोगों के दिल अहले बैत अत्हार की मुहब्बत से ख़ाली हो गये और जिनके दिल अहले बैत अत्हार की मुहब्बत पर माअ़मूर नहीं वो मुनाफ़िक़ हैं।

ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने का दाअ़बा करने वालो तुम्हें ये सनद किसने दी कि तुम हक़ व सदाक़त पर हो और अपनी वे हिकमती और बिला शरई दलील अपनी राय पर मबनी फ़तवों से लोगों को डराने वालो इस्लाम तुम्हारा ही मज़हब नहीं है बल्कि इस्लाम पूरी कायनात का मज़हब है ताज़ियादारी को बुग्ज़ व अ़दावत की नज़र से देखने वालो हमारे माहौल व मुआ़शरे में हज़ारों बुराईयाँ मौजूद हैं उन्हें बाअ़ज़ और नसीहत के ज़रिये दूर करने की पहल व कोशिश करो अगर तुम सुन्नियत व हक़्क़ानियत और सदाक़त का दाअ़वा करते हो क्या तुम्हें कोई और बुराई नज़र नहीं आती या फिर जानकर भी अंजान बने हो।

हालांकि हक़ीक़त ये है कि ताज़ियादारी के तमाम मुख़ालिफ़ीन का दिली और बातिनी मक़सद ताज़ियादारी को ख़त्म करके लोगों के दिलों से अहले बैत अत्हार की मुहब्बत और यादे हुसैन का मिटाना है ताकि आने

वाली नस्लें ये भूल जायें कि मारका-ए-करबला क्या था और इमाम हुसैन कौन थे लेकिन उनका ये मक़सद व ख़्वाहिश इंशा अल्लाह तआ़ला कभी पूरी न होगी क्योंकि अल्लाह तआ़ला जिसे बढ़ाये उसे कौन मिटा सकता है।

➡ हज़रत वाबिसा बिन माअ़बद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस पर तुम्हारा दिल मुतमइन हो अगरचा लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें (ये दो बार फ़रमाया)।
(मुस्नद अहमद-7/423-ह०-18162)
(मिश्कात-2/190-ह०-2774)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-22/148-ह०-403)

➡ हज़रत अबू सअ़लबा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैंने बारगाहे नबूवत में अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे बतायें कि कौन सी चीज़ मेरे लिये हलाल है और कौन सी चीज़ मेरे लिये हराम है तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस काम को करके दिल को सुकून और दिल को इतमीनान हासिल हो जाये वो चीज़ हलाल है और गुनाह वो है कि जिससे तेरे नफ़्स को सुकून मिले मगर तेरे दिल को इत्मीनान हासिल न हो तो वो गुनाह है अगरचा मुफ़्ती कुछ भी फ़तवा देते रहे।
(मुस्नद अहमद-07/326-ह०-17894)

मज़कूरा हदीसे पाक इस बात पर दलालत करती है कि जिस मसले पर उ़ल्माए किराम में किसी क़िस्म का बाहमी इख़्तिलाफ़ हो यानी कोई जाइज़ कहे और कोई नाजाइज़ कहे तो हमारा दिल जिस पर मुतमइन हो और

कामिल यक़ीन हो वो हमारे लिये सहीह व दुरस्त और बेहतर है ताज़ियादारी करने व यादगारे हुसैन मनाने के मौक़िफ़ पर मुहिब्बाने अहले बैत के दिल कामिल यक़ीन के साथ मुतमइन रहते हैं क्योंकि ताज़ियादारी का जाइज़ होना कुरानो सुन्नत और औलिया-ए-किराम व उ़ल्मा-ए-किराम के अक़्वाल व अफ़आ़ल से साबित है इसलिये ये फ़ेअ़्ल शरई एतवार से जाइज़ और सवाबे दारैन है और ये अहले बैत अत्‌हार से सच्ची मुहब्बतो अ़क़ीदत की अ़लामत है अब उ़ल्मा जो चाहे फ़तवा दें अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल और अहले बैत की इंतिहाई मुहब्बत ही अस्ल ईमान की बुनियाद है और अहले बैत की मुहब्बत में यादगारे हुसैन मनाना और ताज़ियादारी करना ये ईमान का एक जुज़ (हिस्सा) है।

यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) को जो लोग नाजाइज़ व बिदअ़त कहते है क्या वो अपने अकाबिर उ़ल्मा व शुयूख़ की सालाना यादगार नहीं मनाते हालाँकि वो लोग अपने अकाबिर उ़ल्मा व शुयूख़ की सालाना यादगार शक्ले उ़र्स बड़े जोश व ज़ॉक़ और इहतिमाम के साथ मनाते हैं और लाखों रुपया ख़र्च करते हैं लेकिन हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम जो कि अपने नाना जान सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के जिगर के फूल व दिल के टुकड़े हैं उनकी यादगार मनाने से हम मुहिब्बाने अहले बैत को रोकते और फ़तवा देते हैं क्या ये उनकी ज़्यादती व जुल्म नहीं है बल्कि वो अपने इ़ल्मी इक़्तिदार का ग़लत व नाजाइज़ इस्तेअ़माल करते हैं और अपनी तानाशाही और मनमानी व हुक्मे नफ़्स की हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं और लोगों को उसके ताबेअ़ और मुताअ़य्यन करना चाहते हैं जो कि नाजाइज़ व ख़िलाफ़े शरअ़ है।

इस्लाम में जिन चीज़ों के मुताअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ पाया जाये यानी कुछ उ़ल्मा-ए-किराम किसी अम्र या फ़ेअ़ल को जाइज़ कहें और कुछ नाजाइज़ कहें तो हम तमाम मुसलमानों को पूरी आज़ादी है कि हम जिन उ़ल्मा की चाहें इक़्तिदा (पैर'वी) करें शरीअ़ते मुताह्रा किसी एक की पैरवी करने से हमें क़तअ़न नहीं रोकती जिस तरह हमारे फ़िक़ई चार इमाम हैं और हम जिस इमाम की चाहें इक़्तिदा करें शरअ़न जाइज़ है।

चुनाँचा यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) के मौक़िफ़ पर भी उ़ल्मा-ए-किराम में इख़्तिलाफ़ है तो हमारा जिन उ़ल्मा पर एतक़ाद हो और दिल मुतमइन हो तो हमारा उन उ़ल्मा की पैरवी करना शरअ़न जाइज़ है।

कई ताक़तें इन्सान को सीधी राह से भटकाने व गुमराह करने पर लगी हैं कि जिनमें सबसे बड़ा हमला सीधी राह (सिराते मुस्तक़ीम) पर शैतान का होता है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

मैं ज़रूर लोगों को गुमराह करने के लिये तेरी सीधी राह में ताक लगाकर बैठूँगा फिर मैं ज़रूर उनके पास आऊँगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दायें से और उनके बायें से। (सू०-आअ़राफ़-7/16)

अब एक सुवाल पैदा होता है कि हर उ़ल्मा ये दाअ़वा करता है कि मेरा मौक़िफ़ हक़ व सहीह है और हर फ़िरक़े ये दाअ़वा होता है कि वो सदाक़त व सिराते मुस्तक़ीम पर है तो अब ये फ़ैसला कैसे हो कि कौन सहीह है और कौन ग़लत तो इस इशक़ाल से निजात पाने और इसका जवाब और इस कशमकश से बाहर-

निकलने और सिराते मुस्तक़ीम पाने के लिये बेहतर व आसान रास्ता अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सूरह निसा में हमें मरहम्त फ़रमां दिया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तो जो कोई अल्लाह व रसूल की इताअ़त करे तो यही लोग रोज़े क़यामत उन हस्तियों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआ़ला ने ख़ास इनआ़म फ़रमाया वो अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन हैं। (सू०–निसा–4/69)

यानी सिराते मुस्तक़ीम अल्लाह तआ़ला के इनाम याफ़्ता बन्दों का रास्ता है और इनाम याफ़्ता बन्दों के चार तबक़ात है कि जिन पर अल्लाह तआ़ला ने अपना ख़ास इनआ़म फ़रमाया है यानी अम्बिया व सिद्दीक़ीन और शुहदा व सालिहीन और इन्हीं का रास्ता सिराते मुस्तक़ीम है जैसा कि सूरहः फ़ातिहा से वाज़ेह होता है ''इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम सिरातल लज़ीना अन्अ़म्ता अ़लैहिम'' यानी ऐ अल्लाह हमें सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) पर चला उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनआ़म फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने बराहे रास्त अपने बन्दों से कलाम नहीं फ़रमाया बल्कि अपने हर हुक्म व पैग़ाम के लिये नबी व रसूल को पैग़म्बर और अ़मली नमूना बनाया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक रसूलुल्लाह की ज़ाते अक़दस तुम्हारे लिये निहायत हसीन बेहतरीन नमूना है। (सूरह–अहज़ाब–33/21)

हर शख़्स को हक़ व बातिल और सही व ग़लत में इम्तियाज़ करने के लिये एक अ़मली नमूने की ज़रुरत–

है तो जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने अपनी हिदायत का आइनादार नमूना अपने प्यारे महबूब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को बनाया उसी तरह हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी हिदायत का आइनादार नमूना औलिया-ए-किराम को मुताअ़य्यन किया कि मेरे बाद औलिया-ए-किराम का रास्ता ही राहे हिदायत व सिराते मुस्तक़ीम है अगर सिराते मुस्तक़ीम के हम मुतलाशी हैं तो हमें चाहिये कि उ़ल्मा-ए-किराम के इख़्तिलाफ़ी रास्ते को छोड़कर उनके रास्तों पर चलें जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इनआ़म फ़रमाया है और उन्हीं के तर्ज़े अ़मल को अपना तर्ज़े अ़मल बनाये और उन्ही के मौक़िफ़ व मशरब को इख़्तियार करें तो यही हमारे लिये बेहतर और बाइसे निजात है क्योंकि इन्हीं का ज़ाहिर व बातिन हिदायत याफ़्ता होता है और इन्हीं का रास्ता सिराते मुस्तक़ीम होता है।

जब किसी मसले पर उ़ल्मा-ए-किराम में इख़्तिलाफ़ हो जाये और खुद की अक़्ल सही फ़ैसला करने पर क़ासिर हो तो अल्लाह तआ़ला ने हमें जो रास्ता अ़ता किया है वही हमारे लिये सहीह और बेहतर है जिस रास्ते पर अल्लाह तआ़ला के इनआ़म याफ़्ता बन्दे चले हों उसी रास्ते को इख़्तियार करें व उसी पर साबित क़दम रहें।

तो माअ़लूम हुआ कि तमाम औलिया-ए-किराम का रास्ता व तरीक़ा सिराते मुस्तक़ीम है और जो भी इनके तरीक़े पर चले उसका रास्ता हक़ व हिदायत है अगर हम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम की हालाते ज़िन्दगी का मुताअ़ला करें तो हमें पता चलता है कि इन्होंने बड़े ज़ॉक़ व इहतिमाम के साथ ताज़ियादारी की है और जो फ़ेअ़ल औलिया-ए-किराम से साबित हो वो

ग़लत व नाजाइज़ हो ही नहीं सकता क्योंकि औलियाए किराम से कोई नाजाइज़ फ़ेअ़ल का सादिर होना ना–मुम्किन है क्योंकि तमाम औलिया–ए–किराम व सूफ़िया–ए–इज़ाम अल्लाह तआ़ला के मख़सूस व मुक़र्रब और इनआ़म याफ़्ता बन्दे हैं और बेशक इनका रास्ता सिराते मुस्तक़ीम है।

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला के कुछ ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे हैं जो न अम्बिया हैं न शुहदा हैं लेकिन क़यामत के दिन अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व शुहदाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) उनको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता कर्दा मक़ाम व मरातिब व मनाज़िल को देखकर वो उन पर रश्क करेंगे सहाबाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) आप हमें उनके बारे में बताऐं कि वो कौन लोग हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया वो ऐसे लोग हैं कि जिनकी बाहमी मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह की ख़ातिर होती है न कि रिश्तदारों और न माली लेन देन की वजह से और अल्लाह की क़सम उनके चेहरे नूर होंगे और वो पुर नूर होंगे उन्हें कोई ख़ौफ़ न होगा जब लोग ख़ौफ़ ज़दा होंगे और उन्हें कोई ग़म न होगा जब लोग ग़म ज़दा होंगे फिर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह व आलिहि वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई अला इन्ना औलिया अल्लाहि ला ख़ौफुन अ़लैहिम वलाहुम यहज़नून० (सू०–यूनुस–62) (ख़बरदार बेशक़ औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ है और न वो रंजीदा होंगे न ग़मगीन होंगे)।

(अबू दाऊद–सुनन–4/770-ह०–3527)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/225-ह०–2390)
(मिश्कात–3/118-ह०-5012)
(नसाई–सुनन कुबरा–6/36-ह०–11236)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–2/332-ह०–573)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–10/495-ह०–6110)
(बैहक़ी–शुअबुल ईमान–6/485-ह०–8997,8998,8999)
(मुन्ज़री–अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/12-ह०–4580)

ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वाले बाअ़ज़ लोग अहमद रज़ा बरेलवी के फ़तवो का हवाला देते हैं तो मेरा उनसे सुवाल है कि उन्होंने इसके अ़लावा अहमद रज़ा की कोई और बात भी कभी मानी है कभी उनकी बात पर अ़मल किया है या सिर्फ़ ताज़ियादारी को ही नाजाइज़ व हराम जानते व मानते हैं हालाँकि उन पर लाज़िम है कि अहमद रज़ा बरेलवी के दीगर फ़तवों पर भी ग़ौर करें व उन्हें दिल से तसलीम करते हुये उनकी ताअ़मील व तकमील को अ़मली जामा पहनायें।

जो लोग अहमद रज़ा के फ़तवे के मुताबिक़ ताज़ियादारी को नाजाइज़ मानते हैं तो अहमद रज़ा के फ़तवे के मुताबिक़ आजकल राइज शादी व तक़रीबों में जाना व खाना बन्द करें और खड़े होकर खाना पीना बन्द करें यहाँ तक कि अगर मजलिसे निकाह ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल हों तो निकाह पढ़ाना भी बन्द करें अगर वो अहमद रज़ा के फ़तवों को मानते हैं और हक़ पर होने का दाअ़वा करते हैं और अहमद रज़ा से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत रखते हैं और उनके कॉल व फ़तवों पर अ़मल करने का दाअ़वा करते है वरना उनकी

अहमद रज़ा से मुहब्बत व अक़ीदत झूठी और महज़ दिखावा है बल्कि वो सिर्फ़ यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) को मिटाने व मुहिब्बाने अहले बैत के दिलों से मुहब्बते हुसैन व यादे हुसैन को मिटाने के काम को अंजाम देने के लिये अहमद रज़ा के फ़तवों का सहारा लेते हैं ताकि किसी तरह ताज़ियादारी ख़त्म हो जाये व लोगों के दिलों से यादे हुसैन और मुहब्बते हुसैन मिट जाये।

जबकि जिस चीज़ की मुमानियत कुरान व ह़दीस से साबित न हो तो वो चीज़ जाइज़ व मुबाह है ये जानते हुये भी ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने का फ़तवा देते हैं

अहमद रज़ा बरेलवी के फ़तवे के मुताबिक राइजा शादी ब्याह व तक़रीब मे जाना व खाना नाजाइज़ है क्योंकि आजकल राइजा शादी ब्याह व तक़ारीब ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल होती हैं जिसके लिये अहमद रज़ा बरेलवी ने सख़्त मुमानियत फ़रमाई है।

किसी ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस में जाना व खाना जाइज़ नहीं और अगर खाना दूसरी जगह हो जहाँ पर कोई ख़िलाफ़े शरअ़ काम न हो तो वहाँ पर आ़म आदमी के जाने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन आ़लिम और मुक़्तदा (इमाम) का वहाँ भी जाना जाइज़ नहीं है।
(फ़तावा रिज़विया–24/134)

ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस व तक़रीब में जाना नाजाइज़ है। (अबू दाऊद–सुनन–4/916–ह०–3755)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने खड़े होकर पानी वग़ैराह पीने से मनाअ़ फ़रमाया हज़रत क़तादा ने कहा हमने कहा कि खड़े होकर खाना कैसा है तो हज़रत अनस बिन मालिक ने कहा ये तो और ज़्यादा बुरा है।
(मुस्लिम–सहीह–5/250–ह०–5275)
(अबू दाऊद–सुनन–4/893–ह०–3717)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने खड़े होकर पानी पीने से मनाअ़ फ़रमाया।
(मुस्लिम–सहीह–5/251–ह०–5277)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम मे से कोई (कुछ भी) खड़े होकर न पिये और जो भूले से पी ले तो कै़ कर डाले। (मुस्लिम–सहीह–5/251–ह०–5279)

इसके अ़लावा बरेली से जदीद फ़तवा सात (7) अगस्त 2015 को अमर उजाला अख़वार में सफ़्हा न० एक पर शाए़ हुआ था जिसका मज़मून ये था कि जिस शादी में खड़े होकर खाना पीना या जहेज़ की माँग हो तो वहाँ उ़ल्मा–ए–किराम निकाह नहीं पढ़ायेंगे अलबत्ता मज़कूरा फ़तावों पर अ़ाम तो अ़ाम ख़ास ने भी अ़मल नहीं किया बल्कि हक़ीक़त ये है कि उन्हें अहमद रज़ा और बरेली शरीफ़ के फ़तवों से कोई सरोकार नहीं है उन्हें तो अहमद रज़ा बरेलवी की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल शादी व तक़रीब में शिर्कत करना व खाना–पीना और निकाह भी पढ़ाना है क्योंकि इससे उन्हें दुन्यावी फ़वाइद हासिल होते हैं।

और बरेलवी उ़ल्मा इ़ल्म के बावुजूद अहमद रज़ा खान और बरेली के फ़तवो पर अ़मल पैरा नहीं हैं मगर वो बेइ़ल्म अ़ाम लोगों पर जो फ़तवे का सहीह माअ़ना भी नहीं जानते उनको वो फ़तवों से डराते हैं और अपने क़ियास व अपनी राय को फ़तवों की शक्ल देकर बेइ़ल्म अ़ाम लोगों पर जबरदस्ती नाफ़िज़ करना चाहते हैं और वो दीन इस्लाम को अपने तरीक़े और अपनी मनमानी से चलाना चाहते हैं ऐसे जाहिल मुनाफ़िक़ उ़ल्मा इस्लाम के मुताबिक़ नहीं चलते हैं बल्कि वो इस्लाम को अपने मुताबिक़ चलाना चाहते हैं।

ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वालो साल में ग़ैर शरई उमूर पर मुश्तमिल सैकड़ों शादियों और तक़रीबों में शिर्कत करना और निकाह पढ़ाना कब बन्द करोगे अगर तुम बाक़ई अहमद रज़ा की बात मानते हो तो शादी ब्याह व तक़ारीब में जाना व खाना और निकाह पढ़ाना मुअ़त्तल करो अहमद रज़ा के हज़ारों फ़तवे ऐसे हैं जिनका अक्सर अ़ाम व ख़ास बेइ़ल्म व अ़ालिम का अ़मलन कोई तअ़ाल्लुक़ नहीं है जिनमें से बाअ़ज़ हस्बे ज़ैल हैं।

माल के बदले तावीज़ देना धन्धा है व मस्जिद के हुजरे में उजरत लेकर तावीज़ गण्डे करना नाजाइज़ है। (फ़तावा रिज़विया–8/95)

हिन्दू, यहूदी व नसरानी का बनाया हुआ साबुन जिसमें चर्बी पड़ी हो चाहे गाय या बकरी की हो नापाक और हराम है। (फ़तावा रिज़विया–4/573)

अंग्रजी दवाईयों में जिस क़दर रक़ीक़ यानी पतली दवायें

हैं सब में उ़मूमन शराब होती है सब नजिश व हराम हैं। (मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–3/365)

मुसलमान अ़ौरत को मुशरिका या किताबिया अ़ौरत के सामने नंगा होना जाइज़ नहीं (फ़तावा रिज़्विया-20/589) (यानी ग़ैर मुस्लिम डाक्टर अ़ौरत से मुसलमान अ़ौरत का अपने ख़ास पर्दे के उ़ज्व यानी शर्मगाह वग़ैराह का दिखाना या चैक अप कराना जाइज़ नहीं है।

काफ़िरा को जनाई बनाना सख़्त ह़राम है।
(फ़तावा रिज़्विया–20/588) बच्चा जनाने वाली डाक्टर या दाई को जनाई कहते हैं यानी ग़ैर मुस्लिम डाक्टर अ़ौरत से डिलेवरी कराना बच्चा जनवाना सख़्त ह़राम है

काफ़िर तबीब से मुसलमानों को इलाज कराने की सख़्त मुमानियत है। (फ़तावा रिज़्विया–21/243)

जवान ग़ैर महरम अ़ौरत के सलाम का जवाब नहीं दें। बल्कि दिल में जवाब दें (मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत–3/351)

जो कोई काफ़िरों या ग़ैर मुस्लिमों के किसी काम को अच्छा समझे जैसे खाना खाते वक़्त बातें न करना व ह़ालते हैज़ में अ़ौरत के पास न लेटने को मजूसियों व आतिश परस्तों की अच्छी अ़ादत कहे वो काफ़िर है। (फ़तावा रिज़्विया–24/531)

आतिश परस्तों की टोपी के पहनी ख़्वाह संजीदगी में या हंसी मज़ाक़ में वो काफ़िर हो जायेगा।
(फ़तावा रिज़्विया–24/549,550)

आतिश परस्तों की टोपी के मुशाबा रुमाल बना करके अपने सर पर रखा तो वो काफ़िर हो गया।
(फ़तावा रिज़विया–24/550)

अगर किसी ने हिन्दू त्योहार वाले दिन कुछ ख़रीदा और इरादा ताअ़ज़ीम का हो तो वो काफ़िर हो जायेगा।
(फ़तावा रिज़विया–24/561)

अह़मद रज़ा बरेलवी ने ग़ैर मुस्लिम औ़रत को जनाई बनाना ह़राम नहीं बल्कि सख़्त ह़राम फ़रमाया कितने लोग हैं जो अह़मद रज़ा के इस फ़तवे पर अ़मल करते हैं जहाँ तक मैं समझता हूँ एक शख़्स भी ऐसा नहीं मिलेगा जो अह़मद रज़ा के इस फ़तवे पर अ़मल करता हो इसी तरह अह़मद रज़ा के फ़तवे के मुताबिक़ ग़ैर मुस्लिम तबीब (डाक्टर) से मुसलमानों को इलाज कराने की सख़्त मुमानियत है इसी तरह ग़ैर मुस्लिम डाक्टर औ़रत से मुसलमान औ़रत का अपनी शर्मगाह वग़ैराह का दिखाना या चैक अप कराना जाइज़ नहीं है तो मैं उन बरेलवी उ़ल्माओं से ये पूछना चाहता हूँ कि अह़मद रज़ा के इन फ़तवों पर अ़मल क्यों नहीं करते या फिर तुम्हें अह़मद रज़ा का सिर्फ़ एक ही फ़तवा याद है कि ढोल बजाना और ताज़ियादारी करना नाजाइज़ है और बाक़ी अह़मद रज़ा के फ़तवे तुम्हें दिखाई नहीं देते क्या तुम अ़क्ल के अन्धे हो या तुम्हारे दिल मुर्दा हो चुके हैं जो तुम्हें हक़ दिखाई नहीं देता कि ढोल बजाना और ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है और ये एक महबूब व मक़बूल अ़मल है जो कुरानो सुन्नत व औलिया किराम से साबित है।

बाअ़ज़ उ़ल्मा तो ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में

अल्लाह तआ़ाला की मुक़र्रर कर्दा ह़दों से भी आगे बढ़ गये यहाँ तक कि ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में सूरह अनआ़म की आयत की ग़लत व मनगढत तावील करके बतौर दलील बनाकर ग़लत ढंग से पेश करते हैं जबकि कुरान मजीद की इस आयत का ताज़ियादारी से दूर दूर तक कोई वास्ता व तआ़ल्लुक़ नहीं है मगर मुख़ालिफ़ीने ताज़ियादारी ने इस आयते करीमा का मिस्दाक़ तमाम ताज़ियादारों को बना दिया और ये उनकी अहले बैत से इंतिहाई दर्जे की अ़दावत का मुज़ाहरा है और वो आयते करीमा मुन्दरजा ज़ैल मज़कूर है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और आप उन लोगों को छोड़े रखें जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा है। (सू०-अनआ़म-6/70)

मज़कूरा आयते करीमा को ताज़ियादारी के मुख़ालिफ़ीन दलील बनाकर पेश करते हैं कि ताज़ियादारी नाजाइज़ है जबकि मज़कूरा आयते करीमा का माअ़ना व मफ़हूम मुख़ालिफ़ीने ताज़ियादारी की दी हुई दलील के बरअ़क्स है और हक़ीक़त ये है कि मज़कूरा आयते करीमा कुफ़्फ़ारे मक्का और मुश्रिकीन के बारे में नाज़िल हुई।

और छोड़िये ऐसे लोगों को जिन्होंने बना लिया है अपने दीन को (जिसके वो पाबन्द किये गये थे) खेल और तमाशा (दीन का मज़ाक़ उड़ाकर) और दुनिया की ज़िन्दगानी ने उन्हें धोके में डाल रखा है ऐ नबी मुकर्रम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनको मुँह न लगायें (उनको मुँह न लगाायें ये हुक्म जिहाद से पहले का है) और आप (कलामे इलाही के ज़रिये उन-

सब लोगों को) नसीहत और बाअ़ज़ करते रहिये ताकि कहीं ऐसा न हो कि कोई नफ़्स हलाक हो जाये अपने करतूते अ़मल की वजह से। (तफ़्सीर जलालैन–2/163)

आप उन लोगों को छोड़ दें जिन्होने ऐसी चीज़ को दीन बना लिया है जो (उन्हें) इस दुनिया व आख़िरत में कोई नफ़ा नहीं देगा जिस तरह से (उनका) बुतों की इ़बादत करना। (तफ़्सीर मज़हरी–3/277)

इस आयत में मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के साथ किसी क़िस्म की दोस्ती न रखने के लिये कहा गया कि वो तो अपने दीन को खेलकूद व दिल्लगी और मज़ाक़ बनाते हैं अगर वो इस्लाम का मज़ाक़ बनायें तो उनसे क्या तआज्जुब है और उनसे मिलना जुलना सिर्फ़ ज़ाहिरी हो जो दीन उन्हें इख़्तियार करना चाहिये था उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं और उन्होंने अपने बाप दादाओं की अंधा धुन्ध पैर'वी को अपना दीन बना लिया और ईद का ज़माना खेलकूद इख़्तियार किया ग़ैर मुस्लिम अपने त्योहार पर खुशी में जुआ़, शराब, खेल कूद और नाचगाना वग़ैराह से मनाते हैं तो यही ह़ाल कुफ़्फ़ारे अ़रब का था जबकि मुसलमानों की ई़द इ़बादत, नमाज़ और ज़कात, सद्क़ा, ख़ैरात और कुर्बानी से मनाई जाती है यानी मोमिन की खुशी भी इ़बादत है उन कुफ़्फ़ारों ने दुनिया को अपना दीन बना लिया है जिसके ज़रिये दुनिया मिल जाये वो ही उनका दीन है। (तफ़्सीर नईमी–7/468)
(तफ़्सीर–कबीर, खाज़िन, मआ़नी)

यानी आप उनके साथ क़ल्बी तआ़ल्लुक क़ायम न कीजिये वो ख़ता और लग़ज़िश को तलाश करने वाले लोग हैं यहाँ ये भी कहा गया कि यहाँ दीन से मुराद–

ईद है अल्लाह तआ़ला ने हर क़ौम के लिये ईद बनाई और हर क़ौम ने अपनी ईद को लह्व व लाअ़ब बना दिया सिवाये मुसलमानों के उन्होंने इसे नमाज़, ज़िक्र व सद्क़ा वग़ैराह देने का दिन बनाया मसलन जुमा व ईद और कुर्बानी का दिन वो दुन्यावी ज़िन्दगी के ज़ाहिर के सिवा कुछ नहीं जानते उन्हें नसीहत कीजिये कुरान के साथ या (योमे) हिसाब के साथ।
(तफ़्सीर कुरतबी–4/37)

बाअ़ज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़िये की सहीह नक़ल बनाओ जैसा कि करबला में रोज़ाए इमाम हुसैन है तभी वो रोज़ा–ए–इमाम हुसैन (यानी ताज़िया) क़रार पायेगा हालाँकि ताज़िये की शक्लो सूरत व नक़्शा कैसा भी हो वो रोज़ाए इमाम हुसैन ही क़रार पायेगा क्योंकि आअ़माल का दारोमदार मुसलमान की नियतों पर होता है और मोमिन की नियत उसके अ़मल से बेहतर होती है ताज़िया बनाने वाले की नियत ये होती है कि उसने रोज़ा–ए–इमाम हुसैन बनाया और तसव्वुर किया तो वो रोज़ा–ए–इमाम हुसैन ही क़रार पायेगा जिस तरह जश्ने ईद मीलादुन्नबी के पुर मुबारक मौक़े पर बैतुल्लाह का नक़्शा बनाते है और हस्बे ज़रुरत सजाते हैं और कभी शक्ले जुलूस में घुमाते हैं कभी एक मुक़ाम पर रखकर उसे सजाते हैं हालाँकि वो नक्शा भी मुक़म्मल व सहीह नक़ल नहीं होता बाअ़ज़ नक़्शों में ह़जरे अ़स्वद नहीं होता बाअ़ज़ में गिलाफ़ नहीं होता और बाअ़ज़ नक़्शों में गिलाफ़ पर कलिमात नहीं लिखे होते लेकिन उसके बनाने वाले की नियत और तसव्वुर से वो बैतुल्लाह का नक़्शा ही क़रार पायेगा।

बाअ़ज़ अम्र व फ़ेअ़ल महज़ अपने तसव्वुर

व ख़्यालात और अच्छी नियतों से ही मुक्म्मल और तकमीली अन्जाम पाते हैं उनकी तकमील के लिये सहीह नक्ल या ज़ाहिरी अ़मल की हाजत नहीं होती मसलन दौराने नमाज़ ह़ालते क़ायदा में अत्तहियात पढ़ते वक़्त जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को सलाम भेजो तो अपने तसव्वुर में ये जानो कि मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के रोज़ा-ए-अक्दस को देख रहा हूँ और अपने आक़ा रह़मते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को सलाम भेज रहा हूँ इसी तरह दौराने नमाज़ हमें ये तसव्वुर रखना लाज़िम है कि मैं अपने रब को देख रहा हूँ और अगर ये कैफ़ियत पैदा न हो सके तो ये ख़्याल और तसव्वुर करो कि मेरा रब हमें देख रहा है

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) से सुवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल एहसान क्या है तो आप ने फ़रमाया कि तुम अल्लाह की इ़बादत इस तरह करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और इससे कम दर्जा ये है अगर ये कैफ़ियत पैदा न हो सके कि तुम उसे देख रहो तो ये कैफ़ियत पैदा करो कि वो तुम्हें देख रहा है
(मुस्लिम-सहीह-1/90-ह०-97)
(इब्ने माजा-सुनन-1/50-ह०-63)
(नसाई-सुनन-3/457-ह०-4996)
(अबू दाऊद-सुनन-6/564-ह०-4695)

इसी तरह हाजियों के लिये ये हुक्म है कि दौराने तवाफ़े काअ़बा अगर ह़जरे अस्वद तक हाथ या मुँह की रसाई न हो सके तो लकड़ी से या उस जैसी किसी

चीज़ को ह़जरे अस्वद से छुआ कर उस लकड़ी से या उस जैसी चीज़ को चूमा जायेगा अगर लकड़ी या उस जैसी किसी चीज़ की भी वहाँ तक रसाई मुम्किन न हो तो ह़जरे अस्वद की तरफ़ अपना हाथ करके अपना ही हाथ चूम लिया जाये और ये तसव्वुर किया जायेगा कि गोया ह़ज्रे अस्वद को ही चूमा है।

इसी तरह हमारे जलासागाहों में जो स्टेज बनाया जाता है उमूमन ग़ैर मुस्लिमों के टेन्ट हाउस से सारा सामान लाया जाता है तख़्त कुर्सी, दरियाँ, गलीचे, चाँदनी और लाउडस्पीकर, मशीन वग़ैराह उ़ल्मा ह़ज़रात फ़रमाते हैं कि मिम्बरे रसूल से बड़ी ज़िम्मेदारी के साथ बोल रहा हूँ तो ग़ैर मुस्लिमों की कुर्सी और तख़्त मिम्बरे रसूल हो गया हालाँकि उस मिम्बर पर कभी हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तशरीफ़ फ़रमां नहीं हुये इस पर किसी को एतराज़ नहीं होता जब ग़ैर मुस्लिम की कुर्सी और तख़्त सिर्फ़ नियत व तसव्वुर से मिम्बरे रसूल हो गया तो ताज़िया नियत और तसव्वुर से रोज़ा-ए-इमाम हुसैन क्यों नहीं हो सकता।

बाअ़ज़ लोग जो ताज़ियादारी को नाजाइज़ व ह़राम कहते हैं लेकिन जब उनसे दलील मांगी जाये तो उनके पास कोई दलील नहीं होती सिर्फ फ़तवे होते हैं जो ग़ैर मुस्तनद बिला सबूत के होते हैं जो अहले बैत के बुग्ज़ में लिखे जाते हैं ताकि किसी तरह ताज़ियादारी बन्द हो जाये ऐसे फ़तवे बाज़ मौलवी किसी न किसी उस फ़िरक़े से तअ़ाल्लुक़ रखते हैं कि जिनकी दोज़ख़ में जाने की पेशीनगोई अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाई और ऐसे फ़तवे बाज़ मौलवियों को किसी चीज़ में भी बुराई नज़र नहीं आती

सिवाए ताज़ियादारी के इनमें से तो बाअ़ज़ ऐसे भी हैं कि घरों व दुकानों में टी०वी० पर रोज़ फ़िल्में व नाटक देखते हैं और मोबाइल फोन पर गन्दी फ़िल्में व बेहयाई की बातें और गन्दे वीडियो देखते व गाने सुनते और मौसिक़ी का मज़ा लेते हैं जबकि मज़कूरा बातें नाजाइज़ व सख़्त ह़राम हैं साल में 364 दिन टी०वी० पर फ़िल्में व नाटक और मोबाइल फोन पर बुरी चीज़ें देखते और शादियों व दीगर तक़ारीबों में शिर्कत करते जो ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल होती हैं लेकिन इन सब ग़ैर शरई उमूर और नाजाइज़ व ह़राम कामों में उन्हें कोई बुराई नज़र नहीं आती उन्हें तो सिर्फ़ ताज़िया में हज़ारों बुराईयाँ नज़र आती हैं।

अगर उनकी नज़र में ताज़ियादारी करने वाले मुहिब्बाने अहले बैत बुराई व फ़ेअ़ले गुनाह करते हैं तो ये उनकी कम इ़ल्मी और बे हिकमती व अहले बैत अत़्हार से बुग्ज़ व अ़दावत की अ़लामत है हालाँकि रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िया) की बा नियते ताअ़ज़ीम ज़ियारत करना बाइसे अज्रे अ़ज़ीम है और टी०वी० पर फ़िल्में नाटक वग़ैराह देखना और मोबाइल फोन पर फ़िल्में देखना व गाने सुनना, बेहयाई की बातें और गन्दे वीडियो देखना सिर्फ़ और सिर्फ़ बुराई व गुनाह के काम हैं कि जिनकी कुरान व अहादीस में सख़्त मुमानियत के साथ साथ सख़्त वईद भी आयी है।

➡ सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी गाने वाली के पास बैठकर गाना सुनता है क़यामत के दिन अल्लाह तबारक व तआ़ाला उसके कानो में पिघला हुआ सीसा उँडेलेगा। (कंजुल उ़म्माल-15/96-ह०-40662)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि गाना दिल में निफ़ाक़ पैदा करता है।
(अबू दाऊद–सुनन–04/712-ह०-4927)

➡हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुरा है वो बन्दा कि जिसने तकब्बुर किया और उस बड़ी बुलन्द ज़ात यानी अल्लाह तआ़ला को भूल गया बुरा है वो बन्दा जिसने जुल्म व ज़यादती की और वो ग़ालिब व आअ़ला ज़ात को भूल गया बुरा है वो बन्दा जो खेल कूद में मशगूल रहा और क़ब्रों और अपने बोसीदा होने को भूल गया बुरा है वो बन्दा जिसने सरकशी की और वो अपने आग़ाज़ व अन्जाम को भूल गया और बुरा है वो बन्दा जो शुबहात के ज़रिये दीन को ख़राब करता है बुरा है वो बन्दा कि ख़्वाहिश उसे गुमराह कर देती है।
(मिश्कात–3/144-ह०-5115)

➡हज़रत उ़क़बा बिन आ़मिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर खेल ह़राम है सिवाय तीन के ख़ाविन्द का अपनी बीवी से खेलना, घोड़े को शायस्तगी सिखाते हुये उसके साथ खेलना और अपनी कमान के साथ तीरंदाज़ी करना।
(अबू दाऊद–सुनन–3/66-ह०-2513)
(इब्ने माजा–सुनन–2/367-ह०-2811)
(नसाई–सुनन–5/428-ह०-3608)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ये) वो आख़िरत का घर है जिसे हमने ऐसे लोगों के लिये बनाया है जो न तो ज़मीन में सरकशी करते और न तकब्बुर और न फ़साद अंगेज़ी करते हैं। (सूरह–क़सस–28/83)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो आपके रब की क़सम हम उन सबसे ज़रुर पुरसिश करेंगे उन आअ़माल से मुताअ़ल्लिक़ जो वो करते रहे थे। (सूरह–हिजर–15/92,93)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
हर जान को उसके आअ़माल का बदला दिया जायेगा जो उसने कमा रखे हैं। (सूरह–जासिया–45/22)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। (सूरह–निसा–4/86)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें सज़ा दी जायेगी (सूरह–अनआ़म–6/120)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो कोई बुरा अ़मल करेगा उसे सज़ा दी जायेगी और न वो अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती पायेगा और न मददगार। (सूरह–निसा–4/123)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेहयाई के कामों के क़रीब न जाओ (ख़्वाह) वो ज़ाहिर

हों या (ख़्वाह) वो पोशीदा हों। (सूरह-अनआ़म-6/151)

इरशादे बारी तआ़ाला है:-

फरमां दीजिये कि मेरे रब ने बेहयाई की बातों को हराम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों और जो पोशीदा हों। (सूरह-आअ़राफ़-7/33)

इरशादे बारी तआ़ाला है:-

और शैतान के रास्तों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है वो तुम्हें बदी और बेहयाई का ही हुक्म देता है। (सूरह-बक़राह-2/168,169)

इरशादे बारी तआ़ाला है:-

बेशक हमने शैतानों को ऐसे लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं रखते। (सूरह-आअ़राफ़-7/27)

बाअ़ज़ लोग कहते हैं कि ताज़िये से शुहदा-ए-करबला की निस्बत जुड़ी हुई है और ताज़ियादारी में ग़ैर शरई उमूर शामिल होते हैं इस वजह से ताज़ियादारी नाजाइज़ है अलबत्ता फ़िल्में, नाटक देखने और शादी व तक़रीब से दीन इस्लाम या किसी नबी या वली की निस्बत जुड़ी हुई नहीं होती है बल्कि वो अपना ज़ाती फ़ेअ़ल है तो इसका जवाब ये है कि मुसलमान का हर जाइज़ काम दीन से जुड़ा है अगर ऐसा न होता तो हर अच्छे काम का बेहतरीन अज्र और हर बुरे काम का बुरा बदला अल्लाह तआ़ाला ने मुताअ़य्यन न किया होता माअ़लूम हुआ कि हर काम अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल के फ़रमान के मुताबिक़ किया जाये तो वो सवाब का बाइस बनता है और जो काम अपने नफ़्स व शैतान के मुताबिक़ किया जाये तो वो अ़ज़ाब का बाइस बनता है

मसलन शादी ब्याह और तक़रीब में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की नाफ़रमानी करते हुये शादी व तक़रीब में ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर को शामिल करना क्या ये दीन से जुड़ी हुई बात नहीं है जबकि निकाह तरीक़ाए रसूल व सुन्नते रसूल है और इस्लाम से वाबस्ता है दौराने निकाह जहाँ खुत्बे में अल्लाह व रसूल का ज़िक्र होता है उसी मजलिस में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की ना फ़रमानी व ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये ख़िलाफ़े शरअ़ व ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़े पर जाहिलाना व खुराफ़ात के काम होते है क्या निकाह दीन इस्लाम से जुड़ी हुई बात नहीं हैं अगर हम खुद को मुसलमान कहते हैं व खुद को अल्लाह का बन्दा और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का उम्मती व गुलाम कहते हैं और मानते हैं तो हमारा हर फ़ेअ़ल व अ़मल दीन से वाबस्ता है।

➡हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि निकाह मेरा तरीक़ा है पस जिसने मेरे तरीक़े से एअ़राज़ किया (मुँह फेरा) तो उसने मुझसे एअ़राज़ किया।
(बुख़ारी–सहीह–5/95-ह०-5063)
(मुस्लिम–सहीह–4/15-ह०-3403)

➡ उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया निकाह मेरी सुन्नत है और जो मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे उसका मुझसे कोई तआ़ल्लुक़ नहीं।
(इब्ने माजा–सुनन–2/17-ह०-1846)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सिर्फ़ मोमिनों की सुहवत इख़्तियार करो और तेरा खाना सिर्फ़ परहेज़गार लोग ही खायें। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/228-ह०-2390)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वलीमे का बदतरीन खाना वो है कि जिसमें मालदारों को बुलाया जाये और नादारों को छोड़ दिया जायें।
(मुस्लिम–सहीह–4/56-ह०-3521,3525)
(इब्ने माजा–सुनन–2/42-ह०-1913)

पस माअ़लूम हुआ शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब दीन से वाबस्ता अम्र है इसी तरह मुसलमान का हर जाइज़ काम दीन से वाबस्ता होता है।

जुलूसे ताज़िया व दौराने ज़ियारते ताज़िया और आस्ताना–ए–औलिया पर मर्द, औ़रत एक साथ जमाअ़ हो जायें तो बाअ़ज़ उ़ल्मा कहते हैं कि ज़ियारते ताज़िया व आस्ताना–ए–औलिया पर औरतों का जाना नाजाइज़ है लेकिन दीगर सैकड़ों मक़ामात पर भी मर्द व औ़रत एक साथ जमाअ़ होते हैं जैसे बाज़ार में और रास्तों व मजालिस, बस, ट्रेन, हवाई जहाज़ वग़ैराह यहाँ तक कि घर में शादी या तक़रीब के मौक़ेअ़ पर रिश्तेदार और दोस्त अहबाब व अ़ज़ीज़ो अक़ारिब व अहले ख़ानदान के मेहरम व ग़ैर मेहरम मर्द, औ़रत एक साथ जमाअ़ होते हैं लेकिन उ़ल्मा इन मज़कूरा जगहों के लिये मर्द व औ़रत के एक साथ जमाअ़ होने पर एतराज़ नहीं–

करते और न मनाअ़ करते हैं और न ही कोई फ़तवा (शरई हुक्म) नाफ़िज़ करते हैं।

हालाँकि हमें ज़रुरत इस बात की है कि जहाँ मर्द व औ़रत मेहरम व ग़ैर मेहरम एक साथ जमाअ़ हों तो ख़वातीन पर लाज़िम है कि वो पर्दे में रहें और अपनी निगाहों को पाक रखते हुये बदख़्याली व बदगुमानी से इजतिनाब करते हुये अपनी निगाहों और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और मर्दों पर लाज़िम है कि वो अपनी निगाहें नीची रखें और ग़ैर मेहरम ख़वातीन को देखने से बाज़ रहें और अपने दिल व ज़हन को बदख़्याली के वसवसे से पाक रखते हुये अपनी निगाहों व शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें जैसा कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हमें हुक्म फ़रमाया है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ नबी मुकर्रम) मुसलमान मर्दों को हुक्म दें कि वो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें ये उनके लिये बहुत सुथरा है अल्लाह तआ़ला को उनके कामों की ख़बर है और मुसलमान औ़रतों को हुक्म दें कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और वो अपना बनाव सिंगार न दिखायें मगर जितना खुद ज़ाहिर हो और अपने दुपट्टे गिरेवानों पर डाले रहें। (सूरह-नूर-24/31)

ऐ नबी (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपनी बीवियों और साहबज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़ंरमा दें कि चादरों का एक हिस्सा अपने मुँह पर डाले रहें। (सूरह-अहज़ाब-33/59)

पस हम मुसलमानों को चाहिये कि ज़ियारते ताज़िया व जुलूसे ताज़िया में अपनी निगाहों को सिर्फ़ और सिर्फ़ रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) की तरफ़ मुतावज्जै करें और बदख़्याली व गुनाह और बुराई के कामों से बचने की हत्तल इमकान कोशिश करें और अपनी निगाहों को पाक रखें जिस तरह हाजी लोग जब हज करने के लिये जाते हैं तो उनके घर से जाने लेकर वापस आने तक मर्द व अ़ौरत एक साथ जमाअ़ होते हैं जबकि लाखों अफ़राद हज के लिये जाते हैं और दौरने हज अराफ़ात मुजदल्फ़ा मिना सफ़ा मर्वाह और ख़ानाए काअ़बा वग़ैराह में एक साथ जमाअ़ होते हैं व दौराने तवाफ़ हर अ़ौरत का चेहरा खुला होता है और तमाम ख़वातीन का चेहरा खुला होने के बावजूद मर्द अपनी नीयतों व निगाहों को ग़ैर मेहरम को देखने से पाक रखते हुये बद ख़्याली से खुद को महफूज़ रखते हैं और वो अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

ठीक इसी तरह हमें चाहिये कि हर मक़ामात पर जहाँ मर्द व अ़ौरत एक साथ जमाअ़ हों ख़्वाह ज़ियारते ताज़िया हो या आस्ताना-ए-औलिया की हाज़िरी हो या घर हो या बाज़ार हर जगह अपनी निगाहों व नीयतों को पाक रखें और बा नीयत ताअ़ज़ीम रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) की ज़ियारत करें ताकि बेहतर अज्र व सवाब पायें और हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अहले बैत की कुर्बत से बहरेयाब हों।

बाअ़ज़ लोग रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमने पर भी एतराज़ करते और मुहिब्बाने अहले बैत को ताज़िया परस्त का लक़ब देते हैं ये उनकी कम इ़ल्मी

और बेहिकमती और बद गुमानी की दलील है हालाँकि कोई भी शख़्स (मआ़ज़ अल्लाह) ताज़िये को खुदा नहीं जानता और ना ही कोई ताज़िये की इ़बादत करता है इस तरह के इल्ज़ामात लगाने वालो ये बोहतान है जो कि गुनाहे अ़ज़ीम है जबकि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मुहब्बत व अ़क़ीदत में रोज़ा-ए-इमाम हुसैन यानी ताज़िये को बा नियते ताअ़ज़ीम चूमना जाइज़ व बाइसे ख़ैरो बरकत है।

जिस तरह हम मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा की तस्वीरों को चूमते और आँखों से लगाते हैं क्योंकि वो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल से निसबत रखती हैं इसी तरह हम रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमते हैं क्योंकि ताज़िये की निसबत हज़रत इमाम हुसैन से है जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के महबूब और प्यारे हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की आँखों की ठण्डक व लख़्ते जिगर और गुलशने क़ल्ब के फूल हैं।

ख़ाना-ए-काअ़बा में हजरे अस्वद जो कि एक पत्थर है मगर लोग उसे चूमते हैं तो जब पत्थर को चूमने से कोई बुत परस्त नहीं होता तो रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमने से कोई बुत परस्त कैसे हो सकता है अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुक्म से हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ख़ाना-ए-काबा से तीन सौ साठ (360) बुत बाहर निकलवा दिये मगर अल्लाह तआ़ला ने हजरे अस्वद के अलावा एक और पत्थर यानी मक़ामे इब्राहीम को ख़ाना-ए-काबा के सहन में नसब करा दिया और हुक्म दिया कि ये मेरे ख़लील इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की निशानी है इसके क़रीब दो

रकअ़त निफ़िल नमाज़ अदा करो तो जब हजरे अस्वद को चूमने और मक़ामे इब्राहीम के क़रीब नमाज़ पढ़ने से कोई मुशरिक या बुत परस्त नहीं होता तो रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमने से कोई ताज़िया परस्त कैसे हो सकता है ताज़िये को चूमने व उसकी ताअ़ज़ीम करने वालों की नीयतों और उनके बातिन को समझो और उस पर ग़ौर करो फिर सहीह व ग़लत और हक़ व बातिल और जाइज़ व नाजाइज़ में तमीज़ करो फिर अपनी जुबाने खोलो परिस्तिश का माअ़ना इ़बादत या पूजा करना होता है इसलिये मुहिब्बाने अहले बैत को ताज़िया परस्त का लक़ब देने वालो अपनी बद जुबानें बन्द रखो और ऐसे गुनाहों से तौबा करो।

बसा औक़ात देखने को मिलता है कि लोग औलिया-ए-किराम व बुजुर्गानेदीन के मज़ारात पर पड़ी चादर को चूमते और आँखों से लगाते हैं हालाँकि इसे कोई नाजाइज़ नहीं कहता अलबत्ता जिनके तुफ़ैल इन औलियाए किराम को विलायत मिली तो उन्हीं का रोज़ा बनाने व चूमने और उसकी ताअ़ज़ीम व ज़ियारत करने को बाअ़ज़ उ़ल्मा नाजाइज़ क़रार देते हैं क्या ये उनकी बेइ़ल्मी और जुल्म व ज़्यादती और अहले बैत से बुग्ज़ की अ़लामत नहीं है कि औलिया अल्लाह के मज़ारात पर पड़ी चादर को चूमना जाइज़ और जो वलियों के वली हैं उनके रोज़े (ताज़िये) को चूमना नाजाइज़ क्या ये सहीह व दुरस्त है

बाअ़ज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़ियादारी की इब्तिदा लंग तैमूर बादशाह के ज़माने में हुई और वो बादशाह शिया था जिसने ताज़ियादारी की शुरुआ़त की और ताज़ियादारी करना शियाओं का काम है तो इसका

जवाब ये है कि ताज़ियादारी की इब्तिदा किसी ने भी की हो लेकिन औलिया-ए-किराम व मशाइख़े इ़ज़ाम से ताज़ियादारी का साबित होना इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है और ये एक अच्छा और महबूब व मक़बूल अ़मल है जिस तरह जुलूसे ईद मीलादुन्नबी की इब्तिदा किसी ने भी की हो लेकिन ईद मीलादुन्नबी मनाना और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की विलादत पर खुशियाँ मनाना और जुलूसे ईद मीलादुन्नबी निकालना सब जाइज़ व सवाबे दारैन है और ये एक अच्छा और महबूब व मक़बूल अ़मल और ये भी ताज़ियादारी की तरह कुरानो सुन्नत से साबित है।

जो लोग शियाओं की ताज़ियादारी की मुशाबहत के बाइस मुहिब्बाने अहले बैत को ताज़ियादारी करने से मनाअ़ करते हैं और इसे नाजाइज़ कहते हैं तो वो लोग अपनी जहालत और कम इ़ल्मी के सबब ऐसा करते हैं तो मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि शिया व सुन्नी हज़रात की ताज़ियादारी में बहुत फ़र्क़ है और ताज़िया से जुड़े तमाम उमूर मुख़्तलिफ़ हैं कि जिस तरह इ़बादत दीगर मज़हब के लोग भी करते हैं और हम मुसलमान भी करते हैं लेकिन हमारी और दीगर मज़हबों की इ़बादत में ज़मीनो आसमान का फ़र्क़ है हमारी इ़बादत हक़ है और उनकी इ़बादत बातिल है।

इसी तरह रोज़ा हम भी रखते हैं और दीगर मज़हब के लोग भी रोज़ा रखते हैं मगर हमारे व उनके रोज़ों में फ़र्क़ है बल्कि हमारे और दीगर मज़हबों के तमाम दीनी मुआ़मलात व तरीक़े एक-दूसरे से जुदा हैं योमे आशूरा का रोज़ा हम मुसलमान भी रखते हैं और

यहूदी भी इस दिन का रोज़ा रखते हैं तो इस मुशाबहत की वजह से हम योमे आशूरा का रोज़ा तर्क नहीं कर सकते लेकिन कुछ फ़र्क़ व तब्दीली ज़रुर कर सकते हैं जैसा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम यहूदियों की मुख़ालिफ़त करो यानी दो दिन रोज़ा रखो और वो इस तरह कि उसके एक दिन पहले या एक दिन बाअ़द का रोज़ा भी मिला लिया करो (मुस्नद अहमद–2/89–ह०–2154) इसी तरह दाढ़ी हम मुसलमान भी रखते हैं व दीगर मज़हब के लोग भी रखते हैं तो इस मुशाबहत की वजह से हम दाढ़ी रखना तर्क नहीं कर सकते।

दुनिया में तमाम मज़हब कुछ मुआ़मलात में एक दूसरे से मुशाबहत रखते हैं लेकिन उनके तरीक़े व ढंग हमसे अलग हैं हमारी मुआ़शरती ज़िन्दगी की बहुत से उमूर दूसरे मज़ाहिब से काफ़ी मिलते जुलते हैं और एक क़िस्म की मुशाबहत रखते हैं मगर हमारी ज़िन्दगी से वाबस्ता तमाम उमूर अहकामे शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल में आते हैं यहाँ तक कि बाद मौत भी कफ़न दफ़न वग़ैराह शरीअ़त और सुन्नत तरीक़े पर मुश्तमिल होता है लेकिन दीगर मज़हबों में ऐसा नहीं हैं उनके सुलूक़ व तरीक़े हम मुसलमानों से बहुत अलग हैं तो इन मुशाबहत की वजह से अगर कोई कहता है कि ताज़ियादारी शिआओं का फ़ेअ़ल है तो ये उसकी बे इ़ल्मी व कम अ़क़्ली और मुनाफ़िक़त की अ़लामत है और ऐसे लोग इ़ल्म व अ़क़्ल से कमसिन व नाबालिग़ हैं जो वो ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में इस तरह की बेबुनियादी बातें करते हैं कुछ लोग तो ऐसे भी जिन्हें न तो दीन की समझ है और न इ़ल्म से कोई तआ़ल्लुक़ सिर्फ़ नमाज़े जुमाअ़ पढ़ते हैं और सुबह से शाम तक

हज़ारों शर व गुनाह के काम करते हैं और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी व ख़िलाफ़े शरअ़ और अल्लाह व रसूल की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये हराम और नाजाइज़ काम करते हैं और वो अपने शर व गुनाह और हराम व नाजाइज़ कामों से वे फ़िक्र रहते और इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और ताज़ियादारी को हराम व नाजाइज़ कहते हैं नमाज़ व रोज़ो का इहतिमाम न करने वालो और नाजाइज़ व हराम कामों से इजतिनाब न करने वालो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करने वालो क्या तुम्हारी हज़रत इमाम हुसैन से दुश्मनी है या फिर तुम्हारे दिलों में अहले बैत के लिये निफ़ाक़ है जो तुम ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करते हो और इस महबूब व मक़बूल अ़मल को नाजाइज़ कहते हो याद रखो कि तुम्हारा अहले बैत से यही निफ़ाक़ तुम्हारी हलाकत का सबब बनेगा।

हज इस्लाम का एक रुकन और इ़बादते खुदा है मगर मनासिके हज में अल्लाह तआ़ला अपने महबूब व मख़सूस बन्दों की यादगार का इहतिमाम कराता है कि रब तआ़ला ने अपने बरगज़ीदा बन्दों की यादगार को मनासिके हज में शामिल करते हुये हज करने वालों पर अपने बरगज़ीदा बन्दों की यादगार मनाना लाज़िम कर दिया चुनाँचा अराफ़ात जो मक्का मुकर्रमा से बाहर 12 मील के फ़ासले पर एक मुक़द्दस मैदान है जहाँ हाजी लोग हज के दिन लब्बैक पुकारते हैं और वो नमाज़ व ज़िक्रे इलाही और मुनाजात में मसरुफ़ रहते हैं और ये हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) और हज़रत हव्वा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की यादगार भी है जब हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) और हज़रत हव्वा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) जन्नत से दुनिया में भेजे गये तो दोंनों

मुख़्तलिफ़ जगहों पर भेजे गये और इसी अराफ़ात के मैदान में उन दोनों लोगों का मिलाप हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम व हज़रत हव्वा (रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के मिलाप की जगह को उनकी यादगार बनाते हुये मनासिके हज में शामिल कर दिया।

इसी तरह मिना में हाजी लोग जमरद (शैतान) को कंकरियाँ मारते हैं ये हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अ़लैहिमस्सलाम) की यादगार है सफ़ा मर'वाह के सात चक्कर लगाना ये हज़रत हाज़रा (रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की यादगार है और कुर्बानी करना ये हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल (अ़लैहिमस्सलाम) की यादगार है मक़ामे इब्राहीम के नज़दीक दो रकअ़त नमाज़ निफ़िल अदा करना ये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के ख़लील हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार है तो अल्लाह तआ़ला जब अपनी इ़बादत में अपने महबूब और बरगज़ीदा बन्दों की यादगार का इहतिमाम कराता है तो हम मुहिब्बाने अहले बैत को अल्लाह व रसूल के प्यारे महबूब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार ताज़ि़यादारी करने से बाअ़ज़ लोग क्यों रोकते हैं

अहले इ़ल्म इस बात को जानते हैं कि फ़िक़ई मसाइल, रिवायते अहादीस, तफ़्सीरे कुरान और तारीख़ की कुतुब वग़ैराह दीगर बहुत सी बातों में उ़ल्मा और आइम्मा, मुहद्दिसीन, मुफ़स्सरीन, मुअर्रिख़ीन व सहाबा व ताबईन में इख़्तिलाफ़ रहा है इसी तरह हमारे चारो इमामों में भी फ़िक़ई मसाइल और दीगर बहुत सी बातों में इख़्तिलाफ़ है जैसे किसी एक इमाम ने कहा कि फुलाँ बात वाजिब है तो दूसरे ने कहा कि सुन्नत है व तीसरे

इमाम ने कहा कि फ़र्ज़े किफ़ाया है हालाँकि शरीअ़त के मसाइल कुरान व अहादीस व इल्मी क़ियास पर मबनी होते हैं फिर भी हज़ारों मसाइल में चारो इमामों में इख़्तिलाफ़ है हालाँकि चारो इमाम हक़ पर हैं और हर एक इमाम ने हर एक मसले को किसी न किसी आयते कुरानी या हदीस से इस्तिदलाल करते हुये मुस्तंबत व मुस्तनद किया है लेकिन जो मसाइल अ़क़्ली क़ियास पर मबनी होते हैं उनमें ग़लती का इमकान पाया जाता है जबकि बाअ़ज मसाइल में इहतिमाल भी पाया जाता है बाअ़ज़ इख़्तिलाफ़ी मसाइल हस्बे ज़ैल हैं।

1–इमाम आज़म अबू हनीफ़ा के नज़दीक कुत्ता नजिस ऐ़न नहीं है लेकिन बाअ़ज़ फुक़हा ने इसके नजिस होने को तरजीह दी है। (फ़तावा रिज़विया–4/402)

2–कुत्ता नजिस ऐ़न नहीं (फ़तावा आ़लमगीरी) लेकिन इसके नजिस होने में मशाइख़ का इख़्तिलाफ़ है।
(फ़तावा रिज़विया–4/403)

3–कुत्ते की ख़रीद फ़रोख़्त सही है इसमें इमाम शाफई का इख़्तिलाफ़ है उनके नज़दीक कुत्ता नजिस ऐ़न है।

जिन आइम्माकिराम ने कुत्ते को नजिस ऐ़न कहा उन्होंने भी और जिन्होंने कुत्ते को नजिस ऐ़न नहीं कहा उन्होंने भी हदीस मुबारका से ही इस्तिदलाल किया है जिनमें से बाअ़ज़ का तज़किरा यहाँ किया जा रहा हैं।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया शिकार या खेत या फिर जानवरों

की हिफ़ाज़त के अ़लावा जिसने कुत्ता पाला तो उसकी नेकियों में से एक क़ीरात सवाब रोज़ घटाया जायेगा। (बुख़ारी–सही–3/503-ह०–3324)
(मुस्लिम–सही–4/200-ह०–4023)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/826-ह०–1489)
(अबू दाऊद–सुनन–3/295-ह०–2844)
(निसाई–सुनन–3/233-ह०–4295)

➡ हज़रत अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने कि फ़रमाया जिस घर में कुत्ता या तस्वीर (जानदार) हो उस घर में फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते। (मुस्लिम–सही–5/305-ह०–5514)
(बुख़ारी–सही–2/498-ह०–2105)
(अबू दाऊद–सुनन–1/228-ह०–227)
(निसाई–सुनन–1/135-ह०–264)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से एक वक़्त आने का वाअ़दा किया मगर फिर जब वो वक़्त आया तो जिबरईल नहीं आये तो आपने फ़रमाया कि जिबरईल कभी वाअ़दा ख़िलाफ़ी नहीं करते हैं फिर आपने देखा कि एक कुत्ते का पिल्ला तख़्त के तले बैठा है फिर आपके हुक्म से उस कुत्ते के पिल्ले को बाहर निकाला गया उसी वक़्त जिबरईल अ़लैहिस्सलाम आये तो आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त किया कि ऐ जिबरईल तुमने आने का वाअ़दा किया था फिर क्यों नहीं आये तो जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया हम उस घर में दाख़िल–

नहीं होते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर (जानदार) हो।
(मुस्लिम–सही–5/304-ह०–5511)
(अबू दाऊद–सुनन–5/206-ह०–4158)
(नसाई–सुनन–3/231-ह०–4290)
(बुख़ारी–सही–3/464-ह०–3227)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/506-ह०–2809)

4–एक औ़रत ने क़ाज़ी के यहाँ दावा किया कि फुलाँ शख़्स ने मुझसे निकाह किया है और उस औ़रत ने दो झूठे गवाह पेश किये तो क़ाज़ी ने उस शख़्स को औ़रत का शौहर क़रार दिया तो इमाम आज़म के नज़दीक औ़रत मर्द के साथ रहे और जिमाअ़ (हम बिस्तरी) भी करे लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक नाजाइज़ है।
(दुर्रे मुख़्तार–2/26) (हिदाया–4/52)

5–अगर किसी मुसलमान ने किसी ज़िम्मी (ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी सल्तनत में रहे और सालाना टैक्स अदा करे) को शराब या खिंजीर बेचने या खरीदने के लिये वकील किया तो इमाम आज़म के नज़दीक जाइज़ है। और साहिबीन ने फ़रमाया नाजाइज़ है।
(फ़तावा आलमगीरी–4/367) (शरह उल वक़ाया–1/110)

6–शराब गेहूँ जौ शहद, आलू बुखारा, ज्वार की हो तो हलाल है अगर मीठी हो। (फ़तावा–आ़लम गीरी–6/272)

शराब किसी भी चीज़ की बनी हो उसका पीना हराम है क्योंकि जिस चीज़ की हुरमत कुरान व अहादीस से साबित हो जाये वो किसी भी सूरत जाइज़ व हलाल नहीं हो सकती।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
आप से शराब और जुऐ की निस्बत सवाल करते हैं (आप) फ़रमांदें कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है। (सूरह–बक़राह–2/219)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो बेशक शराब व जुआ और नसब किये गये बुत और फ़ाल के तीर (सब) नापाक और शैतानी काम हैं सो तुम इनसे परहेज़ करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (सूरह–मायदा–5/90)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उन्हें यमन का हाकिम बनाकर भेजा तो उन्होंने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से उन मशरुबात (पीने की चीज़ों) के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जो वहाँ जौ से तैयार की जाती थीं जिन्हें मिज़्र व कुछ मशरुबात शहद से तैयार की जाती थीं जिन्हें बित्अ़ कहा जाता था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर नशा आवर चीज़ हराम है। (बुख़ारी–सहीह–4/382,ह०–4343,4344)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने शराब पीने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले ख़रीदने वाले अंगूर निचोड़ने वाले, निचुड़वाने वाले व उसके उठाने वाले और जिसकी तरफ़ उठाई जा रही हो उन सब पर लाअ़नत फ़रमाई है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/868-ह०–3674)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि जब शराब की हुरमत नाज़िल हुई तो उस वक़्त ये पाँच चीज़ों से तैयार होती थी अंगूर, ख़जूर, शहद, गन्दुम व जौ से और शराब (ख़म्र) से मुराद हर वो चीज़ है जो अ़क्ल पर पर्दा डाल दे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/865-ह०–3669)
(निसाई–सुनन–73/640-ह०–5585)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस चीज़ की कसीर मिक़दार नशा आवर हो उसकी क़लील मिक़दार भी हराम है। (अबू दाऊद–सुनन–4/872-ह०–3681)
(निसाई–सुनन–3/647-ह०–5614)

➡ उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से शहद की शराब के बारे में अ़र्ज़ किया गया तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शराब में नशा हो वो हराम है। (मुस्लिम–सहीह–5/237-ह०–5211)
(निसाई–सुनन–3/643-ह०–5597,5598)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है हज़रत अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हूजर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि अगर शराब से सिरका बना लिया जाये तो कैसा है तो हूजर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं बल्कि तुम उसे बहा दो यानी शराब–

को इस गरज़ से छोड़ना कि सिरका बन जाये हराम है (अबू दाऊद–सुनन–3/869-ह०-3675)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुऐ के ज़रिए तुम्हारे दरमियान अ़दावत और कीना डलवा दे व तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से व नमाज़ से रोक दे तो क्या तुम (इन शर अंगेज़ बातों से) बाज़ आओगे।
(सूरह–मायदा–5/91)

7–कुत्ते और गधे को ज़िब्हा करके उसका गोस्त बेचना जाइज़ है लेकिन इसमें मशाइख़ का इख़्तिलाफ़ है।
(फ़तावा आ़लमगीरी–4/367)

सिवाय तीन असबाब के जब कुत्ते को पालना नाजाइज़ और कुत्ते का गोस्त खाना हराम है तो उसको ज़िब्हा करके गोस्त बेचना कैसे जाइज़ हो सकता है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर एक दाँत वाले दरिन्दे का खाना हराम है यानी जो जानवर दाँतों से शिकार करता हो कि जैसे शेर, भेड़िया, कुत्ता, बिल्ली, वग़ैराह। (नसाई–सुनन–3/244-ह०–4331)

8–कुत्ते या बिल्ली को बुलाने से या गधे को हाँकने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती। (दुर्रे मुख़्तार–1/322)

जब नमाज़ में इधर उधर देखने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है तो कुत्ते या बिल्ली को बुलाने या गधे को–

हाँकने से नमाज़ फ़ासिद क्यों न होगी।

➡उम्मुल मुमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया जो नमाज़ में इधर उधर देखता है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये शैतान की एक झपट है इसके ज़रिये वो तुममें से किसी एक की नमाज़ को उचक ले जाता है यानी नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। (बुख़ारी–सहीह–3/490-ह०–3291)

9–इमाम शाफ़ई फ़रमाते हैं कि नमाज़ में अत्तहइयात के बाअ़द आख़िर में दुरुद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है इमाम अबू हनीफ़ा फ़रमाते हैं कि सुन्नत है (मेरी नमाज़–85)

10– इमाम आज़म अबू हनीफ़ा के नज़दीक देहात में जुमाअ़ जाइज़ नहीं और इमाम शाफ़ई के नज़दीक देहात में जुमाअ़ जाइज़ है। (फ़तावा रिज़विया–8/443)

11–इमाम अहमद बिन हम्बल के नज़दीक ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़हा की नमाज़ फ़र्ज़े किफ़ाया है और इमाम आज़म के नज़दीक वाजिब है। (इहयाउल उलूम–1/484)

12– अहनाफ़ (हनफ़ियों) के नज़दीक कुर्बानी के तीन दिन हैं लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक कुर्बानी के चार दिन हैं। (गुनयातुत्तालिबीन–419)

15–इमाम मालिक व इमाम शाफ़ई के नज़दीक कुर्बानी सुन्नत है बाक़ी (दूसरे मुजतहदीन) के नज़दीक वाजिब है। (गुनयातुत्तालिबीन–419)

13-जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना इमाम अहमद के नज़दीक फ़र्ज़े ऐ़न है इमाम शाफ़ई के नज़दीक फ़र्ज़े किफ़ाया है इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सुन्नते मुअक्किदा है। (मेरी नमाज–86)

14–इसी तरह से इंशा की नमाज़े वितर इमाम आज़म के नज़दीक वाजिब है जबकि दूसरे इमाम के नज़दीक सुन्नत है। (इहयाउल उलूम–1/484)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन वो चीज़ें जो मुझ पर फ़र्ज़ हैं मगर वो तुम्हारे लिये निफ़िली हैं 1- कुर्बानी 2- वितर पढ़ना 3- फजिर की दो रकअ़त पढ़ना। (हाकिम–अल मुस्तदरक–01/609-ह०-1119)

15–अहनाफ़ के नज़दीक खुत्बे के दौरान कोई नमाज़ जाइज़ नहीं लेकिन दूसरे इमाम के नज़दीक जाइज़ है उन्होंने मुन्दरजा ज़ैल अहादीस से इस्तिदलाल किया है।

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तह्यतुल मस्जिद की दो रकअ़तों को न छोड़ो अगरचा इमाम खुत्बा दे रहा हो। (नसाई–सुनन–01/531,463-ह०-1398)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला बयान करते हैं कि एक शख़्स जुमाअ़ के दिन मस्जिद में दाख़िल हुआ उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खुत्बा इरशाद फ़रमा रहे थे आप (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उससे दरयाफ़्त किया क्या तुमने दो रकअ़त नमाज़ अदा कर ली उसने अ़र्ज़ किया नहीं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम दो रकअ़त नमाज़ अदा कर लो। (बुख़ारी–सहीह–01/569-ह०-930)
(मुस्लिम–सहीह–02/199-ह०-2018)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/327-ह०-510)
(नसाई–सुनन–013/243-ह०-1401)

16–अगर फजिर की सुन्नतें न पढ़ीं हों तो बाअ़द फ़र्ज़ पढ़ लें लेकिन इमाम आज़म के नज़दीक जाइज़ नहीं। (इहयाउल उ़लूम–1/485)

17– मग़रिब की अज़ान और इक़ामत के दरमियान दो रकअ़त नमाज़ निफ़िल पढ़ना जाइज़ है लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक जाइज़ नहीं। (इहयाउल उ़लूम–1/488)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब मुअज़्ज़िन मग़रिब की अज़ान पढ़ता तो सहाबाकिराम मस्ज़िद में सुतूनों की तरफ़ जाते और दो रकअ़त नमाज़ निफ़िल पढ़ते।
(मुस्लिम–सहीह–2/317-ह०-1939)
(नसाई–सुनन–1/285-ह०-685)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अज़ान व इक़ामत के दरमियान नमाज़ है जो चाहे पढ़े।
(नसाई–सुनन–01/285-ह०-684)

मज़कूरा इख़्तिलाफ़ी मसाइल के अ़लावा हज़ारों फ़िक़्ई मसाइल में हमारे चारो इमामों के दरमियान इख़्तिलाफ़ है और दुनिया में इन चारो इमामों के मुक़ल्लिद हैं तो जो लोग किसी एक इमाम के मुक़ल्लिद हैं बाकी तीन इमामों के मुक़ल्लिद नहीं तो क्या वो हक़ पर नहीं हैं जबकि जब चारों इमाम हक़ पर हैं तो उनमें से किसी एक इमाम की इक़्तिदा करने वाले तमाम लोग हक़ पर हैं तो जब चारो इमामों में हज़ारों मसाइल में इख़्तिलाफ़ है मगर वो हक़ पर हैं और उनमें से किसी एक इमाम की इक़्तिदा (पैरवी) करने वाले लोग भी हक़ पर हैं तो मौजूअ़ ताज़ियादारी पर भी इख़्तिलाफ़ है बाअ़ज़ उ़ल्मा इसे जाइज़ कहते हैं और बाअ़ज़ नाजाइज़ कहते हैं तो जो ताज़ियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन कहने वाले उ़ल्मा की इक़्तिदा (पैरवी) करने वाले हक़ पर क्यूँ नहीं हो सकते तो ये वाज़ेह हुआ कि ताज़ियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन कहने वाले उ़ल्मा-ए-किराम की पैर'वी करते हुये ताज़ियादारी करने वाले लोग हक़ पर हैं और ताज़ियादारी तो कुरान व अहादीस से साबित है तो इस एतबार से भी ताज़ियादारी करने वाले तमाम मुहिब्बाने अहले बैत हक़ पर हैं और अज्रे अ़ज़ीम के मुस्तहिक़ व सज़ावार है और ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन और बाइसे ख़ैर है और यह एक बेहतर महबूब व मक़बूल अ़मल है।

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते सुना है कि मैंने अपने रब से अपने सहाबा के इख़्तिलाफ़ के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जो मेरे बाअ़द होगा तो मेरी तरफ़ वही हुई कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तुम्हारे

असहाब मेरे नज़दीक आसमान के सितारों की तरह हैं कि बाअ़ज़ पर बाअ़ज़ क़वी (ज़ोर आवर, ताक़तवर) हैं लेकिन सब नूरानी हैं जिसने इनमें से किसी के मौफ़िक़ को इख़्तियार किया तो वो मेरे नज़दीक हिदायत पर है रावी का बयान है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं तुम उनमें से किसी की भी पैर'वी करोगे तो हिदायत ही पाओगे। (मिश्कात–3/506-ह०-6018)

एक अहम मसला जो क़ाबिले तवज्जौ है कि जब तक किसी चीज़ के जाइज़ या नाजाइज़ होने पर तमाम सुन्नी उ़ल्मा मुत्तफ़िक़ न हों तब तक हम तमाम सुन्नी मुसलमानों को शरीअ़ते मुताह्रा इस बात की इजाज़त व इख़्तियार देती है कि हम जिस उ़ल्मा की चाहें पैरवी करें और ढोल बजाने व ताज़ियादारी करने के मौक़िफ़ पर उ़ल्माओं में इत्तेफ़ाक़ नहीं है इसके अ़लावा कुरान व हदीस से भी ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना साबित नहीं है और जो बात कुरान व हदीस और इज्माअ़ से ख़ारिज हो जो सिर्फ़ अपनी अ़क़्ली क़ियास और अपनी राय से कही जाये उसमें ग़लती का इमकान होता है।

और हर वो अम्र व फेअ़ल जाइज़ है बशर्ते जिसकी मुमानियत कुरानो सुन्नत या इज्माअ़ से साबित न हो पस हमें चाहिये कि जिस अम्र पर हमारा दिल मुतमइन हो और वो अम्र नाजाइज़ न हो बल्कि बाइसे अज्र व सवाब हो तो उस अम्र को हमें करना चाहिये अगरचा उ़ल्मा कुछ भी फ़तवा दें अगर हमारा अ़क़ीदा ये है कि ताज़ियादारी एक बेहतरीन अम्र है जो बाइसे ख़ैरो बरकत और अज्रो सवाब का बाइस है व इसका इहतिमाम करने से हमें अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल

और अहले बैत की कुर्बत व मुहब्बत हमें हासिल होगी और हमारे ईमान व अ़क़ीदत को निखार और तजद्दुद व मज़बूती मिलेगी जो हमारी निजात का ज़रिया बनेगी और हमें रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला की रहमत व नुसरत और रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त की सआ़दत हासिल होगी तो ताज़ियादारी को बड़े ज़ॉक़ और इहतिमाम व सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत से करें और ताज़ियादारी में शामिल ग़ैर शरई उमूर को तर्क कर दें ताकि हम इस बेहतरीन अ़मल का हम बेहतर अज्र पायें और बुराई व गुनाहों के कामों से परहेंज़ करें।

जिस तरह हमारे चारो इमामों में फ़िक़ई मसाइल में इख़्तिलाफ़ है उसी तरह कुछ मसाइल में हनफ़ी उ़ल्माओं में भी इख़्तिलाफ़ है जैसे सुबह सादिक़ से लेकर तुलूअ़ आफ़ताब तक कोई नमाज़ नहीं सिवाय दो सुन्नत व दो फ़र्ज़ के अ़लावा जाइज़ नहीं (जन्नती जेवर) सादिक़ से तुलूअ़ आफ़ताब तक दो सुन्नत व दो फ़र्ज़ के अ़लावा तह्यतुल वुज़ू, तह्यतुल मस्जिद व क़ज़ा नमाज़ जाइज़ है (कानूने शरीअ़त) रोज़े की हालत में हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया, (जन्नती जेवर) रोज़े की हालत में हैज़ आ गया तो रोज़ा न गया (कानूने शरीअ़त) शराब से अगर शिफ़ा का यक़ीन हो तो उसका पीना जाइज़ है (फ़तावा आ़लमगीरी–5/263) दवा के तौर पर शराब या मुर्दार जाइज़ नहीं (रद्दुल मुहतार) स्प्रिट व शराब का दवा में इस्तेअ़माल करना जाइज़ नहीं (बहारे शरीअ़त) हालाँकि शराब की क़लील (थोड़ी) मिक़दार भी हराम है दवा के तौर पर शराब पीना हराम है

➡ हज़रत तारिक़ बिन सुवैद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से शराब के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया कि ऐ अल्लाह के रसूल क्या शराब को मैं दवा के तौर पर इस्तेअ़माल कर सकता हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हरगिज़ नहीं और शराब दवा नहीं बल्कि बीमारी है।
(मुस्लिम–सहीह–5/227–ह०–5141)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1093-ह०-2046)
(अबू दाऊद–सुनन–5/39-ह०-3873)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/94-ह०-8135)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने जिस चीज़ को हराम क़रार दिया उस चीज़ से शिफ़ा भी उठाली है
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–3/164-ह०-1622)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला ने बीमारी और उसकी शिफ़ा दोनों चीज़ें नाज़िल कीं हैं पस तुम इलाज किया करो मगर हराम चीज़ को बतौर दवा इस्तेअ़माल न किया करो।
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–03/164-ह०-1623)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से शहद से तैयार हुई शराब के बारे में अ़र्ज़ किया गया तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि–

जिस शराब में नशा हो वो हराम है।
(बुख़ारी–सहीह–5/397-ह०-5586,5586)
(मुस्लिम–सही–5/237-ह०–5211)
(निसाई–सुनन–3/643-ह०–5597,5598)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस चीज़ की कसीर मिक़्दार नशा आवर हो तो उसकी क़लील मिक़्दार भी हराम है। (अबू दाऊद–सुनन–4/872-ह०–3681)
(निसाई–सुनन–3/647-ह०–5614)

पस इसी तरह बहुत से मसाइल में हनफ़ी उ़ल्माओं में इख़्तिलाफ़ है मगर लोग उन पर कभी भी ग़ौर नहीं करते बल्कि बाअ़ज़ लोगों का ग़ौर सिर्फ़ ताज़ियादारी पर ही रहता है कि किसी तरह ताज़ियादारी ख़त्म हो जाये उ़ल्मा–ए–किराम के वो फ़ैसले व फ़तवे जो ग़ैर मुस्तनद और जो कुरान व हदीस से साबित नहीं तो उन तमाम फ़तवों में भूल चूक व ग़लती का इहतिमाल मुमकिन है इ़ल्म की दो सूरतें ऐसी हैं जिनमें ग़लती या भूल चूक के इहतिमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और वो दो सूरते मुन्दरजा ज़ैल हैं।

1–वो इ़ल्म जो ज़रिया–ए–वही हो जो सिर्फ़ अम्बिया–ए–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को हासिल हुआ।

2–वो इ़ल्म जो ज़रिया–ए–इल्हामी हो ये सिर्फ़ अम्बिया–ए–किराम व औलिया–ए–किराम व सूफिया–ए–इज़ाम को हासिल हुआ।

मक़सूद ये है कि तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम दरजात और मरातिब में उ़ल्मा-ए-किराम से अफ़ज़ल व आअ़ला हैं और जो फे़अ़ल औलिया किराम से साबित हो उसमें ग़लती का इमकान नहीं हो सकता और ताज़ियादारी औलिया किराम से भी साबित है पस बिला शुबा ताज़ियादारी जाइज़ व सवाबे दारैन है।

जो लोग ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करते हैं अगर उनसे सुवाल किया जाये कि ताज़ियादारी किस तरह से नाजाइज़ है तो उनके पास कोई मज़बूत दलील ही नहीं होती सिवाए कुछ बेइ़ल्म व मुनाफ़िक़ उ़ल्माओं के फ़तवों की कमज़ोर और बातिल और ग़ैर मुस्तनद बे बुनियादी दलील होती है वो भी इज्माई नहीं बल्कि वो इख़्तिलाफ़ी होती है जो कि ना काफ़ी है इसके अ़लावा उनके पास ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने की कोई मुस्तनद दलील ही नहीं है जबकि मुहिब्बाने अहले बैत के पास कुरान व अहादीस व औलिया-ए-किराम व उ़लमा-ए-किराम की मज़बूत दलीलें हैं जो कि ताज़ियादारी के जाइज़ व सवाबे दारैन होने के लिये काफ़ी हैं।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने ताज़ियादारी की और आज तक अजमेर में ताज़ियादारी होती है और ताज़िया दरगाह शरीफ़ में बनता है हज़रत निजामुद्दीन, हज़रत दाता गंज बख़्श और हज़रत वारिस पाक (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) व दीगर सैंकड़ों औलिया-ए-किराम ने मुहब्बत व अ़कीदत के साथ बड़े ज़ॉक़ और इहतिमाम से ताज़ियादारी की और रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को ताअ़ज़ीम व अ़दबो इहतिराम की नज़र से देखा इन

हज़रात की सवानेह हयात की कुतुब में ताज़ियादारी का तज़किरा मिलता है और आज भी अजमेर शरीफ़, देवा शरीफ़, बहराइच शरीफ़, कलियर शरीफ़ किछौछा शरीफ़ बरेली शरीफ़ और मकनपुर शरीफ़ वग़ैराह हज़ारों जगह जो रुहानियत के मरकज़ हैं वहाँ की ख़ानक़ाहें रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िया) से सजाई जाती हैं।

ज़रा सोचो असल इस्लाम ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ हैं या आज के उ़ल्मा हैं जिनका इ़ल्म व दीनी ख़िदमात महज़ नज़राने व ज़रिया-ए-मआ़श पर मबनी है और बाअ़ज़ उ़ल्मा तो ऐसे भी हैं जो कि किसी मजालिस व इज्तिमाअ़ में जाने से क़ब्ल अपने ख़िताबात व तक़रीर का नज़राना तय करते हैं हालाँकि हक़ीक़त ये है कि जो तय किया जाये उसे क़ीमत कहते हैं और जो खुशी से बिला तय किये दिया जाये वो नज़राना है मगर इन उ़ल्माओं ने तो नज़राने का माअ़ना ही बदल दिया बस अपनी मनफ़ी सोच व मनमानी और फ़तवे बाज़ियों से मुसलमानों पर अपना रोअ़ब और दबदबा क़ायम करके हाकिम की तरह अपनी हुकूमत चाहते हैं और खुद को मुत्तक़ी व परहेज़गार गुमान करते हैं इन मौलवियों की फ़तवे बाज़ियों ने सुन्नत जमात को मुख़्तलिफ़ टुकड़ों और जमाअ़तों में मुन्तशिर कर दिया है।

बाअ़ज़ उ़ल्मा तो ताज़िया से इतनी बड़ी दुश्मनी रखते हैं कि यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) को मिटाने के लिये जब वो किसी उ़ल्मा के फ़तवे का हवाला देते हैं तो उस फ़तवे में फेर बदल करके व उसे तोड़ मरोड़ कर और उसमें तब्दीली करते हुये लोगों के सामने पेश करते हैं हालाँकि ये शरअ़न नाजाइज़ है।

मिसाल के तौर पर एक फ़तवा हस्बे ज़ैल है मुलाहिज़ा फ़रमायें- अशरा-ए-मुहर्रम में ताज़ियाादरी और क़ब्र व सूरत वग़ैराह बनाना जाइज़ नहीं।
(फ़तावा अ़ज़ीज़िया-1/75)

मज़कूरा फ़तवा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का है जो बिल्कुल सहीह व हक़ है कि ताज़िये में क़ब्र व सूरत बनाना जाइज़ नहीं है और सूरत से मुराद जानदार की तस्वीर है जो कि ताज़िये में ही नहीं बल्कि वो हर जगह नाजाइज़ है लेकिन एक मौलवी ने अपनी किताब में इस फ़तवे में तहरीफ़ करते हुये यानी फेर बदल करके अपनी किताब में शाए किया और उस किताब का नाम है मुहर्रम में क्या जाइज़ क्या नाजाइज़ और ये एक बरेलवी मौलवी की तालीफ़ कर्दा किताब है जो बरेली से शाए हुई है इस किताब के सफ़ा 23 पर बरेलवी मौलवी ने शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का फ़तवा तब्दील करके नक़ल किया है जो दर्जे ज़ैल है

अशरा मुहर्रम में जो ताज़ियादारी होती है गुम्बद नुमा ताज़िया व तस्वीरें बनाई जाती हैं यह सब नाजाइज़ है।

मज़कूरा बाला फ़तवे में फेरबदल किया गया है जो कि ग़लत व शरई हुक्म के ख़िलाफ़ है जबकि शरई हुक्म और तरीक़ा ये है कि जब हम किसी अ़ालिमे दीन का फ़तवा या किसी हदीस का हवाला दें तो वही लिखें कि जो उसकी असल हो उसमें फेरबदल करने की शरीअ़ते मुताह्रा हमें क़तअ़न इजाज़त नहीं देती अब ज़रा ग़ौर करो मज़कूरा दोनो फ़तवों में क्या फ़र्क़ है शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने अपने फ़तवे में क़ब्र लिखा और मौलवी ने फेरबदल करते हुये गुम्बद लिखा जबकि गुम्बद बनाना-

शरअ़न जाइज़ है और ताज़िये में क़ब्र बनाना नाजाइज़ है लेकिन इन मौलवी साहब ने क़ब्र व गुम्बद में कोई इम्तियाज़ (फ़र्क़) ही नहीं रखा और ताज़िये से अपनी दुश्मनी के बाइस शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी के फ़तवे को तब्दील कर दिया और ऐसा करना गुनाहे अ़ज़ीम है।

हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का वाक़्आ़ मशहूर है कि आप ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में फ़तवा लिखवा रहे थे तलबा हाज़िर थे और आप एक ऊँचे मक़ाम पर बैठे थे अय्यामे मुहर्रम थे यकायक उस तरफ़ से एक ताज़िया गुज़रा जिसको देखकर आप अपने मुक़ाम से उठे और ताज़िये के साथ-साथ चल दिये लौटकर आये तो आपकी आँखों से आँसू जारी थे और कपड़े फटे हुये थे उन्होंने तलवा से कहा कि ये फ़तवा चाक कर दो (फाड़ दो) तलबा को बहुत हैरत हुई तो तलबा ने दरयाफ़्त किया कि हज़रत अभी अभी आपने फ़तवा लिखवाया और किस वजह से इसे चाक करवाते हैं हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैंने देखा कि ताज़िये के साथ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़म के आ़लम में तशरीफ़ ले जा रहे थे मैंने उन्हें सलाम पेश किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दूसरी तरफ़ मुँह फेर लिया तो फिर मैंने दूसरी तरफ़ जाकर सलाम पेश किया तो आपने फिर मुँह फेर लिया तब मैंने आपसे इसका सबब दरयाफ़्त किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम अपना काम करो मैं तो हुसैन के ग़म में करबला जा रहा हूँ। (हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादरी-25)

पस हमें चाहिये कि ताज़ियादारी को शरई तरीक़े से बड़े ज़ॉक़ व इहतिमाम से करें व लोगों को ताज़ियादारी में शामिल ग़ैर शरई उमूर को तर्क करने के लिये नरमी व हुस्ने खुल्क़ और अच्छे कलाम से तल्क़ीन व ताकीद करें ताकि ताज़ियादारी से वाबस्ता तमाम ग़ैर शरई उमूर को मुकम्मल तौर पर ख़त्म किया जा सके और इसके अ़लावा जहाँ भी शर व गुनाह के काम हों चाहे घर हो या बाज़ार चाहे शादी हो या दीगर तक़ारीब यानी हर जगह जहाँ बुराई को देखे तो उसे दूर करने की हत्तल इमकान कोशिश करें।

हमारी ख़्वातीन माँओं बहनों और बेटियों को चाहिये कि घर से बाहर हर जगह पर्दा नशीन रहें और आस्ताना-ए-औलिया पर वक़्ते हाज़िरी व ज़ियारत बा अदब बा इहतिराम और पर्दानशीन होकर जायें तो वहाँ भी जाना बाइसे ख़ैर है कि जिस तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अहकामे शरीअ़त के मुताबिक़ ज़ियारते कुबूर की तो उन्हीं के तरीक़े को अ़मल में लाते हुये औलिया किराम की बारगाह में हाज़िरी दें व ज़ियारते ताज़िया व जुलूसे ईद मीलादुन्नवी की ज़ियारत पर्दानशीन होकर करें ताकि बेहतर अज्र पायें।

बाअ़ज़ लोग अहले बैत अत्हार को अ़लैहिस्सलाम कहने पर भी एतराज़ करते हैं हालाँकि आइम्मा किराम व मुहददिसीने किराम ने अहले बैत अत्हार को अपनी कुतुब में अ़लैहिस्सलाम लिखा हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी, इमाम बग़वी इमाम फख़रुद्दीन राज़ी इमाम जलालुद्दीन सुयूती, काज़ी सनाउल्लाह पानीपती,-

इमाम तबरी, इमाम कुरबती, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू दाऊद, इमाम तिर्मिज़ी, इमाम नसाई, व दीगर आइम्मा किराम और मुहद्दिसीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम वग़ैराह ने अपनी कुतुब में अहले बैत को अ़लैहिस्सलाम लिखा। (बुख़ारी–सहीह–6/191-ह०-6725)
(अबू दाऊद–सुनन–2/322-ह०-1567)
(अबू दाऊद–सुनन–1/784-ह०-1109)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1101-ह०-3774)
(नसाई–सुनन–3/254-ह०-1414)
(बुख़ारी–सहीह–3/921-ह०-3748)

अहले बैत अत्हार को (अ़लैहिस्सलाम) कहने पर कभी भी इख़्तिलाफ़ न रहा लेकिन अब इस दौरे फ़ितन में इख़्तिलाफ़ शुरु हो गया और ये इख़्तिलाफ़ ख़ारजियत का असर है और अहले इ़ल्म इस बात को जानते हैं कि अ़लैहिस्सलाम का लुग्बी माना है ''उस पर सलाम हो' और ये एक दुआ़ है और सलाम शियारे इस्लाम है और किसी भी ग़ायबाना शख़्स के सलाम के जवाब में अ़लैहिस्सलाम कहा जाता है (व अ़लैका अ़लैहिस्सलाम) तो फिर अहले बैत अत्हार को अ़लैहिस्सलाम कहने पर एअ़तराज़ क्यों हालाँकि लुग्बी माअ़ना के मुताबिक़ किसी भी ग़ायबाना शख़्स को अ़लैहिस्सलाम कह सकते हैं लेकिन शरई ऐतबार से हम अम्बिया–ए–किराम और अहले बैत अत्हार को अ़लैहिस्सलाम कहते हैं।

क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने महबूब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ अहले बैत अत्हार को भी सलामती में शामिल किया है हर नमाज़ में जो हम दुरुद पढ़ते हैं उसमें भी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)

के साथ आले रसूल को भी अल्लाह तआ़ाला ने शामिल करते हुये ख़ास कर दिया यानी सलातो सलाम में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और आले रसूल एक साथ हैं और जो अहले बैत अत्हार को अ़लैहिस्सलाम कहने पर एअ़तराज़ करे वो वे इ़ल्म मुनाफ़िक़ और बहुत बड़ा जाहिल है।

बाअ़ज़ लोग अ़शरा मुहर्रम में हरा व लाल कपड़ा पहनने पर भी एअ़तराज़ करते हैं हालाँकि किसी भी दिन किसी भी रंग का कपड़ा पहनना जाइज़ है लेकिन पता नहीं कि इन एअ़तराज़ करने वालों ने शरीअ़त की कौन सी नई किताब गढ़ली है जिसके मुताबिक़ ये लोग बे बुनियादी और ग़ैर शरई बातें करते और इस तरह एअ़तराज़ात लगाते हैं जिसकी शरीअ़त में कहीं असल ही नहीं बल्कि ये सिर्फ़ उनकी जहालत और बे इ़ल्मी और उनके नफ़्स से सादिर होने वाली फ़िजूल बातें हैं जो वो इस तरह की बातें करते हैं और वो अहले बैत अत्हार को अ़लैहिस्सलाम कहने पर एअ़तराज़ करते हैं और ढोल बजाने और ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं जबकि ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना कुरानो सुन्नत और इज्माअ़ व क़ियास से साबित ही नहीं तो फिर वो किस बिना पर ढोल बजाने व ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं ये सिर्फ़ उनके नफ़्स का हुक्म है न कि शरई हुक्म जो कि माना जाये।

मज़हबे इस्लाम मुहब्बत व अमन को फैलाने व नफ़रत को मिटाने और बाहमी इत्तेहाद को क़ायम करने और जाहलियत व गुमराही के अंधेरों से निकाल कर निजात व राहे हिदायत की रौशनी की तरफ़ ले जाने का पैग़ाम लेकर आया मगर कुछ उ़ल्माओं की बद ज़हनियत और

बाहमी इख़्तिलाफ़ ने इस पैग़ाम का माअ़ना ही बदल दिया आज इस दौरे फ़ित्न में जहाँ शैतान व नफ़्सानी ख़्वाहिशात व शहवात और लज़्ज़ात इन्सान पर ग़ालिब हैं और हमारे इस्लामी मुआ़शरे की फ़िज़ा में शर और बुराई इस क़दर ग़ालिब है जिसका कोई मेयार (पैमाना) ही नहीं तो ऐसे वक़्त में अ़वाम की इस्लाह व हिदायत और रहनुमाई करने के बजाय आपस में उ़ल्माओं का बाहमी निफ़ाक़ और बुग्ज़ व कीना और एक दूसरे की बुराईयाँ और एक दूसरे पर फ़तवे लगाने के काम ने मज़हबे इस्लाम और मुसलमानों को बहुत ही नुकसान पहुँचाया है और अहले सुन्नत जमाअ़त को मुख़्तलिफ़ टुकड़ों में तक़सीम करने का काम किया है।

बाअ़ज़ उ़ल्मा एक दूसरे की बुराई व तनक़ीस करने में मशगूल हैं और अक्सर लोगों को दुन्यावी कामों व नफ़्सानी ख़्वाहिशात के तकमीली कामों से फुरसत नहीं और दोनो तरह के लोग अपने अपने रास्ते व मुक़ाम से भटकर फ़ित्नों में मुब्तिला हैं तो अब ऐसे हालात में मुसलमानों की इस्लाह व हिदायत और उनकी रहनुमाई का ज़रिया कौन बने।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन अलआ़स (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को ये फ़रमाते हुये सुना बनी इसराईल का मुआ़मला दुरस्त चलता रहा हत्ता कि उनमें क़ैदी औ़रतों की औलाद भी फल फूल गई फिर उन्होंने अपनी राय से उस औलाद के मुताल्लिक़ फ़तवे देना शुरु कर दिये वो खुद भी गुमराह हुये और औरों को भी गुमराह किया। (दारमी–1/146-ह०-122) (इब्ने माजा–सुनन–1/47-ह०-56)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैंने एक शख़्स को कुराने करीम की किसी आयत की तिलावत दूसरी तरह से करते हुये सुना मैं नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और ये बात अ़र्ज़ की पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चेहरे मुबारक का रंग बदल गया और चेहरे मुबारक पर नागवारी के आसार महसूस हुये फिर आपने फ़रमाया तुम दोनों सहीह हो तुम से पहले लोग इख़्तिलाफ़ की वजह से हलाक हुये इसलिये तुम इख़्तिलाफ़ न किया करो।
(बुख़ारी–सहीह–2/657-ह०-2410)
(मुस्नद अहमद–2/746–ह०–4364)

बाअ़ज़ ऐसे भी उ़ल्मा हैं जिन्होंने माल के बदले अपने ज़मीर और इन्सानियत तक को बेच दिया हत्ता कि बिला वली (सरपरस्त) की इजाज़त के ये लोग मर्द व औ़रत (लड़का व लड़की) का बाहम निकाह महज़ चन्द रुपयों के लालच की वजह से पढ़ा देते हैं हालाँकि ये दुन्यावी व शरई हर सूरत क़तअ़न नाजाइज़ है मगर माल के लालच व ख़्वाहिश के ग़लबे ने इन्हें अन्धा कर दिया है जो ये लोगों के जज़बातों व उनकी इ़ज़्ज़त के साथ खिलवाड़ करते हुये कुछ दुन्यावी फ़वाइद हासिल करने की ग़रज़ से ग़ैर शरई कामों को अंजाम देने में शरई अहकामात और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के हुक्म की बिल्कुल पर'वाह नहीं करते।

ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि उन माँ बाप पर क्या गुज़रती होगी जब उनकी बेटी उनकी इजाज़त के बग़ैर किसी ग़ैर लड़के के साथ घर से चली जाती और

उन माँ बाप की इ़ज़्ज़त व अरमानों को तार–तार करते हुये और उनकी इ़ज़्ज़त को दाग़दार और नीलाम करते हुये और उनकी नाफ़रमानी करते हुये वो लड़की किसी लड़के से निकाह कर लेती है तो ज़रा साचो उस वक़्त उन माँ बाप के दिल पर क्या गुज़रती है कि जिसका अंदाज़ा लगाना ना मुमकिन है मानो उन पर तकालीफ़ो मुसीबत और ग़मों का पहाड़ टूट पड़ा हो और रुसवाइयाँ व शर्मसारी उनकी ज़िन्दगी पर मुहीत हो जाती है और उनकी आँखों के साथ साथ उनका दिल भी रोता है व उनके ख़्वाब व आरज़ूऐं पामाल होकर चकना चूर हो जाती हैं।

मगर बाअ़ज़ उ़ल्माओं को किसी के ग़म व तकालीफ़ और इ़ज़्ज़त से कोई सरोकार नहीं उन्हें तो फ़क़त उस माल से मतलब होता है जो निकाह के बाइस हासिल होता है चाहे निकाह शरअ़न जाइज़ हो या नाजाइज़ हो उन्हें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता बल्कि वो अपने इ़ल्म को नाजाइज़ व ग़लत तरीक़े से इस्तेअ़माल करते हुये सिर्फ़ माल को हासिल करने की ग़रज़ से निकाह पढ़ा देते हैं हालाँकि इस तरह के निकाह की अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ने सख़्त मुमानियत फ़रमाई है और ऐसे निकाह को महज़ बातिल और ना क़ाबिले कुबूल क़रार दिया है।

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस किसी औ़रत का उसके वली की इजाज़त के बग़ैर उसका निकाह कर दिया जाये तो उसका निकाह बातिल है उसका निकाह बातिल है उसका निकाह बातिल है ये

आपने तीन मर्तबा फ़रमाया और ना क़ाबिले कुबूल है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/599–ह०–2083)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/604–ह०–1102,1094)
(इब्ने माजा–सुनन–2/30–ह०–1879)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/703–ह०–2706)
(इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16167)
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–1/664) (मुस्नद इमाम शाफ़ई–393)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान और हज़रत मुजम्माअ़ दोंनों अन्सारी हैं रिवायत करते हैं एक शख़्स ने अपनी बेटी की मर्ज़ी के बग़ैर उसका निकाह किसी से कर दिया तो बेटी को बाप का ये निकाह पसंद नहीं आया और वो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और ये बात अ़र्ज़ कर दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने बाप के निकाह को रद्द फ़रमाया फिर उस लड़की ने अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर से निकाह कर लिया।
(इब्ने माजा–सुनन–2/27-ह०-1873)
(अबू दाऊद–सुनन–2/609-ह०-2101)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक कुंवारी लड़की हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे वालिद ने जबरदस्ती मेरा निकाह किसी से करा दिया तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने उसे इख़्तियार दिया। यानी चाहे तू उसके निकाह में रह या फिर उसे छोड़कर दूसरा निकाह करले।
(इब्ने माजा–सुनन–2/28-ह०-1875)
(अबू दाऊद–सुनन–2/607-ह०-2096)

➡ हज़रत ख़न्सा बिन्ते ख़िदाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उनके बाप ने उनका निकाह उनकी मर्ज़ी के बग़ैर कर दिया उन्हें ये निकाह मन्जूर न था इसलिये वो हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उनके निकाह को फ़स्ख़ कर डाला यानी निकाह बातिल क़रार देते हुये रद्द कर दिया।
(बुख़ारी–सहीह–5/140-ह०-5138)
(बुख़ारी–सहीह–6/313-ह०-6945)
(नसाई–सुनन–2/402-ह०-3273)
(अबू दाऊद–सुनन–2/609-ह०-2101)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई औ़रत किसी औ़रत का निकाह न करे और न कोई औ़रत खुद अपना निकाह करे बेशक ज़ानिया है वो जो खुद अपना निकाह करती है। (इब्ने माजा–सुनन–2/31-ह०-1882)
(दुर्रे मन्सूर–1/664)

➡ हज़रत अबू मूसा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वली के बग़ैर कोई निकाह दुरस्त नहीं होता।
(अबू दाऊद–सुनन–2/600-ह०-2085)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/604-ह०-1100,1101)
(इब्ने माजा–सुनन–2/31-ह०-1881)
(इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16186)
(दुर्रे मन्सूर–1/664)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया वली के बग़ैर कोई निकाह नहीं और जिसका कोई वली न हो उसका वली बादशाह होता है।
(इब्ने माजा–सुनन–2/31-ह०-1880)
(इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16171)

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है आप फ़रमाते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया वली और दो आ़दिल गवाहों के बग़ैर निकाह जाइज़ नहीं।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–7/125) (दुर्रे मन्सूर–1/664)

➡ हज़रत अकरमा बिन ख़ालिद बयान करते हैं कि मैं सफ़र में चन्द हमराहियों के साथ था कि उनमें एक बेवा औ़रत भी थी जिसने एक आदमी को अपना वली मुन्तख़ब किया और उस वली (सरपरस्त) ने उस औ़रत का निकाह एक मर्द से करा दिया तो फिर हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने निकाह करने वाले और जिसका निकाह हुआ था दोनों को कोढ़े लगवाये और उस औ़रत का निकाह भी रद्द कर दिया।
(इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16191)
(मुस्नद इमाम शाफ़ई–394)

➡ अबू जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास एक ऐसे निकाह का मुआ़मला आया कि जिस पर सिर्फ़ एक मर्द व एक औ़रत ही गवाह थे तो आपने फ़रमाया ये पोशीदा निकाह है मैं इसे जाइज़ क़रार नहीं

देता अगर मुझे इसका पहले इ़ल्म होता तो मैं रज्म कर देता। (रज्म–यानी पत्थर मार मार कर हलाक करना व संगसार करना) (मुस्नद इमाम शाफ़ई–394) (मौता इमाम मालिक–2/535)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन माअ़बद फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने औ़रत के वली की इजाज़त के बग़ैर निकाह को रद्द कर दिया। (इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16168)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि वली के बग़ैर निकाह नहीं होता।
(इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16169)

➡ हज़रत शाअ़बी फ़रमाते हैं कि बग़ैर वली के निकाह के मुआ़मले में हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम तमाम सहाबा किराम में सबसे ज़्यादा सख़्त थे वो ऐसा करने पर मारा करते थे। (इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16170)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि औ़रत ख़्वाह दस मर्तबा निकाह करे उसका निकाह वली की इजाज़त से और वली न होने की सूरत में सुल्तान की इजाज़त से ही होगा।
(इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16170)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि वली की इजाज़त के बग़ैर व दो आ़दिल गवाहों के बग़ैर निकाह नहीं होता। (इब्ने अबी शैबा–5/34-ह०-16181)

➡ हज़रत बकर फ़रमाते हैं कि एक औ़रत ने वली की

इजाज़त और दो गवाहों के बग़ैर निकाह कर लिया तो हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ़ उसके बारे में ख़त लिखा गया तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने जवाब में लिखा कि उसको सौ कोढ़े मारे जायें फिर हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सब शहरों में ख़त लिखा कि जिस औ़रत ने वली की इजाज़त के बग़ैर निकाह किया तो वो ज़ानिया की तरह है। (इब्ने अबी शैबा–5/39-ह०-16195)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और (मुसलमान औ़रतों को) मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक कि वो मुसलमान न हो जायें। (सूरह–बक़राह–2/221)

इस आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने मुसलमान औ़रतों के बजाए उनके औलिया (यानी सरपरस्तों) को ख़िताब फ़रमाया और उन्हें हुक्म दिया कि मुसलमान औ़रतों का निकाह मुशरिक मर्दो से न करें कुराने करीम के इस अंदाजे बयान से वाज़ेह हुआ कि मुसलमान औ़रत अपने निकाह का मुआ़मला खुद तय नहीं कर सकती उसके निकाह का मुआ़मला उसके वली (सरपरस्त) के ज़रिये और वसीले से ही अंजाम पायेगा मुफ़स्सिरीन किराम ने इस आयत को निकाह के मसले में नस क़रार दिया।

इमाम कुरतबी फ़रमाते हैं कि ये आयत बतौर नस इस बात की दलील है कि वली की इजाज़त के बग़ैर निकाह करना जाइज़ नहीं है। (तफ़्सीर कुरतबी–2/103)

इमाम इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं कि औ़रत खुद

अपना निकाह नहीं कर सकती बल्कि उसके निकाह का बन्दोबस्त करना उसके वली की ज़िम्मेदारी है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/596)

एक और मक़ाम पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तुम अपने मर्दों और औ़रतों में से उनका निकाह कर दिया करो जो बे निकाह हों। (सूरह–नूर–24/32)

मज़कूरा आयते करीमा भी इस तरफ इशारा करती है कि वली की इजाज़त के बग़ैर औ़रत का निकाह जाइज़ नहीं है इस आयते करीमा में भी अल्लाह तबारक व तआ़ला ने कुँवारी लड़की और बेबा औ़रतों के औलिया को ख़िताब करके उन्हें निकाह का बन्दोबस्त करने का हुक्म दिया है इमाम बग़वी फ़रमाते हैं कि ये आयत इस बात की दलील है कि बेशौहर औ़रतों के निकाह का बन्दोबस्त करना औलिया (सरपरस्त) की ज़िम्मेदारी है।
(तफ़्सीर–बग़वी–3/73) (तफ़्सीर–कुरतबी–12/239)
(अबूदाऊद–सुनन–2/596)

कायनात की हर शैः की तख़लीक़ का कोई न कोई मक़सद ज़रुर होता है और उ़ल्मा–ए–किराम की तख़लीक़ का मक़सद दीनी तबलीग़ व लोगों की हिदायत व इस्लाह का ज़रिया बनना है और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के अहकामात की तरफ़ लोगों को राग़िब करना है पस उ़ल्मा–ए–किराम को चाहिये कि वो अपने बाहमी निफ़ाक़ को ख़त्म करें और इख़्तिलाफ़ी मसाइल में बहसो मुबाहसा और फ़तवे बाजियों में पड़कर अपने वक़्त को ज़ाया (बर्बाद) न करें बल्कि वो जिस काम के

लिये तख़लीक़ किये गये हैं उन सब कामों को अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल के हुक्म के मुताबिक़ बेहतर तरीक़े और नेक नीयत व इख़लास के साथ अंजाम दें और हम तमाम मुहिब्बाने अहले बैत पर लाज़िम है कि ताज़ियादारी में जो ग़ैर शरई उमूर शामिल हैं हम उन्हें मुकम्मल तौर पर तर्क कर दें और अपनी ख़वातीन को इस हिदायत व नसीहत के साथ ज़ियारते ताज़िया की इजाज़त दें कि वो मुकम्मल तौर पर पर्दा नशीन रहेंगी और अपनी निगाहों व नीयतों को पाक रखें और अपने दिलों में किसी भी तरह की बुरी और गुनाह की बात दाख़िल न होने दें और कोई भी ऐसा काम न करें जो ख़िलाफ़े शरअ़ हो।

और हम पर ये भी लाज़िम है कि हर तरह की खुराफ़ात व जाहिलाना कामों व ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़ो से इजतिनाब करें और अपनी नज़रों को सिर्फ़ रोज़ा-ए-इमाम हुसैन की तरफ़ मुतवज्जे करें व जुलूसे ताज़िया में इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) व शुहदाए करबला की मनक़बत पढ़ें और अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल के साथ-साथ नारा-ए-हुसैन लगायें व ज़िक्रे शहादतैन करें और शुहदाए करबला की मुहब्बत और ग़म में अपनी आँखों को आबदीदा करें व अहकामे शरीअ़त के दायरे व हुदूद में रहकर ही यादगारे हुसैन मनायें ताकि हम इस महबूब और मक़बूल अ़मल का बेहतर अज्र पायें और ताज़ियादारी अहले बैत अत्हार से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत की अ़लामत है इसलिये हम मुहिब्बाने अहले बैत भी अहले बैत अत्हार की सच्ची मुहब्बत के सबब यादगारे हुसैन मनाते हैं और यादे हुसैन में ताज़ियादारी करते हैं और इंशा अल्लाह तआ़ाला हम इस महबूब व मक़बूल अ़मल को दायम व क़ायम रखेंगे।

और रहा सवाल उ़ल्माओं के फ़तवों व उनके एतराज़ का जो ताज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं तो उनकी तमाम दलीलें ताज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम क़रार देने के लिये ना काफ़ी और बहुत कमज़ोर और ग़ैर मुस्तनद और बेबुनियादी और बातिल हैं जो क़ाबिले एअ़तबार नहीं बल्कि क़ाबिले मज़म्मत हैं इसलिये उनके ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में दिये गये बयानात और ख़िताबात और उनके फ़तवों को नज़र अंदाज करते हुये ताज़ियादारी करें क्योंकि गुज़िश्ता ज़मानों से लेकर आज के मौजूदा दौर तक बाअज़ उ़ल्माओं का ये माअ़मूल रहा है कि एक दूसरे की बुराई व तनक़ीद व तनक़ीस करते रहे हैं।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) की किताब इहयाउल उ़लूम पर वक़्ती उ़ल्माओं ने एतराज़ात व ग़ैर मोअ़तबर होने का फ़तवा दिया था यहाँ तक कि इस बेहतरीन व रहनुमा मोअ़तबर किताब इहयाउल उ़लूम को जलवाने की पूरी कोशिश की गई मगर अल्लाह तबारक व तआ़ला के फ़ज़्लो करम और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रहमत के सबब वो अपने नापाक इरादों में कामयाब न हो सके व इसके अ़लावा हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलियरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) पर भी वक़्ती उ़ल्माओं ने बे बुनियादी ऐतराज़ात और उनके गुमराह होने के इल्ज़ामात लगाये थे हत्ता कि उनको मस्जिद से बाहर निकाल दिया व इसी तरह हज़रत जुन्नून मिश्री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) वग़ैराह दीगर औलियाए किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम पर इल्ज़ामात व एतराज़ात लगाये गये और औलियाए किराम से वाबस्ता अ़क़ीदत मन्दों के दिलों को चोट पहुँचायी गई।

जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) शहीद किये गये उस दिन सत्तर (70) हज़ार फ़रिश्ते आसमान से उतरे और उनके ग़म में रोये और क़यामत तक उन पर रोंयेगे ज़मीन तो ज़मीन आसमानों में भी ग़मे हुसैन मनाया जाता है यहाँ तक कि कायनात की हर शैः ग़मे हुसैन मनाती है जब जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की ख़बर दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की चश्मे मुबारक से आँसू जारी हुये और आप निहायत ग़मगीन हुये तो जिनका ग़म अर्श ता फ़र्श मनाया जाता है तो उनका ग़म मनाने और उनके ग़म में आँसू बहाने से मुहिब्बाने अहले बैत को बाअ़ज़ लोग क्यों रोकते और नाजाइज़ कहते हैं मगर जब उनके यहाँ उनका कोई अ़ज़ीज़ फ़ौत हो जाता है या कोई माल वग़ैराह का दुन्यावी नुकसान हो जाता है तो दहाड़े मार मारकर बे इख़्तियार रोते हैं और हमें शुहदा-ए-करबला के ग़म में रोने और आँसू बहाने से मनाअ़ करते हैं जबकि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के ग़म में रोने के सबब जन्नत मिलेगी

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हमारे लिये अपनी आँख से आँसू बहाता है या एक क़तरा गिराता है तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसके बदले उसे जन्नत अ़ता फ़रमायेगा।
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/382-ह०-1154)

ख़ानाबादा-ए-रसूल करबला में दीन इस्लाम के लिये कुर्बान हो गये और कई सहाबा और आपके अ़ज़ीज़ व अक़ारिब और दोस्त व अहवाब शहीद हो गये हज़रत मुस्लिम और उनके दो मासूम बेटे शहीद कर दिये गये

हज़रत अ़ली असग़र जो सिर्फ़ छः (6) माह के मासूम बच्चे थे उन्होंने भूक प्यास की हालत में हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की गोद में दम तोड़ा व हज़रत अ़ली अकबर ने भी भूक प्यास की हालत में शहादत पायी और आपके भाँजे सय्यदा ज़ैनब अ़लैहस्सलाम के बेटे औ़न और मुहम्मद जो कमसिन और मासूम थे वो भी आपके और अपनी माँ सय्यदा ज़ैनब के सामने ही शहीद हो गये जब बोसा गाहे नबवी पर तीर और नेज़े चले और आले मुहम्मद पर पानी को बन्द कर दिया गया और भूक प्यास की शिद्दत पर तलवारों के वार से इन लोगों ने ज़ख़्म पर ज़ख़्म खाये व आपके सामने आपके भाई और बेटे और भतीजे शहीद हो गये और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) उनके खून आलूदा जिस्मों को उठा उठा कर एक जगह जमाअ़ करते थे।

खा़नाबादा-ए-रसूल की औ़रतों की बेहुरमती की गई यहाँ तक कि उनके सरों से चादरें भी छीन ली गईं जिनको आसमान ने भी बेपर्दा न देखा वो मैदाने करबला में नंगे सर कर दी गईं बीमार ज़ैनुल आबदीन (अ़लैहिस्सलाम) को बीमारी व कमज़ोरी के बाइस जब उन पर चला भी नहीं जाता था भारी बेड़ियों से उनके जिस्मे अक़्दस को जकड़ दिया गया क्या आ़लमे मंजर होगा कि जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के सामने आपके भाई भतीजे और बेटे शहीद किये गये और उनके खून आलूदा जिस्मों को देखकर उस वक़्त उन पर क्या गुज़री होगी जिसका कोई अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता।

कायनात में ऐसी मुसीबतें व तकालीफ़ें न किसी पर गुज़री और न किसी पर गुज़रेगी हुजूर (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का बाग़े चमन करबला में उजड़ गया फिर अगर कोई कहे कि उनके ग़म में आँसू बहाना नाजाइज़ है तो बेशक वो मुनाफ़िक़ व दुश्मने अहले बैत और दुश्मने रसूल है ये अज़ीमो अकबर कुर्बानी उन्होंने अपने लिये नहीं दीं बल्कि दीने मुहम्मदी की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये थी अगर वो ऐसा न करते तो आज दीन इस्लाम की शक्लो सूरत निहायत ज़ुल्मो जहालत व गुनाहों और शर से लबरेज़ होती।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं एक दिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपने घर में तशरीफ़ फ़रमां थे और सबसे फ़रमां दिया कि अभी मेरे पास कोई न आये पस मैंने इन्तिज़ार किया हत्ता कि हज़रत हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) आप के हुजरे मुबारक में दाख़िल हुये फिर मैंने हिचकी बंधने की आवाज सुनी उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) रो रहे थे जब मैंने हुजरे मुबारक में झाँका तो देखा कि हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) आपकी गोद मुबारक में हैं और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हुसैन अ़लैहिस्सलाम की पेशानी पौंछ रहे हैं और साथ ही साथ रो रहे हैं फिर आपने फ़रमाया कि जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) घर में मौजूद हैं और उन्होंने मुझसे ये कहा है क्या आप हुसैन से बेहद मुहब्बत करते हैं तो मैंने कहा हाँ फिर जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि बेशक आपकी उम्मत हुसैन को सर ज़मीने करबला में शहीद करेगी और जिबरईल उस सर ज़मीन की मिट्टी भी लाये हैं फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने वो मिट्टी हज़रत उम्मे सलमा

(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को दिखाई।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/405-ह०-2745)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/115-ह०-2819)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/219-ह०-15116,15118)
(फ़ज़ाइले सहाबा–1/451-ह०-1357,1391)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/415-ह०-34313)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/299-ह०-37666)

मैदाने करबला की वो जगह जहाँ इमाम आ़ली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन व शुहदा–ए–करबला शहीद हुये उसकी निस्बत हज़रत मौला अ़ली ने फ़रमाया था कि ये हुसैन और उनके काफ़िले के ऊँटों के बैठने की जगह है ये उनके कजाबे रखने की जगह है और ये उनके खून का मक़ाम है आले मुहम्मद का एक गिरोह इस मैदान में शहीद होगा जिस पर ज़मीन व आसमान रोयेंगे। (इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/642)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/255,256)

➡ हज़रत इब्ने अम्र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि खुदा की क़सम मैंने सरे इमामे हुसैन को देखा जब वो उसे बुलन्द किये जा रहे थे और मैं उस वक़्त दमिश्क़ में था उस सर मुबारक के आगे किसी ने सूरह कह्फ़ की तिलावत की जब वो इस आयत पर पहुँचा ‘ क्या आपने ये ख़्याल किया है कि (जंगल के किनारे) वाले हमारी निशानियों में से अ़जीब निशानी थे’ (सूरह –कह्फ़–18/9) तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत इमाम हुसैन के सरे मुबारक को गोयाई अ़ता फ़रमाई और फ़रमाया कि ‘असहाबे कह्फ़ से ज़्यादा तआ़ज्जुब की बात मेरा क़त्ल होना है और मेरे सर को उठाये फिरना है’। (सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/259)

अजब तमाशा हुआ इस्लाम के साथ
क़त्ले शब्बीर हुआ नारा-ए-तकबीर के साथ

➡ जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद किया गया तो सूरज को ग्रहन लगा हत्ता कि दोपहर के वक़्त तारे नमूदार हुये यहाँ तक कि उन्हें इत्मीनान होने लगा कि ये रात है।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/416-ह०-2769)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/230-15163)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/644)

➡ जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया।
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/230-15162)
(सयूती-ख़साइसुल कुबरा-2/257)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/644)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि जब हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को शहीद किया गया तो मैंने जिन्नों को रोते हुये सुना और मैंने जिन्नों को हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल पर नोहा करते हुये सुना। (सयूती-ख़साइसुल कुबरा-2/257)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/234-ह०-15179,15181)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/426-ह०-2793)

➡ शहादते इमाम हुसैन के दिन मुल्के शाम में जो भी पत्थर उठाया जाता तो वो खून आलूद होता।
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/230-ह०-15160)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/415-ह०-2766)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/644)

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) की शहादत के दिन अंधेरा हो गया और तीन रोज़ तक कामिल अंधेरा रहा और बैतुल मुक़द्दस के पथ्थरों के नीचे ताज़ा खून पाया गया। (सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/256)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/645,647)

➡ जब हज़रत इमाम हुसैन शहीद हुये तो आसमान से खून की बारिश हुई जब सुबह हुई तो घड़े व मटके खून से भरे हुये थे। (सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/256)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/644)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के विसाल के बाद मैंने जिन्नों का रोना नहीं सुना था मगर आज की रात मैंने जिन्नों को रोते हुये सुना तब मैंने समझ लिया कि मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया है हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अपनी कनीज़ से कहा कि घर से बाहर निकलकर माअ़लूम कर तब माअ़लूम हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम शहीद हुये हैं और जिन्न नोहा कर रहे हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/428-ह०-2800)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/455-ह०-1373)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/651)

➡ जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) शहीद हुये उस दिन बैतुल मक़दिस में जो पथ्थर उठाया जाता उसके नीचे से ताज़ा ताज़ा खून निकलता था।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/415-ह०-2765)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/230-ह०-15159)

➡ हज़रत उम्मे हकीम फ़रमातीं कि जब हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम शहीद हुये तो आसमान कई दिनों तक खून के लोथड़े की तरह रहा।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/415-ह०-2767)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/230-ह०-15161)

➡ ईसा बिन हारिस किन्दी फ़रमाते जब हज़रत हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद किया गया तो हम सात दिन इस तरह रहे कि जब अ़स्र की नमाज़ पढ़ते तो हम सूरज को चार दीवारियों के अतराफ़ में देखते कि गोया वो जर्द रंग की चादरे है जिन्हें लपेट दिया गया है और हमने सितारों को देखों कि एक दूसरे से टकरा रहे हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/416-ह०-2770)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/230-ह०-15164)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/645)

➡ जमील बिन ज़ैद फ़रमाते है कि जब हज़रत इमाम हुसैन को शहीद किया गया तो आसामान सुर्ख हो गया
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/415-ह०-2768)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/230-ह०-15162)

अक्सर बरेलवी उ़ल्मा और उनके पैरोकार ये कहते हैं कि जुलूसे हुसैनी में यानी ताज़िये के साथ ढोल बजाना ख़िलाफ़े शरअ़ काम है जबकि बरेलवी उ़ल्मा व उनके पैरोकार जुलूसे ईद मीलादुन्नबी में ढोल बाजे और डीजे के बजने पर एतराज़ नहीं करते बल्कि बरेलवी उ़ल्मा और उनके पैरोकार ईद मीलादुन्नबी के जुलूस में ढोल बाजे और डीजे के साथ जुलूस में शरीक होते हैं तो ढोल बजाना जुलूसे हुसैनी में नाजाइज़ है तो जुलूसे ईद मीलादुन्नबी में जाइज़ कैसे हो गया पस इनके इस तरह

के क़ौलो फ़ेअ़्ल से ये साबित होता है कि ये मुनाफ़िक़ हैं कि ये ईद मीलादुन्नबी तो मनाते हैं और ताज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं इनके दो मुँह हैं एक से ये कुछ कहते हैं और दूसरे से कुछ और कहते हैं

अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने प्यारे महबूब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व वसल्लम) के सद्क़े और तुफ़ैल हम सब मुसलमानों को हिदायत अ़ता फ़रमाये और जुमला मुअ़ामलात में सही व ग़लत और जाइज़ व नाजाइज़ में इम्तियाज़ (फ़र्क़) करने की सलाहियत अ़ता फ़रमाये और हमारी अ़क़्लो फ़हम में तवानाई अ़ता फ़रमाये ताकि हम तेरे व तेरे हबीब सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की फ़रमां बरदारी करते हुये राहे हक़ पर चल सकें और हमें अपनी व अपने रसूल सरवरे कायनात सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम और अहले बैत अत्हार की सच्ची व हक़ीक़ी और ज़ाहिरी व बातिनी मुहब्बत में ग़र्क़ कर दे ऐ अल्लाह तेरे महबूब की गुलामी का पट्टा मेरे गले में हो और हमें तमाम बुराईयों और गुनाहों व शैतान के शर से महफ़ूज़ रख और हम तमाम मुसलमानों को जो हयात हैं और जो वफ़ात पा चुके हैं उन सबकी अपने हबीब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल मग़फ़िरत फ़रमां और हम मुहिब्बाने अहले बैत मुसलमानों के सग़ीरा व कबीरा गुनाहों को बख़्श दे और हमें इस्लाम पर ज़िन्दा रख और ईमान पर उठा और हम सबको सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमां। आमीन।

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल ऑ़लमीन अल्लाह तऑ़ाला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तऑ़ाला ऑ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तऑ़ाला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसॉं रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये– **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये–**आमीन**

नोट– जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)